

नाणिकचन्द्र दि० जैन ग्रन्थमाला : ग्रन्थांक-४८

जैन शिलालेख संग्रह

[भाग चार]

डि० ए० SHIVA CHAND BAID

संग्राहक-संपादक

डॉ० विद्याधर जोहरापुरकर,
एम० ए०, पीएच० डी०

प्रकाशक

भारतीय ज्ञानपीठ काशी

प्रथमावृत्ति]

वीर निर्वाण संवत् २४९१

[मूल्य ७ रुपये

डॉ० हीरालाल जैन, एम० ए०, डी० लिट्०

डॉ० आदिनाथ नेमिनाथ उपाध्ये, एम० ए०, डी० लिट्०

प्रकाशक

भारतीय ज्ञानपीठ

दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी

प्रथम आवृत्ति १००० प्रति
मूल्य सात रुपये

मुद्रक

सन्मति मुद्रणालय

दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी

अनुक्रमिका

प्रधान सम्पादकीय	५-८
प्राक्थन	९-१०
संकेत-सूची	११
प्रस्तावना	१-३३
१ लेखोंका संपादन परिचय -	१-२
२ जैन मंडका परिचय	२-१६
(अ) व्यापनीय संघ	२-४
(आ) मूलसंघ	४-१४
(इ) गौड संघ -	१४
(ई) द्राविड संघ	१७
(उ) माथुर संघ	१५
(ऊ) पंचस्तूप निकाय	१७
(ऋ) जम्बूखण्डगण	१५
(ॠ) सिंहवूरगण	१५
(ऌ) जैनसंघके विषयमें साधारण विचार	१७-१६
३ राजवंशोंका आश्रय	१६-३२
(अ) उत्तर भारतके राजवंश	१६-१६

जैनशिकालेख-संग्रह

(आ) दक्षिण भारतके राजवदा	१९-३२
(इ) राजाश्रयके विषयमें साधारण विचार	३२
४ जैन मयकी दुरवस्था	३७-३३
५ उपसंहार	३३
मूल लेख (तिथिक्रमसे)	१-३८४
परिशिष्ट	
१ इवेताम्वर लेखोंकी सूचना	३८५-३८८
२ जैनतर लेखोंमें जैन व्यक्ति आदिके उल्लेख	३८९-३९३
३ नागपुर प्रतिमा लेख संग्रह	३९३-४२९
मन्दिरों व मूर्तियोंका चिचरण	४३०-४५४
नामसूची—	४५५

प्रधानसम्पादकीय

प्राचीन कालकी मानवीय प्रवृत्तियोंका विभिन्न वर्णन व विश्लेषण ही इतिहास है। ऐसे इतिहासके लिए आधारभूत सामग्री प्राप्त होती है मानवकी निर्मितियोंके भग्नावशेषों अर्थात् गुफाओं, चँत्थों, स्तूपों, समाधियों, गृहों, मन्दिरादि धर्मायतनों व मूर्तियों जैसे स्थापत्यके भग्नावशेषोंसे, चित्रोंसे व साहित्यिक रचनाओंसे। किन्तु इनसे भी अधिक प्रामाणिक और यथावत् वृत्तान्त उन लेखोंसे मिलता है जो राजाओं व अन्य धनिकोंके दानकी तथा उनके द्वारा निर्माण कराये गये मन्दिरादिकी स्मृति-रक्षणार्थ पाषाणखण्डों व ताम्रपटों आदि पर उत्कीर्ण कराये गये पाये जाते हैं। ऐसे प्राचीनतम लेखोंकी लिपि बहुधा बही ब्राह्मी है जिससे आजकी नागरी लिपि विकसित हुई है, तथापि उसका प्राचीनतम रूप इतना भिन्न था कि उसे पढ़ना बहुत कठिन सिद्ध हुआ। बड़े परिश्रमके पश्चात् उस लिपिकी कुंजी हाथ लगी, जिससे लगभग गत अठारह सहस्र वर्षोंके शिलालेख पढ़े और समझे जा सके। किन्तु चालीस-पचास वर्ष पूर्व सिन्धु घाटीसे ऐसे भी मुद्रालेख प्राप्त हुए हैं, जिन्हें पढ़ने और समझनेका अभी प्रयास ही चल रहा है, कोई सफलता प्राप्त नहीं हो सकी।

जो प्राचीन शिलालेख पढ़े गये और प्रकाशित हुए वे पुरातत्त्व विभागके बहुमूल्य व दुर्लभ ग्रन्थमालाओं व पत्रिकाओंमें समाविष्ट पाये जाते हैं। इनमें जैन धर्म सम्बन्धी शिलालेखोंका विवरण भी यत्र-तत्र बिखरा पाया जाता है। इन लेखोंका ऐतिहासिक महत्त्व तब प्रकट हुआ जब सन् १८८९ में मैसूरके पुरातत्त्व विभागकी ओरसे श्रवणबेलगोलके १४४ शिलालेखोंका अलगसे संग्रह एक विद्वत्तापूर्ण प्रस्तावना सहित प्रकाशित हुआ। सन् १९२२में इसका संशोधित और परिवर्धित संस्करण प्रकाशमें आया

जिममें शिलालेखोंकी संख्या ५०० हो गयी। इन्हीं बीच सन् १९०८ में फ़ामीसी विद्वान गैरीनोकी एक रिपोर्ट प्रकाशित हुई, जिसमें उन्होंने तब तक प्रकाशित हुए आठ सौ पचास जैन शिलालेखोंका परिचय कराया। इस सब सामग्रीके सम्मुख आनेपर कुछ जैन विद्वानोंकी आग्नि मूली, और उन्हें अनुभव हुआ कि जब तक इस सामग्रीका उपयोग करते हुए धर्म व साहित्य सम्बन्धी लेख नहीं लिखे जायेंगे तबतक जैनधर्मका प्रामाणिक इतिहास प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। स्वभावतः उस समय जो विद्वान् जैन साहित्य और इतिहासके संशोधनमें तल्लीन थे उन्हें इस आवश्यकताका विशेष रूपसे बोध हुआ। इनमें माणिकचन्द्र ग्रन्थमालाके संस्थापक व प्रधान सम्पादक स्वर्गीय प० नाथूरामजी प्रेमोकी याद आती है। उन्होंने ही अपनी प्रेरणा-द्वारा जैनशिलालेख संग्रहका प्रथम भाग तैयार कराकर प्रस्तुत ग्रन्थमालाके २८वें पुष्पके रूपमें प्रकाशित किया, जिसमें श्रवण-वेल्लोरके उपर्युक्त पाँच सौ शिलालेख नागरी लिपिमें हिन्दी भाषा में तथा विस्तृत भूमिका व अनुक्रमणिकाओं सहित जिज्ञानुओं व लेखकोंके अति सुलभ हो गये। इसका तुरन्त ही हमारे साहित्य व इतिहास संशोधन कार्यपर महत्त्वपूर्ण प्रभाव दृष्टिगोचर होने लगा। तद्विषयक लेखोंमें इनके उपयोग द्वारा बड़ी वाछनीय प्रामाणिकता आने लगी जिसके लिए प्रेमोजी-जैसे विद्वान् बहुत आतुर थे। अब उन्हें अन्य शिलालेखों को भी इसी रूपमें सुलभ पानेकी अभिलाषा तीव्र हुई जिसके फलस्वरूप उक्त गैरीनो महोदयकी रिपोर्टके आधार शिलालेख संग्रह भाग २ और ३ में (अ० ४५-४६ सन् १९५२, १९५७) आठ सौ पचास लेखोंका पाठ व परिचय हमारे सम्मुख आ गया।

आगेका लेख-संग्रह कार्य बड़ा कठिन प्रतीत हुआ, क्योंकि इसके लिए कोई व्यवस्थित सूचियाँ उपलब्ध नहीं थी। किन्तु इस कार्यको पूरा कराना हमने अपना विशेष कर्तव्य समझा। सौभाग्यमें डॉक्टर विद्याधर जोहरापुरकरने यह कार्य-भार अपने ऊपर लेकर विशेष प्रयासों द्वारा यह छह सौ

प्रधान-सम्पादकीय

चौवन लेखोका परिचय करानेवाला चौथा सग्रह प्रस्तुत कर दिया। प्रस्तावनामें उन्होंने लेखोका काल, प्रदेग, भापा, प्रयोजन, मुनिसंघ, राज-वंश आदि दृष्टियुसे जो विव्लेपण व अध्वयन किया है वह बहुत महत्त्वपूर्ण है इसके लिए हम उनके बहुत कृतज्ञ हैं। हमें दुःख है कि पण्डित नाथूरामजी प्रेमी आज हमारे बीच नहीं रहे ! कितना हर्ष होता उन्हें इस नये लेख सग्रहको देखकर !

शिलालेख-सग्रहके इन भागोंमें संकलित सामग्रीका जैन साहित्य और इतिहासके संशोधन कार्यमें विशेष उपयोग हो रहा है, और होगा इसमें सन्देह नहीं। किन्तु इस विषयमें अब तकके अनुभवके आधारसे कुछ सूचनाएँ कर देना हम अपना कर्तव्य समझते हैं—

१. लेखोका जो मूल पाठ यहाँ प्रस्तुत किया गया है, वह सावधानी पूर्वक तो अवश्य लिया गया था, तथापि उसे अन्त-प्रमाण होनेका दावा नहीं किया जा सकता। कन्नड लेखोको यहाँ जो देवनागरीमें लिखा गया है उसमें भी लिपिभेदसे अशुद्धियाँ हो जाना सम्भव है। आगे-पीछे विविध विद्वानों-द्वारा पाठ व अर्थ-संशोधन सम्बन्धी लेख लिखे ही गये होंगे। अतएव विशेष महत्त्वपूर्ण मौलिक स्थापनाओंके लिए संशोधकोको मूलस्रोतों का भी अवलोकन कर लेना चाहिए।

२. इधर कुछ कालसे ऐसी प्रवृत्ति दिखाई देती है कि जहाँ दो आचार्योंमें नाम-साम्य दिखाई दिया वहाँ उन्हें एक ही मान लिया गया। किन्तु यह बात भ्रामक है। एक ही नामके अनेक आचार्य विविध कालोंमें भी हुए हैं और सम-सामयिक भी। अतएव उन्हें एक सिद्ध करनेके लिए नाममात्रके अतिरिक्त अन्य प्रमाणोंकी भी खोज करना चाहिए।

३. इन प्रकाशित शिलालेखोंसे यह अपेक्षा नहीं करना चाहिए कि उनमें समस्त प्राचीन आचार्योंका उल्लेख आ ही गया है अतएव इनमें किसी आचार्यके नामका अभाव किसी विविध अनुमान व तर्कका आधार

नही बनाया जा सकता। ये लेख जैन मुनिघोकी पूरी गणनाका लेखा नही समझना चाहिए।

४ कन्नड लेखोंका जो सार हिन्दीमें दिया गया है उसीके आधार भावसे कोई नयी कल्पनाएँ नहीं करना चाहिए। उनके लिए मूल पाठ और उसके शब्दश अनुवादका अवश्य अवलोकन करना चाहिए।

यथायंत ये लेख-संग्रह सामान्य जिज्ञासुओंके लिए तो पर्याप्त हैं। किन्तु विशेष सञ्चोधकोंके लिए तो ये मूल सामग्रीकी ओर दिग्दर्शन मात्र ही करते हैं।

इस ग्रन्थमालाको अपनी गोदमें लेकर श्री धान्तिप्रमादजी व श्रीमती रमारानीजीने न केवल समाजके एक अग्रणी द्वितीयाेष्ठ माणिकचन्द्रजाकी स्मृतिकी रक्षा की है व ग्रन्थमालाके जन्मदाता ५० नाथूरामजी प्रेमीकी भावनाको सम्मान दिया है किन्तु जैन साहित्यकी रक्षा व जैन इतिहासके नवनिर्माण कार्यमें बड़ी महत्त्वपूर्ण सेवा की है जिसके लिए ममाज सदैव उनका ऋणी रहेगा।

— ही ला जैन
— भा ने उपाध्ये
(प्रधान सम्पादक)

प्राक्कथन

प्रस्तुत संग्रहका प्रथम भाग डॉ० हीरालालजी जैन-द्वारा संपादित होकर सन् १९२८ में प्रकाशित हुआ था। उसमें श्रवणवेलगोल तथा निकटवर्ती स्थानोंके ५०० लेख सकलित हुए थे। इसका दूसरा तथा तीसरा भाग श्री विजयमूर्ति शास्त्री-द्वारा सकलित हुआ। इन दो भागोंमें फ्रेन्च विद्वान् डॉ० गेरिनो-द्वारा संपादित पुस्तक 'रिपोर्टर द एपिग्राफी जैन'के आधारसे ८५० लेख दिये हैं। डॉ० गेरिनोकी पुस्तक पैरिससे सन् १९०८ में प्रकाशित हुई थी। अतः इन दो भागोंमें सन् १९०८ तक प्रकाशित हुए लेख ही आ सके हैं। इन ८५० लेखोंमेंसे १४० लेख प्रथम भागमें आ चुके हैं तथा १७५ लेख श्वेताम्बर सम्प्रदायके हैं अतः इनकी सूचना-भर दी गयी है— शेष ५३५ लेखोंका पूरा विवरण दिया गया है। इस तरह पहले तीन भागोंमें कुल १०३५ लेखोंका संग्रह हुआ है।

सन् १९५७ में इस संग्रहके तीसरे भागके प्रकाशित होनेपर श्रीमान् डॉ० उपाध्येजीने हमें प्रस्तुत चौथे भागके संपादनके लिए प्रेरित किया। तबसे कोई चार वर्ष तक अवकाशके समयका उपयोग कर यह कार्य हमने किया। इसे कुछ विस्तृत रूप देनेके लिए हमने सन् १९६१ की गर्मियोंकी छुट्टियोंमें दो सप्ताह तक उटकमंड स्थित प्राचीनलिपिविद्-कार्यालयमें भी अध्ययन किया। इसके फलस्वरूप सन् १९०८ के बाद प्रकाशित हुए कोई ६५४ लेखोंका संग्रह प्रस्तुत भागमें प्रकाशित हो रहा है।

यद्यपि ये सब लेख पुरातत्त्वविभागके प्रकाशनोमें पहले प्रकाशित हो चुके हैं तथापि साधारण अभ्यासके लिए वे सुलभ नहीं हैं—उनका संपादन अँगरेजीमें हुआ है तथा उनका मूल्य भी बहुत अधिक है। अतः इस संग्रहमें उनका पुनः प्रकाशन उपयोगी होगा

प्रस्तावना

१. लेखोंका साधारण परिचय—

जैन शिलालेख संग्रहके प्रस्तुत चौथे भागमें कुल ६५४ लेख नगृहीत हैं। इन्हे समयके क्रममें प्रस्तुत किया है। इसमें सन्पूर्व चौथी सदीका १ (क्र० १) सन्पूर्व तीसरी सदीका १ (क्र० २), सन्पूर्व पहली सदीके ११ (क्र० ३ में १३,) सन् पहली सदीका १ (क्र० १४), दूसरी सदीके ४ (क्र० १५ से १८), पाँचवीं सदीका १ (क्र० १९), छठी सदीके दो (क्र० २० व २१), सातवीं सदी के २२ (क्र० २२ से ४३) आठवीं सदीके १० (क्र० ४४ से ५३), नौवीं सदीके २० (क्र० ५४ से ७३), दसवीं सदीके ४२ (क्र० ७४ से ११५), ग्यारहवीं सदीके ६७ (क्र० ११६ से १८२), बारहवीं सदीके १३४ (क्र० १८३ में ३१६), तेरहवीं सदीके ७३ (क्र० ३१७ से ३८९), चौदहवीं सदीके ३० (क्र० ३९० में ४१९), पन्द्रहवीं सदीके ३५ (क्र० ४२० से ४५४) सोलहवीं सदीके ४७ (क्र० ४५५ में ५०१), सत्रहवीं सदीके १५ (क्र० ५०२ से ५१६), अठारहवीं सदीके ११ (क्र० ५१७ से ५२७), तथा उन्नीसवीं सदीके ८ (क्र० ५२८ में ५३५) लेख हैं। शेष ११९ लेखोंका समय अनिश्चित है।

इन ६५४ लेखोंमें राजस्थानके २१, उत्तरप्रदेशके ९, बिहारके ४, बंगालका १, गुजरातके ३, मध्यप्रदेशके १५, उड़ीसके १६, महाराष्ट्रके ७, आन्ध्रके ४६, मद्रासके ८२, केरलका १ एवं मैसूर प्रदेशके ४४७ लेख हैं।

भाषाकी दृष्टिसे इन लेखोंका विभाजन इस प्रकार है— प्राकृतके १८, संस्कृतके ८८, हिन्दीके ३, तेलुगुके ८, तमिलके ७७ एवं कन्नडके ४६०।

प्रयोजनकी दृष्टिमें ये लेख मुख्यतः चार भागोंमें बाँटे जा सकते हैं—८७ लेखोंमें जिनमन्दिरोंके निर्माण अथवा जीर्णोद्धारका वर्णन है, १२६ लेखोंमें जिनमूर्तियोंकी स्थापनाका वर्णन है, २०८ लेखोंमें मन्दिरों तथा मुनियोंकी गाँव, जमीन, मुवर्ण, फरोंकी आय आदिके दानका वर्णन है, तथा १६४ लेखोंमें मुनियों, गृहस्थों तथा महिलाओंके ममाधिभरणका उल्लेख है। इनके अतिरिक्त १३ लेखोंमें गुहा-निर्माणका, ४ लेखोंमें (क्र० ४८६, ४८७, ४८९ तथा ५७६) मठोंके आधिक व्यवहारोंका, ३ लेखोंमें (क्र० ४२५, ४७१ तथा ४७२) साम्प्रदायिक ममज्ञीतोका एव एक लेख (क्र० ५०७) में सामाजिक क्रुद्धिके निवारणका वर्णन है।

लेखोंके इस स्थूल परिचयके बाद हम इनसे प्राप्त ऐतिहासिक तथ्योंका कुछ विस्तारसे अवलोकन करेंगे— पहले जैनमठके बारेमें तथा बादमें राज-वशों आदिके विषयमें।

२. जैनसंघका परिचय—

(अ) यापनीय सघ—प्रस्तुत संग्रहमें यापनीय सघका उल्लेख कोई १७ लेखोंमें हुआ है। इनमें सबसे प्राचीन लेख गण राजा अधिनीउका साम्रपत्र है जो छठी सदीके पूर्वार्धका है (ले० २०)। इसमें 'यापनिक' सघ-द्वारा अनुष्ठित एक मन्दिरके लिए राजा-द्वारा कुछ दान दिये जानेका वर्णन है।

इस मठके कुमिलि अथवा कुमुदि गणका उल्लेख चार लेखोंमें है (क्र० ७०, १३१, ६११ एव ६१२)। उनमें पहले लेख (क्र० ७०) में नौवीं सदीमें इस गणके महावीर गुरुके शिष्य अमरमुदल गुरुका वर्णन है। इन्होंने कीरैण्पावरुम् ग्रामके उत्तरमें देशवत्तलम जिनालयका निर्माण

१. पहल संग्रहके क्र० ९९, १०० तथा १०५ लेखोंमें ५वीं सदीके उत्तरार्धमें भी यापनीय संघका उल्लेख है।

२. पहले संग्रहमें इस गणका कोई उल्लेख नहीं है।

कराया था। दूसरे लेख (क्र० १३१) में सन् १०४५ में इस गणके कुछ आचार्योंका वर्णन है। इस समय चानुण्ड नामक अधिकारीने मुगुन्द ग्राममें एक जिनालय बनवाया था। अन्य दो लेख (क्र० ६११ तथा ६१२) अनिश्चित समयके निषिधि लेख हैं। इनमें पहला लेख इस गणके गान्त-चीरदेवके समाधिमरणका स्मारक है।

यापनीय संघका दूसरा गण पुन्नागवृक्षमूल गण चार लेखोंसे ज्ञात होता है (क्र० १३०, २५९, १६८, ६०७)। पहले लेखमें सन् १०४४ में इस गणके बालचन्द्र आचार्यको पूल नगरके नवनिर्मित जिनालयके लिए कुछ दान दिये जानेका वर्णन है। इसी लेखके उत्तरार्धमें सन् ११४५ में इस गणके रामचन्द्र आचार्यको कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है। इस गणका अगला उल्लेख (क्र० २५९) सन् ११६५ का है। इसमें इस गणकी गुरुपरम्परा इस प्रकार दी है - मुनिचन्द्र - विजयकीर्ति - कुमारकीर्ति त्रैविद्य - विजयकीर्ति (द्वितीय)। शिलाहार राजा विजयादित्यके सेनापति कालणने एकसम्बुगे नगरमें एक जिनालय बनवाकर उसके लिए विजयकीर्ति (द्वितीय) को कुछ दान दिया था। एक लेखमें (क्र० १६८) वृक्षमूलगणके मुनिचन्द्र त्रैविद्यके गिष्य चारुकीर्ति पण्डितको कुछ दान दिये जानेका वर्णन है - यह सन् १०९६ का लेख है। एक अनिश्चित समयके लेख (क्र० ६०७) में भी वृक्षमूलगणके एक मन्दिर कुसुमजिनालयका उल्लेख है। हमारा अनुमान है कि इन दो लेखोंका वृक्षमूलगण पुन्नागवृक्षमूलगणसे भिन्न नहीं होगा।

यापनीय संघके कण्डूर गणका उल्लेख तीन लेखोंमें है (क्र० २०७, ३६८, ३८६) इनमें पहला लेख १२वीं सदीके पूर्वार्धका है तथा इसमें

१. पहले संग्रहमें पुन्नागवृक्षमूलगणके दो उल्लेख सन् ८१२ तथा सन् ११०८ के हैं (क्र० १२४, २५०)।

इस गणके बाहुबली, शुभचन्द्र, मौनिदेव एव माघनन्दि उन चार आचार्यों-का वर्णन है - इनमें परम्पर सम्बन्ध बतनाया नहीं है। दूसरे ठागमें १३वीं मदीमें इस गणके एक मन्दिरका उल्लेख है तथा तीसरे लेखमें इसी समयकी एक जिनमूर्तिका उल्लेख है।^१

इसी मघके कारेयगणका उल्लेख १२वीं मदीके पूर्वार्धके एक लेख (क्र० २०९) में है। मुल्लभट्टाक तथा जिनदवन्धि ये इस गणके आचार्य थे।^२

पाँच लेखोंमें यापनीय मघका उल्लेख क्रिमी गण या गच्छके विना ही प्राप्य होता है (क्र० १४३, २९८-३००, ३८४)। इनमें पहला लेख मन् १०६० का है तथा इससे जयकीर्ति - नागचन्द्र - कनकप्रथित उन गुरुपरम्पराका पता चलता है। अगले दो लेख १२वीं मदीके हैं तथा इनमें मुनिचन्द्र एव उनके शिष्य पात्यकीर्तिके समाधिभरणका उल्लेख है। अन्तिम लेखमें १३वीं मदीमें श्रीकीर्ति आचार्यका उल्लेख है।

इस तरह प्रस्तुत संग्रहसे यापनीय मघका अस्तित्व छठी मदीमें तेरहवीं सदी तक प्रमाणित होता है।^३

(धा) मूलसूत्र—प्रस्तुत संग्रहमें मूलमघके अन्तर्गत सेनगण, देवी गण, मूरस्थगण, धलगारगण (बलात्कार गण) क्राण्णगण तथा निगमा-

१. पहले संग्रहमें इस गणका उल्लेख मन् ६८० में हुआ है (क्र० १६०)।

२. पहले संग्रहमें इस गणका वंश लेख मन् ८७७ तथा दसवीं मदी-पूर्वार्धके है (क्र० १३०, १८२)।

३. पहले संग्रहमें यापनीय मघके तीन और गणोंका उल्लेख है - कनकोपलसम्भूत वृक्षमूल गण, श्रीमूलमूलगण तथा कोटिमहुव गण- (तीसरा भाग-प्रस्तावना पृ० २७-२९)।

न्वय इन छह परम्पराओंके उल्लेख विस्तारसे मिलते हैं।¹ इनका अब क्रमग. विवरण प्रस्तुत करेंगे।

(भा १) मेनगण—इसका प्राचीनतम उल्लेख मन् ८२^१ का है (क्र० ५५)। इस लेखमें इसे 'चतुष्टय मूलसंघका उदयान्वय सेनमघ' कहा है। इसकी आचार्यपरम्परा मल्लवादी-सुमति पूज्यपाद-अपराजित इस प्रकार थी। लेखके समय गुजरातके राष्ट्रकूट दानक कर्कराज मुवर्णवपने अपराजित गुरुको कुछ दान दिया था।²

मेनगणके तीन उपभेद थे—पोगरि अथवा होंगरि गच्छ, पुस्तक गच्छ, एव चन्द्रकवाट अन्वय। पोगरि गच्छका पहला लेख (क्र० ६१) सन् ८९३ का है तथा उसमें विनयसेनके शिष्य कनकनेनको कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है। इस लेखमें इसे मूलमघ-सेनान्वयका पोगरियगण कहा है। दूसरा लेख (क्र० १३४) सन् १०४७ का है तथा इसमें नागसेन पण्डितको मेनगण-होंगरि गच्छके आचार्य कहा है। इन्होंने चालुक्य राज्ञी अक्कादेवीने कुछ दान दिया था।³

चन्द्रकवाट अन्वयका पहला लेख (क्र० १३८) सन् १०५३

१. पहले संग्रहमें उल्लिखित त्रेवगणका कोई लेख इस संग्रहमें नहीं है। पहले संग्रहमें मूलसंघके प्राचीन उल्लेख (क्र० ६०, ९४) पाँचवीं सदीके हैं। तथा उनमें गण आदिका उल्लेख नहीं है।
२. पहले संग्रहमें सेनगणका प्राचीनतम उल्लेख मन् ९०३ का है (क्र० १३७)। इसे त्रेसकर डॉ० चौधरीने करपना की थी कि आदिपुराणकर्ता जिनसेन ही मेनगणके प्रवर्तक होंगे (तीसरा भाग प्रस्तावना पृ० ४४)। किन्तु प्रस्तुत लेखसे जिनसेनके गुरु वीरसेनके समयमें ही सेनसंघकी परम्पराका अस्तित्व प्रमाणित होता है। वीरसेनने धवलाटीकार्का रचना सन् ८१६ में पूर्ण की थी।
३. पहले संग्रहमें पोगरिगच्छके चार उल्लेख सन् १०४५ से १२७१ तक के भाग हैं। (क्र० १८६, २१७, १८६, ५११)

का है तथा इसमें अजितसेन-कनकसेन-नरेन्द्रसेन-नयमेन इग परम्पराका वर्णन है। लेखके समय मन्द कुलके सरदार कचरसने नयमेनको कुछ दान दिया था। नयसेनके शिष्य नरेन्द्रसेन (द्वितीय) का उल्लेख मन् १०८१ के लेख (क्र० १६५) में मिलता है। दोण नामक अधिवारी-द्राग इन्हें कुछ दान दिया गया था। उन लेखोंमें नरेन्द्रसेन तथा नयमेनकी व्याकरण-शास्त्रमें निपुणताके लिए प्रशंसा की गयी है।^१

एक लेख (क्र० १४७) में चन्द्रकवाट वंशके शान्तिनन्दि भट्टारकका मन् १०६६ में उल्लेख है। इसमें मूलसूत्रका उल्लेख है किन्तु मनगणका उल्लेख नहीं है।

सेनगणके तीसरे उपभेद पुस्तकगच्छका वर्णन १४वीं शतीके एक लेख (क्र० ४१५) में है। उसमें ग्याङ्ग आचार्योंकी परम्परा बतलाई है। इस परम्पराके प्रभाकरसेनके शिष्य लक्ष्मीसेनके समाधिमरणका प्रस्तुत लेखमें वर्णन है। लक्ष्मीसेनके शिष्य मानसेनका समाधिमरण मन् १८०५ में हुआ था (ले० ४२१)।

प्रस्तुत, संग्रहके पाँच लेखोंमें सेनगणका उल्लेख किसी उपभेदके बिना हुआ है (क्र० ४९२, ४९३, ५०४, ५०७, ६२६)। पहले दो लेखोंमें मन् १५९७ में सोमसेन भट्टारकद्वारा एक मन्दिरके जीर्णोद्धारका वर्णन है। अगले दो लेखों (५०४, ५०७) में ममन्तभद्र आचार्यका मन् १६२२ एवं १६३२ में उल्लेख है। मन् १६२२ में उन्होंने एक मन्दिरका जीर्णोद्धार किया था तथा मन् १६३२ में दीवालीका त्यौहार मनानेके लिये कुछ सुधार किया था। अन्तिम लेख अनिश्चित समयका है तथा इसमें प्रसिद्ध वादी भावसेन त्रैविद्यचक्रवर्तिके समाधिमरणका उल्लेख है।^२

१ पहले संग्रहमें चन्द्रकवाट श्रन्वयका काष्ठ वर्णन नहीं है।

२ भावसेन कृत संस्कृत ग्रन्थ विश्वतत्त्वप्रकाश जीवरज ग्रन्थमाला (शोलापुर) द्वारा प्रकाशित हो रहा है। इसका प्रस्तावनामें हमने भावसेनकी समय १३वीं शतीका उत्तरार्ध निश्चित किया है।

इस तरह प्रस्तुत संग्रहके १३ लेखोंसे सेनगणका अस्तित्व आठवीं सदीसे सत्रहवीं सदी तक प्रमाणित होता है ।^१

(आ २) देशीगण—प्रस्तुत संग्रहमें देशीगणके पुस्तकगच्छ, आर्य-संग्रहकुल, चन्द्रकराचार्याम्नाय, तथा मणदान्वय इन चार परम्पराओंका उल्लेख हुआ है ।

पुस्तकगच्छका एक उपभेद पनसौगे (अथवा हनमौगे) बलि था । इसका पहला उल्लेख (क्र० ७४) दसवीं सदीके प्रारम्भका है^२ तथा इसमें श्रीधरदेवके शिष्य नेमिचन्द्रके समाधिमरणका उल्लेख है । इस बलिका दूसरा लेख (क्र० २७२) सन् ११८० के आसपासका है तथा इसमें नयकीर्तिके शिष्य अब्यात्मी बालचन्द्र-द्वारा एक मूर्तिकी स्थापनाका वर्णन है । इस शाखाके चार लेख और हैं (क्र० २९२, ३३५, ४१६ तथा ५३८) जो बारहवींसे चौदहवीं सदी तकके हैं । इनमें ललितकीर्ति, देवचन्द्र तथा नयकीर्ति आचार्योंका उल्लेख है । अन्तिम लेखमें 'घनशोकवली' इस प्रकार इस शाखाके नामका संस्कृतीकरण किया गया है ।

पुस्तकगच्छका दूसरा उपभेद इंगुलेश्वर बलि था । इसका उल्लेख सात लेखोंमें (क्र० २९०, ३१०, ३६९, ३७८, ३८२, ६०६, ६४२) मिला है । ये सब लेख १२वीं—१३वीं सदीके हैं । तथा इनमें हरिचन्द्र, श्रुतकीर्ति, भानुकीर्ति, माघनन्दि, नेमिदेव, चन्द्रकीर्ति तथा जयकीर्ति

१. सेनगणकी पुष्करगच्छ नामक शाखा कारंला (विडम्) में १५वीं सदीसे २०वीं सदी तक विद्यमान थी ; इसका विस्तृत वृत्तान्त हमारे ग्रन्थ 'मष्टारक सम्प्रदाय' में दिया है । पुष्करगच्छ सम्भवतः पोगिरि गच्छका ही संस्कृत रूप है ।

२. यही इस संग्रहमें देशीगणका पहला उल्लेख है । पहले संग्रहमें देशीगणके उल्लेख सन् २६० (क्र० १२७) से मिले हैं तथा पनसौगे शाखाके उल्लेख सन् १०८० (क्र० २२३) से प्राप्त हुए हैं ।

इन आचार्यों के उल्लेख मिलते हैं ।¹

प्रस्तुत संग्रहमें पुस्तकगच्छके उल्लेख बिना किसी उपभेदके भी कई लेखोंमें मिलते हैं । इनमें पहला लेख (क्र० १६४) सन् १०८१ का है तथा इसमें सकलचन्द्र भट्टारकका उल्लेख है । इस प्रकारके अन्य लेख १७ है (क्र० १७१, १७७-८, १९०, २०३, २३४, २५१, ३१८-९, ३६१-६, ४९०, ५६१) । ये लेख १६वीं सदी तकके हैं । इनसे कोई विस्तृत गुरुपरम्पराका पता नहीं चलता^२ ।

देशीगणके दूसरे उपभेद आर्यसंघग्रहकुलका उल्लेख एक ही लेख (क्र० ९४) में मिला है । यह लेख दसवीं सदीका है तथा इसमें कुलचन्द्रके शिष्य शुभचन्द्रका उल्लेख है । विशेष यह है कि यह लेख उड़ीसाके खण्डगिरिपर्वतपर मिला है जब कि देशीगणके अन्य उल्लेख मैसूर प्रदेशके हैं ।^३

देशी गणका तीसरा उपभेद चन्द्रकराचार्याम्नाय भी एक ही लेखसे ज्ञात होता है (क्र० २१७) तथा यह मध्यप्रदेशमें मिला है । इसमें प्रतिष्ठाचार्य शुभद्र-द्वारा १२वीं सदीके पूर्वार्धमें एक मन्दिरकी प्रतिष्ठाका उल्लेख है ।^४

देशी गणके चौथे उपभेद मैणदान्दयके शुभचन्द्र आचार्यका एक उल्लेख १३वीं सदीमें मिला है (क्र० ३७२) ।^५

१. पहले संग्रहमें ब्रह्मेश्वर बलिकं उल्लेख सन् ११८३ (क्र० ४११) से सन् १५४४ (क्र० ६७३) तकके हैं ।
२. पहले संग्रहमें पुस्तक गच्छक उल्लेख सन् ८६० (क्र० १२७) से सन् १८१३ (क्र० ७५३) तक के हैं ।
- ३, ४. पहले संग्रहमें इन दोनों उपभेदोंका कोई उल्लेख नहीं है ।
५. पहले संग्रहमें ह्यम् अन्वयका उल्लेख नहीं है इससे मिलता जुलता एक उपभेद बाणद बलि है जो पुस्तकगच्छके अन्तर्गत था (क्र० ४७८) इसका उल्लेख सन् १२३२ का है ।

किसी उपभेदके बिना भी देगीगणके कई उल्लेख मिले हैं। इनमें दो लेखोंमें (क्र० ८३, १६९) सन् ९५० तथा १०९६ में गुणचन्द्र और रविचन्द्र आचार्योंका उल्लेख है। इन लेखोंमें देगी गणके साथ सिर्फ कोण्डकुन्दान्वय यह विशेषण है। कोई १८ लेखोंमें मूलमघ - देशीगण इस प्रकार उल्लेख है। इनमें प्राचीनतर लेख (क्र० १९३, २२९, २५६) बारहवीं सदीके हैं। कोई ८ लेखोंमें देगीगणके साथ अन्य कोई विशेषण नहीं है। ऐसे लेखोंमें प्राचीनतर लेख (क्र० १२६, १३९, १४०) सन् १०३२ तथा १०५४ के हैं और इनमें अष्टोपवासी कनकनन्दि आचार्योंको कुछ दान देनेका वर्णन है।

(आ ३) कोण्डकुन्दान्वय—देगी गणके पुस्तक गच्छको प्राय कोण्डकुन्दान्वय यह विशेषण दिया गया है। कुछ लेखोंमें किसी संघ या गणके बिना सिर्फ कोण्डकुन्दान्वयका उल्लेख है। ऐसे लेखोंमें प्राचीनतर लेख (क्र० १८०, २२२) ग्यारहवीं-त्रारहवीं सदीके हैं। एक प्राचीन लेख (क्र० ५४) में सन् ८०८ में कोण्डकुन्देय अन्वयके सिर्मलगुरु गणके कुमारनन्दि-एलवाचार्य-वर्धमानगुरु इस परम्पराका उल्लेख है। वर्धमानगुरुको राष्ट्रकूट राजा कम्भराजने एक ग्राम दान दिया था। इस लेखमें कोण्डकुन्देय अन्वय यह शब्द प्रयोग है जो स्पष्टतः कोण्डकुन्दे स्थानका सूचक है।

(आ ४) सूरस्य गण - प्रस्तुत संग्रहमें इस गणका पहला उल्लेख सन् ९६२ का है (क्र० ८५)। इसमें प्रभाचन्द्र - कन्नेलेदेव-रविचन्द्र-

१. पहले संग्रहमें कोण्डकुन्दान्वयका प्रथम उल्लेख सन् ७९७ में (क्र० १२२) बिना किसी गणके हुआ है। वहाँ सिर्मल-गुरु गणका कोई उल्लेख नहीं है। कोण्डकुन्दान्वय यह विशेषण क्वचित् द्राविड़ संघ, सेनगण आदिके लिए भी प्रयुक्त हुआ है (तीसरा भाग प्रस्तावना पृ० ४५, ५१)

रविनन्दि-एलाचार्य इस परम्पराका वर्णन है। गग राजा मारसिंह २ ने एलाचार्यको एक ग्राम अर्पण किया था।^१

सूरस्थ गणके दो उपभेदोका पता चला है - कौरर गच्छ तथा चित्रकूटान्वय।^२ कौरर गच्छका एक ही लेख है (क्र० ११७) तथा इसमें सन् १००७ में अर्हणन्दि पण्डितका वर्णन है। चित्रकूटान्वयके १० लेख हैं। पहले लेखमें (क्र० १५३) सन् १०७१ में इस अन्वयके श्रीनन्दि पण्डितकी एक शिष्याको कुछ दान दिये जानेका वर्णन है। श्रीनन्दिकी गुरुपरम्परा इस प्रकार थी - चन्द्रनन्दि-दामनन्दि-सकलचन्द्र-कनकनन्दि-श्रीनन्दि। श्रीनन्दि तथा उनके गुरुवन्धु भास्करनन्दिके समा-धिलेख सन् १०७७-७८ के हैं (क्र० १६०)। इस अन्वयका तीसरा लेख (क्र० १५८) सन् १०७४ का है तथा इसमें अर्हणन्दिके शिष्य आर्य पण्डितको कुछ दान मिलनेका वर्णन है। अगले दो लेखोंसे (क्र० २३७-३८) इस अन्वयकी एक परम्पराका पता चलता है जो इस प्रकार थी - वासुपूज्य-हरिणन्दि-नागचन्द्र। हरिणन्दि तथा नागचन्द्रको सन् ११४८ में कुछ दान मिला था। इस अन्वयके अन्य लेख अनिश्चित समयके हैं। इस प्रकार कोई १४ लेखोंसे सूरस्थ गणका अस्तित्व दसवीं सदीसे बारहवीं सदी तक प्रमाणित होता है।^३

(भा ५) बलगार-(बलास्कार)-गण - इस गणका पहला उल्लेख

१. सूरस्थ गणका प्राचीन लेख पहले संग्रहमें सन् १०५४ का है (क्र० १८५)।
२. पहले संग्रहमें इन दोनों उपभेदोंका वर्णन नहीं है। वहाँ चित्र-कूटान्वयका सम्बन्ध बलगार गणसे भी पाया गया है (क्र० २०८)
३. कुछ लेखोंमें सेनगण और सूरस्थगणको (जिसे कहीं-कहीं शूरस्थ भी कहा है) अभिन्न माना है। इसका विवरण हमने 'मठारक सम्प्रदाय' के सेनगण विषयक प्रकरणमें दिया है।

सन् १०७१ का है (क्र० १५४) ।^१ इसमें मूलसंघ-नन्दिसंघका बलगार गण ऐसा इसका नाम है तथा इसके ८ आचार्योंकी परम्परा दी है जो इस प्रकार है — वर्धमान-महावादी विद्यानन्द—उनके गुरुबन्धु ताकिकार्क माणिक्यनन्दि-गुणकीर्ति-विमलचन्द्र-गुणचन्द्र—गण्डविमुक्त—उनके गुरुबन्धु अमयनन्दि ।^२ अगले लेख (क्र० १५५) में इसी परम्पराके तीन और आचार्योंके नाम हैं—अमयनन्दि-सकलचन्द्र-गण्डविमुक्त २—त्रिभुवनचन्द्र । इन लेखोंमें गुणकीर्ति तथा त्रिभुवनचन्द्रको मिले हुए दानोंका विवरण है । लेख १५७ में सन् १०७४ में पुनः त्रिभुवनचन्द्रका उल्लेख है । इस गणके अगले महत्त्वपूर्ण लेख (क्र० ३४२, ३७६) तेरहवीं सदीके हैं । इनमें शास्त्रसारसमुच्चय आदि ग्रन्थोंके कर्ता माघनन्दि आचार्यका वर्णन है । इनकी गुरुपरम्परामें १९ आचार्योंके नाम दिये हैं किन्तु उनका क्रम व्यवस्थित प्रतीत नहीं होता ।

चौदहवीं सदीमें बलात्कारगणके साथ सरस्वतांगणका उल्लेख मिलता है । इसकी एक परम्पराके आचार्य अमरकीर्ति थे । इनके शिष्य माघनन्दिने सन् १३५५में एक मूर्ति स्थापित की थी (क्र० ३९३) इसी परम्पराके तीन लेख और हैं । इनमें वर्धमान, धर्मभूषण तथा वर्धमान २ इन भट्टारकोंका उल्लेख है । ये लेख सन् १३९५ तथा १४२४ के हैं (क्र० ४०३,

१ इस लेखसे बलगार गणकी परम्पराका अस्तित्व सन् ९०० तक ज्ञान होता है । अतः डॉ० चौधरीकी यह कल्पना गलत प्रतीत होती है कि यह बलहारि गणका ही रूपान्तर है । बलहारि गणका उल्लेख पहले संग्रहमें सन् ६५० के लगभग मिला है (तीसरा भाग प्रस्तावना पृ० २६, ३०) ।

२ इस परम्परामें माणिक्यनन्दिका नाम उल्लेखनीय है । हमारा अनुमान है कि परोक्षामुखके कर्ता माणिक्यनन्दि इनसे अभिन्न होंगे !

४०४, ४३४)।^१

बलात्कारगण-सरस्वतीगच्छकी उत्तर भारतीय शाखाओंके तीन लेख इस संग्रहमें हैं (क्र० ४४८, ४६०, ४६८)। इनमें सन् १५०० में रत्न-कीर्तिका तथा सन् १५३१ में धर्मचन्द्रका उल्लेख है।

(आ ६) क्राणूर गण — इस गणके उल्लेखोंमें पहला दसवीं सदीका है (क्र० ९६)।^१ इसमें एक विस्तृत गुरुपरम्पराका वर्णन है किन्तु लेखके बीच-बीचमें घिस जानेसे इस परम्पराका ठीक ज्ञान नहीं होता। इस लेखमें मुनिचन्द्र आचार्योंके एक शिष्यको कुछ दान मिलनेका उल्लेख है।

क्राणूर गणके तीन उपभेदोंके उल्लेख मिले हैं — तिन्त्रिणी गच्छ, मेपपाषाण गच्छ तथा पुस्तकगच्छ। तिन्त्रिणी गच्छके ६ लेख हैं (क्र० २१२, २९१, ३२३, ४७६, ५६५, ६१९)। पहले दो लेख वाहारवी सदीके हैं^२ तथा इनमें मेघचन्द्र तथा पर्वतमुनि इन आचार्योंका वर्णन है। तीसरा लेख सन् १२०७ का है तथा इसमें अनन्तकीर्ति भट्टारकको कुछ दान मिलनेका वर्णन है। अनन्तकीर्तिके पूर्ववर्ती छह आचार्योंके नाम भी इस

१ इस परम्पराका वर्णन पहले संग्रहके क्र० ५७२ तथा ५८५ में भी है।

२. पहले संग्रहमें ऐसे दो लेख हैं (क्र० ६१७, ७०२)। क्र० ६१७ में इसे मठसारङ्ग गच्छ पढा गया है, यह 'श्रीमद्धारङ्ग गच्छ'-अर्थात् सरस्वतीगच्छका ही रूपान्तर है। उत्तर भारतमें बलात्कार-गणकी दस शाखाएँ १४वीं सदीसे २०वीं सदी तक विद्यमान थीं। इनका विस्तृत वृत्तान्त हमने 'भट्टारक सम्प्रदाय' में दिया है।

३. पहले संग्रहमें क्राणूरगणका प्राचीनतम लेख सन् १०७४ का (क्र० २०७) है।

४. पहले संग्रहमें तिन्त्रिणीगच्छका पहला लेख सन् १०७५ का (क्र० २०९) है।

लेखमें दिये हैं। इस गच्छके चौथे लेख (क्र० ४७६) में सन् १५५६ में देवकीर्ति-मुनिचन्द्र-देवचन्द्र यह परम्परा दी है। लेखके ममय देवचन्द्रको कुछ दान मिला था।

मेघपापाणगच्छके दो लेख हैं (क्र० २१४, ६०३)। पहले लेखमें सन् ११३० में प्रभाचन्द्रके शिष्य कुलचन्द्र आचार्यका वर्णन है। दूसरा लेख इस गच्छकी एक बमदिके बारेमें है।^१

पुस्तक गच्छका एक लेख (क्र० २४०) सन् ११५० का है किन्तु यह बीच-बीचमें घिमा हुआ है अतः इसका तात्पर्य स्पष्ट नहीं है।^२

बारहवीं-तेरहवीं सदीके चार लेखोंमें (क्र० २०२, ३१२, ३२६, ३७३) क्राणूरगणके कनकचन्द्र, माधवचन्द्र तथा सकलचन्द्र आचार्योंका वर्णन है। इनका गच्छ नाम अज्ञात है।

इस तरह कोई १५ लेखोंसे क्राणूरगणका अस्तित्व दसवीं सदीसे सोलहवीं सदी तक प्रमाणित होता है।

(श्रा ७) निगमान्वय—मूलमंघ-निगमान्वयका एक लेख (क्र० ३६०) सन् १३१० का है। इसमें कृष्णदेव-द्वारा एक मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है।^३

उपर्युक्त विवरणसे मूलमंघके भेद-प्रभेदोंका अच्छा परिचय मिलता है। कोई १५ लेखोंमें किमी भेदका उल्लेख किये बिना मूलसंघका उल्लेख मिलता है। इनमें प्राचीनतर लेख (क्र० ११२, १४५, २०४) दसवीं-

१. पहले संग्रहमें मेघपापाणगच्छका पहला उल्लेख सन् १०७९ का है (क्र० २१६)

२. पहले संग्रहमें इस गच्छका कोई उल्लेख नहीं है (देशीगण तथा मेनगणमें भी पुस्तकगच्छ थे उनका वर्णन पहले आ चुका है।)

३. पहले संग्रहमें इस अन्वयका कोई लेख नहीं है।

ग्यारहवीं सदीके हैं। इस तरह प्रस्तुत संग्रहमें कुल मित्रानर मूलमधके कोई १५० लेख आये हैं।

(इ) गौड मंघ—इस सघका एक लेख (क्र० ८८) मिला है। इसमें सोमदेवसूरि-द्वारा एक जिनालयके निर्माणका उल्लेख है।^१

(ई) द्राविड सघ—इस सघके नन्दिगण-अरुगल अन्वयका एक लेख ग्यारहवीं सदीका है (क्र० १७५)

इसमें शान्तिमुनि-वादिराज-वर्धमान यह परम्परा दी है। वर्धमानके समाधिमरणका स्मारक उनके गुरुबन्धु कमलदेवने स्थापित किया था। इस अन्वयका अगला लेख सन् ११९२ का है (क्र० २८२) तथा इसमें वासुपूज्यके शिष्य वज्रनन्दिका वर्णन है। इनकी गुरुपरम्परा काफी विस्तार-से दी है किन्तु उसमें आचार्योंका क्रम स्पष्ट नहीं है। चौदहवीं सदीके एक लेखसे (क्र० ३४४) इस अन्वयके श्रीपाल-पद्मप्रभ-धर्ममेन इस परम्पराका पता चलता है।

द्राविड सघके तीन लेखोंमें (क्र० २५२, ३५७, ४०९) अरुगल अन्वयका उल्लेख नहीं है। ये लेख सन् ११५९, १२९५ तथा १४वीं सदीके हैं। अन्तिम दो लेखोंमें क्रमशः गुणसेन तथा लोकाचार्यका नाम ज्ञात होता है। इस तरह प्रस्तुत संग्रहके कोई आठ लेखोंसे इसका अन्तिम १४वीं सदीसे १४वीं सदी तक प्रमाणित होता है।^२

१. गौडसघका पहले संग्रहमें या अन्यत्र साहित्यमें कोई वर्णन नहीं है। सोमदेवसूरिके लिखित यशस्तिलकचम्पू तथा नीतिवाक्यामृत ये ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं।
२. पहले संग्रहमें द्राविड सघके उल्लेख सन् ९९० (क्र० १६६) से मिले हैं। इसे कहीं-कहीं मूलसघ-द्राविडान्वय और द्राविड सघ-कोण्डकुन्दान्वय कहा है (तीसरा भाग प्रस्तावना पृ० ३५-४३)

(द) माथुर मघ—इसका उल्लेख सन् ११७० के एक लेखमें (क्र० २६५) है। इस मंघके महामुनि गुणभद्र-द्वारा इस लेखकी रचना की गयी थी। लेखमें लोलक ध्रेष्ठी-द्वारा पार्श्वनाथमन्दिरके निर्माणका वर्णन है।^१

(क) पंचस्तूप निकाय—प्रस्तुत संग्रहके एक लेख (क्र० १९) में काशीके पंचस्तूप निकायके आचार्य गुहनन्दिका वर्णन है। इनके शिष्योंके लिए वटगोहाली ग्राममें एक विहार था जिसे ब्राह्मण नाथशमनि सन् ४७९ में कुछ दान दिया था।^२

(क) जम्बूखण्डगण—इसका उल्लेख छठी-सातवीं सदीके एक लेखमें (क्र० २२) हुआ है। इसके आचार्य आर्यणन्दिको सेन्द्रक राजा इन्द्रगन्दने कुछ दान दिया था।

(क) सिंहचूर गण—इसका एक लेख (क्र० ५६) मिला है। इसमें सन् ८६० में सम्राट् अमोघवर्ष-द्वारा इस गणके नागनन्दि आचार्यको कुछ दान दिये जानेका वर्णन है।^३

(ल) जैन मघके विषयमें साधारण विचार—अब तक जैन मुनियोंके विभिन्न मघोंका जो परिचय दिया गया है उससे स्पष्ट है कि इनमें व्यवहार-

१. माथुर मघ बादमें काष्ठासघका एक गच्छ बन गया था। इसका विस्तृत वृत्तान्त हमने 'मठारक सम्प्रदाय' में दिया है।

२. धवलाटीकाके कर्ता धीरसेन आचार्य पंचस्तूप अन्वयके ही थे (धवला-प्रशस्ति)। किन्तु उनके प्राश्रित्य गुणभद्र उन्हें सेनान्वयका कहते हैं। हो सकता है कि पंचस्तूपान्वयको ही बादमें सेनान्वय नाम प्राप्त हुआ हो। किन्तु सेनान्वय सन् ७८० के लगभग अस्तित्वमें आ चुका था यह पहले स्पष्ट कर चुके हैं।

३. जम्बूखण्ड गण तथा सिंहचूर गणका वर्णन पहले संग्रहमें नहीं है।

की दृष्टिसे कोई खास भेद नहीं था। इन सभी सघोके मुनि मठ-मन्दिर बनवाते थे, उनके लिए खेत, घर, बगीचे, गाँव आदिका दान ग्रहण करते थे, राजमभावोंमें वादविवाद करते थे, प्रसगानुकूल राजकार्यमें मदद देते थे तथा मन्त्रमाघना, ज्योतिष और वैद्यकका आश्रय लेकर जैन मंघका प्रभाव बढ़ानेकी कोशिश करते थे। ये सब प्रवृत्तियाँ जैन माघुके मूलभूत उद्देश-वीतराग भावकी साधनाके कर्हातक अनुकूल हैं यह प्रश्न विचारणीय है। इन्हें रोकनेका ऐसा कोई व्यवस्थित प्रयत्न दिगम्बर सम्प्रदायमें हुआ हो ऐसा प्रमाण नहीं मिला है।^१

यह तो नहीं कहा जा सकता कि दिगम्बर माघुमघके सभी मुनि इस प्रकारकी प्रवृत्तिप्रधान गतिविधियोंमें ही मग्न रहते थे — माघुसघका एक वर्ग अवश्य ही प्राचीन शास्त्रोक्तमार्गका निस्पृह भावमें अनुसरण करता रहा होगा। किन्तु लौकिक कार्योंमें दूर रहनेके कारण इन वीतराग साधुओंका शिलालेखों आदिमें वर्णन मिलना कठिन है।

३ राजवंशोंका आश्रय—

(अ) उत्तर भारतके राजवंश—प्रस्तुत संग्रहमें जैन मघका सम्मान करनेवाले जिन राजवंशोंका उल्लेख है उनमें कर्लिंगके राजा स्वाग्नेलका वंश प्रथम व प्रमुख है। सन्पूर्व पहली सदीमें इस वंशके तीन राजपुरुषोंद्वारा जैन माघुओंके लिए खण्डगिरि पर्वतपर कई गुहाएँ बनवायी गयी। स्वाग्नेलकी पटगनी, महाराज कुदेषथी तथा कुमार वडुख ये वे तीन राजपुरुष हैं (ले० ३-५)। यहींके एक लेख (क्र० ९) में नगरके न्यायाधीश

१ श्वेताम्बर सम्प्रदायमें इन प्रवृत्तियोंको रोकनेके कुछ प्रयत्न होते रहे हैं। इस विषयमें प० नाथूरामजी प्रेमीका लेख 'चैत्यवासियों और बनवासियों' (जैन साहित्य और इतिहास-द्वितीय संस्करण) देखने योग्य है।

गुप्त-द्वारा निर्मित गुहाका भी उल्लेख है ।^१

पाटलिपुत्रके गुप्त राजाओंके समयका एक लेख (क्र० १९) प्रस्तुत नग्नमें है । यह मन् ४७९ का है तथा इसमें एक श्राद्धाण-द्वारा वटगोहालीके जैन विहारको कुछ दान मिलनेका वर्णन है ।^२

हस्तिनापुर (गजम्यान) के राष्ट्रकूट वंशके राजा विद्मधराजका उल्लेख मन् ९४० के एक लेख (क्र० ८१) में मिला है । आचार्य वासुदेवके उपदेशमें इस राजाने ऋषभदेवका एक मन्दिर बनवाया था । इस मन्दिरके लिए राजाने अपनी भुवनेतुला कराकर दान दिया था तथा नगरके व्यापारियोंमें कुछ करोंको माफ भी अपित की थी । यह कार्य मन् ९१७ में हुआ था । विद्मधराजके पुत्र मम्मटने मन् ९४० में उक्त दानको पुनः मम्मटि दी । मम्मटके पुत्र धवलकी वीरताका विस्तारसे वर्णन इस लेखमें मिलता है । धवलके पुत्र बालप्रसादके समय मन् ९९७ में उक्त मन्दिरका जीर्णोद्धार हुआ था ।^३

उड़ीसाके राजा उद्योतकेसरीके समय — दसवीं सदीके दो लेख (क्र० ९३-९४) इस नग्नमें हैं । इनमें खण्डगिरिके पुरातन मन्दिरके जीर्णोद्धारका वर्णन है ।

१. पहले सम्राटमें गारवेलके जीवनके विषयमें एक विस्तृत लेख (क्र० ००) आ चुका है । उसके पहले सौर्य सम्राट् अशोकके लेखमें (क्र० १) निर्ग्रन्थों (जैन) की देवमालिका भी उल्लेख हुआ है ।
२. पहले सम्राटमें गुप्तकालके तीन लेख (क्र० ९१-९३) आये हैं । उसके पहले शक और कुषाण राजाओंके कई लेख आ हैं ।
३. पहले सम्राटमें इस राजवंशका उल्लेख नहीं है । वहाँ इसके पहले गुर्जर प्रतिहार राजा भोजका एक लेख (क्र० १२८) है । इसी समयके कच्छप्रजात तथा चण्डेल वंशोंके भी कुछ लेख पहले सम्राटमें आये हैं (क्र० १५३, २२८ आदि) ।

मालवाके परमार वंशके राजा भोजके समयका - ग्यारहवीं शती (पूर्वाध) का एक लेख (क्र० १३५) मिला है। इसमें मामन्त यशोवर्मा-द्वारा कलकलेज्वर तीर्थके मुनिमुव्रतमन्दिरके लिए कुछ दान दिये जानेका वर्णन है। इसी वंशके उदयादित्यके समयका एक मन्दिर ऊतम है (क्र० १७४)।

गुजरातके चौलुक्य राजा भीमदेव (प्रथम) का एक लेख मिला है (क्र० १४६)। इसने सन् १०६६ में वायड अघिष्ठानकी वमतिष्ठाके लिए कुछ भूमि दान दी थी। इसी वंशके राजा भीमदेव (द्वितीय) के समय - बारहवीं शतीके अन्तका एक लेख (क्र० २८७) है। इसमें वैरावलके चन्द्रप्रभमन्दिरके जीर्णोद्धारका वर्णन है। अणहिल्लपुरमें राजा-द्वारा नन्दिसधके आचार्य श्रीकीर्तिके सम्मानका भी इसमें उल्लेख है।

वुन्देलखण्डके कालचुरि वंशका एक लेख मिला है (क्र० २१७)। इसमें राजा गयाकर्ण तथा उसके सामन्त गौरहणदेवके समय - बारहवीं शतीके पूर्वार्धमें एक मन्दिरके निर्माणका वर्णन है।

राजस्थानके चाहमान वंशके पाँच लेख हैं (क्र० २१८, २३१-३२, २३५, २६५)। पहले चार लेख नटोलके राजा रामपालके समयके सन् ११३३ से ११४६ तकके हैं। इनमें पहले लेखमें गनी मीनलदेवी-द्वारा यतिथीके लिए दानका तथा बादके लेखोंमें ठाकुर राजदेव-द्वारा मन्दिर

१ इस वंशका उल्लेख पहले संग्रहमें नहीं है। परमार वंशकी चौदहवाँ व चन्द्रावती शाखाके लेख यहाँ अन्तर्गत हैं। (क्र० ३०५, ४७१, ४७२)।

२ चौलुक्य कुमारपालका एक लेख (क्र० ३३२) पहले संग्रहमें है।

३ इस वंशके कोई लेख पहले संग्रहमें नहीं है।

४. पहले संग्रहमें नटोलके चाहमान वंशके दो (क्र० ३५७-५८) तथा जालौरके चाहमान वंशका एक (क्र० ५०७) लेख है।

और यतियोंके लिए कुछ दानका वर्णन है। पाँचवाँ लेख शाकम्भरीके चाहमान राजा सोमेश्वरके समयका सन् ११७० का है। इसमें विजोलियाके पार्व्वनाथ मन्दिरके लिए पृथ्वीराज २ तथा सोमेश्वर-द्वारा दो गाँव दान दिये जानेका वर्णन है। इस राजवशके कोई ३० पीढियोंका वर्णन इस लेखमें मिलता है।^१

मुगल साम्राज्यके तीन लेख इस संग्रहमें हैं (क्र० ४८१, ५०६, ५१२)। पहला लेख अकबरके समयका सन् १५७१ का है। इसमें महेश्वरके आदिनाथ मन्दिरका जीर्णोद्धार मण्डलोई सुजानराय-द्वारा होनेका वर्णन है। शाहजहाँके राज्यका एक लेख (क्र० ५०६) सन् १६२८ का है। इसमें भी एक जिनमन्दिरके जीर्णोद्धारका वर्णन है। तीसरा लेख सन् १६६२ का — औरंगजेबके समयका है। इसमें राजा जयसिंहके मन्त्री मोहनदास-द्वारा एक मन्दिरके निर्माणका वर्णन है।^२

(आ) दक्षिण भारतके राजवंश—

(आ १) गग राजवंश—इस वंशके १३ लेख प्रस्तुत संग्रहमें हैं। इनमें पहला (क्र० २०) राजा अविनीतका एक दानपत्र है जो छठी सदीके पूर्वार्धका है। इसमें यावनिक सघके जिनमन्दिरके लिए राजा-द्वारा कुछ भूमिके दानका वर्णन है। दूसरा लेख (क्र० २४) सातवी सदीके अन्तका शिवकुमार पृथ्वीकोगुणिवृद्धराजके समयका है। इसमें राजा तथा कुछ अन्य सज्जनो-द्वारा एक जिनमन्दिरके लिए भूमिदानका वर्णन है। तीसरे लेखमें (क्र० ४८) आठवी सदीके अन्तमें राजा श्रीपुरुष तथा नवी सदीके प्रारम्भमें राजा शिवमारके समय कुछ अधिकारियों-द्वारा एक जिनमन्दिरके

१ पहले संग्रहमें इसके बाद गुजरातके वाघेल और ग्वालियरके तोमर वंशके कुछ लेख हैं।

२. पहले संग्रहमें मुगल राज्यके कई लेख श्वेताम्बर सम्प्रदायके हैं। एक लेख (क्र० ७०२) दिगम्बर सम्प्रदायका भी है।

लिए दो गाँवोंके दानका वर्णन है। चौथे लेखमें (क्र० ६३) राजा दुग्मार-द्वारा नवी सदीमें एक मन्दिरको भूमिदान देनेका उल्लेख है। इसके बाद दसवी मदीके प्रारम्भके एक लेखमें (क्र० ७६) एरेय राजाके समय एक जैन आचार्यके समाधिमरणका वर्णन है। सन् ९५० के एक लेख (क्र० ८३) में राजा व्रतुगकी रानी पद्मव्ररसि-द्वारा निर्मित जिनमन्दिरके लिए कुछ दानका वर्णन है। सन् ९६२ में राजा मारसिंह २ ने अपनी माता-द्वारा निर्मित मन्दिरके लिए एलाचार्यको एक गाँव दान दिया था (क्र० ८५) इसी वर्षमें इस राजाने मुजार्थ नामक जैन ब्राह्मणको भी एक गाँव दान दिया था (क्र० ८६)। सन् ९७१ में इस राजाके समय शिखजिनालयको कुछ दान मिलनेका वर्णन एक लेखमें (क्र० ८८) में है। दसवी मदीके अन्तके एक लेख (क्र० ९६) में राजा रक्कसगग तथा नन्नियगगके समय कुछ दानका वर्णन है। एक लेख (क्र० १५४) में व्रतुग राजा तथा रानी रेवकनिर्मडिका उल्लेख है। इनकी स्मृतिमें गगकन्दर्प नामक जिनमन्दिर अण्णिगेरे नगरमें बनवाया गया था। एक अन्य लेखमें (क्र० २०७) पुन रानी रेवकनिर्मडिका उल्लेख हुआ है। इस तरह गगवशके राज्यकालमें जैनसंघकी स्थिति सदा ही प्रभावशाली रही थी।^१

(भा २) कदम्ब वंश - इस वंशके स्वतन्त्र राज्यकालका एक लेख (क्र० २१) इस संग्रहमें है जो छठी सदीके राजा रविवर्मके समयका है। इस राजाने एक सिद्धायतनके लिए कुछ भूमि दान दी थी।^२ गण्डकूट तथा चालुक्य साम्राज्यमें कदम्बवंशके कई सामन्त प्रादेशिक ग्रामक थे। ऐसे सामन्तोंके कोई १५ लेख मिले हैं। सन् ८९० के एक

१ पहले संग्रहमें गग वंशके कई लेख हैं, जिनमें सबसे प्राचीन लेख (क्र० ९०) पाँचवीं सदीके उत्तरार्धका है।

२. पहले संग्रहमें इस वंशके दस लेख हैं जो पाँचवीं व छठी सदीके हैं (क्र० ९६-१०५)।

लेखमें कदम्ब महासामन्त अलियमरस-द्वारा निर्मित जिनमन्दिरका वर्णन है (क्र० ६०) । सन् १०४५ के एक लेखमें कौकण प्रदेशमें महामण्ड-
लेश्वर चट्टय्यदेवके शासनका उल्लेख है (क्र० १३१) तथा एक मन्दिर-
को कुछ दान मिलनेका वर्णन है । सन् १०८१ के दो लेखोंमें कदम्ब राजा
गोवलदेव तथा 'कादम्बचक्रवर्ति' वीरमके समय एक वसदिको दान मिलने-
का तथा एक महिलाके समाधिमरणका वर्णन है (क्र० १६३-४) ।
सन् १०९६ में कदम्ब कुलके सामन्त एरेयगकी रानी असवब्बरसिने एक
मन्दिर बनवाया था (क्र० १६९) । सन् ११२३ और ११३० के दो
दानलेखोंमें (क्र० २०२ व २१४) कदम्ब सामन्त तैलपदेव तथा मयूर-
वमकि शासनका उल्लेख है । तैलपदेवके शासनका उल्लेख सन् ११४८ के
दो दानलेखोंमें भी है (क्र० २३६-२३८) । सन् १२०७ के एक दानलेखमें
कदम्ब सामन्त ब्रह्मका तथा सन् १२१८ में जयकेशीका उल्लेख मिला है
क्र० ३२३ व ३२५) । सन् १५०४ में कदम्ब लक्ष्मण्णरसने चारुकीर्ति
पण्डिताचार्यके शिष्यको धर्माधिकार प्रदान किये थे (क्र० ४५५) । एक
अनिश्चित समयके लेख (क्र० ६१४) में त्रिभुवनवीर नामक कदम्ब
शासककी रानीके समाधिमरणका उल्लेख है ।

(आ ३) राष्ट्रकूट वंश — प्रस्तुत संग्रहमें इस वंशके देवज महाराज-
के सामन्त सेन्द्रक इन्द्रणन्दका एक लेख है (क्र० २२) जो छठी-मातवी
सदीका है । इन्द्रणन्दने आर्यनन्दि आचार्यको एक ग्राम दान दिया था ।
राष्ट्रकूट वंशकी प्रधान शाखाके कोई १३ लेख इस संग्रहमें हैं । इनमें पहला

१. देवज राजाका राष्ट्रकूटोंके प्रमुख वंशसे क्या सम्बन्ध था यह स्पष्ट नहीं है । सेन्द्रक वंशके तीन लेख पहले संग्रहमें हैं — (क्र० १०४, १०६, १०९) ।
२. पहले संग्रहमें इस शाखाके दस लेख हैं जिनमें पहला (क्र० १२४) सन् ८०२ का है ।

था (क्र० ५८) । सितलनवासलके गुहामन्दिरका जीर्णोद्धार नवी सदीमें राजा अवनिपगेखर श्रीवल्लभके समयमें हुआ था (क्र० ६२) । इस वंशका अन्तिम लेख (क्र० ३५६) सन् १२९० का एक दानलेख है तथा इसमें मारवर्मन् विक्रम पाण्ड्यके राज्यका उल्लेख है ।

(आ ५) पल्लववंश—इसका उल्लेख तीन लेखोंमें है । इनमें पहला लेख (क्र० २०) छठी सदीके पूर्वार्धका है । इसमें पल्लव राजा सिंहविष्णुकी माता-द्वारा निर्मित एक जिनमन्दिरका वर्णन है । दूसरे लेख (क्र० ३९) में सातवी-आठवी सदीके शासक पल्लवादित्य वादिराजुलको अर्हत् भट्टारकका पादानुध्यात कहा है । तीसरा लेख (क्र० ५३७) अनिश्चित समयका है तथा इसमें पेरुजिगदेव नामक पल्लव राजाके शासनका उल्लेख है ।^१

(आ ६) चालुक्य वंश—वदामीके चालुक्य राजाओंके दो लेख इस संग्रहमें हैं ।^२ पहला (क्र० ४६) सन् ७०८ का है तथा इसमें राजा निजयादित्यकी रानी कुकुमदेवी-द्वारा निर्मित जिनमन्दिरका उल्लेख है । दूसरे लेख (क्र० ४६) में राजा कीर्तिवर्मा २के राज्यमें सन् ७५१ में एक मन्दिरके निर्माणका वर्णन है ।

वैगीके चालुक्य राजाओंके तीन लेख इस संग्रहमें हैं ।^३ पहला (क्र० ४४) लेख राजा जयसिंहवल्लभ २के राज्यका—आठवी सदीके प्रारम्भका है तथा इसमें रट्टगुडि बंशके सामन्त कल्याणवसन्त-द्वारा अर्हत् भट्टारकको कुछ दानका वर्णन है । दूसरा लेख (क्र० ४९) आठवी सदीके उत्तरार्धमें राजा सर्वलोकाश्रय विष्णुवर्धनके समयका है तथा इसमें सामन्त गोकर्ण-द्वारा एक जिनमन्दिरके लिए दानका वर्णन है । तीसरे (क्र० १००)

१. इस वंशका एक लेख पहले संग्रहमें है (क्र० ११५) ।

२. इस शाखाके ६ लेख पहले संग्रहमें हैं (क्र० १०६-८ तथा १११, ११३, ११४) ।

३. इस शाखाके तीन लेख पहले संग्रहमें हैं (क्र० १४३-१४४, २१०) ।

में दसवी सदीके उत्तरार्धमें अम्मराज २-द्वारा विजयवाटके जिनमन्दिरके लिए एक गाँवके दानका वर्णन है ।

कल्याणीके चालुक्य राजाओंके लेख मल्याम सर्वाधिक-५८ है । लेखोंकी अधिकताके कारण हम यहाँ उन लेखोंका ही उल्लेख करेंगे जिनमें इस वंशके सम्राटोंका जैन धर्मकार्योसि साक्षात् सम्बन्ध आया था — जिनमें सिर्फ उनके राज्यकालका उल्लेख है उनका निर्देश सूचीमें होगा ही । इस वंशके लेखोंमें पहला (क्र० ११७) सन् १००७ का है तथा इसमें सामन्त नागदेवकी पत्नी-द्वारा एक जिनमन्दिरके निर्माणका वर्णन है । यह लेख सम्राट् सत्याश्रय आहवमल्लके समयका है । सन् १०२७ के एक लेखमें (क्र० १२४) सम्राट् जयसिंह २ की कन्या सोमलदेवी-द्वारा एक मन्दिरको कुछ दान मिला था ऐसा वर्णन है । सन् १०३२ के एक लेखमें सम्राट् जगदेकमल्ल-द्वारा एक मन्दिरको दान मिलनेका वर्णन है (क्र० १२६) । इस मन्दिरका नाम ही जगदेकमल्ल जिनालय था । जगदेकमल्लकी बहव अम्कादेवीने सन् १०४७ में गौणदवेडगि जिनालयको कुछ दान दिया था (क्र० १३४) । सन् १०५५ के एक लेखमें आचार्य इन्द्रकीर्तिको त्रैलोक्यमल्लकी सभाका आभूषण कहा है । (क्र० १४१) । इस वंशका अन्तिम लेख (क्र० २७४) सन् ११८५ का है तथा इसमें सोमेश्वर ४ के राज्यकालमें एक मन्दिरको कुछ दानका वर्णन है ।^१

(आ ७) चौथे वंश—इस वंशका उल्लेख कोई २५ लेखोंमें है । इनमें पहला (क्र० ८२) सन् ९४५ का है तथा इसमें राजा परान्तक १ के समय एक कूपके निर्माणका वर्णन है । सन् ९९९ के एक लेखमें

१ पहले संग्रहमें इस वंशके कई लेख हैं जिनमें पहला (क्र० १६६) सन् ९१० के भासपासका है ।

२. पहले संग्रहमें इस वंशके तीन लेख (क्र० १६७, १७१, १७४) हैं ।

(क्र० ९२) राजराज १ के समय कुछ जैन आचार्योंका उल्लेख है। दसवी सदीके उत्तरार्धके एक दानलेखमें (क्र० ९८) गण्डरादित्य मुम्मूडि चोल राजाका उल्लेख है। सन् १००९ के एक लेखमें (क्र० ११९) राजराज १ की आज्ञाका वर्णन है जो ब्राह्मणों तथा जैनोको नियमित रूपसे कर देनेके लिए दी गयी थी। दो दानलेखोंमें (क्र० १२१, १२९) ग्यारहवी सदी-पूर्वार्धमें राजेन्द्र १ चोलके शासनका उल्लेख है। सन् १०६८ के दो दानलेख राजेन्द्र २ के शासनकालके हैं (क्र० १५०-५१)। कुलोत्तुग १ के शासनके पाँच लेख हैं (क्र० १६७, १७३, १९४, १९५, १९८)। जो सन् १०८६ से १११८ तकके दानलेख हैं। विक्रमचोलके शासनके दो दानलेख सन् ११३१ तथा ११३४ के हैं (क्र० २१५, २१९) कुलोत्तुग २ के राज्यकालके तीन लेख हैं जिनमें एक सन् ११३७ का है (क्र० २२३, २२४, २२६)। राजराज २ के शासनके तीन लेख सन् ११५६-५७ के हैं। (क्र० २४८-२५०)। कुलोत्तुग ३ के समयके दो लेख हैं (क्र० ३२४, ३८०) इनमें पहला सन् १२१६ का तथा दूसरा अनिश्चित समयका है। इस दूसरे लेखके अनुसार कुलोत्तुग राजाने नल्लूर नामक गाव एक देवमन्दिरको अर्पण किया था।

इस तरह हम देखते हैं कि चोल राजाओंके प्रायः सब लेख राजपुरुषोंसे साक्षात् सम्बन्ध नहीं रखते।

युद्धके दिनोंमें चोल सेना-द्वारा जिनमन्दिरोंका विध्वंस होनेका वर्णन सन् १०७१-७२ के एक लेखमें (क्र० १५४) हुआ है।

(आ ८) होयसल वंश—इस वंशके कोई ३० लेख प्रस्तुत सग्रहमें हैं।^१ इनमें सबसे पहला लेख (क्र० १४५) सन् १०६२ का है तथा

१. पहले संग्रहमें इस वंशके कई लेख हैं जिनमें पहला (क्र० २००) सन् १०६२ का ही है।

इसमें राजा विनयादित्य-द्वारा अमयचन्द्र पण्डितको दान दिने जानेका वर्णन है। सन् १०६९ के एक लेखमें विनयादित्य-द्वारा एक जिनमन्दिरके निर्माणका वर्णन है। ग्रामीण लोग गरीबीके कारण यह कार्य नहीं कर सके थे अतः राजाने सहायता देकर यह मन्दिर बनवाया था (क्र० १५२) ग्यारहवीं सदी-अन्तिम चरणके एक लेखमें (क्र० १७५) वर्तमान आचार्यको होयसल राज्यके कार्यकर्ता यह विघोषण दिया है। राजा बल्लाल १ के सेनापति मरियानेने वारहवीं सदीके प्रारम्भमें एक मूर्ति स्थापित की थी (क्र० १८३)। वारहवीं सदी-प्रथम चरणके दो लेखोंमें राजा विष्णुवर्धनकी रानी चन्तलदेवी तथा उसके बन्धु दुद्धमल्ल-द्वारा जिनमन्दिरोंको दान देनेका वर्णन है (क्र० १८८-८९)। इस समयके चार लेखोंमें (क्र० २००, २०१, २१२, २१३) विष्णुवर्धनके चार सेनापतियों-नगरराज, उसका पुत्र बोप्य, पुणिसमथ्य तथा मरियानेके धर्मकार्योंका - मन्दिर निर्माण, दान आदिका वर्णन है। राजा नरसिंह १ ने सन् ११५९में एक मन्दिरको कुछ दान दिया था (क्र० २५२) तथा उसके सेनापति भरतिमथ्य एव माचियणने सन् ११४५ तथा ११५३ में इमी प्रकारके दान दिये थे (क्र० २३३, २४६)। सन् ११७६ तथा ११९२ के लेखोंमें (क्र० २०१, २८२) राजा वीरवल्लाल २ द्वारा जिनमन्दिरोंको दान देनेका वर्णन है तथा सन् ११७३ एव ११९० के लेखोंमें इमी राजाके अधीन अधिकारियों-द्वारा ऐसे ही दानोंका उल्लेख है (क्र० २६८, २८१)। इमी राजाके समयके तीन दानलेख और हैं (क्र० २८५, २८६, ३२३) जो सन् ११९९ से १२०० तक के हैं तथा दो समाधि-लेख हैं (क्र० ३२०-३२२)। राजा नरसिंह ३ ने सन् १२६५में एक जिनमन्दिरको दान दिया था (क्र० ३४२) तथा उसके अधीन अधिकारियोंने सन् १२५७, १२७१ तथा १२८५ में ऐसे ही धर्मकार्य किये थे (क्र० ३३५, ३४५, ३५१)। एक लेखमें राजा रामनाथ-द्वारा पार्व्वनाथ मन्दिरको दान देनेका वर्णन है (क्र० ३६०) तथा एक अन्य लेखमें राजा वीरवल्लाल ३ के समय सन्

१३१९में कुछ स्थानीय अधिकारियों-द्वारा ऐसे ही दानका उल्लेख मिलता है (क्र० ३९१) ।

(आ ९) कलचुर्य वंश—प्रस्तुत संग्रहमें इस वंशका उल्लेख सात लेखोंमें है ।^१ इनमें पहला लेख सन् ११५९ का है तथा इसमें किसी सेनापति-द्वारा एक जैन आचार्यको दान मिलनेका वर्णन है (क्र० २५१) । यह लेख राजा विज्जलके समयका है । इस राजाका उल्लेख चार अन्य लेखोंमें है (क्र० २५६, २६०-२६२) । ये लेख सन् ११६१ से ११६८ तक के हैं तथा इनमें स्थानीय अधिकारियों-द्वारा जैन आचार्योंको मिले हुए दानोंका वर्णन है । इस वंशके अन्तिम दो लेख राजा सोविदेवके राज्यके सन् ११७३ तथा ११७५ के हैं (क्र० २६७, २७०) तथा इनमें भी स्थानीय व्यक्तियोंके दानोंका उल्लेख है ।

(आ १०) यादव वंश—देवगिरिके यादवोंका उल्लेख प्रस्तुत संग्रहके १५ लेखोंमें है ।^२ इनमें पहला लेख (क्र० ३२६) राजा सिंहणके समय सन् १२३० में लिखा गया था तथा एक मन्दिरके लिए कुछ दानका इसमें वर्णन है । इस राजाके समयके तीन अन्य लेखोंमें (क्र० ३२८, ३२९, ३३०) तीन महाप्रधानों — प्रभाकरदेव, मल्ल तथा वीचिराज-द्वारा जिनमन्दिरोंके लिए दानोंका वर्णन है । ये लेख सन् १२४५ तथा १२४७ के हैं । राजा कन्हारदेवके राज्यके चार लेख हैं (क्र० ३३४, ३३६, ३३७, ३३९) । ये लेख सन् १२५७ से १२६२ तकके हैं इनमें तीन दानलेख हैं तथा एक समाधिलेख है । राजा महादेवके समयके तीन लेख हैं (क्र० ३४०, ३४१, ३४४), ये सन् १२६५ तथा १२६९ के हैं तथा तीनों समाधिमरणके स्मारक हैं । राजा रामचन्द्रके समयके चार लेख हैं (क्र० ३५२, ३५४, ३५५, ३५९), ये सन्

१. पहले संग्रहमें इस वंशके तीन लेख हैं (क्र० ४०८, ४३५, ४३६) ।

२. पहले संग्रहमें इस वंशके ९ लेख हैं, जिनमें पहला (क्र० ३१७) सन् ११४२ का है ।

१२८५ से १२९७ तक के हैं। पहले लेखमें सर्वाधिकारी मायदेव-द्वारा एक मन्दिरके निर्माणका वर्णन है, दूसरा एक समाधिलेख है, तीसरेमें एक मन्दिरके लिए दानोका वर्णन है तथा चौथेमें महामण्डलेश्वर तिकमदेव-के मन्त्रीके पुत्र-द्वारा एक मन्दिरके जोर्णोद्वारका उल्लेख है।

(आ ११) विजयनगरके राजवंश—विजयनगर राज्यके कोई २० लेख प्रस्तुत सग्रहमें हैं।^१ इनमें पहला (क्र० ३९३) सन् १३५५ का है तथा हरिहर राजाके समय एक जिनमूर्तिकी स्थापनाका इसमें उल्लेख है। बुक्क राजाके समयके दो लेख हैं (क्र० ३९४, ३९६), ये सन् १३५७ तथा १३७६ के हैं। पहला लेख एक जिनमन्दिरके अवशेषोंमें है तथा सेनापति वैचयका इसमें उल्लेख है। दूसरा एक समाधिलेख है। राजा हरिहर २ के सेनापति इरुगने एक जिनमन्दिर बनवाया था (क्र० ४०३)। तथा इस राजाके अधीन गोवाके शासक माधवके सेनापति नेमण्णने पार्वनाथ-मन्दिरको सन् १३९५ में कुछ दान दिया था (क्र० ४०२)। सन् १३९५ के ही एक लेखमें वैचय दण्डनायकके पुत्र इम्मडि बुक्कमन्त्रीश्वर-द्वारा एक मन्दिरके निर्माणका वर्णन है (क्र० ४०४)। राजा बुक्क २के समयके दो लेख हैं (क्र० ४०६, ४१५) इनमें एक शान्तिनाथमन्दिरके निर्माणका स्मारक है तथा दूसरेमें लक्ष्मीसेन भट्टारकके समाधिमरणका उल्लेख है। राजा देवरायके समयके दो लेख हैं (क्र० ४२५, ४३४)—पहला सन् १४१२ का है तथा दो मन्दिरोंकी सीमाओंके बारेमें एक समझौतेका इसमें वर्णन है। दूसरा सन् १४२४ का है तथा इसमें राजा-द्वारा नेमिनाथ-मन्दिरके लिए वराग ग्रामके दानका वर्णन है। राजा मल्लिकार्जुनके समय सन् १४५० में एक मन्दिरको मिले हुए दानोका वर्णन एक लेखमें है (क्र० ४४०)। कृष्णदेव महारायके समयके एक लेखमें (क्र० ४५६)

१ पहले सग्रहमें इस वंशके कई लेख हैं जिनमें पहला सन् १३५३ का है (क्र० ५५८)।

मन्दिरोंकी भूमियोंको करमुक्त करनेका वर्णन है, यह लेख सन् १५०९ का है। वराण ग्रामकी मन्दिरकी जमीनको खेतीयोग्य बनानेका वर्णन सन् १५१५ के एक लेखमें है (क्र० ४५८)। राजा अच्युतदेवने सन् १५३० में एक जिनमूर्तिकी पूजाके लिए कुछ करोकी आय दान दी थी (क्र० ४६७)। राजा सदाशिवके समय रामराजने सन् १५४५ में एक जिनमन्दिरको कुछ भूमि दान दी थी (क्र० ४७३)। इमी राजाके समयका एक दानलेख सन् १५५६ का है (क्र० ४७६)। राजा रामदेवके समय सन् १६१९ में एक जैन विद्वान्को कुछ दान दिया गया था (क्र० ५०३)। इस राज्यका अन्तिम लेख सन् १७५७ का है (क्र० ५२०) तथा इसमें सदाशिव रायके अधीन शासक भरसम्पोडेय-द्वारा चारुकीर्ति पण्डितको कुछ दान दिये जानेका वर्णन है।

(आ १२) दक्षिण भारतके छोटे राजवंश—अब हम उन राजवंशोंके उल्लेखोंका विवरण देखेंगे जिन्होंने राष्ट्रकूट, चालुक्य, होयसल या यादव राज्योंमें सामन्तोंके रूपमें महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया था। ऐसे वंशोंमें नोलम्बवग प्रथम है जिसके चार लेख मिले हैं (क्र० ५९, ६१, १२३, १३९)।^१

इनमें पहले दो लेख राजा महेन्द्रके समयके हैं। एकमें राजा-द्वारा सन् ८७८ में एक जिनमन्दिरको दान मिलनेका वर्णन है तथा दूसरेमें सन् ८९३ में आचार्य कनकसेनके लिए कुछ दानका उल्लेख है। नोलम्ब घट्यककारने एक जिनमन्दिरको सन् १०२४ में भूमिदान दिया था (क्र० १२३)। नोलम्ब ब्रह्माविराजके समय सन् १०५४ में अष्टोपवासी मुनिको कुछ दान मिले थे (क्र० १३९)।

हुम्मचके सान्तर वगके चार लेख मिले हैं (क्र० १३७, २५८, ४२२-

१ पहले स'ग्रहमें नोलम्बवाहिके कई उल्लेख हैं किन्तु नोलम्ब राजाओंका कोई लेख नहीं है।

४६१)।^१ इनमें पहला लेख सन् १०५३ का है तथा इसमें राजा वीर सान्तर-द्वारा उसके जैन मन्त्री नकुलरसको कुछ दान दिये जानेका वर्णन है। दूसरे लेखमें राजा तैलपदेवक जैन सेनापति गोगिकी मृत्युके बाद राजा-द्वारा उसके कुटुम्बियोंको कुछ दान मिलनेका वर्णन है। यह लेख सन् ११६२ का है। तीसरे लेखमें राजा पाण्ड्यभूपाल-द्वारा एक जिन-मन्दिरके लिए भूमिदानका वर्णन है। यह लेख सन् १४१० का है। चौथा लेख सन् १५२२ का है तथा इसमें इम्मडि भैरवरस राजा-द्वारा वरागके नेमिनाथमन्दिरके लिए एक गाँवके दानका वर्णन है।

सिन्द कुलके सामन्तोंके चार उल्लेख मिले हैं (क्र० १३८, १६६, २६१, २६४)।^२ इनमें पहला सन् १०५३ का है तथा इसमें सिन्द कचरस-द्वारा नयसेन आचार्यको कुछ दान मिलनेका उल्लेख है। दूसरा लेख सन् १०८५ का है तथा यह सिन्द बर्मदेवरसके समयका दानलेख है। तीसरे लेखमें सन् ११६७ में सिन्द होलरस-द्वारा एक बसदिको दान दिये जानेका वर्णन है। अन्तिम लेखमें सन् ११७० में सिन्द चावुण्डरस-द्वारा जैन शालाको भूमिदान मिलनेका वर्णन है।

रट्ट कुलके उल्लेख छह लेखोंमें हैं (क्र० १७६, १८६, २५९, ३१७, ३१८, ३१९)।^३ इनमें पहला लेख ११वीं सदीका रापा कार्तवीर्य २ के समयका है, इसका विवरण अधूरा है। दूसरा लेख सन् ११०८ का है तथा इसमें राजा लक्ष्मीदेव-द्वारा निर्मित जिनमन्दिरका उल्लेख है। तीसरे लेखमें सन् ११६५ में राजा कार्तवीर्य ३-द्वारा एकसम्बुगेके जिनमन्दिरके

-
- १ पहले संग्रहमें इस वशके कई लेख हैं जिनमें पहला (क्र० १४६) सन् ६५० के आसपासका है।
 - २ पहले संग्रहमें सिन्द राजाओंके लेख नहीं हैं।
 - ३ पहले संग्रहमें इस वशके दस लेख हैं जिनमें पहला (क्र० १३०) सन् ८७५ का है।

दर्शनका वर्णन है। अन्तिम तीन लेख कार्तवीर्य ४ के राज्यके सन् १२०१ तथा १२०४ के हैं। इनमें राजा-द्वारा जिनमन्दिरोंके लिए दानोंका वर्णन है।

शिलाहार वंशके चार लेख मिले हैं (क्र० १९२, २२१, २२२, २५९)।^१ इनमें पहला सन् १११५ का है तथा इसमें राजा गण्डरादित्य-द्वारा उनके जैन सामन्त नोलम्बको दो गाँवोंके दानका वर्णन है। अगले दो लेखोंमें गण्डरादित्यके जैन सामन्त निम्बका वर्णन है। इसने सन् ११३५ में एक जिनमन्दिरका निर्माण कराया था। अन्तिम लेखमें गण्डरादित्यके जैन सेनापति जिन्नण तथा विजयादित्यके सेनापति कालणका उल्लेख है। कालणने सन् ११६५ में एक मन्दिर बनवाया था।

काकतीय वंशका एक लेख सन् १११७ का मिला है (क्र० १९७)।^२ इसमें राजा प्रोलके मन्त्री ब्रेतकी पत्नी-द्वारा अन्मकोण्डमें पद्मावती देवीका मन्दिर बनवानेका वर्णन है।

गुप्त वंशके महामण्डलेश्वर विक्रमादित्यने सन् ११६२ में पार्श्वनाथ-मन्दिरके लिए कुछ दान दिया था (क्र० २५७)।^३

कोगास्व वंशके शासक वीरकोगास्वने सन् १११५ के आसपास सत्यवाक्यजिनालय नामक मन्दिर बनवाया था (क्र० १९३)।^४

मैसूरके राजा चामराजकी रानी देवीरम्मणिने मैसूरके शान्तिनाथ-मन्दिरमें दीपस्तम्भ तथा कलश दान दिये थे (क्र ५२४-५२५)। इनका

१. पहले संग्रहमें इस वंशके तीन लेख हैं (क्र० २५०, ३२०, ३३४)।
- २.३. पहले संग्रहमें इन दो वंशोंका उल्लेख नहीं है।
४. पहले संग्रहमें इस वंशके छह लेख हैं जिनमें पहला सन् १०५८ का है (क्र० १८६)।

ममय १८वीं सदीका अन्तिम चरण है ।

(इ) राजाश्रयके विषयमें माधारण विचार — उपर्युक्त विवरणमें यह स्पष्ट होता है कि जैन मठको प्रायः सभी राजवशोंके ममय-विधेयकर दक्षिण भारतीय राजवशोंके ममय-अपने धर्मकार्योंमें अच्छी सहायता मिली है । हम सम्बन्धमें एक बातका ध्यान रखना चाहिए कि इनमें-में अधिकतर राजाओंका कुलधर्म जैनधर्म नहीं था — वे विष्णु, शिव, सूर्य या लक्ष्मीके उपासक थे । तथापि उनकी प्रजामें जैन आचार्योंका अच्छा प्रभाव रहा होगा अतः जैन मठके विषयमें उनकी नीति महानुभूतिपूर्ण रही है ।

४ जैन मठकी दुरवस्था — बारहवीं सदीमें दक्षिण भारतमें चौहान तथा श्रीवैष्णव सम्प्रदायोंका प्रभाव बढ़ता गया तथा इनके आक्रामक रुझानका परिणाम जैन आचार्यों तथा मठ-मन्दिरोंको महना पडा । उनके प्रत्यक्ष चलेख पहले संग्रहके दो लेखोंमें हैं ।^१ हम संग्रहके कई लेखोंसे अप्रत्यक्ष रूपसे यही बात स्पष्ट होती है — ये लेख विष्णुमन्दिर तथा शिवमन्दिरोंमें लगे पाये गये हैं । स्पष्ट है कि जैन मन्दिरोंके ध्वसावशेषोंमें ही ये पत्थर

१. पहले संग्रहमें मैसूरके राजाओंके कई लेख हैं ।
२. जिन्हें हम 'जैन' राजा कह सकते हैं वेमें राजाओंकी मर्यादा सीमित ही है — कर्लिंगके सारबेल, नवीं सदीसे दसवीं सदी तकके गंग राजा, दसवीं-बारहवीं सदीके होयसल राजा तथा कुछ सामन्त ये जैन राजा कहे जा सकते हैं । आठवीं सदी तकके गंग राजा तथा बारहवीं सदीके तथा बादके होयसल राजा भी विष्णु, शिव आदिके उपासक थे ।
३. यहाँ उल्लिखित राजवंशोंके राजनीतिक प्रभाव, राज्यविस्तार आदिके बारेमें तीसरे भागकी प्रस्तावनामें डॉ० चौधरीने विस्तारसे लिखा है अतः वे यहाँ दुहरायी नहीं हैं ।
४. लेख क्र० ४३५-३६ ।

विष्णु या शिवके मन्दिरोमे ले जाये गये है । इसका महत्त्वपूर्ण उदाहरण कोल्हापुरका महालक्ष्मी मन्दिर है जहाँके कुछ स्तम्भोपर पार्श्वनाथमन्दिर सम्बन्धी लेख मौजूद है (क्र० २२२) । आन्ध्र प्रदेशमें अन्मकोण्ड पहाडी-पर देवी पद्मावतीका मन्दिर था जो बादमें पूरी तरह ब्राह्मणोके अधिकारमें चला गया (क्र० १९७) । इस तरहके अन्य उदाहरण भी हैं ।

५ समारोप—जैनधर्म, साहित्य तथा समाजके इतिहासके लिए शिलालेखोका महत्त्व सर्वमान्य है । अबतक हम संग्रहके लेखोंसे प्राप्त तथ्योका जो विवरण दिया है उससे यह बात अतिस्पष्ट होगी । इस ऐतिहासिक जानकारीका उपयोग कर जैन साहित्य तथा कथाओकी प्रामाणिकता परखना आवश्यक है । साहित्यिक तथा शिलालेखीय दोनो साधनोके समन्वित उपयोगसे ही तथ्यपूर्ण इतिहासका निर्माण सम्भव है ।

इस संग्रहके अन्तमें तीन परिशिष्ट दिये हैं । पहले परिशिष्टमें इस संग्रहकी तैयारीके समय जो इवेताम्बर लेख हमारे अवलोकनमें आये उनको सूची दी है । दूसरे परिशिष्टमें उन जैनतर लेखोकी संक्षिप्त जानकारी दी है जिनमें जैन व्यक्तियोंमें संबद्ध कुछ उल्लेख हैं । तीसरे परिशिष्टमें नागपुरके समस्त मूर्तिलेखोका संग्रह है । यह संग्रह आजसे कोई २५ वर्ष पहले श्रीमान् शान्तिकुमारजी ठवलीने तैयार किया था जो कई कारणोंसे अबतक प्रकाशित नहीं हो सका । इस पुस्तकमें प्रस्तुत संग्रहको अन्तर्भूत करनेकी अनुमतिके लिए हम श्रीठवलीजीके आभारी हैं । हमें आशा है कि इन तीन परिशिष्टोंसे प्रस्तुत संग्रह अभ्यासकोंके लिए अधिक उपयोगी सिद्ध होगा ।



जैन शिलालेख संग्रह

[मूल लेख तथा सारांश]

लिपि सन्पूर्व ३री मदीकी है। ये गुहाएँ श्रमणोंके लिए उत्कीर्ण हो गयी थी।]

[रि० मा० ग० १९३७-३८ क्र० ५३१ पृ० ५९]

३

खण्डगिरि (ओरिया)— (मंचपुरी गुहा—ऊपरी भाग)

प्राकृत—ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली मदी

१ अरहतपमादाय कलिंगा (न) (मम) नान लेण शरितं
राजिनो लालाक (म)

२ हथिसाहम-पपोतम धु (तु) ना कलिगच (कवत्तिनां गिरिगा)-
रवेलम

३ अगमहिमि (ना) कारि (त)

[अरहतोकी कृपामे कलिग प्रदेशके श्रमणोंके लिए यह गुहा कलिग-
चक्रवर्ती सारवेलकी महाराजनीने बनवायी। यह हन्निमाहमके प्रपौत्र
लालाककी कन्या थी]

[ए० ३० १३ पृ० १५०]

४

खण्डगिरि—(मंचपुरी गुहा—नीचेका भाग)

प्राकृत—ब्राह्मी सन्पूर्व पहली मदी

१ सरस महाराजस कलिगाधिपत्तिनो मडा (मंघ) वाह (नम)
कुट्टेपत्तिरिनो लेण

[कलिगके अधिपति महाराज सर महामेघवाहन कुट्टेपत्तिने यह गुहा
बनवायी।]

[ए० ६० १३ पृ० १६०]

५

खण्डगिरि—(मचपुरी गुहा—नीचेका भाग)

प्राकृत—ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली सदी

कुमारो बद्धखस लेण

[यह गुहा कुमार बद्धखने बनवायी ।]

[ए० इ० १३ पृ० १६१]

६

खण्डगिरि (सर्पगुहा)

प्राकृत—ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली सदी

चूलकमस कोठाजेया थ

[चूलकम्म (सुद्रकर्म अथवा चूडाकर्म) का कक्ष ।]

[ए० इ० १३ पृ० १६२]

७

खण्डगिरि (सर्पगुहा)

प्राकृत—ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली सदी

१ कमस हलखि—

२ णय च पसादो

[कर्म तथा हलखिण (सल्लक्षण) का बनवाया प्रासाद ।]

[ए० इ० १३ पृ० १६२]

८

खण्डगिरि (हरिदास गुहा)

प्राकृत—ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली सदी

[यह लेख सर्पगुहाके पहले लेखके समान ही है ।]

[ए० इ० १३ पृ० १६२]

६

खण्डगिरि (बाघ गुहा)

प्राकृत-ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली मदी

१ नगर अगदम

२ मभूतिनो लेण

[नगरके न्यायाधीश सुभूतिकी गुहा]

[ए० ३० १३ पृ० १६३]

१०

खण्डगिरि (जम्पेय्यग गुहा)

प्राकृत-ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली मदी

महामदास चारियाय नाकिगम लेण

[महामदकी पत्नी नाकियाकी गुहा]

[ए० ३० १३ पृ० १६३]

११

खण्डगिरि (छोटा हाथीगुहा)

प्राकृत-ब्राह्मी, सन्पूर्व पहला मदी

अगिस****स लेण

[अगिस****की गुहा]

[ए० ३० १३ पृ० १६४]

१२

खण्डगिरि (तत्वगुहा)

प्राकृत-ब्राह्मी, सन्पूर्व पहली मदी

पादमुलिकस कुसुमास लेण कि

[पदमुलिकके कुसुमकी गुहा]

[ए० ३० १३ पृ० १६४]

१३

खण्डगिरि (अनन्तगुहा)

प्राकृत-ब्राह्मी, सन्पूर्व पहला सदी

दोहद समणन लेणं

[दोहदके श्रमणोकी गुहा]

[ए० इ० १३ पृ० १६४]

१४

खण्डगिरि (तत्त्वगुहा)

ब्राह्मी, पहली सदी

१ . 'घ .

२ . 'ण त थ द ध न''''

३ . 'ण त थ द ध न . श प स ''

४ . 'ण त थ द ध न प फ व . श प स ह ''

५ . ''त थ द ध न प फ व . श प स ह ''

६ . 'थ ''

[यह वर्णमाला चित्रित की गयी है जो सम्भवतः किसी नववीक्षित साधुका कार्य है ।]

[ए० इ० १३ पृ० १६५]

१५

मथुरा (उत्तर प्रदेश)

प्राकृत-ब्राह्मी, वर्ष ८४ (दूसरी सदी)

१ ओं सिद्ध स ८० ४ व ३ ङि २० ५ एतस्मि पूर्वय दमिन्नस्य
धितु श्रोस-

२ रिक्वाये कुट्टुबिणिये दताये दान वर्धमानप्रतिमा प्रतिथपिता

३ गणतो कोट्टियतो 'सत्यसेनस्य धरवृधिस्य नि ...

[वर्ष ८४ में वर्षा ऋतुके तीसरे महीनेके २५वें दिन दमित्रकी पुत्री तथा ओखरिककी पत्नी दत्ता (दत्ता) ने यह मूर्ति स्थापित की । कोट्टिय गणके सत्यसेन''''धरवृद्धि ।] [यदि लेखका वर्ष शककालका हो तो वह सन् १६२ होगा ।]

[ए० इ० १९ पृ० ६७]

१६

मथुरा

प्राकृत-ब्राह्मी, पहली-२ री सदी (सण्डित जैनमूर्तिके पादपीठपर)
(शा) खातो वाच (कस्य) आर्य ऋ (पि) दासस्य निर्वर्तना
रकस्य भट्टिदामस्य''

[शाखाके वाचक आर्य ऋषिदासने यह बनवायी । 'रक भट्टिदामकी]

[रि० आ० स० १९११-१२ पृ० १७]

१७-१८

मथुरा

प्राकृत-ब्राह्मी, २री सदी

[यह लेख २री सदीकी लिपिमें है । अरहटके प्रणामसे इसका प्रारम्भ होता है तथा लाघकके पुत्रका इसमें उल्लेख है । एक अन्य पादपीठपर इसी समयकी लिपिमें वर्धमानको प्रणाम किया है ।]

[रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ५२८-२९ पृ० ७७]

१६

पहाड़पुर ताम्रपत्र (जि० राजशाही, बगाल)

गुप्त वर्ष ११९ = सन् ४७९ सस्कृत

अगला भाग

- १ स्वस्ति पुण्ड्र (वर्ध) नादायुक्तका भार्यनगरश्रेष्ठिपुरोगाञ्चाधिष्ठा
नाधिकरणं दक्षिणांशकवीथेयनागिरट्ट-
- २ माण्डलिकपलाशाष्टपार्श्विक - वटगोहालीजम्बूदेवप्रावेश्यपृष्ठिमपो-
त्तक-गोपाटपुञ्जक-मूलनागिरट्टप्रावेश्य-
- ३ नित्वगोहालीपु ब्राह्मणोत्तरान् महत्तरादिकुट्टुम्बिन कुशलमनुव-
र्णानुबोधयन्ति । विज्ञापयत्यस्मान् ब्राह्मणनाथ-
- ४ शर्मा एतद्भार्या रामो च युष्माकमिहाधिष्ठितानाधिकरणे द्विदी-
नारिक्यकुल्यवापेन शश्वत्कालोपमोग्याक्षयनीवीसमुदयवाहा-
- ५ प्रतिकरखिलक्षेत्रवास्तुविक्रयोनुवृत्तस्तदर्थथानेनैव क्रमेणावयो
सकाशाद् टीनारत्रयमुपसंगृह्यावयो. स्वपुण्याप्या-
- ६ यनाय वटगोहाल्यामवास्यान् काशिक-पंचस्तूपनिकायिकनिर्ग्रन्थ-
श्रमणाचार्य-गुहनन्दि-शिष्यप्रशिष्याधिष्ठितविहारे
- ७ भगवतामर्हतां गन्धधूपसुमनोदीपाद्यर्थन्तलवटकनिमित्त च
अ (त) एव वटगोहालीतो वास्तुद्रोणवापमध्यर्धं ज-
- ८ म्यूदेवप्रावेश्य-पृष्ठिमपोत्तकेत् क्षेत्रं द्रोणवापचतुष्टय गोपाटपुंजाद्
द्रोणवापचतुष्टयं मूलनागिरट्ट-
- ९ प्रावेश्यानित्वगोहालीत. अर्धत्रिकद्रोणवापानित्येवमध्यर्धं क्षेत्र-
कुल्यवापमक्षयनीग्या दातुमि (त्यत्र) यतः प्रथम-
- १० पुस्तपालदिवाकरनंदि-पुस्तपालघृतिविष्णु - विरोचनरामठास-हरि-
दास-शशिनन्दिषु प्रथमनु ... 'मवधारण-
- ११ यावधृतमस्थस्मदधिष्ठितानाधिकरणे द्विदीनारिक्यकुल्यवापेन
शश्वत्कालोपमोग्याक्षयनीवांससु (दयवा) ह्याप्रतिकर-
- १२ (खिल) क्षेत्रवास्तुविक्रयोनुवृत्तस्तद् यद् युष्मान् ब्राह्मणनाथ-
शर्मा एतद्भार्या रामी च पलाशाष्टपार्श्विकवटगोहालीस्थ-

पिछला भाग

- १३ ... कपञ्जस्तूपनिकायिकाचार्यनिर्ग्रन्थ-गुह्यनन्दि-शिष्यप्रशिष्या-
धिष्ठितसद्विहारे अहंतां गन्ध (धूपा) द्युपयोगाय
- १४ (तलवा) टरुनिमित्तं च तत्रैव घटगोडारथां वाम्तुद्रोणवाप-
मध्यर्धं क्षेत्रं जम्बून्वप्रवेश्यपृष्ठिमपोत्तरे द्वाणवापचतुष्टयं
- १५ गोषाटपुञ्जाद् द्वाणवापचतुष्टय मूलनागिः पृष्ठावेश्यनिरत्रगोहालीतो
द्रोणवापद्वयमाहवा (पट्ट) ताप्ररुमित्येवम-
- १६ मध्यर्धं क्षेत्रकृष्यवाप प्रार्ययत्तत्र न कश्चिद् विरोधः गुणस्तु यत्
परमभट्टारकपाठानामर्थोपचयां धर्मपट्टमागाप्याय-
- १७ न च भवति तत्रैव क्रियन्तामि यन्नेनावशागणारुमेणास्माद् ब्राह्म-
णनाथशर्मत पुनर्दुमार्यासोमयाश्च दीनारत्र-
- १८ यमार्थाकृत्येताभ्यां विज्ञापितस्क्रमापयागायां परिनिर्दिष्टग्रामगो-
हालीरुपु तलवाटरुवान्तुना मरु क्षेत्रं
- १९ कृष्यवाप अध्यर्धोक्षयर्नावाशमेण तत्त. कु १ द्वां ४ तद् युत्मानिः
स्वकर्मणाविरोधिस्थाने पट्टकनडेरप-
- २० विच्युय दातव्याश्रयर्नावाधमण च दशदाचन्द्रार्कतारककालमनु-
पालयितव्य इति स १०० (+) ५० (+) ९
- २१ माघ दि ७ उक्तं च भगवता व्यासेन । स्वदत्ता परदत्तां वा यो
हरंत वसुन्धरां ।
- २२ स विष्टायां कृमिभूत्वा पितृनिः सह पच्यते ॥ षष्टिवर्षसह-
स्राणि स्वर्गे वसति भूमिन् ।
- २३ आक्षेपना चानुमन्ता च तान्येव नरके वरेत् ॥ राजमिर्बहुमिर्दत्ता
दीयते च पुन. पुन. । यस्य यस्य
- २४ यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥ पूर्वदत्तां द्विजातिभ्यो
यत्नाद् रक्ष युधिष्ठिर । मही महिमता श्रेष्ठ

२५ दानाच्छ्रेयोनुपालनम् ॥ विन्ध्योदवीप्वनम्भःसु शुष्ककोटर-
वासिनः । कृष्णाहिनी हि जायन्ते देवदायं हरन्ति ये ॥

[यह ताम्रपत्र गुप्तवर्ष १५९ के माघ एतके ७वें दिन लिखा गया था । ब्राह्मण नाथशर्मा तथा उसकी पत्नी रामीने पुण्ड्रवर्धनके राजकोषमें तीन दीनार देकर डेढ़ कुल्यवाप जमीन प्राप्त की । इसमें ४ द्रोणवाप जमीन पृष्ठिमपोत्तक गाँवमें, ४ द्रो० गोषाटपुजक गाँवमें, २३ द्रो० नित्व-गोहालीमें और १३ द्रो० बटगोहालीमें थी । काशीके पञ्चस्तूपनिकायके निर्गन्ध श्रमणोंके आचार्य गुहनन्दिके शिष्य-प्रशिष्योंका एक विहार बट-गोहालीमें था । वहाँ भगवान् अर्हत्की पूजाके लिए गन्ध, धूप, फूल, दोप आदिकी व्यवस्थाके लिए यह जमीन नाथशर्मा तथा रामीने दान दी । इस ताम्रपत्रमें परमभट्टारक पदसे किमी सम्राट्का उल्लेख किया है । ये सम्भवत गुप्तवंशीय सम्राट् बुधगुप्त थे । पहाडपुरके समीपका गोआलमिटा गाँव ही सम्भवत प्राचीन बटगोहाली है । यहाँके एक बड़े मन्दिरके उत्खननमें कई जैन, बौद्ध तथा ब्राह्मण अवशेष मिले हैं ।]

[ए० इ० २० पृ० ५९]

२०

होसकोटे (मैसूर)

६वीं सदा पूर्वार्ध सस्कृत

पहला पत्र

१ स्वस्ति जित भगवता गतघनगगनाभेन पद्मनाभेन श्रीमजाह्न-
वेयकुलामलव्यो-

२ नाबभासनमास्करस्य स्वभुजजवजयजितसुजनजनपदस्य
दारुणारिगण-

३ विठारणरणोपलञ्चव्रणविभूषणभू पितस्य काण्वायनसगोत्रस्य श्री-

४ मत्कोगणिवसंधर्ममहाधिराजस्य पुत्रस्य पितुरन्वागतगुणयुक्तस्य

- ७ विद्याविहितविनयस्य सम्यक्प्रजापालनमात्राधिगतराज्य-
प्रयोजनस्य

द्वितीयपत्र : पहला भाग

- ६ विद्वत्कविकांचननिरुपांपलभूतस्य विशेषतांप्यनवशेषस्य नीति-
शास्त्रस्य षक्त्वप्र-
७ शोक्तृकुशलस्य सुविभक्तमक्तभृत्यजनस्य दत्तकसूत्रवृत्तेः प्रणेतुः
श्रीमन्माधवचर्मम-
८ हाधिराजस्य पुत्रस्य पंतृपितामहगुणयुक्तस्य अनेकचतुर्दन्त-
युद्धावाप्त-
९ चतुर्दशिसकिल्लास्वादितयशम. ममदद्विरदतुरगारोहणातिशयो-
त्पद्यतेजमो धनुर-
१० भियोगलनितमम्पादितसम्पद्विशेषस्य श्रीमद्वरिवर्ममहाधिराजस्य
पुत्रस्य

द्वितीय पत्र पिठला भाग

- ११ गुरुगोब्राह्मणपूजकस्य नारायणचरणानुध्यातस्य श्रीमद्विष्णु-
गोपमहाधि-
१२ राजस्य पुत्रस्य न्यम्बकचरणाम्मारुहरज.पवित्राकृतांतमांगस्य
न्यायामोद्वृत्तपीन-
१३ कठिनसुजड्यस्य स्वभुजवलपराक्रमक्रयक्रातराज्यस्य चिरप्रनष्ट-
ब्रह्मदे-
१४ ययहुसहस्रत्रिसर्गाग्रयणकारिण. ध्रुत्क्षामोष्ठपिक्षिताशनश्रीतिकर-
निक्षितघा-
१५ रासेः कलियुगमलपकावमन्नधमंभृपोद्वरणनित्यसन्नद्धस्य श्रीमाधव-
महाधिराज-

तृतीय पत्र : अगला भाग

- १६ स्य पुत्रेण जननीदेवतापर्यंकतलसमधिगतराज्येन निजप्रभाव-
खंडित-
- १७ रिपुनृपतिमंडलेनाखंडलविलंबिविभवविक्रमेण करितुरगवरारो-
हणसौष्ट-
- १८ वजनितगुणविशेषेण स्वदानकुसुममंजरीसुरमितसमंतद्रिगत-
रामिग-
- १९ तद्वधमधुकरसमुद्रयेन वरांगनापांगशरविक्षेपलक्षणैः प्रजापरिरक्ष-
२० णैकद्रीक्षाक्षपितकल्मषेणापरिणतवयसापि परिणतमत्तिसत्त्व-
सम्पदा परम-

तृतीय पत्र : पिछला भाग

- २१ धार्मिकेण श्रीमता कौण्डिन्यधिराजेनात्मनः प्रवर्धमानविजयैश्वर्ये
द्वादशै मवत्स-
- २२ रै कार्तिके मासे शुक्लपक्षे त्रिंशो पौर्णमास्यां ग्रासनाधिकृतस्य
सकलमंत्रतंत्रांतर्ग-
- २३ तस्य चित्रिधागमजलप्रक्षालितविशुद्धबुद्धे. सिंहविष्णुपद्मवाधि-
राजस्य
- २४ जनन्या मर्तुकुलकीर्तिजनन्यार्थं चात्मनश्च धर्मप्रवर्धनार्थं च
प्रतिष्ठापिताय अर्हद्दे-
- २५ वतायतनाय यावनिकर्मघानुष्ठिताय कोरिकुन्द्रभागे पुल्लिङ्ग-
नाम प्राप्ते

चतुर्थ पत्र : अगला भाग

- २६ महातटाकस्याधस्तात् मूलाभ्यागे श्रमणकेदारसहितसप्तकण्डुका-
वापमात्रं
- २७ क्षेत्रं मध्यभागे पंचकण्डुकावापमात्र क्षेत्रं इक्षुनिष्पादनक्षमम्-
- २८ कन्तोदक्षेत्रं प्रासं दक्षिणेन कण्डुकावापमात्रं पत्रं उत्तरेण च द्वा-

- २९ दक्षरुण्डुकावापमात्रमारण्यक्षेत्र च द्वेषतायतनमन्निकृष्टमेक वेश्म च
 ३० एतत् सर्वं सर्वपरिहारपरिगृहीत पानीयपातपुरस्सर वृत्तं योस्य
 चतुर्यपत्र पिच्छला भाग
 ३१ लोमात् प्रमादाद् वापि हर्ता म पचमहापातकसयुक्तो भवति
 अपि चास्मिन्न-
 ३२ अं मनुगीता(नू) श्लोकानुदाहरन्ति ॥ स्वदत्तां परदत्तां वा यो
 हरेत् वसुन्धराम्
 ३३-३८ (नित्यके शापात्मक श्लोक)
 ३९ कुवळालक्ष्मणकारस्य इदम्पट्टवस्य पुत्रेण पेरंरत्नामलिरिताम्पट्टिका ॥
 शिवमस्तु

[यह ताम्रपत्र गगवशीय राजा माधव (द्वितीय) के पुत्र कोगण्य-
 धिराज (अविनीत) द्वारा राज्यवर्ष १२ के कार्तिक शु० १५ को दिया
 गया था । इसमें यावनिक सघ-द्वारा अनुष्ठित एक अर्हद्देवतायतन (जिन-
 मन्दिर) के लिए पुल्लिऊर ग्रामकी कुछ भूमि और एक घर दान दिये जाने-
 का उल्लेख है । यह मन्दिर पल्लव राजा सिहविष्णुकी माता-द्वारा निर्माण
 किया गया था । ताम्रपत्रको इदम्पट्टवके पुत्र पेररेने लिखा था ।]

[ए० रि० मै० १९३८ पृ० ८०]

२१

कोरमंग (मैसूर)

६वीं सदी, संस्कृत

प्रथम पत्र

१ सूर्याश्रुतिपरिपिक्तपकजानां क्षोभां यद् दहति सदास्य पाद-
 पद्मम् ।

सिद्धम्

- २ देवानां मकुटमणिप्रभाभिपिक्तं सर्वज्ञः स जयति सर्व-
लोकनाथ. (॥११)
 - ३ कीर्त्या दिगन्तरन्यार्पा रघुरामीक्षराधिप (१) काकुस्थतुह्य काकु-
स्थो यवायास्तस्य भूपति (॥२)
 - ४ तस्याभूत् तनयः श्रीमाञ् शान्तिवर्मा महीपति (१) मृगेशस्तस्य
तनयो मृगेश्वरपराक्रमः (॥३)
 - ५ कदम्बामलवशाद्रे. मूर्लिनामागतो रत्रि. (१) उदयाद्रिमकुटद्वेप
(टाटोप) दोप्रांशुर्विवांगुमान् (॥४)
 - ६ नृपश्छलनर्का त्रिष्णुर्दैत्यजिष्णुभ्य स्वयं (१) हिरण्यचलन्मालं
त्यक्त्वा चक्र विभावित (॥५)
 - ७ सान्नाज्ये नन्दमानापि न माद्यति परतप (१) श्रोरपा मदयत्य-
न्यानतिपातेव वारुणी (॥६)
- द्वितीय पत्र
- ८ नमंद त मही प्रंत्या यमाश्रित्यामिनन्दति (१) कौस्तुभाभारुण-
च्छाय वक्षो लक्ष्मीहरेरिव (॥७)
 - ९ रवावधि जयन्तीय सुरेन्द्रनगरी श्रिया (१) वैजयन्तो चलच्चित्रं
वैजयन्ती विराजते (॥८)
 - १० रवेभुंजंगद्रासीव चदनप्रीतमानमा (१) तथा श्रीर्नामवत् प्रीता
सुरारेरपि वक्षसि (॥९)
 - ११ विश्वा वसुमर्ता नाथन्नाथते नथकोविदम् (१) द्यौरिवेन्द्र ज्वलद्ब-
ज्रदाप्तिकोरकितागम् (॥१०)
 - १२ यस्य मूर्ध्नि स्वय लक्ष्मी हेमकुम्भोदरघ्युसै (१) राज्यामिपेकम-
करादम्भोजशत्रुलैर्जलै (॥११)
 - १३ रघुणालम्बितामूर्त्ता (मूर्त्ता) कुण्डो गिरिधारयत् (१) रवेराज्ञा
बहस्यद्य मालामिव महीश्वर (॥१२)

- १४ धर्मार्थं हरिदत्तेन सोय विज्ञापितो नृपः (१) स्मितज्योत्स्नामिपि-
क्तेन वचसा प्रत्यभाषत (॥१३)
- द्वितीय पत्र • दूसरा भाग
- १५ चतुस्त्रिंशत्तमं श्रीमद्राज्यवृद्धिसमासमा (१) मधुर्मासस्तिथि
पुण्या शुक्लपक्षश्च रोहिणी (॥ १४)
- १६ यदा तदा महाबाहुरासंधामपराजितः (१) सिद्धायतनपूजार्थं
संघस्य परिवृद्धये (॥१५)
- १७ सेतोरुपलकस्यापि कोरमगाश्रितां महीम् (१) अधिकाग्निवर्त-
नान्येव दत्तवां स्वामरिन्दम. (॥१६)
- १८ ग्रामन्दी दक्षिणस्याथ सेतो. केदारमाश्रितम् (१) राजमानेन
मानेन क्षेत्रमेकनिवर्तनम् (॥१७)
- १९ समणे सेतुवधस्य क्षेत्रमेकनिवर्तनम् (१) तच्चापि राजमानेन
वेष्टिकौटेत्रिनिवर्तनम् (॥१८)
- २० उच्छादिपरिहर्तव्ये समाधिसहितं हितम् (१) दत्तवांश्श्रीमहाराज-
स्सर्वसामन्तसनिधौ (॥१९)
- २१ ज्ञात्वा च पुण्यमभिपालयितुर्विशाल तद्भगकारणमितस्य च
दोषवत्ताम्
तीसरा पत्र •
- २२ • श्रमस्त्रलितसयमनैकचित्ताः संरक्षणेस्य जगतीपतय.
प्रमाण (॥२०)
- २३ बहुभिर्ब्रह्मिण्युघा मुक्त्वा राजभिस्सगराग्निभि. (१) यस्य यस्य यदा
भूमिस्तस्य तस्य तदा फल (॥२१)
- २४ अग्निर्दत्तं त्रिभिर्मुक्त सद्भिश्च परिपालितम् (१) एतानि न निवर्त-
न्ते पूर्वर्राजकृतानि च (॥२२)

२५ स्वदत्तां परदत्ता वा यो हरंत वसुंधरां (१) पष्टिर्वर्षसहस्राणि
नरके पच्यते तु सः (॥२३)

[यह ताम्रपत्र कदम्बवर्गीय राजा मृगेशके पुत्र रविवर्मा-द्वारा दिया गया था। हरिदत्तके निवेदनपर राजाने सिद्धायतनकी पूजा तथा मघकी वृद्धिके लिए कोरमग ग्रामकी कुछ जमीन दान दी ऐमा इसमें निर्देश है। दानकी तिथि राज्यवर्ष ३४ के चैत्र शुक्ल पक्षकी पुण्यतिथि कही गयी है।]

[ए० रि० मै० १९३३ पृ० १०९]

२२

गोकाक ताम्रपत्र (जि० बेलगांव, मैसूर)

६-७वीं सदी, संस्कृत-नागरी

- १ स्वस्ति ॥ वर्धतां वर्धमानेन्दोर्वर्धमानगणोद्दधे । शाम्न नाशित-
 - २ रिपोर्मासुरं मोहशासनं ॥ (१) इहास्यामवसर्पिण्यान्तीर्य-
 - ३ करणां चतुर्विंशतितमस्य सन्मनेः श्रीवर्धमानस्य वर्धमा-
 - ४ नायां तीर्थसन्ततावागुसायिकानां राज्ञामष्टसु वर्षशते-
 - ५ पु पंचचत्वारिंशदश्रेषु गतेषु राष्ट्रकूटान्वयजातश्रीदे-
- दूमरा पत्र : पहला भाग
- ६ जमहाराजस्यामिमत् श्रीसेन्द्रकामलकुलांबरोदितदी-
 - ७ प्रदिवाकरो विजयानन्दमध्यराजात्मजः श्रीमानिन्द्रणन्द्राधि-
 - ८ राजः स्ववड्यानामात्मनश्च धर्मचूडये कम्पाण्डीविषये
 - ९ पर्वतप्रत्यासन्नजलारग्रामे जम्बूखण्डगणस्थाय ज्ञान-
 - १० दर्शनतपस्सम्पन्नाय आर्यणन्धाचार्याय भगवदहं-

दूसरा पत्र : दूसरा भाग

- ११ क्षप्रतिमानवरतपूजायै शिक्षकग्लानवृन्दाना च तपस्त्रिनां वै-
 १२ याच्युत्यार्थं ग्रामस्योत्तरत पूर्वाणग्रामत्रिरयमीमक द-
 १३ क्षिणेन सुब्ज नलमागंयर्थन्त अपरत पन्डावीरन्म-
 १४ हितवर्तमोक तम्मादुत्तरत पुर्फरणा नतश्च थावत पूर्वत्रिरय-
 १५ क राजमाचेन पचाशन्नवतनप्रमाणक्षत्रन्द-

तीसरा पत्र

- १६ त्तवानेतद् थो हरति म पचमहापानकर्मयुक्तो भवति ॥ उक्तञ्च
 १७-२० बहुभिर्मुधा भुक्त्वा-(नित्यक शापान्मर उक्तं)

[यह ताम्रपत्र सेन्द्रक वंशके अधिपति विजयानन्दके पुत्र इन्द्रणन्दद्वारा जम्बूद्वीपके आचार्य आर्यणन्दको दिया गया था । अर्हत्प्रतिमाकी पूजाके लिए तथा तपस्त्रियोंकी सेवाके लिए जलार ग्रामके पासको कुछ भूमि उन्हें दी गयी थी । राजा इन्द्रणन्द राष्ट्रकूट वंशके देवम मट्टाराजका मामन्त था । इस ताम्रपत्रका काल आनुष्ठातिक राजाओका ८४५वां वर्ष इस प्रकार कहा है । किन्तु इसमें कौन-सी कालगणना अभिप्रेत है यह स्पष्ट नहीं क्योंकि लिपिकी दृष्टिसे यह ताम्रपत्र छठी या सातवीं शताब्दीका प्रतीत होता है ।]

[ए० ई० २१ पृ० २८९]

२३

चित्तूरल (केरल)

७वीं शदी, तमिल

भगवती मन्दिरके लिए प्रसिद्ध निरच्छाणत्तुमले पहाडीपर

[इस लेखमें अरिष्टनेमि भट्टारके शिष्य गुणन्दागि कुण्ड्रिगलद्वारा देवीके लिए कुछ सोनेके आभूषण दान देनेका निर्देश है । यह लेख विक्रमादित्य वरगुणके २८ वें वर्षका है ।]

[३० म० तिरुवाकुर २]

२४

कुलगाण (मैसूर)

संस्कृत-कल्लद, ७वीं सदी

पहला पत्र

- १ स्वस्ति श्री जितं भगवता श्रीमज्जान्हवेय' .
- २ अमणाचार्यसाधित. स्वखड्गैक' .
- ३ राक्रमैकयशसः द्राष्णारिगणविदार' ..
- ४ ण्वायनसगोत्रस्य श्रीमत्कौगणिवर्मध' ..

दूसरा पत्र

- ५ युक्तस्य श्रीमन्माधवमहाधिराजस्य प्रियोरसस्य श्रीविष्णुवर्म-
गोपमहाधिराजस्य अने-
- ६ कचतुर्दन्तयुद्धावासचतुर्दधिमलिलास्वाडितयशानः पुत्रस्य श्री-
मन्माधवमहाधिराज-
- ७ जस्य पुत्रस्य श्रीमत्कृष्णवर्ममहाधिराजस्य मागिनेयस्य श्रीमत्-
कौगणिवृद्धराजस्या-
- ८ विनीतनाम्नः पुत्रस्य श्रीद्विर्विनीतनामधेयस्य समस्तपाणाटपुत्रा-
टाधिपतेरात्मजस्य श्री-

दूसरा पत्र (व)

- ९ मत्कौगणिवृद्धराजस्य प्रथितसुष्करद्वितीयनामधेयस्य सर्वविद्या-
पारगस्य सूनोः श्रीम-
- १० त्पृथिवीकौगणिवृद्धराजस्य श्रीविक्रमद्वितीयनामधेयस्य सर्व-
विद्यानिकषोपलभूतस्य प्र-
- ११ योगनिपुणत्रस्य श्रीविक्रमोपार्जितानेकजनपदस्य प्रतापोपनत-
सकलसामन्तस्य

१२ धनविनीतस्यात्मजे 'श्रीमत्पृथिवीकौंगणिवृद्धराजे प्रणितानेरु-
राजस्य सकुटमणिम-

तीसरा पत्र

१३ यूरपुजपिंजरितांगुष्टे वरयुवविमनोनयनसुमगे रिपुनृपतिगजाश्व-
रथनरोरुवन-

१४ लोफसमदद्विरठतुरगारोहणोपमीममाननिरतिशयनिजशरीरश्री-
वल्कभे सफल-

१५ पाणाटपुञ्जाटाद्यनेकजनपदाधिपता मनोविनीतस्य आसा जिन-
कुमार. श्रीमत्पृथिवी-

१६ कौंगणिवृद्धराज स्थिरविनीतः अवनिमहेन्द्रविग्यातः पाणाटपु-
ञ्जाटाद्यनेकजनपदाधि-

तीसरा पत्र (ब)

१७ पति पृथिवी परिपालयति कोड्डुगुन्नाडा केल्लिपुसूरा चेद्विभक्के
कर्गुलशुल तट्टवल्लु-

१८ वेरेठ वसदिगालुमेरड्डु कलनिठ तोट्टमुं मनेत्तानमु पृथिवीकौंगणि
मुत्तरसरनुमतटो-

१९ ख पल्लवेलारमर् पोय्दार् कौरुन्दियु मयिल्लरगयुं मेल्लपालु
जादिगालु त्तोलिगरुक्कालु ओन्दुतोट्टमुसा-

२० रु कलनिठ पृथिवीकौंगणि मुत्तरसरनुमतटोल गजेनाडर् ऋणमन्
पोय्दार् चन्त (ऋ) मंनात्ता-

चौथा पत्र

२१ थर् कर्तारराग भटके साक्षि केल्लिपुसूर् पक्किर्वरु अय्सांमन्तरु
नाकत्ताणित इदा-

२२ नल्लिडोन् पंचमहापातगनप्पोन् श्री बहुमिर्वसुधा भुक्ता राजमि-
स्सक (ग)-

२३ राद्रिमि. यस्य यस्य यदा भूमि (०) तस्य तस्य तदा फलं ॥
देवस्त्वं तु विषं धी-

२४ रं न विषं विषमुच्यते विषमंकाकिनं हन्ति देवस्त्वं पुत्रपौत्रकं ॥
स्वदत्तां परदत्तां वा

चौथा पत्र (ब)

२५ यो हरेति वसुन्धरा षष्टिं वर्षसहस्राणि धारं तममि वर्तते ।
भारगो-

२६ टेररोन्दु तोट्टं पंय्दार् देवरा पसु गोट्टोन्दु तोट्टं कोण्डसु गजे-
नद्धर्

२७ कणम्मन् कोडुगूनाडाल धोरंक्त्वाय्गरं मीम्माल्वाय्गरमिर्वरं
तुप्पूराळभरसरान-

२८ नुमनप्पडिसि पोय्दुत्तु तुल् टिल् काल् किलिप्पुसूर् चेदियक्क

पाँचवाँ पत्र

२९ से ३२ तक पंक्तिचाँ ३३ से १६ तक के ममान है ।

३३ पाणाटपुत्ताटाद्यनेकजनयदाधियत्तिः पृथिर्वा परिपालयन्ति कं डुगूर्-
विषये

३४ केल्लिपुसूर् नान ग्रामे जिनालयाय वसदिकालुं जानिकालुं
नेल्लालुं कोलि-

३५ गन्केरंछालु कगुलनापोल तट्टुवल्लुवेरेडं पुलुक्कलनिडं नाल्लु-
तोट्टसु म-

३६ नेत्तानमुं चन्द्रसेनाचार्यके उदपूर्वं कोट्टेरकं माशी कोट्टेरकं
कारेअरुडं

[इस ताम्रपत्रके प्रारम्भमें गग वशके राजाओकी वशावली इस प्रकार बतलायी है - कोगणिवर्मा माघव - विष्णुवर्मगोप - माघव - अविनीत कोगणिवृद्धराज - दुविनीत - मुष्कर कोगणिवृद्धराज - श्रीविक्रम पृथिवीकोगणिवृद्धराज - श्रीवल्लभ पृथिवीकोगणिवृद्धराज । श्रीवल्लभके बन्धु गिवकुमार अवनिमहेन्द्र पृथिवीकोगणिवृद्धराजके शामनकालमें यह लेख लिखा गया था । पल्लवेल अरगने राजाकी अनुमतिसे केल्लिपुसूर् शामका एक खेत, बगीचा और कुछ जमीन एक जिनमन्दिरको दान दी उसका इम लेखमें निर्देश है । इसी समय गजेनाड निवामी कण्णम्मनून भी कुछ खेत इम मन्दिरको अर्पण किये । मात्तोट्टेगर्ने एक बगीचा तथा औरकल्वाय्गर् और सीम्पाल्वाय्गर्ने कुछ खेत दान दिये । राजाने भी कुछ खेत दान दिये थे । इम जिनमन्दिरके अधिष्ठाता चन्द्रमेनाचार्य थे ।]

[ए० रि० मं० १९२५ पृ० ९०]

२५-२६-२७

कोनकोण्डल (अनन्तपुर, आन्ध्र)

७वीं सदी, कन्नड

[ये तीन लेख रयामिदुल्लुगुडु नामक पहाडीपर पापाणोपर खुदे हैं । इनमें निम्नलिखित नाम उत्कीर्ण हैं -

१ सिंगनन्डिवन्डितन्

२ श्रीठरिगपम्पिण्ड

३ श्रीसूलाकोमरन्

इनकी लिपि ७वीं सदीकी है ।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ४५४-५५-५६ पृ० १२६]

२८

रत्नगिरि (कटक, उड़ीसा)

संस्कृत, ७वीं सदी

[इस लेखमें ७वीं सदीकी लिपिमें एक जिनालयका उल्लेख है । लेख क्षणित है ।]

[रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ४४८ पृ० ६७]

२९

पेनिकेलपाड्ड (कडप्पा, आन्ध्र)

संस्कृत-तेलुगु, ७वीं सदी

[इस लेखमें वृषभ नामक जैन आचार्यकी प्रशंसा की गयी है । उन्हें मन्थरूपी फसलके लिए मेघके समान तथा वाद-विवादमें पर्वतके समान दृढ कहा है । इस स्थानको अब सन्यासिगुण्डु कहा जाता है । लिपि ७वीं सदीकी है ।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ४०१ पृ० १२०]

३०

कौंगरपुलियंगुलम् (मद्रास)

वट्टेल्लुत्तुलिपि, ७वी सदी

(एक जैनमूर्तिके नोचे -) श्रीगज्जणन्दि

[यहाँसे ३८वें लेख तक ९ लेखोंका समय लिपिके आधारपर कहा है ।]

[रि० सा० ए० १९१० पृ० ५७ क्र० ५४]

३१

मुत्तुप्पट्टि (मद्राग)

घट्टेलुत्तुलिपि, ७वीं मर्ती

[(जैनमूर्तिके नीचे -) यह मूर्ति वेणुनाडुके कुण्डि अट्टपवामि भटारके शिष्य गुणमेनदेवके शिष्य कनकरोग्पेगियिगिद्द्वारा बनवायी गयी थी ।]

[रि० मा० ए० १९१० ए० ५३ क्र० ६१]

३२

मुत्तुप्पट्टि (मद्रास)

घट्टेलुत्तुलिपि, ७वीं मर्ती

[यह मूर्ति कुण्डि अट्टोपवामिके शिष्य माघनन्दिद्वारा बनवायी गयी थी ।]

[रि० मा० ए० १९१० ए० ५७ क्र० ६२]

३३-३८

कीलम्पुडि (मद्रास)

घट्टेलुत्तुलिपि, ७वीं मर्ती

[यहाँ जैन मूर्तियोंके समीप निम्न नाम गूदे हैं - कनकनन्दि भटारके शिष्य अभिनन्दन भटारके शिष्य अरिमण्डल भटारके शिष्य अभिनन्दन भटार (२) ।

अज्जणन्दिकी माता गुणमत्तियार् ।

गुणमेनदेवके शिष्य अनत्तवन् मायेनन्का भतीजा आचवन् श्रीपालन् ।

गुणमेनदेवके शिष्य कण्डन् पोपट्टन् । वेणुनाडुके शिष्य कुण्डिके सेवक कनकनन्दि । गुणमेनदेवके शिष्य अरियगाविदि, पल्लिके प्रमुण् ।]

[रि० सा० ए० १९१० ए० ५७ क्र० ६३-६९]

३६

नलजनम्पाडु (आन्ध्र)

तेलुगु, ७वीं-८वीं सदी

अगला भाग

- | | |
|-----------------------------|---------------------------|
| १ स्वस्ति म- | २ गवदहंत (प)- |
| ३ ग्मभट्टारकस्य पा- | ४ दानुध्यात परममा- |
| ५ हंश्वर पर(मे) श्वर प- | ६ हलवादित्य श्रीवादि- |
| ७ राजुल अन्दु पल्ले- | ८ यरि कोडुकु वादि (रा)- |
| ९ जेन्वानूरु राजमा (न)- | १० बु मूरु बुदुडु आर्ल- |
| ११ पट्टु क्षेत्रं बु प(रि)- | १२ मि पल्लेयारि (डा)- |
| १३ यनंबुनाकु हच्चे | १४ टीनि रक्षिचिनवानि (कि) |

पिछला भाग

- | | |
|--------------------|-----------------|
| १५ अडुगडु- | १६ गश्वमेधंबुना |
| १७ पलंबगु | १८ दीनि लच्चिन- |
| १९ वानिकि एकलु | २० श्रीपर्वतबु |
| २१ लच्चिन पाप- | २२ बगु वाच्चो- |
| २३ लाल कोडुकु | २४ पल्लवाचा- |
| २५ ज्यंस्य लिक्कि- | २६ तम् (॥) |

[इस लेखमें परमेश्वर पल्लवादित्य वादिरानुल नामक शासक-द्वारा ३ पुट्टि जमीन किसी ग्राममुख्यको दिये जानेका उल्लेख है। वादिरानुलको अर्हतभट्टारक तथा महेश्वर दोनोंका भक्त कहा गया है। लेखकी लिप्पि ७वीं-८वीं सदीकी है।]

[ए० इ० २७ पृ० २०३]

४०-४३

सातानिकोट (कुर्नुल, आन्ध्र)

कन्नड, ७वीं-८वीं सदी

[यहां एक खेतमें पापाणोपर निम्न नाम खुदे हैं -

१ श्री कोपा (क्षि) की निसिधि

२ संसारमीत

३ श्रीविमलचन्द्रन्

४ गणिते महाव्रति

इनकी लिपि ७वीं-८वी सदीकी है ।]

[रि० सा० ए० १९३७-३८ क्र० ३३०, ३३२,
३३७, ३३९ पृ० ४१-४२]

४४

माचैर्ल (कृष्णा, आन्ध्र)

तेल्लुगु, ८वीं सदी, पूर्वाध

[यह लेख पूर्वोक्त चालुक्य राजा सकललोकाश्रय जयसिंहवल्लभ (द्वितीय) के राज्यवर्ष ८ में लिखा गया था । दयावसन्त पृथिवीदेशरट्ट-गुडिके प्रपीत्र तथा धन्यवसन्त पृथिवीदेशरट्टगुडिके पुत्र कल्याणवसन्तुल्लु-द्वारा अरुन्तभट्टारको कुछ भूमि दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है । इस दानकी रक्षा कांटूरुके रट्टगुडि वंशके शासक करेंगे ऐसा लेखमें कहा है ।]

[रि० सा० ए० १९४१-४२ क्र० १८ पृ० १३१]

४५

शिगांव (धारवाड, मैसूर)

शक ६३० = सन् ७०८

सस्कृत-नागरी

[यह ताम्रपत्र चालुक्य राजा विजयादित्यके ११वे राज्यवर्ष शक ६३० में आषाढ पौर्णिमाके दिन दिया गया था । किमुवोल्लके राजस्कन्धा-वारसे राजाने पुरिगेरे नगरमे कुंकुमादेवी-द्वारा निर्मित जिनमन्दिरके लिए गुड्डिगेरे ग्राम दान दिया ऐसा इसमें उल्लेख है ।]

[रि० इ० ए० १९४५-४६ ए० क्र० ४९]

४६

अण्णिगेरि स्तम्भलेख (जि० धारवाड, मैसूर)

राज्यवर्ष ६ = सन् ७५१-५२, कन्नड

- | | |
|---|-------------------------------|
| १ स्वस्ति <u>कीर्तिवर्म(सत्या)</u> श्रय | २ श्रीपृथु(वीबल्लम) महाराजा |
| ३ धिराज परमेश्वर भटारर | ४ राज्य ओन्दुत्तरममिवृद्धि स— |
| ५ ले आरनेया दर्थ प्रव— | ६ र्त्तमानमागे जे— |
| ७ <u>शुलगेरिगे कलि—</u> | ८ यम्म गामुण्डुगेय्दी |
| ९ चेदियमान्माडिसिडोद् | १० इदर मुन्दे कोण्डि— |
| ११ शुलरकुण्ण कीर्तिवर्म— | १२ गोसासिय निरिसिवा |
| १३ कीर्तन । दीशापालस्य लि— | १४ खित्त । प्रशुनामन् । |

[यह लेख वदामीके चालुक्य राजा कीर्तिवर्मा द्वितीयके राज्यके छठे वर्षका अर्थात् सन् ७५१-५२ का है । इसमें जेवुल्लगेरिके ग्रामाधिकारी कलिमय्य-द्वारा एक चेदिय अर्थात् जिनमन्दिर बनवाये जानेका निर्देश है ।]

[ए० इ० २१ पृ० २०४]

५७

कुडलूर (मैसूर)

कन्नड, ८वीं सदी

श्रीयम्म तोरेय तडिय तोण्टटोल् तम्म भागम देवर्गे कोट्टर् अट्यप्प राठणठ पक्कदतोण्टम कोण्डु तोरेय तडिय तम्म भागम तोण्टमं मूडण-वसदिगे कोट्टर् रणपाकरसर् आले काण्डु तोट्टर् ॥

[इस लेखमें रणपाकरसके राज्यकालमें श्रीयम्म तथा अट्यप्प-द्वारा किसी नदीतीरपर स्थित पूर्वोपवासदिके लिए कुछ उद्यान आदिके दानका उल्लेख है । लिपि ८वीं सदीकी प्रतीत होती है ।]

[ए० रि० मै० १९०९ पृ० १४]

५८

नरसिंहराजपुर (मैसूर)

संस्कृत-कन्नड, ८वीं-९वीं सदी

[यह ताम्रपत्र गग राजा धीपुरुष-द्वारा दिया गया था । इस राजाके 'अनुकूलवर्ती' पसिण्डि गग कुलके नाम-धर्मा तथा कदम्बकुलके तुलुवडिने तगरे प्रदेशके तोल्लग्राममें स्थित चैत्यालयके लिए मल्लवलि ग्राम दान दिया था । इसी प्रकार कोणिक वधके मणलि मनेओडेयोन्ने कुछ भूमि दान थी । इसी ताम्रपत्रके अन्तिम भागमें गग राजा शिवमारके राज्यमें मिन्दनाडु ८००० के शासक विट्टरम-द्वारा तोल्लरके चैत्यके लिए करिमानी ग्रामके दानका भी उल्लेख है । तदनन्तर इमी चैत्यके लिए राजा शिवमारके मामा त्रिजयजन्ति अरस-द्वारा ६ खड्डुगभूमिके दानका उल्लेख है ।]

[ए० रि० मै० १९२० पृ० २७]

४६

मुजुगोडु (गुड्डूर, आन्ध्र)

तेलुगु ८वीं सदी

[यह लेख पूर्वीय चालुक्य राजा सर्वलोचनायन विजयवर्धनके राज्यवर्ष ३७ का है। इस समय महाम इलेक्टर गोकव्यते मुजुगोडुके जिनालयके लिए कुछ भूमि दान दी थी। यही एक अन्य लेखने गोकके सेवक बांगुगट्ट-द्वारा इस जिनालयके दीपाद्वारका उल्लेख है जिम्मा निर्माण अगोति-द्वारा मृत्निवृत्तके तीर्थमें किया गया था।]

[रि० म० ए० १०२९-३० क्र० १७-१८ पृ० ६]

५०

तिरुगोकर्णम् (मद्रास)

तमिल, ८वीं सदी

[यह लेख शङ्कैगगरे नामक पहाड़ीपर एक जिनमूर्तिके पास है। पाण्ड्य राजा कोङ्किष्मिकोन्डान् मुन्दरपाण्ड्यदेवके २८वें वर्षका एक राजाजाना इसने उल्लेख है। तन्नुमाग तैक्किगाडुके निवामियांसि कहा गया था कि कल्लान्मन्दिरे पेरुन्किलि चोलयेन्मन्दिरे आल्वारके पूजादि-के लिए स्थानीय पत्थि (जिनमन्दिरे) के व्यवस्थापको-द्वारा अर्पित इनीनोंको सम्मुख किया गया।]

[इ० पृ० क्र० ७३० पृ० ८५]

५१-५३

त्रिटिश न्यूजियम (लन्दन)

८वीं-९वीं सदी, संस्कृत-नागरी

१ अनन्तवीर्य २ सुरांचना ३ छति

[ये नाम तीन मूर्तियोंके पाठशौरीर खुदे हैं। ये मूर्तियाँ यक्ष तथा

यक्षिणियोंकी है और इनके शिरोभागमें जिनमूर्तियाँ खुदी हैं। अक्षरोकी लिपि तथा मूर्तिशिल्प ८वीं-९वीं सदीके हैं।]

[Medicval Indian Sculpture in the
British Museum P 41-42]

५४

वदनोगुप्ते (मैसूर)

संस्कृत-कन्नड, शक ७३० = मन् ८०८

[इस ताम्रपत्रके पाँच पत्रोंमेंसे पहले तीन पत्र द्वितीय भागके लेख क्र० १२३ के समान हैं जिनमें राष्ट्रकूट राजाओंका वंशवर्णन गोविन्द-राज३ तक किया गया है।]

चतुर्थ पत्र : पहली ओर

- ५१ धारावर्षश्रीवत्कममहाराजाधिराजस्य पुत्रः शौचाचारप्रसुगुण-
गणप्रण-
- ५२ मितसमस्तलोक परोपकाररुणापरः परमेश्वरधरणारविन्दवन्द-
नामिनन्दन २-
- ५३ णाचलोकश्रीकम्भराजः पुषाढ एडेनाहुविषये वदनोगुप्ते नाम
ग्राम तलव-
- ५४ ननगर अधिसति विजयस्कन्धावारे । त्रिशदुत्तरेष्वतीतेषु शक-
वर्षेषु कार्तिक-
- ५५ मास-पौर्णमास्यां रोहिणीनक्षत्रे सोमवारे कोषटकुन्देयान्वय
सिमल्लगे-
- ५६ गुरूगण कुमारणन्दिमट्टारकस्य शिष्य एरुवाचार्यगुरुः तस्य
शिष्यो वधंमा-
- ५७ नगुरु (१) सर्वप्राणिहितः साक्षात् सिद्धान्तानुगमोद्धतः (१)
शान्तः सर्वज्ञकल्पोय नयोज्ञ-

- ५८ तगुणाञ्जत. (॥) तस्मै तं ग्रामं अदात् स्वपुत्रश्रीशंकरगण
विज्ञापनेन श्रीकम्ब्रेष श्रीविजय-
५९ वमतये तलवननगरं प्रतिष्ठितार्यं । तस्य मीमान्तराणि वडगण
दिग्ं पोन्नपुं-

चतुर्थं पत्र : दूसरी ओर

- ६० लि वडगण पडुवण कोनेदु पोमत्तिगल्लु पडुवणसोमे कडम्ब-
गेरंय पंवं-
६१ ग पडुवण तेंकण कोनेदु पोंगुल्लवल्निय तेन्नोलेवे तेकण सोमे
बेलक्काल तेंछां-
६२ वे तेंकण मूडण कोनेदु सुदुवन्नि कोरल्लु मूडणसोमे कल्लि-
वेट्टिन मूडण पारे-
६३ ये मूरु वेदुदु ओळगु मूडण वडगण कान्नेदु चट्टनित्रिय वडगण
ओल्लवे
६४ अस्य दानस्य साक्षिण षण्णवत्तिमहन्नविषय प्रकृतय.
६५ योस्यापहर्ता लोमान्मोहात् प्रमादेन च स पचमिर्महद्मि.
पातकै (·) मंचुक्कां
६६ भवति यो रक्षति स पुण्यमाग् भवति अपि चात्र मनुगीता ()
श्लोका (·) स्वदना परदत्तां
६७ वा यो हरत वसुन्धरां (१) पट्टिं वधंमहन्नाणि विद्यानां जायते
क्रिमि. (॥) स्व दानु
६८ सुमहच्छक्यं दु खं अन्यस्य पालनं (१) दान वा पालनं वेत
दानाच्छेयोनुपा-
- पाँचवें पत्र : पहली ओर
- ६९ लनं (॥) बहुमिवसुवा भुक्ता राजभिस्सगरादिमि. (१) यस्य
यस्य यदा भूमि (·) तस्य

- ७० तस्य तटा फल (॥) देवम्ब तु विप घोर न विप विपमुच्यते
(१) विषमंकाकिन हन्ति

७१ देवस्व पुत्रपौत्रिक (॥) विइवकर्माचार्येण लिगित (॥)

[यह ताम्रपत्र राष्ट्रकूट ममाद् गोविन्दराज (तृतीय) के राज्यकालमें सम्राट् (श्रुव निरूपम) धारावर्षके पुत्र रणावलोक कम्भराज-द्वारा कार्तिक शु० १५ शक ७३०, सोमवारके दिन दिया गया था । कोण्डकुन्देय अन्वय-सिर्मलगेरु गणके कुमारणदि भट्टारकके प्रशिष्य तथा एलवाचार्यके शिष्य वर्धमानगुरुको वदनोगुप्ते ग्राम दान द्रिये जानेका इयमे उल्लेख है । यह दान तलवननगरकी श्रीविजयवमतिके लिए दिया गया था ।]

[ए० रि० मै० १९२७ पृ० ११२]

५५

सूरत ताम्रपत्र (गुजरात)

श० ७४३ = सन् ८२१, मस्कृत-जागरी

- १ ओ । श्रियः पठ नित्यमशेषगाचर नयप्रमाण प्रतिपिद्धुष्यथ ।
जनस्य भव्यस्वसमाहितात्मना जयत्यनुग्राहि जिनेन्द्रशासन ॥
(१) स वो-
- २ व्याद् वेधमा धाम यज्ञमिकमल कृत । हरद्वयस्य कान्तेन्दु-
कलया कमलकृत ॥ (२) आर्णाद् द्विषत्तिमिरमुद्यतमण्डलाप्रो
ध्वस्तिश्रय-
- ३ नमिमुखौ रणशर्वरीषु । भूपश्यां च विंशुरिवास्तद्विगन्तकीर्ति-
गोविन्दराज इति राजसु राजसिंह ॥ (३) दृष्ट्वा चमूममि-
- ४ सुखी सुमटाट्टहासामुन्नामित सपट्टि येन रणेपु नित्य । दष्टाधरेण
दधता भ्रुकुटिं ललाटे खड्ग कुल च हृद(य)-
- ५ च निज च सत्व ॥ (४) खड्ग करामान्मुखतइव शोभां मानो
मनस्तस्सममेव यस्य । महाहवे नाम निशम्य सचख-

- ६ चं रिपूणां त्रिगलन्त्रकाण्डे ॥ (५) तस्यान्मजो जगति विश्वन-
द्रोर्धर्कनर्गताविहारिहरिविक्रमधानधारी । सूर-
- ७ त्रिविष्टनृपानुकृति कृतज्ञ. श्रीकर्मगज इति गोत्रमणिवंभूत ॥
(६) तस्य प्रभिन्नकगटाच्युतदानद-
- ८ न्तिदन्तत्रहारन्चिरोल्लिग्निनाम्पीठ । इमाप क्षिता क्षपितशत्रु-
रभूत्तनुज मद्राष्ट्रकृत्कनकाडिरिवेन्द्रराजः ॥ (७) तस्योपा-
- ९ जितमहमस्तनयश्चतुरुदयिवलयमालिन्या । मोक्षा भुवङ्गत-
क्रनुमदक्ष श्रीदन्तिदुर्गगजोभूत ॥ (८) कार्त्तिकाकर-
- १० लनरात्रिपचोलाण्डयश्रीमोयत्रत्रयिभेदत्रिवानदर्थ । कर्णाटकं
बलमचिन्त्यमजेयमन्यभृत्यं कियद्भिग्-
- ११ पि यस्मद्व्या जिगाय ॥ (९) अत्रूचिन्नगमगृहीतनिशातशन्न-
मथ्रान्तमप्रतिहनाजमपेतयत्न । यो बल्लभ नपदि दण्ड-
- १२ बलेन जित्वा राजाविगजपरमेस्वरनामचाप ॥ (१०) आमेतां-
विपुलोपलावल्लिमल्लंलंमिमालाजलादाप्रालेयक-
- १३ लंकिनामलशिलाजालानुपाराचलादा पूर्वापरवारिराशिपुलिन-
प्रान्तप्रभिद्धावधेयेनेद जगता स्वविद्रमबलेनेका-
- १४ नपत्रीकृता ॥ (११) तस्मिन् दिव प्रयाने बल्लभराजे क्षतप्रजा-
बाध । श्रीकर्म्मराजमृचुमंहोपति कृष्णराजोभूत ॥ (१२) यस्य
न्वभुजप-
- १५ राक्रमनिउशोदोन्मादिनागिदिक्चक्र । कृष्णन्येवा(कृष्ण) चरितं
श्रीकृष्णराजस्य ॥ (१३) शुभनुगनुगानुरगप्रवृद्धरेणूद्धरद्वरवि-
किरण । श्रीप्रेमपि ननां निरिल
- १६ प्रावृट्कालायते स्पष्ट ॥ (१४) त्रीनानाथप्रणयिषु यथेष्टचेष्टं
नमीहितनजस्र । तत्क्षणमकालवर्षे वर्षति सर्वाथिनिर्व(प) ण ॥
(१५) राहृष्यमा-

- १७ क्षत्रभुजजातबलावलेपमाजं त्रिजिन्म्य निशितामिलताप्रहरै ।
पालिध्वजावलिशुभामचिरेण यो ङि राजाधिराजपरमेस्वरना
- १८ ततान ॥ (१६) क्रोधाद्दुःखात्तन्मद्ग प्रसूनगिपुमयैर्मानमान
समन्ताद्वाजाद्दुद्वृत्तवैरिप्रकटगजघटाटोपमक्षोमदक्ष । सौर्यं
त्यक्त्वारि-
- दूमरा पत्र पहला भाग
- १९ वर्गो मयचकितवपु क्वापि ह्यैव मद्यो द्रपोध्मातारिचक्रक्षय-
करमगमद्यय द्वांर्दण्डरूप ॥ (१७) पाता यश्चतुरधुराशिरमनाड-
कारमाजा भु-
- २० वस्त्रध्याश्चापि कृतद्विजामरगुरुप्राज्याज्यपूजादरो । दाता मानभृद-
प्रणोर्गुणवता योसौ श्रियो वल्लभो भोक्तु स्वर्गफलानि भूगितपमा
- २१ स्थान जगामामरं ॥ (१८) येन इत्त्रातपत्रप्रदतरयिकरवात-
तापात्मलील जग्म नासौरभूलीबवलिउवपुषा वल्लभालयस्म-
दाजो । श्रीमद्गोविन्दराजो जि-
- २२ तजगद्वदितस्त्रेणवैधव्यदेत्तुस्तन्यासीत् सुनुरेक लितागति(म)
त्तेमकुम्भ ॥ (१९) तस्यानुज श्रीधुरराजनामा महानुभाव
प्रथितप्रताप ।
- २३ प्रसाधिताशेषनरन्ध्रच(क्र.) क्रमेण बालार्कवपुर्धम्व ॥ (२०) जाते
यत्र च राष्ट्रकूटतिलके मद्मूतचूडामर्णो गुर्वो तुष्टिरथानिलस्य
जगत सुम्भामिनि प्रस्यह । (सत्य) मस्यमिति प्रमा-
- २४ सति मति क्षामाममुद्रान्तिकामार्माद् धर्मपर गुणाभृन्ननिधौ
सत्यप्रताधिष्ठिते । (२१) दशधरकिरणनिकरनिम यस्य यशः
सुरनगाग्रसानुस्यै । परिर्णो-
- २५ यतेनुरक्तविद्याधरसुन्दरीनिवहं ॥ (२२) ह्यष्टान्वह योधिजनाय
नित्य सर्वस्वमानन्दितघन्धुवर्ग प्राठात् प्रष्टो हरति स्मचेगात्
प्राणान् यमस्यापि नितान्त-

२६ वीर्यः ॥ (२३) रक्षता येन निश्शेष चतुरम्भोधिमंयुत । राज्यं धर्मेण लोकानां कृता हृष्टिः परा हृदि ॥ (२४) योसौ प्रसाधित-
(ममुन्नत) सारदुर्गो गांगौघसन्तर्तनिरोध-

२७ विवृद्धकीर्तिं । आत्मीकृतोन्नतवृषाकविभूतिरुच्चैर्बन्धुः ततान परमेश्वरतामिहैक ॥ (२५) तस्यात्मजो जगति सत्प्रथितोरु-
कीर्तिर्गोविन्दराज इ-

२८ ति गोत्रललाममून त्यागी पराक्रमधनः प्रकटप्रताप सन्तापि-
ताहितजनो जनवल्लमोमूत् ॥ (२६) पृथ्वावल्लम इति च प्रथितं यस्या-

२९ परं ज(ग)ति नाम । यश्चतुरुद्रधिसीमामेको वसुधां वगे चक्रे ॥ (२७) एकोप्यनेकरूपो यो ददशे भेदवादिमिरिवात्मा । परवल-
जलधिमपारं

३० तरन् स्वदोभ्यां रणे रिपुभि ॥ (२८) एको निर्होतिरहं गृहीतशस्त्रा मे परे बहवो । यो नैवंविधमकरोच्चित्त स्वप्नेपि किमुताजौ ॥ (२९) राज्यामिपेकलशैरमि-

३१ पिच्य दत्ता राजाधिराजपरमेश्वरतां स्वपित्रा । अन्यैर्महानृपति-
भिर्बहुभिस्समेत्य स्तम्भादिभिर्भुजबलादवलुप्यमानां ॥ (३०) एकोनेकनरेन्द्रवृन्द्रसहिता-

३२ न्यस्तान् समस्तानपि प्रोस्ता(त्ता)सिलताप्रहारविधुरा बध्वा महामयुगे । लङ्मी(म)प्यचला चकार विलसत्सन्धामराहिणीं संसीदद्गुरविप्रसज्जनसुहृद्व-

३३ धूपमोन्यां भुवि ॥ (३१) तत्पुत्रोत्र गते नाक्रमाकम्पितरिपुग्रजे । श्रीमहाराजमर्वाख्य ख्यातो राजामवद् गुणै ॥ (३२) अर्थिषु यथार्थतां यस्सममिष्टफलाप्तिलब्धतो-

३४ वेपु । वृद्धिर्निनाय परमाममोषवर्षामिधानस्य ॥ (३३) राजा-

मृन् तनपितृव्यो रिपुमवत्रिमंजंद्भूम्यमार्चं कृत्तुर्लक्ष्मीवानिन्द्रराजो
गुणिजननिकरान्तश्चमफा-

- ३५ रकारी । रागादन्यान व्युदम्य प्रकृतिगविनया य नृप मेवमाना
राजधर्मैव चक्रे म(कल)कृतिजनाद्गोततभ्यस्वमात्रं ॥ (३५)
निर्वाणावाप्तवानामदितस्मिजनो -
- ३६ पास्यमाना मुचूत्त वृत्त जिग्रान्यराजां धरिसुदयवान् मंत्रो
द्विमकेभ्य । एकाकी हसवैरिभ्यलनकृतिमहप्रानिराज्येन्द्रशु-
र्काटीय मण्डल
- ३७ यन्मपन द्वत्र निजस्वामिदत्त ररक्ष ॥ (३७) यस्यागमात्रजयिनः
प्रियमाहमस्य क्षमापालक्षेपफलमत्र बभू(उ) मैन्त्यं । मुनत्वा च
सर्वभुवनेश्वरमादिष्टे -

दूसरा पत्र द्मरा भाग

- ३८ व नाचन्दतान्यममरेणपि यो मनम्यो ॥ (३८) श्रीकरंराज इति
रक्षितराज्यमारस्मार, कुलस्य जनयो नयशान्तिशौर्यः । तस्या -
- ३९ मत्रद् विस(व)नन्द्रितवन्नुमार्धं पार्थं मदैव धनुषि प्रथम-
इशुचीना ॥ (३९) दानेन मानेन मद्राजया वा शौर्येण वीर्येण च
कोपि भूप । एतेन माम्याम्नि
- ४० न वेति कीर्तिस्सर्जातुका भ्राग्यति म्य लंक ॥ (४०) म्वेच्छा-
गृहीतत्रिपया(न्)ददमचमाज प्रोद्बृत्तदत्ततरशौलिकतराष्ट्रकान ।
उत्प्रातग्रहगनिज -
- ४१ बाहुयलेन जित्वा श्रीमोचवर्षमधिरान स्वपदं व्यधत् ॥ (४०)
तेनेदमनिलविद्युच्चकलमालीम्य जीवितममार । क्षितिदानपरम-
पुण्य, प्रवर्तितो ध -
- ४२ मंत्रायोयम् ॥ (४०) स च ममधिराताक्षेपमहादाव्टमहासामन्ता-

धियनि सुवर्णवर्षश्री(क)र्कराजदेव. कुशली मन्त्रिनेव यथासंबन्ध-
मानान् गष्टयति -

- ४३ विषयग्रानपन्निग्रानकृद्भुक्तन नियुक्तवामावकाधिद्रागिकमहन्गदि-
कान् समनुद्वर्गयन्त्यन्तु वदन्विदित यथा नया श्रीवद्विज्ञान -
- ४४ स्थावाभितविज्ञयस्कन्धावागन्थितेन ज्ञानादित्रोगन्मन्त्रैहिका-
सुप्तिनकपुण्ययशांनिवृद्धये श्रीनागमारिकास्वनलम विष्टाईक्या-
ल(या)वतननि(वद्) -
- ४५ मन्वपुरान्यमण्डितवमनिकाया. गण्डरुद्रितनवक्रमं चस्वलिदान-
पूजार्थं तथा तथानिबन्धनानचानुष्टयनूलम्बोदयान्द्ययमेन -
- ४६ मेनमंवनलवादिगुरोर्दिशप्यश्रीमुनिपूज्यपादः तच्छिष्य-श्रीमद-
परान्तिगुरो श्रीनागमारिकाप्रतिवद् कन्वावाटकग्रानस्य
उत्तरदिशि
- ४७ हिण्ययोगामिबानां दापुवापी यस्यावाटनानि पूर्वतः श्रीधर-
वापिका दक्षिणतो वहः अगत् पूर्वा महानदी उत्तरत-
स्मन्वपुर -
- ४८ वापिका । पूर्वमिथं चतुरावाटापलक्षिता मथान्यहिण्यवादेया
अवाटनप्रवेश्यस्मर्वराजर्कायाननिहस्तप्रज्ञेपगीय आच -
- ४९ न्द्रार्कणिवभितिमरित्पर्वतसमकालीन. गिष्यप्रशिष्यान्वयक्रमोप-
सोग्यः शकनृपकालार्तानमंवनरगतेशु मष्टसु त्रिचचारिगद -
- ५० विक्रिष्वर्तानेषु वैशाखयोगमास्यां स्नात्वाडकानिसर्गेण प्रतिपादि-
तोस्योचिनया वाचार्यस्थिया मुंजतो नोजयत. कर्पत कर्पयत
प्रतिदि -
- ५१ क्षतो वा न केनचिन् परिपन्थिता करणीया ॥ तथागामिनृरति-
मिरस्मद्वंशैरन्यैर्वा मानान्यं मूमिदानफलमवेत्य विद्युल्लोला-
न्यनिन्थान्यैश्च -

- ५२ यीणि नृणाग्रलग्नचचलविन्दुचचल च जीवितमाकलय्य स्वदाय-
निर्विशेषीयमनुमन्तव्यः परिपालयितव्यश्च । यश्चाज्ञानतिमिर-
पटलाद्भूत -
- ५३ मतिराच्छिन्धादाच्छिद्यमानक वानुमोदेत स प(च)भिर्महापात-
कैरुपपातकैश्च सयुक्तस्स्यादित्युक्त च भग(व)ता वेदव्यासेन
व्यासेन ॥
- ५४-५८ [नित्यके ध्यापात्मक श्लोक - षष्टि वर्षसहस्राणि भाटि]
- ५९ यथा चैतदेव तथा शासनदाता लिपिज्ञस्वहस्तेन स्वमतमारोप-
यति ॥ स्वहस्तोय मम श्रीकर्कराजस्य श्रीमदि -
- ६० न्द्रराजसुतस्य ॥ लिखित चैतन्मया महासन्धिविग्रहाधिपतिना
नारायणेन कुलपुत्रकश्रीदुर्गभट्टसूनुना ॥ जीयाद्दुरितविद्वेषि
शासन जि -
- ६१ नशासन । यदन्यमतशैलानां भेदने कुलिशायते ॥ (४९)
जयति जिनोक्तो धर्मपद्मजीवनिकायवत्सलो नित्य । चूडामणि-
रिव लो(के)
- ६२ विभाति यस्सर्वधर्माणाम् ॥ (५०)

[यह ताग्रपत्र शक ७४३ मे वैशाख पूर्णिमाको दिया गया था ।
इसमें पहले राष्ट्रकूट सम्राटोकी वशावली अमोघवर्ष (प्रथम) तक दी गयी
है । तदनन्तर अमोघवर्षके पितृव्य(चाचा)इन्द्रराजके पुत्र कर्कराज सुवर्णवर्ष-
का उल्लेख है जो गुजरातमे शासन कर रहा था । अमोघवर्षके राज्यारोहण-
के बाद कई मामन्तोंने विद्रोह किया था उनपर विजय प्राप्त करनेमे कर्क-
राजकी ही मदद उपयोगी सिद्ध हुई थी । कर्कराजने उक्त वर्षमें मूलमघ-
सेनमघके मल्लवादिगुरुके शिष्य सुमतिपूज्यपादके शिष्य अपराजितगुरुको
नागसारिकाके जिनमन्दिरके लिए हिरण्ययोगा नामक खेत दान दिया था ।]

५६

राणिवेण्णूर (धारवाड, मैसूर)

शक ७८१ = सन् ८६०, कन्नड

[यह लेख राष्ट्रकूट सम्राट् अमोघवर्ष (प्रथम) के समयका है । नागुल पोल्लन्ने द्वारा स्थापित नागुलवमदिके लिए शक ७८१ में कुछ भूमि दान दिये जानेका इममें निर्देश है । यह दान निहवूरगणके नागनन्धा-चार्यको दिया गया था ।]

[रि० आ० म० १९३०-३४ पृ० २०९]

५७

चेंदूर (मैसूर)

शक ७८५ = सन् ८६४, कन्नड

[यह लेख राष्ट्रकूट सम्राट् अमोघवर्ष १ के समय शक ७८५, तारण मंवल्लरमें लिखा गया था । चिकण नामक अधिकारीको कुछ भूमि दिये जानेका इममें उल्लेख है । ब्रतोका पालन और सत्यसन इनका भी उल्लेख हुआ है । अतः यह समाधिमरणका स्मारक प्रतीत होता है ।]

(मूल कन्नडमें मुद्रित)

[सा० इ० इ० ११ पृ० ६]

५८

पेवरमलै (मदुरा, मद्रास)

शक ७९२ = सन् ८७०, तमिल

- १ शकर याण्डुपुल्लु-नूरुत्तोण्णूरिण्डु
- २ पोन्दणवरगुणकुं याण्डु पट्टु गुणवीरक्कु-
- ३ रवडिगल् माणाक्क(र)कालत्तु शान्तिवीरक्कु-
- ४ कुरवर् तिरुवयिरै पोरिश्च (पाइन्)प(म)टारैयुमिय-
- ५ किक् अन्वैगलैयु पुट्टुक्कि इरण्डुक्कुमुद्-

६ टावधियुमोरडिगलुक्कु शोराग अमैत्त पो-
७ ण् पेन्नुर्रेन्दु काणम् ॥

[यह लेख पाण्ड्य राजा वरगुण २ के राज्यवर्ष ८, शक ७९२ का है । इस समय गुणवीरके गिष्य धान्तिवीरने तिरुवयि^३ स्थित पार्श्वनाथ मूर्ति तथा यक्षीमूर्तिका जीर्णोद्धार किया था । इनके लिए उन्हें ५०२ काणम् (सुवर्णमुद्रा)दान मिला था ।]

[ए० ड० ३२ पृ० ३३७]

५६

धर्मपुरी (सालेम, मद्रास)

शक ८०० = सन् ८७८, कन्नड

किलेम मारियम्मन देवालयके आगे पढे हुए स्तम्भपर

[इस लेखमें पल्लव भहेन्द्र नोलम्ब-द्वारा किसी जैन मन्दिरके लिए दान दिये जानेका निर्देश है । इस लेखका समय शक ८००, विलम्बि सवत्सर था ।]

[६० म० सालेम ८१]

६०

कोप्पल (रायचूर, मंगूर)

कन्नड, शक ८११ = सन् ८९०

[इस लेखकी तिथि कार्तिक पूर्णिमा, शक ८११, शोभन सवत्सर ऐसी है । इस समय दण्डनायक अम्मरसने कुपण तीर्थकी यात्रा की तथा महासामन्त कदम्बवशीय अलियमरस-द्वारा निर्मित वसतिके लिए कुछ दान दिया था ।]

[रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० १५९ पृ० ४१]

६१

धर्मपुरी (सालेम, मद्रास)

शक ८१८ = सन् ८९३, कन्नड

मल्लिकार्जुन मन्दिरके आगे एक स्तम्भपर

[राजा महेंद्राधिराज नोलम्बके समय शक ८१५ में यह लेख लिखा गया । इसमें निवियण्ण और चण्डियण्ण-द्वारा मूलसंघ, सेनान्वय, पोगरिय-गणके आचार्य विनयसेन सिद्धान्तभटारके गिष्य कनकसेन सिद्धान्तभटारको मूलपल्लि ग्राम दान देनेका उल्लेख है ।]

[इ० म० सालेम ७४]

६२

सित्तन्नवासल (पुट्टुकोट्टै, मद्रास)

९वीं सदी, तमिल

[यह लेख पाण्ड्य राजा अवनिपगोस्वर श्रीवल्लभके समयका है । इलंगोत्तमन् (इसीका नाम मदिरे आगिरियन् भी था) द्वारा अन्तर्मण्डपका जीर्णोद्धार तथा बाह्य मण्डपका निर्माण किये जानेका इसमें उल्लेख है । इस मन्दिरको अरिवन् कोयिल् (अर्हन्मन्दिर) कहा गया है । इन गुहा-मन्दिरके बाहरी भागपर कई यात्रियोंके नाम खुदे हैं जिनकी लिपि ७वीं सदीकी है ।]

[रि० आ० स० १९२९-३० पृ० १६७-१६९ रि० सा० ए०
१९४०-४१ क्र० २१५ पृ० ९९]

६३

हेव्वल्लगुप्पे (मंमूर)

९वीं सदी, कन्नड

१ स्वस्तिश्रीनरसीगिरे अप्पोर् दुग्गमार

२ कोयिल्चमट्टिगे अरगण्डुगन्वेदे मण् कोट्टर्

- ३ अरमण्डमेगालुमगोकेमोगेयु ओट्टिपा-
- ४ दिथुं गोदियन्दम्मगलरुण्डुग येदेनेल् मण्कोट्टर्
- ५ इटानलिच्चु कंडिसिटोमोक्कल् कंडुग पंचम-
- ६ हापातकनक्कवन् मक्कल्लु माग-
- ७ वसट्टियान्कंय्दोन् नारायण पं-
- ८ रुन्तच्चन्

[यह लेख ९वीं सदीकी लिपिमें है । नरसीगेरे अप्पोर् दुग्गमार (जो गगवसका राजपुत्र था) द्वारा एक जिनमन्दिर (कोयिल्वमदि) को ६ खण्डुग भूमि दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है । इतनी ही भूमि अरमण्डमेगल्लु, अगोकेमोगे, ओट्टिपाडि इन ग्रामोंके निवासियों-द्वारा तथा गोयिन्दम्म-द्वारा दान दी गयी थी । श्रेष्ठ शिल्पकार नारायणने इस मन्दिरका निर्माणकार्य किया था ।]

[ए० रि० मै० १९३२ पृ० २४०]

६४

मोटे चेन्नूर (चारवाड, मैसूर)

९वीं सदी, कन्नड

[यह लेख ९ वीं सदीकी लिपिमें है । इसमें किसी वसदिके लिए चन्द्रनन्दि भट्टारको भूमि दान दी जानेका उल्लेख है । इस लेखकी स्थापना इन्दर पिट्टम्मके मेतवोव कृण्डमय्य-द्वारा की गयी थी ।]

[रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई १११ पृ० १२९]

६५

कलकत्ता (नाहर म्युजियम)

९वीं सदी, कन्नड

- १ श्री जिनवल्लभन सञ्जन
- २ भागियथेय माडिसिड
- ३ प्रतिमे

[यह लेख पीतलकी चौबीसतीर्थकरमूर्तिके पादपीठपर है। लिपि ९वीं सदीकी है। यह मूर्ति जिनवल्लभको स्वजन (पत्नी) भागियवे-द्वारा स्थापित की गयी थी। लिपिसे स्पष्ट होता है कि यह मूर्ति कर्नाटकमें निर्मित हुई थी।]

[ए० रि० मै० १९४१ पृ० २५०]

६६-६७

तिरुनिडंकोण्डै (मद्राम)

९वीं सदी, तमिल

[इस लेखमें कहा है कि तिरुनरुगोण्डैके किल्लैप्पल्लि (जैन मन्दिर) का चतुर्भुगतिस्वकोयिल् (चतुर्मुख वसति) तथा पूर्वका मभायण्डप तलक्कूडि निवामी विगैयनल्लूलान् कुमरन् देवनूने वनवाया था। लेखकी लिपि ९वीं सदीकी है। यहीके अन्य दो भागोंमें इसी समयकी लिपिमें वाणकोवरैयर् तथा आरुलगपेरुमान्का उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३०६-७ पृ० ६६]

६८-६९

तिरुनिडंकोण्डै (मद्रास)

९वीं सदी, तमिल

[इस लेखमें नारियप्पाडि निवामी गिगणार् पेरियवडुगणार्-द्वारा दो जैन पल्लियो (मन्दिरों) के लिए १० पोण् (मुद्राएँ) दान दिये जानेका निर्देश है। यहीके एक अन्य लेखमें नारियप्पाडि निवासी पेरियन-क्कनार्के पुत्र (नाम लुप्त) द्वारा भी कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है लिपि ९वीं सदीकी है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३०८-९ पृ० ६६]

७०

कीरप्पावकम् (चिंगलपेट, मद्रास)

९वीं सदी, तमिल

[इस लेखमें कीरप्पावकम्के उत्तरमें देववल्लभ जिनालयका उल्लेख है। इसका निर्माण यापनीय मघ कुमिलिगणके महावीरगुरुके शिष्य अमरमुदलगुरुद्वारा किया गया था। लिपि ९वीं सदीकी है।]

[रि० सा० ए० १९३४-३५ क्र० २२ पृ० १०]

७१

बेगूर (बगलोर, मैसूर)

९वीं सदी, कन्नड

[इस निशिधिलेखमें मोन भट्टारके शिष्य 'निभट्टारके समाधिमरणका उल्लेख है। लिपि ९वीं सदीकी है। यह लेख नागेश्वर मन्दिरमें लगा है।]

[ए० रि० मै० १९१५ पृ० ४६]

७२

बेलगाँव (मैसूर)

९वीं-१०वीं सदी, कन्नड

[यह लेख नेमिनाथमूर्तिके पादपीठपर है। इस मूर्तिकी स्थापना 'राष्ट्रकूट वंशत्पी समुद्रके लिए चन्द्रके समान' शशिचन्द्रके गुह नेमिनाथ (नेमिचन्द्र ?) द्वारा की गयी थी।]

[रि० अ० स० १९०८-२९ पृ० १२५]

७३

अलगरमलै (महुरा, मद्रास)

बट्टेलुत्तु लिपि-९वीं-१०वीं सदी

[यह लेख एक जिनमूर्तिके समीप खुदा है]

(मूल-) १ श्रो अक्षर्यण - २ डि शोयल्

[आर्यनन्दि आचार्यका यह नामोल्लेख है । लिपि ९वी-१०वी सदीकी है ।

[रि० ड० ए० १९५४-५५ क्र० ३९६ पृ० ६२]

७४-७५

चिक्कहनसोगे (मैसूर)

१०वीं सदी-प्रारम्भ, कन्नड

[इम निसिधिलेखमे मूलमध-देमिगण-पन्सोगे शाखाके श्रीधरदेवके गिप्य नेमिचन्द्रके नमाधिमरणका उल्लेख है । यह लेख १०वीं सदीके प्रारम्भका है तथा इम समय रामेञ्जर मन्दिरमे लगा है ।

यहीके एक अन्य निमिधिलेखमे नागकुमारकी पत्नी जक्कियन्वेके नमाधिमरणका उल्लेख है । समय १०वीं सदीके प्रारम्भका है ।]

[ए० रि० मै० १९१४ पृ० ३८]

७६

चिक्कहनसोगे (मैसूर)

१०वीं सदी-प्रारम्भ, कन्नड

- | | |
|-----------------------|-----------------------------|
| १ पुरेय नमु- | २ द्रवेष्टितधरात- |
| ३ लम प्रतिपालिसु | ४ तुमिस्तेरंग म- |
| ५ हारिमण्डलिक- | ६ रिं वेसकेंचये विला- |
| ७ सयेलगेय मे- | ८ रेवकरुरनेन्वे- |
| ९ निसल आलिपोरी | १० स्तितसन्ध्यरिन्दु वन्दे- |
| ११ रग समन्तु क- | ११ हनेलेयट्टेवर |
| १३ पाट्टपयोर्ह- | १४ गलोल् ॥ स्थाधरज- |
| १५ गमतीर्थ मावि- | १६ सि पेल्दागलोरदे गो- |
| १७ म्मट्टेवर् स्थावर- | १८ तीर्थ कलनेलेट्टेव- |
| १९ र् भूवल्लयट्टौलगे | २० जगमतीर्थ ॥ |

२१ बेलदेव बरेठं

२२ इल्वेडे मल्लाचा-

२३ रि ॥

[इस लेखमें (गग राजा) एरेयके समय एलाचार्यके समाधिमरणका तथा उनके शिष्य कल्लेदेव-द्वारा उनकी निमिधिकी स्थापनाका उल्लेख है । गोम्मटदेवको स्थावरतीर्थ तथा कल्लेदेवको जगमतीर्थ कहकर उनकी प्रशंसा की है । लेख १०वीं सदीके प्रारम्भका है ।]

[ए० रि० मै० १९१४ पृ० ३८]

७७

वन्दणिके (मैसूर)

शक ८२४ = सन् ९०२, कन्नड

[यह लेख राष्ट्रकूट राजा कृष्ण २ अकालवर्षके समयका है । महा-सामन्त बकेय्यरसके पुत्र लोकटेय्यरसके अधीन पेरुडे विद्वय्य-द्वारा शक ८२४ में वन्दणिकेमें एक बसदिके निर्माणका इसमें उल्लेख है । लोकटेय्यरसने इस बसदिके लिए नागर खण्ड ७० विभागका दण्डिल्लि ग्राम विद्वय्यको दान दिया था ।]

[ए० रि० मै० १९११ पृ० ३८]

७८

असुण्डि (मैसूर)

शक ८४७ = सन् ९२५, कन्नड

[यह लेख राष्ट्रकूट सम्राट् गोविन्द (चतुर्थ) नित्यवर्षके समय शक ८४७, पाथिव सबत्सरमे लिखा गया था । इसमें नागय्य द्वारा एक जिनालयका निर्माण तथा उसके लिए कुछ भूमिदान किये जानेका उल्लेख है । यह दान बकापुरके घोरजिनालयके प्रमुख चन्द्रप्रभ भटारके शासनकालमें दिया गया था ।]

(मूल कन्नडमें मुद्रित)

[सा० इ० इ० ११ पृ० २०]

७६

हलहरवि (वेल्लारी, मैसूर)

शक ८५४ = सन् ९३२, कन्नड

[यह लेख शक ८५४ पाथिव संवत्सर (यह वर्षनाम गलत है) का है । इसमें राजा नित्यवर्षके राज्यकालमें कन्नरदेवकी रानी चन्दियब्बे द्वारा नन्दवरमें एक जैन वसदिका निर्माण तथा उनके लिए कुछ करोका उत्पन्न पद्मनन्दि आचार्यको अर्पित किये जानेका उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९१५-१६ क्र० ५४० पृ० ५२]

८०

कोप्पल (रायचूर, मैसूर)

शक ८६२ = सन् ९४०, कन्नड

[यह लेख जिनशासनकी प्रणसासे शुरु होता है । तिथि शक ८६२, विकारि संवत्सर ऐसी दी है । अन्य विवरण प्राप्त नहीं ।]

[रि० ड० ए० १९५५-५६ क्र० १९६ पृ० ३७]

८१

चिजापुर (उदयपुरके समीप, राजस्थान)

संवत् ९९६ = सन् ९४० तथा संवत् १०५३ = सन् ९९७

संस्कृत-नागरी

१ जवस्तव । परिशामनु ना परा(थंख्या)पना जिना ॥१
ते व. पांतु(जिना)विनामसम(ये यत्पा)उपज्ञान्मुखप्रेखासंख्य-
मधूख(शे)खरनखश्रेणीषु विम्बोदयात् । प्रायैकादशमिर्गुण दश-
शती शक्रस्य शुभदृशां कस्य स्याद् गुणकारको न यदि वा
स्वच्छात्मनां सगम ॥२

- २ नासत्क्रांला(प)शोमित । मुशो(२२) लौ मृज्जिं रुदो मही-
भृता ॥३ अमिबिभ्रद् रचिं काना माधित्री चतुरानन । हरिधर्मा
वमूवात्र भृविभुमुंवनाधिरु ॥४ स्रुल्लोकरुचिलोकरुनपकजम्फुर-
वनशुदवाकविवाकरः । रिपुयथूवदनदुत्तनद्युति
- ३ समुद्रपादि विदग्धनुप(स्तन) ॥५) म्नाचार्यश्रीं रचिरवच(नंवां)-
सुदेवाभिधानेर्धोधि नाता दिनकरकरंनारजन्माकरां व । पूं जैनं
निजमिव वशो (सारयद् ह-)स्तिरुत्था रम्य हर्म्यं गुलहिमगिरं
शृगशृगारहारि ॥६ दानन नुलिनवल्लिना नुलादिदानस्य येन
देवाय । साग(द्वय)व्यतीर्यत भागश्चा -
- ४ (चार्यव)र्याय ॥७) तस्माद्भू(रुद्र)मन्वां ममटाग्यो,महीपतिः।
समुद्रविजयो श्लाघ्यतरवारि मर्कमिर्क ॥८ तस्मात्सम. मम-
जनि (ममस्त)जनजनितलोचनानदः । ध(व)लो वसुधान्यापी
चन्द्रादिष चन्द्रिकानिकर ॥९) मक्त्वाघाट घटाभि प्रकृतमिव मर्दं
मेठपाटे मटाना जन्यं राज्ञस्य -
- ५ जन्यं जनयति जनताज रण सुजराजे । (श्री) माणे (प्र)णष्टे हरिण
इव मिया गूर्नेयो विनष्टे तल्पेन्याना क्षरणयो हरिरिव क्षरणे यः
सुराणा वभूव ॥१०) श्रीमद्दुर्लभराजभृशुनि मुजंजुंजत्यमगा
भुव द्रुमैमण्डनशाण.चडसुमटंस्नस्यामिभूत विभु. । यो दैर्घ्य-
रिव तारक -
- ६ प्रभृतिभि. श्रीमान् मदेन्द्र पुरा येनानीरिव नातिपोरुपपरोर्नपीत्
परा निवृत्ति ॥११) य मृकादुदमूलयद् गुल्यक श्रीमुकराजो
नृपो दर्पाधो धरणावराहनृपतिं यद्वद् द्विपः पात्रप । आयात भुवि
कांदिशाकममिरो यस्त क्षरणयो दधो दप्रायामिव रुद्रमूढमहिमा
कोलो महीमदल ॥१२
- ७ इत्थं धृश्रीमर्चमिर्नायमानं सा सुस्थितैरास्थितो यः । पाथोनायो
वा त्रिपक्षात् स्वप(क्ष)रक्षाकांक्षे रक्षणे वदकक्षः ॥१३) त्रिवा-

कर्म्येव कर्तुं कर्तारं कगलिता नृपकड्यन्त्य । अशिथ्रियतापहतो-
रनाप यमुज्जत पादपत्रज्जनोवाः ॥ (१४) धनुर्वरशिरोमणेरमलधर्म-
मभ्यन्यता जगा -

- ८ म जलधेर्गुणो (गु)न्स्त्रुय पार पर । सर्मीयुरपि नमुग्ना मुमुग्ग
नागणाना गणा मना चन्निगनद्रुत मरुत्नेव लोनात्तर ॥ (१५)
यात्रानु यम्य त्रियदाणंविगुर्निगंपान यलगत्तुगन्धुरगाननहीरजाम्नि।
तेजोमिरुज्जितमनेन विनिर्जितम्गाद् भान्नान् त्रिलजित इदातितरा
निगंभूत् ॥ १६
- ९ न कामना मनो योमान् न रता दधा । अनन्योद्धार्यमत्कार्य-
मारयुर्थोर्धनोपि य ॥ (१७) यस्मिंजामिरहम्कर कण्णया शौद्धो-
दनि शुद्धया मीप्सो वचनयचितेन वक्षसा धर्मण बर्मासज ।
प्राणेन प्रलयानिलो चलमिद्रो मत्रेण मत्रो परो रूपेण प्रमदाप्रियेय
- १० मद्रनो ज्ञानेन क(र्णो)भवत् ॥ (१८) सुनयतनय राज्ये वारुप्रमाद्र-
मनिष्टिपन परिणतयया नि मगो या बभूव सुषो स्वय कृतयुग-
कृतं कृत्वा कृत्य कृतामचमत्कृतीरकृत सुकृती नो कालुष्य
करोति कलिः मता ॥ (१९) कालं कलावपि क्लामलमेतद्वीथ
लोका विहोक्य करुनानिगत गुणा -
- ११ य । (पार्था)द्विपाथिव(गुणा)न् गणयन् सन्न्यानेक व्रथाद् गुण-
निधि यमितीव वेधाः ॥ २० गोचरगति न वाचो तच्चग्नि चद्र-
चंद्रिकारश्चिर । वाचस्पतेर्ब्रह्मणी की वान्यो वर्णयेत् पूर्णं ॥ (२१)
राजधानी भुवो मर्तुस्तम्यान्ते हस्तिकुण्डिका । श्रलका धनदम्येव
धनाध्यजनमेविना ॥ (२२) नीहारहारहरहाम्(हि)—
- १२ (मा) शुहारि (आ) त्का(र) वारि (भु)वि राजत्रिनिर्भराणा ।
वास्तव्यमव्यजनचित्तसम (म)भनान् मतानमपद्रपहारपर परेषा ॥
(२३) बौतकलर्थातःरुलशाभिरामरामान्तना इय न यस्या ।

सत्यपरिप्यपहारा सदा मदाचारजनताया ॥ (२४) समदमदना
लीकालापा प—

- १३ नाकुला कुबलयदशा मदस्यते दशान्तरला पर । मलिनितमुग्गा
यत्रोद्वृत्ताः पर कठिना कुचा निविदरचना नी(र्वा) यथा पर
कुटिला कचा ॥ (२५) गाढोत्तुगानि मार्यं शुचिकुचकलशै
र्कामिर्नाना मनोज्ञविस्तीर्णानि प्रकाय मह धनजननेरतामदि-
राणि । भ्राजते दभ्रशुभ्राण्य—
- १४ तिक्षयसुभग नेत्रपात्रः पवित्रं सत्र चित्राणि धात्रीजनहनहृदयै-
विभ्रमैर्यत्र सत्र ॥ (२६) मधुरा धनपर्माणो हृद्यरूपा रमा-
धिका । यत्रेक्षुवाटा लोकभ्यो नालिकरुवाद् मित्रलिमा ॥
(२७) अस्या स्त्रिं सुराणा गुरुखि गु(रु)मिगोरवाहो गुणांघै-
भूपाना त्रिलोकौघलयविक—
- १५ सितानतरानवर्कानि । नाम्ना धीशातिभद्रोभवदमिमवितु भास-
(या)वायमाना काम काम सम(र्था) जनितजनमन समद्रा यस्य
मतिः ॥ (२८) मन्येसुना मुनीद्रेण (म)नांभू रूपनिजित ।
स्वप्नेपि न स्वरूपेण समगस्तातिलज्जित ॥ (२९) प्रोद्यत्पद्मा-
करस्य प्रकटितविकटाशेषमाव—
- १६ सा स्त्रिः सूर्यम्येचामृताशु स्फुरितमुमरुचि वामुदेवाभिधस्य ।
अभ्यासीन पदभ्या यममलविलसज्ज्ञानमालोक्य लोको लोका-
लोकवलोक सकलमचरुत् केवल मभजीति ॥ (३०) धर्माभ्या-
सरतम्यास्य मगतो गुणरग्रह । अभगनमार्गणेच्छम्य चित्रं
निर्वाणवाचना ॥ (३१)
- १७ कमपि म्वंगुणानुगत जन विधिरय विदधाति न दुर्विध । इति
कलकनिराकृतये कृता यमकृतेव कृतासिलसद्रुण ॥ (३२)
सद्रीयवचनान्निज धनकलत्रपुत्रादिक विलोक्य सकल चल दल-

मिवानिलादो(लि)तं । गरिष्ठगुणगोप्यद मसुददीघरद् घोरवीरु-
दारमनिसुदरं प्रथम—

- १८ तीर्थकृन्मंदिरं ॥ (३३) (रक्तं) वा रम्यगमाणां मणितारा-
वराजितं । इद मुखमिवामाति भाममानवरालक ॥ (३४)
चतुरस्र (पट्टज) नवा(ङ्क)निक शुभशुक्तिकरोदकयुक्तमिद बहु-
भाजनराजि जिनायतनं प्रविराजति भोजनधामसम ॥ (३५)
विदग्धनृपकारितं जिनगृहे—
- १९ मिर्जाणै पुन समं कृतममुद्दृष्टाविह भवांशुधिरात्मन । अति-
छिपन सोप्यथ प्रथमतीर्थनाथाकृतिं स्वकार्तिमिव मूर्ततामुपगतां
मितांशुधुतिं ॥ (३६) शान्थाचार्येस्त्रिपचाशे महत्त्वे शरदामिय
माधशुक्लत्रयोदश्यां सुप्रतिष्ठै प्रतिष्ठिता ॥ (३७) त्रिदग्धनृपति-
पुरा यदनुलं तुलादे—
- २० इन्द्रो सुदानमवदानधीरिदमपीपलन्नाद्भुतं । यतो धवलमूपति-
र्जिनपते स्वय सात्म (जो) रघट्टमय पिप्पलापप (टक्) पकं
प्रादिशन् ॥ (३८) यावच्छेषशिरस्थमेकरजतन्धूणास्थिताभ्युल्ल-
मत्पातालानुलमडपामलतुलामालवते भूतल । तावत्ता—
- २१ रवामिरामरमणी(गं)धर्वधीरात्रनिर्धामन्यत्र धिनोनु धार्मिकविय -
(म)द्वूपवेलावि(धौ) ॥ (३९) सालकारा समध्वजरसा साधु-
संधानवधा इलाभ्यइलेषा ललितविलमत्तद्वितात्प्यातनामा । मद्-
बृत्ताभ्या रुचिरविरतिधुर्यमाधुर्यवर्या सूर्याचार्यैर्न्यरधि रमणीवा—
- २२ ति(रम्या) प्रशस्ति. ॥ (४०) संवत् १०५३ माघशुक्ल १३
रविदिने पुष्यनक्षत्रे श्रीरूपमनायदेवस्य प्रतिष्ठा कृता महाश्वज-
श्रागेपित ॥ मूलनायक ॥ नाहकजिदजसधपपूरमडनागपोचि-
(स्थ)प्रावकगोष्टिकैशेयकर्मक्षयार्थं स्वमंतानमवाब्धितर—
- २३ (णार्थं) च न्यायोपार्जितवित्तेन कारितः ॥ वृ॥ परवादिदर्पमयनं

हेतुनयमहस्त्रमगकाकीर्णं । मव्यजनदुरितशमन जिनेन्द्रधरशामनं
जयति ॥ (१) आमोद् घाघनममगः शुभगुणो भास्वनप्रतापो-
ज्वलां विस्पष्टप्रतिम प्रभाप्रकलितो म्प्राप्तमागार्चितः ।
योपित्पी—

- २४ नपयोधरांत(मुग्गाभिप्यगर्मलालितो यः श्रीमान् ढरिचमं उत्तम-
मणि सहस्रहारे गुरो ॥ (२) तस्माद् यभूव भुवि भूरिगुणोपपेतो
भूप्रमभूतसुकुटार्धितपाटपीठ । श्रीराष्ट्रभूदकृष्काननकपवृक्षः श्री-
मान् विदग्धनृपतिः प्रकृतप्रताप ॥ (३) तस्माद् मूप—
- २५ गणा " तमा (कीर्त') पर भाजन समूत सुगनु सुनांतिमतिमान्
श्रीममटो विश्रुतः । येनास्मिन् निजराजवशागने चन्द्रायित
चारुणा तेनेद पितृशामन ममधिरु कृष्वा पुनः पालयते ॥ (४)
श्रीबलमद्राचार्यं विदग्धनृपपूजित ममभ्यर्च्यं । आचद्राकं यावद्-
दत्त भवते मया—
- २६ ॥ (५) (श्रीदन्ति)कुण्डिकायां चैग्यगृह जनमनाहर भस्व्या ।
श्रीमद्वलमद्रगुरोर्यर्द्धाहृत श्रीविदग्धेन ॥ (६) तस्मिन् लोकान्
समाहूय नानादेशस्माग(ता)न् । आचद्राकंथिर्नि याप्रच्छामन
दत्तमक्षय ॥ (७) (रु)परु णकां देया वहतामिह विशतेः प्रवह-
णानां । धर्म—
- २७ " क्यविजये च या ॥ (८) मभृतगन्या देयस्तथा वदस्याश्च
रूपरु श्रेष्ठः । वाणे घटे च कर्पो दयः सर्वेण परिपाठ्या ॥ (९)
श्री(भद्र)लोकदत्ता पत्राणा चोत्तिला त्रयोदशिका । पल्लुपल्लु-
मेतद् धूतक(रः) शामने देयं ॥ (१०) देय पलाशपाटकमर्यादा-
वर्तिक—
- २८ " । प्रत्यग्(द) धान्यादक तु गौधूमयत्रपूर्णं ॥ (११) पेद्रा च
पचपलिका धमंस्य विशोपकस्तया भारं । शासनमेतत्पूर्वं विदग्ध-

राजेन मद्रुत्तं ॥ (१२) (कर्पा)मकांन्यकुनुमा(पुर)मानिष्टादिमर्वा-
माइस्य । (द)श दश पलानि भारे देयानि विक्र—

२९ ॥ (१३) आदानादेतस्माद् भागद्वयमर्हत् कृत्तं गुत्णा ।
शेषस्तृतीयभागो विद्यावनमाल्मनां विहित ॥ (१४) राज्ञा
तन्पुत्रर्पात्रैश्च गोष्ठया पुरजनेन च । गुरुदेववन रक्ष्य नांपेक्ष्य
हितमोष्पुमि) ॥ (१५) दत्ते दाने फल दानात् पालिते पालनात्
फल । (मक्षिन्)पेक्षिते पाप गुरुदे—

३० (वधने)धिक ॥ (१६) गौधूममुद्गयवलवणराल(का)देन्तु मेयजा-
तस्य । द्रोणं प्रति माणकमेकमत्र मवेण दातव्य ॥ (१७) बहु-
मिर्वसुधा मुक्ता राजमि. सगरादिमि । यस्य यस्य यदा भूमि-
स्तस्य तस्य तदा फल ॥ (१८) रामगिरिनदकलितं विक्रमकाले
गते तु शुचिमा(ने) ।

३१ (श्रीम)द्वत्रलमद्रगुतोर्विदग्धराजेन दत्तमिदं ॥ (१९) नवसु शतेतु
गतेषु तु पण्णवतीन्मविक्त्तु भावस्य । कृष्णैकादश्यामिह मम-
र्यित ममटनृपेण ॥ (२०) यावद् मूर्ध्वरभूमिमानुमरत्त भागीरथी
भारतो भास्व(दमा)नि भुजगराजमव(नं) भ्राजद्भवामोधय ।
ति(ष्ठ)—

३२ त्वत्र सुरानुरेद्रमहित (जै)न च मच्छामनं श्रीमत्केशवसूरि-
सततिकृते तावत् प्रभूयादिति ॥ (२१) इदं चाक्षयधर्मसाधन
शामन श्रीविदग्धराज्ञा दत्त ॥ सवत् ९७३ श्रीममट(राज्ञा
समर्थ)तं सवत् ९९६ । सूत्रधारोद्भव(शत)योगेश्वरेण उक्तीर्णैय
प्रशस्तिरिति ।

[इन वृहत् गिलालेखके दो भाग हैं । दूसरा भाग जो २३वीं पन्क्तिसे शुरू होता है समयकी दृष्टिसे पहलेका है । इसमें राष्ट्रकूट कुलके राजा हरिवर्माके पुत्र विदग्धराजका वर्णन किया है । आचार्य

वासुदेवके उपदेशमे विदग्धराजने राजधानी हस्तिकुण्डिकामें ऋषभदेवका मन्दिर बनवाया था। इसने अपनी सुवर्णतुलाका दो तिहाई भाग इम मन्दिरके लिए तथा एकतिहाई भाग गुहके लिए दान दिया था। विदग्धराजने इमी मन्दिरके लिए हस्तिकुण्डोके व्यापारियोके कई करोका उत्पन्न धलभद्र गुरुको दान दिया था। इस दानकी तिथि आपाठ, सवत् ९७३ थी। विदग्धराजका पुत्र ममट हुआ। इमने उक्त दानकी माघ कृष्ण ११, सवत् ९९६को पुन सम्मति दी। ममटका पुत्र धवल हुआ। इसकी वीरताका विस्तृत वर्णन लेखमें किया है। जब मुजराजने मेदपाटकी राजधानी आघाटकी नष्ट किया तब वहाँके राजाको धवलने आश्रय दिया था। दुर्लभराजके आक्रमणसे महेन्द्रका रक्षण इसीने किया तथा मूलराजके द्वारा पराजित शरणीवराहकी भी आश्रय दिया। वृद्धावस्थामें धवलने अपने पुत्र बाल प्रसादको सिंहामनपर स्थापित किया। इसके समय सवत् १०५३ मे वासुदेवके शिष्य धान्तिभद्रसूरिके उपदेशसे हस्तिकुण्डोकी गोष्ठी (व्यापारियोके समूह) ने विदग्धराज-द्वारा निर्मित मन्दिरका जीर्णोद्धार किया। गोष्ठीके सदस्योके नाम पक्कत २२में गिनाये हैं। लेखके पहले भागमे जो ४० श्लोकोकी प्रवक्ति है वह सूर्याचार्यने लिखी थी। लेखके अन्तमे केवसूरिका उल्लेख है]

[ए० इ० १० पृ० १७]

८२

चिल्लाप्यककम (जि उत्तर अर्काट, मद्रास)

सन् ९४५, तमिः

नागनाथेश्वर मन्दिरके आगे पढी हुई शिलापर

[यह लेख चोल राजा मधिरिकोण्ड परकेसरिवर्मन् (परान्तक १) के राज्यके ३८ वें वर्षमे लिखा गया था। तिरुप्मान्मल्लके आचार्य अरिष्ट-नेमिकी एक शिष्याके द्वारा एक कुर्वा बनवानेका इसमें उल्लेख है।]

[इ० म० उत्तर अर्काट २१६]

८३

नरैगल (मैमूर)

शक ८७३ = सन् ९५०, कन्नड

[यह लेख राष्ट्रकूट सम्राट् अकालवर्ष कृष्णराजदेव (तृतीय) के सामन्त गगवंशीय घृतय्य पेर्माडिके समयका है । इसकी रानी पद्मव्वरसि-
द्वारा निर्मित वसदिके दानशालाके लिए नमयर मारसिधय्यने एक
तालाव अर्पित किया था । यह दान कोण्डकुन्दान्वय देसिग गणके महेन्द्र
पण्डितके प्रशिष्य तथा वीरणन्दि पण्डितके शिष्य गुणचन्द्र पण्डितको
सौंपा गया था । दानकी तिथि पौष शु० १० रविवार, उत्तरायण
सक्रान्ति, शक ८७३ साधारणसंवत्सर ऐसी दी है ।]

[मूल कन्नडमें मुद्रित]

[सा० इ० इ० ११ पृ० २३]

८४

वेमुलवाड (करीमनगर, आन्ध्र)

१० वीं सदी—उत्तरार्ध (लगभग सन् ९६०)

संस्कृत—कन्नड

[इम मूर्तिलेखमे चालुक्य राजा वट्टेग-द्वारा गोडसघके आचार्य सोमदेव-
सूरिके लिए एक जिनालय बनवाये जानेका उल्लेख है ।]

[रि० इ० ए० १९४६-४७ क्र० १५८]

८५

धारवाड (मैमूर)

शक ८८४ = सन् ९६०, कन्नड

[यह ताम्रपत्र गग राजा मारसिह (द्वितीय) के समय पौष कृष्ण ९
मंगलवार, शक ८८४, दुन्दुभि संवत्सर, उत्तरायण सक्रान्तिके दिन दिया
गया था । इसमें राजा-द्वारा मेलपाडिके स्कन्धावारसे कोगल देशमें

स्थित कादलूर ग्राम एलाचार्यको अर्पण किये जानेका उल्लेख है। उसकी माता कल्लव्वे-द्वारा निर्मित जिनालयके लिए यह दान दिया गया था। एलाचार्यकी गुरुपरम्परामें निम्न नाम दिये हैं—सूरस्थ गणके प्रभाचन्द्र योगीश—कल्लेदेव—रविचन्द्रमुनीश्वर—रविनन्दिदेव—एलाचार्य ।] [रि० सा० ए० १९३४-३५ क्र० ए० २३ पृ० ७]

८६

कुडलूर (मैसूर)

शक ८८४ = मन् ९६०, सम्कृत-कन्नड

[इस ताम्रपत्रमें गग राजा मारसिंह-द्वारा मुंजार्य अपर नाम वादिषधल भट्टको चैत्र शु० ५ शक ८८४, रुघिरोद्गारि सत्रत्सरके दिन गुरुदक्षिणाके रूपमें पूनाट्ट प्रदेशका वागियूर ग्राम दान दिये जानेका उल्लेख है। मुंजार्य पराशर गोत्रका ब्राह्मण था तथा 'स्याद्वादोदयशैल-भास्कर-स्याद्वादरूपी उदयपर्वतके लिए सूयके समान था।]

[ए० रि० मै० १९२१ पृ० १८]

८७

कोकिवाड (धारवाड, मैसूर)

१०वीं सदी, कन्नड

[यह लेख जिनशासनकी प्रशामसे प्रारम्भ होता है। गण्टूरकूट राजा खोट्टिग तथा उनके सामन्त गगवशीय रात्यवाक्य कोगुणिवर्म धर्म-महाराजका इसमें उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ८९ पृ० ३५]

८८

लक्ष्मेश्वर (मैसूर)

शक ८९३ = मन् ९७१, कन्नड

[यह लेख बहुत घिस गया है। गग राजा मारसिधदेवके समय

कातिक शु० (?) शक ८९३, प्रजापति सवत्सरके दिन गंखजिनालयको कुछ दान दिये जानेका इममे उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई० ३० पृ० १६३]

८६

दालखुलपाहु (जि० कडप्पा, आन्ध्र)

१०वीं सदी (लगभग सन् ६७२), संस्कृत—कन्नड

मग्न जैन मन्दिरमें स्थित मूर्तिके पादपीठपर

[इस लेखमें राष्ट्रकूट सम्राट् नित्यवर्ष (इन्द्र ४)-द्वारा शान्तिनाथके अभिषेकके लिए यह पादपीठ बनवानेका निर्देश है ।]

[इ० म० कडप्पा १४८]

६०

विडिगनवले (मैसूर)

शक ८९७ = सन् ९७५, कन्नड

पहली ओर

१ भद्रमस्तु जि-

२ नशासना-

३ य श्रीमत्

४ सकवर्ष ८-

५, ९७ य यु-

६ वमंवत्सर-

७ द भाषाड-

८ मासद शु-

९ द्द दशमियु

१० सोमवार

११ बुं स्वात्तिन-

दूमरी ओर

१२ क्षत्रमुमा

१३ गे अमृत्त-

१४ द्दवे कन्तिय

१५ रुद्रु नान्तु

१६ समाधि

१७ यिं (मुडिपि)

१८ दरवर म-

१९ ककलनिमि-

२० तपरोप-

२१ कारिगल् प-

२२ अनन्दिमट्टा-

तीसरी ओर

२३ रकरवर्ग

२४ नेय

२५

२६ निळिसिदर

[यह लेख एक स्तम्भके तीन बाजुओपर खुदा है । इसमें अमृतब्जे-कन्ति नामक महिलाके समाधि-भरणका तथा उसके पुत्र पद्मनन्दिभट्टारक-द्वारा इस स्तम्भकी स्थापनाका उल्लेख है । तिथि आषाढ शु० १०, सोम-वार, शक ८९७, युवसवत्सर, इस प्रकार दी है ।]

[ए० रि० मै० १९३६ पृ० १९२]

९१

वेङ्गट्टि (धारवाड, मैसूर)

(शक) ९११ = सन् ९९०, कन्नड

[जोगीवण्डि नामक पापाणपर यह लेख है । अञ्जरय्यके पेण्डि आयतवर्मा-द्वारा निमित्त वसुदिका इसमें उल्लेख है । वर्ष ९११ दिया है जो सम्भवत शकवर्षका उल्लेख है ।]

[रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० २०४ पृ० ३८]

६२

चेडल (जि० उत्तर अर्काट, मद्रास)

सन् ९९९, तमिल

आण्डारू मडम् नामक पहाडीकी एक गुहाके आगे

[यह लेख चोल राजा राजकेसरिवर्मनके १४ वें वर्षका है । इसमें गुणकीर्तिभटारके शिष्य कनकवीर कुरट्टिका तथा मादेवी अरिन्दमगलमूका उल्लेख है ।]

[इ० म० उत्तर अर्काट ७४४]

६३

खण्डगिरि—लल्लेदुकेसरि गुहा

१०वीं सदी, संस्कृत-नागरी

१ ओं श्री उद्योतकेसरिविजयराज्यसवत् ५

- २ श्री कुमारपर्वतस्थाने जिर्णवापि जिर्णं इसण
- ३ उद्योतित तस्मिन् याने चतुर्विन्सति तीर्थंकर
- ४ स्थापित प्रतिष्ठा (का) ले इ (रि) ओप जसनदिक
- ५ .. . श्रीपारस्यनाथस्य कर्मख्य

[यह लेख राजा उद्योतकेसरीके ५वें वर्षका है । कुमारपर्वतकी वापी तथा मन्दिरका जोर्णोद्धार करके चौबीस तीर्थकरोकी मूर्तियोकी स्थापनाका इसमें उल्लेख है । कुमारपर्वत खण्डगिरिका पुराना नाम है । अन्तिम भागमें जसनदि (यशोनन्दि)का उल्लेख हुआ है ।]

[ए० इ० १३ पृ० १६६]

६४

खण्डगिरि—नवमुनि गुहा

१०वीं सदी, सस्कृत—नागरी

- १ ओ श्रीमदुद्योतकेसरिदेवस्य प्रवर्धमाने विजयराज्ये संवत् १८
- २ श्रीआचार्यसवप्रतिवद्धग्रहकुलविनिर्गतदेशीगणाचार्य श्रीकुलचन्द्र-
- ३ महारकस्य तस्य शिष्यशुभचन्द्रस्य

[इसका साराश जै० शि० स० भाग २में क्रमांक २४५में दिया है । किन्तु उस समय मूल लेख प्राप्त नहीं हुआ था । इसमें राजा उद्योतकेसरीके १८वें वर्षमें देशीगणके आचार्य कुलचन्द्रके शिष्य शुभचन्द्रका उल्लेख किया है ।]

[ए० इ० १३ पृ० १६५]

६५

खण्डगिरि—नवमुनि गुहा

१०वीं सदी, सस्कृत—नागरी

- १ ओ श्रीआचार्यकुलचन्द्रस्य तस्य
- २ शिष्य खल्लशुभचन्द्रस्य
- ३ छात्र विजो

[इस लेखमें आचार्य कुलचन्द्रके शिष्य शुभचन्द्रके शिष्य विजो (?) का निर्देश है ।] [ए० इ० १३ पृ० १६६]

६६

ईशवाडि (मैसूर)

१०वीं सदी, कन्नड

- १ वृत्तग पेर्माडि तदपत्यण् प्रथप तरसुत वीर
- २ ' राचमल्लनहितरमल्ल । अन्ता राचमल्लनिन्देरयगनातन मग
- ३ नातन पुत्र सैगोट्ट ' राचमल्ल
- ४ ' मिड्डुकरलेड्ड रुथ्योल् मद्रमातगमने पिदिडु निलिसिड ।
- ५ ' क्काणूर्गण्ड आचार्यावतारमेन्तेन्डे । दक्षिणदेशनिवासि । गगमद्रीमण्डलिक' ।
- ६ नन्दिमट्टारकरु यालचन्द्रमट्टारकरु मेघचन्द्र त्रैविद्यदेवरुं
- ७ ' पंथ तलेद गुणनन्दिदेव शब्दग्रह । अवरिं यत्किं अकलक सिंहासनम ।
- ८ ' मद्रमातगरु ब्रह्मवाडितिमिरपतगरुं सांरयवाडिकुलाडिचप्र-
थरुं नैयायिका
- ९ सिद्धान्तवार्धिवर्धनमुयाकरु । मकलमाहित्यप्रवीणरुं ! मनोमव-
मयरहितरु ।
- १० श्रीमत्तु प्रमाचन्द्रमिद्धान्तदेवर शिष्यरु अनवद्याचार्यर माघनन्दि-
सिद्धान्त
- ११ अवर शिष्यरु । चतुरास्य चतुरोक्तिरिं प्रमुतेयिन्दीश गुणव्याप-
कस्थितिय विष्णु सुबुद्धि वि—
- १२ सिद्धान्तविभूषणगेनिसिड श्रीमत्प्रमाचन्द्रमं । अवर सधर्मरु ।
नुतमिद्धान्त—

- १३ मप्रतिमं तानेने पेम्पुवेत्तु मुद्रितोढात्तर् जगद्वन्धर् ऊर्जितरु-
घोत्तित—
- १४ मनोमवविशालहरनिटिलाक्षं वादिमदरदनिविदुवं भेद्रिपमृग-
राज जयतु श्रुतकीर्तिबुधं । . .
- १५ वादिराजं दलेनिसिद . योल्लु । भवर सधर्मरु । चारित्रचक्रि
सम्यमधारि क्राणूरगणा . .
- १६ गिप्यरु । वरशास्त्राम्बुधिवर्धनहरिणांकं . . वादिमद . निरुतं
तानेनलेसेदं—
- १७ वारणवागि कीर्तिं नर्तिसुबुद्धु पेम्पुवेत्त . नतिमेत्तो दलागेसेबुद्धु
सद्गुण . . .
- १८ नादि पिरिट्टुं निस्तेजमैटिर्द नोद्रे . . . प्रभुतेयं ताल्दिर्प .
करं . . .
- १९ बुदिगल्लु सत्यसुवर्णभूषणगण . सुरलंगल करण्डक तनुत्तप . .
- २० धेनुत्रतिरूपमं तलेदुदो भूजातर्वा धरयोल्लु तापस
- २१ मुनिपं . . रत्नाकरं । . इन्तेनिसि नेगल्दाचार्यं . तिलकरं जिन-
सन्न . .
- २२ वारिविशातराचि . . स्तुत्यं जिनपदाब्जद्वयमृगं भुजवलगगं .
- २३ तम्म गंगान्वयदवर् पडिसलिसुत्तु 'मरवेम नागि माडिसि
- २४ दत्ति तट्टिकेरे मर्ववाघापरिहारा केरेय केल्गे तलवृत्ति' . .
- २५ मारसिगननुज 'सन्ध नन्नियगगक्षितिपालक तदनुज .
- २६ वल्लि येम्बूरुमं वपदि मूडलुगडे .
- २७ गुड्डु नन्नियगंगदेव पम्बूरुमं . भागहेरिं तें .
- २८ सिद्धान्तदेवर गुड्डुं रक्कसगंगं नन्नियगग सीमैरिं तेंक
- २९ मूडणडेमे नह कल्लुगल्लु
- ३० मुनिचन्द्रसिद्धान्तदेवर गुड्डु । भुजवलर्दि शत्रुमहीभुज
(३१ से ३६ तक पक्तियों घिस गयो हैं)

- ३७ तलप्रहारदौले नू गुटडिन्नें मीण्डुव कचुगु
 ३८ धर्ममहाराजाधिराजपरमेश्वर । कोलालपुरधरेश्वरं । नन्दगिरिनाथ
 मदगजेन्द्र...
 ३९ मण्डलिकदेवेन्द्र टपोद्धितारातिवनजवनचेदण्डं ..
 ४० देव माडिसिद्ध तीर्थेव वसद्विय .
 ४१ . चन्द्रसिद्धान्तदेवर शिष्यर् मुत्पयवागि विष्ट दत्ति .
 ४२ नन्नियगगदेवजु पट्टमहादेवि
 ४३ काणिकेय नाहुरगालोलु पणव कोट्टरा

[इस विस्तृत लेखकी पहली कुछ पक्तियाँ टूट गयी हैं तथा अन्य पक्तियोंके बहुत-से अक्षर घिसे हैं । गगवशके राजा रक्कसगग तथा नन्निय-गगके समय यह लेख लिखा गया था । इनके द्वारा तट्टिकेरे ग्रामको कुछ भूमि चन्द्रसिद्धान्तदेवको दान दी गयी थी । लेखमें क्लानूरगणकी आचार्य-परम्परा इस प्रकार बतलायी है — नन्दिभट्टारक, बालचन्द्रभट्टारक, मेघचन्द्रत्रैविद्यदेव, गुणनन्दि शब्दग्रह्य, अकलक, प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेव, माघनन्दिसिद्धान्तदेव, प्रभाचन्द्र (द्वितीय), उनके गुरुबन्धु श्रुतकीर्ति, — (यहाँ कुछ नाम घिस गये हैं) । अन्तमें मुनिचन्द्र सिद्धान्तदेवके एक शिष्य-का उल्लेख है । राजा नन्नियगगकी बनावलीमें वृत्तुग पेर्माडि, एरेयप्प, राचमल्ल, एरेयग सैगोट्ट तथा राचमरल इनका उल्लेख किया है ।]

[ए० रि० मै० १९२३ पृ० ११४]

६७

दानखुलपाडु स्तंभलेख (जि० कडप्पा, आन्ध्र)

१०वीं सदी, संस्कृत-कन्नड़

पहला भाग

- १ पत्तिय वेसदिद- २ महितरनतिकोप-
 ३ दिनिक्कि गेल्लु परिपा- ४ लि(सि)द । चत्तुरउधि-

५ वलयमेल्लमन-	६ तिरथनी <u>ठण्ड(ना)य-</u>
७ <u>कं श्रीविजय ॥(१)</u>	८ <u>तुरगधलगल-</u>
९ नाङ्गिद करिघटे-	१० थं पिरियनेर-
११ (वि)थं बल्लणिय ।	१२ थुरदेडे(योळि)रि-
१३ दु गेलगु करद(मि)	१४ करमरिदु रण-
१५ <u>ढोलनुपमकविय ॥(२)</u>	१६ कुपितवति श्रीवि-
१७ <u>जये बल्लिकुळति-</u>	१८ लकं नरेन्द्रठण्डाधि-
१९ पतौ । गिरिरिगि(रि)र्वन-	२० मवन जलमज-
२१ ल रिपुस(मू)हव-	२२ लमवल ॥(३)

दूसरा भाग

२३ वसुमतियोळ-	२४ गिल्देण्टु (दे)सेगल
२५ कुसुकुळमनेय्दि	२६ माणदे मत्त । (विस)-
२७ रुहगर्माण्डक्क प-	२८ सरिसिदुदु (की)र्ति ने-
२९ <u>इननुपमकविय ॥(४)</u>	३० आश्रितजनकल्पत-
३१ रुविश्रुतरि(पु)नृप-	३२ तितृणडवानलमूर्ति ।
३३ श्रीवनितास्मरपाश	३४ पातुस्नव वाहु मे-
३५ दिनीं <u>श्रीविजय ॥(५)</u>	३६ चतुरुद्रधिवलय-
३७ वलयितवसुन्व-	३८ रामिन्द्रशासनात् सं-
३९ रस(न्) । <u>श्रीविजय</u>	४० दण्डनायक (जी)व
४१ चिरं दानधर्मनि-	४२ रत्तमनस्क ॥(६)
४३ मगल माहाश्री ॥	

तीसरा भाग

४४ मद्रमस्तु भगवते (जि)नशासना(य) ॥	
४५ अट्टविधकर्ममेल्लमनट्टु-	४६ वरिगोण्डु कोळिपे(ने)वुडे वगेयि ।

- ४७ (पु)द्विदनुदात्तसस्व नेदने विद्वु ४८ धेन्द्रवन्दनरिर्विगोजम् ॥७)
 ४९ तानरिदु तो(र)दु नेदने मानि- ५० सवालावुदेंदु संन्यासनदोल् ।
 ५१ मानसिके गिडदे कोण्डो(न)नून- ५२ सुखास्पदमनल्ल्तियोल्
 श्रीविजय ॥८)
 ५३ निर्गतमय नीनर(स)मर्ग- ५४ म नानोल्लेनेन्दु पेमि त्रिसु-
 ५५ वं । सर्गंत्त मांगमनुण्डपव- ५६ गंक्कडिथिट्टोनरिट्टोननुप-
 ५७ मकत्रियं ॥९)दण्डिन साम ५८ त्रिगे परमण्डलमल्लाडे
 ५९ (स)र्वविक्रमतुग । दण्डिन धी- ६० रश्रीगोल्गण्ड आदण्डनायक
 ६१ श्रीविजयं ॥१०) (च)ण्डपराक्र ६२ मनुरदरिमण्डलिकरनट्टि पि-
 ६३ डिदु पतिगोपिसुवोल्गण्ड प्रच-६४ ण्डनीसूमण्डलदोल् दण्डनायक
 ६५ श्रीविजय ॥११) अनुपम- ६६ कविय सेनयोव गु-
 ६७ णवर्म वरंत्त ॥

[यह शिलालेख दण्डनायक श्रीविजयकी प्रशसामें लिखा गया है । अरिर्विगोज, अनुपमकवि तथा सर्वविक्रमतुग ये इसके विरुद्ध थे । यह बलिकुलमे उत्पन्न हुआ था तथा इन्द्रराजकी सेनाका पराक्रमी सेनापति था । इन्द्रराज (तृतीय) ही मम्मवत्त यहाँ उल्लिखित है जिसका राज्य सन् ९१४ से ९२२ तक था । लेखके तीमरं भागमे कहा है कि श्रीविजयने समस्त वैभव छोडकर सन्यास धारण किया था । यह लेख श्रीविजयके सेवक गुणवमनि लिखा था ।] [ए० इ० १० पृ० १४७]

६८-६९

चोलवाण्डिपुरम् (दक्षिण अर्काट, मद्रास)

१०वीं सदी, तमिल

[यह लेख राजा गण्डरादित्य मुम्मुडि चोलेके दूसरे वर्षका है । इसमें चेदि सिद्धवडवन् नामक शासककी प्रशसा है । उसे कोवलका स्वामी तथा

मलयकुलोद्भव कहा है। न्यानीय पहाड़ीपर उत्कीर्ण मूर्तियोंकी पूजाके लिए उमने कुछ दान दिया था। कुण्डिके गुणवीर भटारका भी इनमे उल्लेख हैं। उत्कीर्ण मूर्तियाँ महावीर, पार्वनाय, गोम्मटदेव तथा पद्मावती की हैं। यहाँके एक अन्य लेखमे १०वीं नदीकी लिपिमें कहा है कि इन मूर्तियों (तैवारम्) का निर्माण बेलि कोंगरैरू पूतडिगलूने किया था।]

[रि० सा० ए० १९३६-३७ क्र० २५१-५२ पृ० ३४]

१००

मसुलिपट्टम ताम्रपत्र (आन्ध्र)

१०वीं सदी, मस्कृत-तेलुगु

- १ व्याकृष्टरत्नरश्मितायतशागंचापो यस्सेन्द्रकामुंकविर्नालपयोद-
वृन्दम् । निर्भर्म्यशिव विमा—
- २ ति म कृष्णकान्तिर्विष्णुशिवन्दिशतु बोधधनत्रिलोक ॥ (१)
स्वस्ति श्रीमता सकलभुवनमस्तूयमानमा—
- ३ नच्यसगोत्राणां हारीतिपुत्राणा कांशिकीवरप्रसादलब्धराज्याना-
म्मातृगणपरिपालिताना स्वामि—
- ४ महान्मेनपादानुध्यातानां भगवन्नारायणप्रसादसमासादितवरवराह-
लाहनेक्ष—
- ५ णवर्गाकृतारानिमण्डलानामश्वमेधावभृयस्नानपवित्रीकृतवपुषा
चालुक्यानां कु—
- ६ लमलकरिष्णोस्मत्याश्रयबल्लभेन्द्रस्य भ्राता कुञ्जविष्णुवर्धननृप-
तिरष्टादशवर्षाणि—
- ७ वेर्गादेशमपालयत् । तदात्मजो जयसिहस्त्रयस्त्रिंशतम् । तनुजे-
न्द्रराजनन्द्रनो विष्णुवर्धनो न—
- ८ व । तत्सुनुर्मंगियुवराजः पचविंशतिम् । तत्पुत्रो जयसिहस्त्रयो-
दश । तदवर—

९ जः कोकिलिष्वण्मासान् । तस्य ज्येष्ठो भ्राता विष्णुवर्धनस्तमुच्चाक्य
सप्तत्रिंशत्तम् । तत्पुत्रो — वि

दूसरा पत्र पहला भाग

१० जयादित्यमहारकोष्टादश । तत्सुतो विष्णुवर्धनव्यट्त्रिंशत्तम् ।
नरेन्द्रसूगराजा (क्यो) सृ—

११ गराज (पराक्रम ।) विजयादित्य (भूपाल) चत्वारिंशत्समा-
॥ (२) तत्पुत्रः कलिविष्णुवर्ध—

१२ नो (ध्यर्ध्ववर्षम् । तत्सु) तो गुणगविजयादित्यश्चतुश्चत्वारिंशत्तम् ।
तद्भ्रातुर्यौवराज्योन्नतमहि—

१३ (मन्वतो) विक्रमादित्यभूपाज्जातश्चालुक्यमीमस्सकलनृपशु (णो-
त्कृ) ह्चारित्रपात्र । दानी

१४ ' रसकर सार्वभौमप्रतापो राज्यं कृत्वा प्र (या) तः त्रिद-
शपतिपद

१५ (त्रिंशदब्दप्रमा) ण ॥ (३) तत्पुत्रः कलियस्तिराण्डविजयादित्य-
व्यण्मासान् । तत्सुनुरम्मराजस्स—

१६ (स) वर्षाणि । तत्सुत विजयादित्य कण्ठिकाक्रमायातपट्टाभि-
देकं चालुक्यव्यण्मासान् । तालराजो राज्यम्मास—

१७ (मे) क । चालुक्यमीमसुतो विक्रमादित्यस्त हत्वा एकादश-
मासान् । विजयादित्यो वेंगीना २ कलियस्ति—

१८ गण्डनामा धोमा (न् ।) अस्य सती मेलावा तन्नम्रीराजमीम-
नृपतिरजेय ॥ (४) सत्यत्यागामिमानाद्यस्मि—

दूसरा पत्र दूसरा भाग

१९ रुगुणयुतो राजसार्ताण्डमाजौ । जित्वाग्ममल्लपाख्यं समुत्तमचि-
चलं द्रोहि (णो) प्यन्तकानो । द्विहमीमो राष्ट्र

२० कृत्यवल्बलवत्सहरो द्वादशाब्द । राज्यं कृत्वागमत्स प्रणिहित
(सुयज्ञो) धर्मसन्तानवर्गं ॥ (५) वि—

- २१ प्लां पद्मेव श्रमोऽग्वि गिरितनया यस्य देवी सपट्टा । मशुद्धा
(हँह) नाञ्जिजकु (लवि) पथे पुण्यला (व्र)—
- २२ प्यगण्या । लोकांवा तत्सुतोभूट् विजितपण्यलोवेगिनाथोम्मराजो ।
राजद्राजाधिराजो (जितरिपु) म—
- २३ कुटोद्घृष्टपादारविन्द ॥ (६) वेगी (राज्याभिषिक्तो) निजरिपु-
विजयाद्रित्यमुद्यत्समर्थ । जित्वा (नेकाजिरग)—
- २४ प्रजितपरवलं (कण्ठिकाडामकण्ठ ।) टायारद्रोहिचर्गानपि सकर-
वलः क्षत्रि (या) द्रित्यद्रे—
- २५ वो । ध्वस्तारिध्वान्तराशिर्विलम्बिनकमलस्मप्रतापो विभाति ॥
(७) यन्निर्मानुञ्जिमित्त कृतमिदमग्निलं विष्टप हि
- २६ त्रिमूर्तेरात्मान चात्मनास्मादिह मकलगुणै (राजर्मा)-मोद्बहो-
भूत् तेजोराशिः प्रजानां पतिरधिक्रव—
- २७ (ल) स्सप्रतापोष्टमूर्तिस्मोयन्देवोम्मराजो जनगुणजनकोन (न्य)
राजाप्रचिन्ह ॥ (८) स्वर्थाता पूर्व—

तामरा पत्र . पहला भाग

- २८ नाथा नलनहुषहरिश्चन्द्ररामादयोपि प्रत्यक्षास्ते यमोभिर्गुणवपुर-
चला स्वैरिदानी—
- २९ मदष्टा । यस्त्योच्चै कीर्तिरा (शिर्मा) गण इव जगत्यद्वितीयो-
द्वयोस्मिन् । राजद्राजाधिराजस्म ज—
- ३० यनि विजयाद्रित्यद्रेवोम्मराज ॥ (९) गद्यम् । स जगतीपतिरम्म-
राजो राजमहेन्द्र मोगीन्द्र सह—
- ३१ स्रमोगोपहासिर्दार्धत्रभिर्णैकवाहुमान्द्रितविश्वत्रिभ्रवराभार ।
नारायण
- ३२ इव निरन्तरानन्तमोगास्पद् । विधुरिव सुखविराजित । पिता-
मह इव कम—

- ३३ लासन । गिरिविज्ञ इव धराधरसुवाराधित । रत्नाकर इव
समस्त—
- ३४ शरणागतममृदाश्रय. । सुवर्णाचल इव सुवर्णोत्तुगोदय. ।
हिमाचल
- ३५ इव सिंहासनोल्लासितचमरीवालव्यजनविराजमानलील. ॥ स
सम—
- ३६ स्तमुवनाश्रयश्रीविजयावित्यमहाराजाधिराजपरमेश्वरपरम—

तीसरा पत्र दूसरा भाग

- ३७ मट्टारक । बेलनाण्डुविषयनिवासिनो राष्ट्रकूटप्रमुखान् कुट्टम्बि-
नस्समस्त—
- ३८ सामन्तान्त) पुरमहामात्रपुरोहितामात्यश्रेष्ठिसेनापतिश्रीकरण -
धर्माध्यक्ष—
- ३९ द्वादशस्थानाधिपतीन् ममाहुयेत्यमाज्ञापयति विदितमस्तु व. ।
श्रीमानुदपा—
- ४० टि महान्त्रिणयनकुलसाधु श्रेण्याख्यो । गोत्र सिंहासनतो
- ४१ विदितो नरवाहनश्चलुक्ये(क्षानाम् ॥ १०) श्रीकरणगुरुर्गुरिव
विद्युधगुरु—
- ४२ स्स(क)ळरा(जसिद्धान्तज्ञ) । नरवाहन इत्यासीन्न्यवदूतनरवाह-
(न)प्रकाशित—
- ४३ यशसा ॥(११) यस्याग्रसुतो गुणवान् मेलपराजो गुणप्रधानो
दानी । मानी मा—
- ४४ नवचरितो मानवदेवो जिनेन्द्रपदपद्मालि. ॥(१२) तस्य सती
मण्डावा सीतेव पति—
- ४५ व्रता जिनव्रतचरिता । सत्यवती (त्रि)नयवती सतताहारप्रदायिनी
धृतधर्मा ॥ (१३)तज्जौ

चौथा पत्र पहला भाग

- ४६ (सु)तौ प्रमिद्धौ बुद्धिपरौ सकलशास्त्रशिविवेकौ । भीमनरवाह-
नाभ्यां विस्थानौ रा—
- ४७ मल्हमणाविव लोके ॥१४॥ यौ भीमार्जुनमहदौ बलयुतबलदेव-
वासुदेव(ममा)नौ । (न)—
- ४८ कुलमहदेवनुर्यौ तौ जातौ जैनधर्मनिरतचरित्रौ ॥१५॥ श्रीमत-
चालुक्यभीम(क्षितिपतिकृप)—
- ४९ या लब्धसामन्तचिन्तौ श्रोद्द्वार्गैर्वशरष्टोवनपदधिलम(द्धा)मग्च्छत्र-
(लोलौ) ।
- ५० रिक्त्यौ शिशिरुहपटलच्छाद्यसत्करैर्का जातो चालुक्य-
(चूलौ)
- ५१ 'कग्ह्यौ काहलाद्यभ्युपेतौ ॥१६॥ जैनाचार्यौ यद्रीचौ गुत्रसि-
५२ रगुणश्चन्द्रसेनाप्यशिष्यो शास्त्रज्ञो नाथमेनो मुनिनुतत्रयमेनो
मुनिर्दोक्षितात्मा । मि—
- ५३ द्दान्तज्ञ कलाज्ञ परमनयपटु मञ्जनोत्कृष्टवृत्तस्तत्प्रात्र. श्रावकाणां
क्षपणन्मु(ज)—
- ५४ नक्षुल्लकाज्याञ्जकानां ॥१७॥ तस्मै ताभ्यां राजभीमनरवाहनाभ्यां
विजयवाटिकायां

चौथा पत्र . दूसरा भाग

- ५५ जिनमवनयुगस्मिन्मनेतद्दर्शयार्थमस्मामिस्मर्वकरपरिहारं देव-
भोगी—
- ५६ कृत्य पेहगालिद्विपरुं नाम ग्रामो दत्त. । अस्यावधय । पूर्वत
मण्ड्य—
- ५७ रिपोलगत्सुन यिसु कट्टलचेस्वुन नडिमि दूव । आग्नेयत आल-
पर्तियुं जूडुरि—

- ५८ यु मुय्यलकुद्द (न) वरुव पडुव । दक्षिणतः चूद्वरि प्रान्त(पतिं)
युत्तरंनुन कुण्डि—
- ५९ विड्ढिगुण्ड । नैकृत्यत चूद्वरियम्मपोटयन्वगुडि । (पश्चिमत)
रेटि(प)डुमटिदरि । वा—
- ६० यव्यतः वलिवेरिपोलगरुसुन गारलगुण्ड । उत्तरतः तप्पराळ
प(डु)व । ई—
- ६१ शानतः कोडगालिडिपतिंयु (वलिवेरियु मु)य्यलकुद्दुन नडुपनि-
गुण्ड ॥ तस्य (स्थे)यादल—
- ६२ ध्यं सुविरसुरुतर (शास)न राजकोक्त । सत्कीर्तेवैगिपस्य प्रकट-
गुणनिघेरम्मराजस्य पूज्य ।
- ६३ तत्रेद शा(स)न (पालित)जिननिगम शौर्यंभीतान्यनाथत्रातो(चै)-
मौलिमालामणिकमकरिकोमड्ढि—

पाँचवों पत्र

- ६४ कोछासित्तान्ने ॥ (१७) अरुयोपरि न केनचिद्वाधा कर्तव्या य
करोति स पचमहापातकस—
- ६५-६९ युक्तो भवति । तथा चोक्त व्यासेन ॥ (नित्यके ज्ञापात्मक
श्लोक)
- ७० आज्ञसि कटकराज' जयन्ताचा—
- ७१ येण लिखितम् ॥

[इस ताम्रपत्रमे मदनूर तथा कलचुम्बूर लेखोके समान पूर्विय चालुक्यो-
की वशावली कुञ्ज विष्णुवर्धनसे प्रारम्भ कर अम्मराज (द्वितीय) विजया-
वित्य तक दी गयी है । अम्मराजके पिता चालुक्य भीम (द्वितीय) का एक
सामन्त नरवाहन था जो त्रिनयनकुलमे उत्पन्न हुआ था तथा जैनधर्मिय
था । उसका पुत्र मेलपराज था । इसकी पत्नी मेण्डावाको दो पुत्र हुए —
राजभीम तथा नरवाहन (द्वितीय) । जैनाचार्य चन्द्रसेनके शिष्य नाथसेन

(जयसेनके गुरु) इन दोनोंके गुरु थे । इनने विजयवाटिकामे द्रो जिनमन्दिर बनवाये थे । उनके लिए अम्भराजने वेल्नाण्डु प्रदेशका पेद्दगालिडिपरं नामक ग्राम दान दिया था ।] [ए० इ० २४ पृ० २६८]

१०१

वरुण (मैसूर)

१०वीं सदी, कन्नड़

१ श्री श्रीमत्पर वि राजगुरु—

२ मण्डलाचार्य विथमकर्गु अत्रिगोत्र परशुराम आचन चामुण्डरनु जा—

३ भठरकर वास्णड सांथिनाथस्वामिय माडिमिडरु आवर प्रिय दुण्डुचल—

४ वाचार्य मकलु विजय-अण वमण भडिडरु—

[इस लेखमें आचन चामुण्डर भट्टारक-द्वारा वरुण ग्राममें शान्तिनाथ-मूर्ति अर्पण किये जानेका निर्देश है । यह मूर्ति विजयण्ण और वमण-द्वारा बनायी गयी थी । लेखकी लिपि १०वीं सदीकी प्रतीत होती है ।]

[ए० रि० मै० १९४० पृ० १७१]

१०२

मण्णे (मैसूर)

१०वीं सदी, कन्नड़

[इस लेखमें देवेन्द्रपण्डित भट्टारकी गिण्या भारव्वेकन्तिके समाधि-मरणका तथा कलिगन्त्रे कन्ति-द्वारा इस निसिधिकी स्थापनाका उल्लेख है । लिपि १०वीं सदीकी है ।] [ए० रि० मै० १९१७ पृ० ३९]

१०३

उम्मसूर (मैसूर)

१०वीं सदी, कन्नड

[इस लेखमें विमलचन्द्रके शिष्य सोत्तियूरके शासक मारम्मयके पुत्र सिन्दभ्यके समाधिभरणका उल्लेख है। लिपि १०वीं सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९१७ पृ० ३९]

१०४

बूवनहस्ति (मैसूर)

१०वीं सदी, कन्नड

[यह लेख एक जिनमूर्तिके पादपीठपर है। इस मूर्तिकी स्थापना बालचन्द्र सिद्धान्तभट्टारके शिष्य क(म)लभद्रगुरु द्वारा की गयी थी। लिपि १०वीं सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३१]

१०५

अंकनाथपुर (मैसूर)

१०वीं सदी, कन्नड

[यह लेख अकनाथेश्वर मन्दिरके छतमें लगा है। प्रभाचन्द्र सिद्धान्त-भट्टारकी शिष्या देवियब्बेके समाधिभरणका यह स्मारक है। लिपि १०वीं सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३१]

१०६-१०७

अंकनाथपुर (मैसूर)

१०वीं सदी, कन्नड

[यहाँके सुब्रह्मण्यमन्दिरके छतमें दो निसिधि लेख लगे हैं। एकमें दडिगसेट्टि तथा देवरदासभ्यकी माता चामकब्बेका उल्लेख है। दूसरेमें

महानायक रेचय्यके पुत्र अय्यसामिका उल्लेख है जो चातुर्वर्ण अमणमघका सहायक था । लिपि १०वीं सदीकी है ।]

[ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३१]

१०८

होलेनरसीपुर (मैसूर)

१०वीं सदी, कन्नड

[यह लेख १०वीं सदीकी लिपिमें है । इसमें मुनिमुख्य महेन्द्रकीतिके समाधिमरणका उल्लेख है ।] [ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३१]

१०९

अंकनाथपुर (मैसूर)

१०वीं सदी, कन्नड

[यह लेख १०वीं सदीकी लिपिमें है । इसमें कदम्ब वंशीय वासवेके पुत्र राचयके समाधिमरणका उल्लेख है । यह लेख बलदेवने स्थापित किया था ।] [ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३२]

११०

कोडिहल्लि (माण्ड्या, मैसूर)

१०वीं सदी, कन्नड

१ म-

२ अय्य सन्य-

३ सम गेट्टु

४ परड नों-

५ तु मुडिपि-

६ दन् भातन

७ मगलप्य

८ विडक्क कल्ल

९ निक्कमिद्(ल)

[इस निसिधि-लेखमें किमी मय्यके समाधिमरणका निर्देश है । उसकी पुत्री विडक्कने यह समाधि स्थापित की थी । लेखकी लिपि १०वीं सदीकी प्रतीत होती है ।] [ए० रि० मै० १९४० पृ० १६०]

१११

कोनकोण्डल (अनन्तपुर, आन्ध्र)

१०वीं सदी, कन्नड

[यह लेख रसासिद्धलगुट्ट नामक पहाड़ीपर एक पाषाणपर खुदा है। यह श्रीनागसेनदेवका निसिदिलेख है। इसकी लिपि १०वीं सदीकी है।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ४५१ पृ० १२६]

११२

मथुरा

१०वीं सदी, सस्कृत-नागरी

[इस लेखमें १०वीं सदीकी लिपिमें मूलसंघके किसी आचार्यका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ५२७ पृ० ७७]

११३

कोलक्कुडि (चि० मदुरा, मद्रास)

१०वीं सदी, तमिल

समणरमलै पहाड़ीपर जैन मूर्तियोंके उत्तरकी ओर चट्टानपर

[इस लेखमें गुणभद्रदेव तथा ऋप्रभका निर्देश है। लिपिके अनुसार यह लेख १०वीं सदीका होगा।]

[रि० इ० ए० १९५०-५१ क्र० २४२]

११४

चैखर (मन्दसौर, मध्यप्रदेश)

१०वीं सदी, सस्कृत-नागरी

[इस लेखमें नन्दियडसंघके जैन आचार्य शुभकीर्ति तथा विमलकीर्तिका उल्लेख है। लिपि १०वीं सदीकी है।]

[रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० २०३ पृ० ४५]

११५

कमलापुरम् (बेल्लारी, मैसूर)

१०वीं सदी, कन्नड

[यह लेख १०वीं सदीको लिपिमैं है । इसमें गुणचन्द्रमुनि, इन्द्रनन्दि-
मुनि तथा एक महिलाका उल्लेख है ।]

[रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० २२२ पृ० ४८]

११६

काशिवल (विजनोर, उत्तरप्रदेश)

सवत् १०६(१) = सन् १००५, मंस्कृत-नागरी

[यह लेख एक जैन मूर्तिके पादपीठपर है । इसमें भरतका उल्लेख
है तथा सवत् १०६ यह तिथि दी है । सम्भवतः सवत्का अन्तिम अंक लुप्त
हुवा है ।]

[रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ४३६ पृ० ७१]

११७

लक्ष्मणुण्डि (मैसूर)

शक ९२९ = सन् १००७, कन्नड

[यह लेख चालुक्य सम्राट् आहवमल्ल (जो यहाँ सत्याश्रयका
उपनाम होना चाहिए) के सामन्त वाजिकुलके नागदेवके समयका है ।
इसकी पत्नी अत्तियब्बेने लोक्कगुण्डिमैं एक जिनालय बनवाकर उसे कुछ
भूमि दान दी थी । यह दान उसके गुरु सूरस्थगण-कौरुरगच्छके अर्हणन्दि
पण्डितको दिया गया था । दानकी तिथि फाल्गुन शु० ८, शक ९२९,
प्लवग सवत्सर ऐसी दी है । उस समय अत्तियब्बेका पुत्र पडेवल तैल
मामवाडि प्रदेशका प्रमुख था ।]

[मूल कन्नडमें मुद्रित]

[सा० इ० इ० ११ पृ० ३९]

११८

कोप्यल (रायचूर, मैसूर)

राज्यवर्ष १ = सन् १००८, कन्नड,

[यह लेख चालुक्य राजा विक्रमादित्य ५ के राज्यवर्ष १का है। इसमें सिंहनन्दि आचार्यके इगिनीमरणका तथा उनकी स्मृतिमें कल्याणकीर्ति-द्वारा एक जितेन्द्र चैत्यालयके निर्माणका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० १९९ पृ० ३७]

११९

उष्काल (जि० उत्तर अर्काट, मद्रास)

सन् १००९, तमिल

पेरुमाल मन्दिरके एक मण्डपकी उत्तरी दीवालपर

[यह लेख चोल राजा राजराजकेसरिवर्मन् (राजराज १) के २४वें वर्षका है। जो ब्राह्मण, वैखानस और जैन चोल, पाण्डल तथा तोण्ड-मण्डलके गाँवोंके अधिकारी हैं वे यदि भूमिकर दो वर्ष तक न दें तो उनकी जमीन जब्त करानेका इसमें आदेश दिया है।]

[इ० म० उत्तर अर्काट ३०८]

१२०

चेचारक धोमलापुर (मैसूर)

शक ९३५ = सन् १०१३, कन्नड

- | | | |
|----------------|-----------------|-----------------|
| १ सकवर्ष ९३५ | २ नेय प्रमादीच | ३ संवत्सरद आ- |
| ४ पाड सु दसमि | ५ सोमवारदोल् | ६ माकब्बेगंतिय |
| ७ मर्दवट बीचग- | ८ बुड परोक्षवि- | ९ नयं निसिधियो- |
| १० य कल्लनिरि- | ११ सिदं | |

[यह लेख माकब्बेगन्ति नामक महिलाके समाधिमरणका स्मारक है]

जो वीचगवुडने स्थापित किया था । तिथि आषाढ शु० १०, सोमवार, शक ९३५, प्रमादी संवत्सर ऐसी दी है ।]

[ए० रि० मै० १९४२ पृ० २०७]

१२१

तोण्डूर (द० अर्काट, मद्रास)

११वीं सदी पूर्वार्ध, तमिल

[यह लेख चोल राजा परकेसरिवर्मन् (नम्भवत राजेन्द्र १) के राज्यवर्ष ३का है । विण्णकोवरैयन् वयिरि मलैयन् नामक शासक-द्वारा वज्रसिंग इलपेरुमानडिगल् नामक जैन आचार्यको गुणनेरिमगलम् अपरनाम वलुवामोलि आरान्दमंगलम् नामक ग्राम तथा तोण्डूर ग्रामके कुछ उद्यान आदि दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९३४-३५ क्र० ८३ पृ० १६]

१२२

उदयपुर (राजस्थान)

संवत् १०७६ = सन् १०१९, संस्कृत-नागरी

[उदयपुरके वामुपूज्यमन्दिरकी एक मूर्ति । यह मूर्ति संवत् १०७६ में बाहिल सोडक-द्वारा स्थापित की गयी थी ऐसा इस लेखमें कहा है ।]

[रि० आ० स० १९३०-३४ पृ० २२६]

१२३

मरोल (मैसूर)

शक ९४६ = सन् १००४, कन्नड

[यह लेख चालुक्य सम्राट् जगदेकमल्ल (प्रथम) के समय शक ९४६, रक्तारिषि संवत्सरके उत्तरायण-संक्रमणके अवसरपर लिखा गया था । इसमें

नोलम्बवाडि तथा करिविडि प्रदेशके सामन्त नोलम्बवगीय घट्टेयककार-द्वारा भरवोलल्की बसदिके लिए कुछ भूमि अर्पण किये जानेका उल्लेख है। यह ग्राम उस समय सत्तिग (सत्याग्रह) की पुत्री महादेवीके शासनमें था। जैन आचार्य अनन्तजीय, गुणकीर्ति सिद्धान्तमट्टारक तथा उनके शिष्य देवकीर्तिपण्डितका भी इसमें उल्लेख है।]

[मूल कन्नडमें मुद्रित]

[सा० इ० इ० ११ पृ० ५०]

१२४

हैदराबाद म्युज़ियम (आन्ध्र)

शक ९४९ = सन् १०२७, कन्नड

[यह लेख चालुक्य राजा जयसिंह २ के राज्यकालका है। इस राजाकी कन्या सोमलदेवी-द्वारा पिरियमोसगिके बसदिके लिए कुछ दानका इसमें उल्लेख है। तिथि शक ९४९ प्रभव भवत्सर ऐसी दी है।]

[एन्शाण्ट इण्डिया १९४९ पृ० ४५]

१२५

होसूर (मैसूर)

शक ९५० = सन् १०२८, कन्नड

[यह लेख चालुक्य सम्राट् जगदेकमल्ल (१) के समय शक ९५०, विभव सबत्सरकी उत्तरायणसक्रान्तिके दिन पौष शु० १३, रविवारको लिखा गया था। केशवसरसका पुत्र दण्डनायक वावणरस तथा उसका वन्धु महासामन्ताधिपति श्रीपादरम इनके शासनका इसमें उल्लेख है। वावणरसकी पत्नी रेवकब्बरसिके अधीन सिन्दरस पोसवूर नगरपर शासन कर रहा था। उस समय आय्चगावुण्डने पोस्वूरमें अपनी पत्नी कचिकब्बेके स्मरणार्थ एक बसदि बनायी और उसे कुछ भूमि तथा एक उद्यान अर्पण किया। आय्चगावुण्डके पुत्र एरकके पुत्र पोलैगने यह लेख स्थापित किया था। ये मोरक कुळमें उत्पन्न हुए थे।]

[मूल कन्नडमें मुद्रित]

[सा० इ० इ० ११ पृ० ५५]

१२६

मस्की (रायचूर, मैसूर)

शक ९५३ = सन् १०३२, कन्नड

[यह लेख चालुक्य मगधाद् जगदेकमल्लके राज्यकालमे फाल्गुन शु० ९, सोमवार, शक ९५३, प्रजापति मवत्सरके दिन लिखा गया था । इसमे देसिगणके जगदेकमल्लजिनालयके लिए राजा-द्वारा कुछ भूमि आदिके दानका उल्लेख है । अष्टोपवासि कनकनन्दिभट्टारके निवेदनपर वह दान दिया गया था । स्थान राजवानि पिरियमोसगि यह था ।]

[रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० २४७ पृ० ४२]

१२७

कागिनेल्लि (धारवाड, मैसूर)

(शक ९)५४ = सन् १०३२, कन्नड

[यह लेख चालुक्य राजा जगदेकमल्लके राज्यमे ५४ (शक ९५४) वर्षमें लिखा गया था । इसमे जिनधर्मके भक्त कामदेवके एक पुत्र तथा आयतवर्माका उल्लेख है । इन्होंने एक मन्दिरके लिए कुछ सुवर्ण आदि दान दिया था ।]

[रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई० २३ पृ० १२०]

१२८

रायवाग (मैसूर)

शक ९६३ = सन् १०४१, कन्नड

[यह लेख आदिनाथमन्दिरके मण्डपमें लगा है । तिथि चैत्र व० १४, शक ९६३, शुक्रवार, विक्रम सवत्सर ऐसी दी है । अन्य विवरण प्राप्त नहीं है ।]

[रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० १५४ पृ० ३४]

१२६

तिरुनिडंकोण्डै (महाम)

११वीं सदी पूर्वार्ध, तमिल

[इस लेखका कुछ भाग दीवान्मे दया है । उनके प्रारम्भमे राजेन्द्र-चोल प्रथमकी ऐतिहासिक प्रशस्ति है । तिरुमणजेन्नि निवान्नी कलिमानन् विजयालयमल्लन्-द्वारा देवमन्दिरमे दीप प्रज्जालित रग्गनेके लिए ९६ भेदें दान दी जानेका इनमे उल्लेख है । यह लेख चन्द्रनाथमन्दिरके बरामदेके वाजुमे खुदा है ।]

[रि० मा० ए० १९३९-४० क्र० ३०० पृ० ६५]

१३०

हृत्ति (जि० वेल्गाव, म्हैंगूर)

शक ९६६ तथा १०६७ = सन् १०४४ तथा ११४५, कन्नड

- १-२ श्रीमत्परमगमांरस्याद्वाद्रामोचलांठन । जीयात त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासन ॥ (१)
- ३ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वायल्लम महाराजाभिराज पर-मेश्वर परममह्यार-
- ४ क सत्याश्रयकुलतिलक चालुक्याभरण श्रीमद्वाह्वमल्लनेर विजयराज्य-
- ५ मुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्धमानभाचद्राकंतारं मल्लुत्तमिरं ॥ तत्पाठ-पधोपजीवि ॥ मंले-
- ६ दं पगेवरं निर्मूलिसि जसम निमिचि दिग्मिन्तिवरं कालदिय थोलगादि तले पालिसिद्र तौजना-
- ७ रुम भुजयलदि ॥ (२) आसन पुत्र विनयोपेत पायिम्म-नृपति-गोप्युव सति

८ विख्यातियुते हम्मिकद्वेगे सीतेगे सरि मानेणद्वे लच्छलेयोगे-
दरु ॥ (३) इष्टज-

- ९ नक्के चट्टममयक्के महाजनमोजनक्केयुत्कृष्टतपोधनगंयलिदायव-
- १० नक्के सकन्यकालिकाग्निष्टगेगेष्टे नालकुम्भमयक्कनुरागटे त्रेगवि-
- ११ तु सत्तुष्टते लच्छियद्वरमिगार् मरियर् सचराचरोर्वियोलु ॥ (४)
- १२ मकलधरित्रियोलु नेगर्द वद्विजन सले रूपिनेल्गेय प्रकटतेवेत्त दा-
- १३ नगुणम कुलदुनतिय जिनाग्निगल्गकुट्टिरुचित्तम पोगलुत्तिपुं-
- १४ दु कूडिय लिंकदकपालकन कुलात्तमागनेयनयिये लच्छलदेविय
- १५ जग ॥ (५) शरनिधिमेत्तलावृत्तवसु वरेयँव विलासिनीमुखावुम्ह-
दवोल्विराजि-
- १६ सुव वेल्वलनाल्के पोदल्द शोभेगागरमेनि(सि)र्प पूलि तिलका-
कृतिरिदेसेदिर्पुंदा पुरं सुरपु-
- १७ रम ह्वेरेनलकापुरम नगुगुं विलासदि ॥ (६) अलि ॥ सकल-
व्याकरणार्थदा-
- १८ स्रचयदोलु काव्यंगलोलु सद् नाटकदोलु वर्णकवित्त्वदोलनेगर्द
वेदांतंगलोलु
- १९ पारमाधि(क)दोलु लौकि(क)दोलु समस्तकलेयोलु वागीशानिर्दं
यशोधि-
- २० करादर पोगल्वलिगारलवे पेलु म्मासिर्वर रयातिय ॥ (७) स्वस्ति
शकन्तुपकालार्तात्तसवत्सर-
- २१ शानगलु ९६६ नेय तारणमवत्सरद पुज्य सुद्ध १० आदिवार-
सुत्तरायण-
- २२ संत्रान्तर्यंदु ॥ यजनयाजनाध्ययनाध्यापनदानप्रतिग्रहषट्कर्म-
निरतरुं श्री-
- २३ (म)ञ्चालुक्यचक्रवर्तिब्रह्मपुरिस्त्रानपितृपितामहमहिमास्वदरक्षणा-

- २४ र्थकोविदहं विदग्धकविगमकवादिवाग्मिस्वरुमतिथियभ्यागत-
विशिष्ट-
- २५ जनपूजनप्रियरुं हिरण्यगर्भग्रह्यमुत्त रुमलविनिर्गतऋग्यजु-
- २६ स्तामाथर्वणसमस्तवेदवेदागोपमागानेकशास्त्राष्टादशस्मृतिपुराण-
- २७ काव्यनाटकधर्मागमप्रवाणरुं सप्तसामसंस्थावभृथायगाहन-
पवित्रीकृ-
- २८ तगाग्ररुं कांचनक(ल)शमितपट्टत्रचामरपचमहाशब्दघटिकाभेरी-
रवनि-
- २९ नाटितरुमाश्रि(तजन)कल्पवृक्षरुमहितकालातकरुमकवाक्यरुं
- ३० क्षरणागतवज्रपंज(रुं च)तुस्तमयसमुद्धरणरुं श्रीकेशवाटिरथदेव-
- ३१ लब्धवधरप्रसादरुमप्य श्रीमन्महाप्रहार पुलियूरोडेयप्रमु-
- ३२ स सासिचर्महाजनगल दिव्यश्रीपादपद्मंगल (क)च्छयञ्जरसि-
थरु स-
- ३३ हिरण्यपूर्वकमाराधिसि भूमियं पडेदु वसदियं मादिसि रं-
- ३४ दस्फु(टि)तजीर्णोद्धरणकके पद्मवण पोलदलु शिवेयगेरियारुमत्तर्व-
- ३५ सुगेथं मत्तरींगडुचिञ्जलेककटिदरुवणमं मूरु पण्यमं तेत्तुव-
- ३६ तागि श्रीयापनीयसंघद पुजागवृक्षमूलगणद श्रीवालचंद्रम-
- ३७ द्वारकदेवर काल कर्चि विटल्लु ॥ स्त्रास्त समस्तमुवनाश्रय
श्रीपृथ्वीवल्लम महः-
- ३८ राजाधिराज परमेश्वर परममद्वारक सत्याश्रयकुलतिलक चालु-
क्याभरणं
- ३९ श्रीमत्प्रतापचक्रवर्ति जगदेकरुमहलदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्त-
- ४० रामिवृद्धिप्रवर्धमानचंद्रार्कतारंधर सल्लुत्तमिरे । शकव-
- ४१ पं १०६७ नेय क्रोधनसवत्परदुत्तरायणसंक्रान्तियद्दु यमनि-
- ४२ यमस्वाध्यायध्यानधारणमौनानुष्ठानजपसमाधिशीलसंपन्नरुप्य

- ४३ श्रीमन्महाप्रहारं पूलियूरोडेयप्रमुत्त मासिर्वर्महाजनंग(ल)
 ४४ द्वित्र्यश्रीपादपद्मगलं पेरुंडे नेमणं महिरण्यपूर्वकमाराधिसि(वी)
 ४५ (रा)पूर्वकं मादिमि कौं(डु) तम्म मुत्तव्वे लच्छियव्वेर्वीमियरु
 मादिसिउ चम-
 ४६ त्रियलिपं ऋपियराहारदाननिमित्तमहिलयाचार्यरु रामचंद्र-
 ४७ डेवर कालं कच्चियवरु मुत्तवालुव पडुवणपोलउ शिवेयगेरियारुमत्त-
 ४८ वंसुगेयि पडु(व)ण (मा)गदलु कलशवळ्ळिगेरिय स्या(न)त्रोल-
 गारु मत्तकर्यं
 ४९ मत्तरिंरगडुच्चिन्न(लेक्कदिंदर)वणमं मूरु पणमं तेत्तुवतागि त्रिट्टरु ॥
 ५० पतिमक्ते धेमा सति पायिम्मरसनप्रमुत्ते सकलजनस्तुते मा-
 ५१ गियव्वेराणिगे सुत वां (नेम)य्यनौठार्यगुणं ॥ (८) जिनदेवं
 तनगासन-
 ५२ (थि)जनताकल्पद्रुमं य्यने तम्मय्यननूनटानि कलिदेवं साक्षरा-
 ५३ प्रेसरं तनगण्णं गुणरत्नभूषणने-संदिर्दं नेमंगेनह्हनवघाच(रण)-
 ५४ गे भूवल्लयदोल्लु पेल् ॥ (९)

[इस लेखके दो भाग हैं । पहला भाग चालुक्य सम्राट् आहवमल्ल सोमेश्वर प्रथमके राज्मर्मे शक ९६६ की उत्तरायण संक्रान्तिके समयका है । इनका सामन्त कालडिय वोलगडि था । इसका पुत्र पायिम्म था जिसने हम्मिकव्वेसे विवाह किया । उसे भागिणव्वे तथा लच्छियव्वे ये दो कन्याएँ हुई । लच्छियव्वेका विवाह कूंडि प्रदेशके शामकसे हुआ था । इसने पूळि नगरमें — जहाँ एक हज्जार धर्मनिष्ठ ब्राह्मण रहते थे — कुछ जमीन खरीदकर एक जैन मन्दिर बनवाया और उसके लिए यापनीय संघ-पुत्रागवूसमूल गणके बालचन्द्रभट्टारकको कुछ दान दिया ।

दूसरा भाग चालुक्य सम्राट् जगदेकमल्ल (द्वितीय) के राज्यमे शक १०६७ की उत्तरायणसंक्रान्तिके समयका है । इसमें नेमण नामक

स्थानीय अधिकारीका उल्लेख है जिसने पूलि नगरमें कुछ और जमीन खरीदकर उक्त मन्दिरको दान दी। उस समय रामचन्द्र वहाँके भट्टारक थे। यह नेमण उपर्युक्त लच्छियन्वेका प्रपौत्र था।]

[ए ६० १८ पृ० १७२]

१३१

मुगद (मैसूर)

शक ९६६ = सन १०४५, कन्नड

[यह लेख चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्ल आह्वयमल्ल (सोमेश्वर १) के समय शक ९६६, पार्थिव सवत्सर, चैत्र शु० ५, रविवारके दिन लिखा गया था। इसमें नार्गावुण्ड चावुण्ड-द्वारा मुगुन्द ग्राममें स्वनिर्मित मम्म्य-वत्वरत्नाकर चैत्यालयके लिए कुछ भूमि अर्पण किये जानेका उल्लेख है। चावुण्डके पौत्र महासामन्त मातण्डय्य-द्वारा इस मन्दिरको एक नाटकशाला अर्पण किये जानेका भी इसमें उल्लेख है। उस समय पलसिगे तथा कौकण प्रदेशपर कदम्ब कुलके महामण्डलेश्वर चट्टय्यदेवका शासन चल रहा था। लेखमें कुमुदि गणके जैन आचार्योंकी विस्तृत परम्परा भी बतलायी है।]

[मूल कन्नडमें मुद्रित]

[सा० ६० ६० ११ पृ० ६८]

१३२

जोन्नगिरि (कुर्नुल, आन्ध्र)

११ वीं सदी, कन्नड

[इस लेखमें चालुक्य राजा त्रैलोक्यमल्लदेवके समय वेगडे सोबरस तथा मल्लिसेट्टिका उल्लेख है। इन्होंने जोन्नगिरिकी वसदिके लिए कुछ भूमि दान दी थी।]

[रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० ६१७ पृ० ६०]

१३३

तिंगकूर (कोहम्बतूर-मद्रास)

शक ९६७ = सन् १०४५, तमिल

१ स्वस्तिश्री	२ को नाट्टन् वि-
३ विक्रमशाल-	४ देवकुं शी-
५ ल्लानिण्ड-	६ याण्डु ना-
७ र्पदावट्टु	८ अरत्तुला-
९ प्देवन्	१० पेरन् आण ना-
११ ण् कणित मा-	१२ णिक्कच्चेट्टु
१३ टि च्चन्द्रवशा-	१४ तियिल् मुक-
१५ मण्डगम्	१६ एडुपित्ते-
१७ न् (॥) शकर या	१८ ण्डु ९ १०० (६) (१०) ७ (॥)
१९ शिंगला (न्तक) न्	२० एण् पुट्टु मुक-
२१ मण्डगम् (॥)	

[यह लेख शक ९६७ का है । इस वर्षको नाट्टन् विक्रमचोल राजाके ४०वें वर्षमें चन्द्रवसतिके मूखमण्डपके निर्माणका इसमें उल्लेख है । यह कार्य अरत्तुलान् देवन्के पौत्र कणित माणिकक सेट्टि-द्वारा किया गया था ।]

[ए० इ० ३० पृ० २४३]

१३४

अरसोचीडि (जि० विजापुर, म्हैसूर)

शक ९६९ = सन् १०४७, कन्नड

१ स्वस्ति समस्तमुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवसुलम महाराजाधिराज-
परमेश्वर प-

- २ रममद्वारक सत्याश्रयकुलतिलक चालुक्यामरण श्रीमन्नैलोक्यम-
- ३ रुद्रदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिगृह्णप्रवर्धमानमाचन्द्रार्जिता-
- ४ रथर् सलुत्तमिरे । अस्ति अरिभूपमकुटवटितचरणार्थिदेयर्
गंगास्नान-
- ५ पवित्रेयर् ढोनानाथचिन्तामणिगलेकराक्यर् गुणद घेढंगियरप्य
श्रीमद-
- ६ क्कादंवि (थ) र् गोकागेय कोट्य मुत्तिर् यीदिनलु विऋमपुरद
गोणदघेढंगिय
- ७ जिनालयक्के राण्डस्फुटितसुधाक्रमंकरु गन्धधूपट्रीपक्क मरुगिग
मूलसंघ-
- ८ च (र) सेनगणद ह्योगरिय गच्छद नागसेनपण्डितर्गं अल्लिपं
अपियर्गं अजिय-
- ९ र्गं आहारदानक्क अजियर कप्पदक्क कडुव भूमि सकवर्षं ९६९ नेय
- १० सर्वजित् सवत्सरद चैत्रत्रमास्ये आदित्यवारददिन सूर्यम-
- ११ हणनिमित्त धारापूर्वक मादि नगरदजुभवने मुख्यमागि किसु-
- १२ काडेप्यत्तर बलिय सर्वनमस्यमागि विष्ट थाड गाणद हाल्लोद
- १३ निऋमपुरद सीशान्यद टेसेयिं तौट मत्तरोदु ऊरिं तंक्क मुत्तुयदिन पा-
- १४ ल नैरित्यद टेसेयिं पण्डितनागदंघने सर्वनमस्य मत्तर् पनेरदु
अल्लि तंक्क
- १५ परंकार कंतोजगं सर्वनमस्य मत्तरिषं भावकु ऊरिं थडग रायगट्टेयिं
- १६ मूद परंकार कंतोजगं तौट मत्तरोदु अल्लि पडुव कल्कुटिग
सुरोजगे स-
- १७ वैनमस्य मत्तर् पनेरदु तौट मत्तरोदु दडिगारसन कय्यलु
मात्तगोण्डु देयर्गं कोट्ट

- १८ भूमि कपडिय केरियि तँक मन्नेयवोलडलु मर्वनमस्य
मत्तरु ५० ॥
- १९ ई धर्ममं स्त्रधर्मदिं रक्षिमिडवर् चारणासियलु ओन्टु क्कोटि
कविलेयु-
- २० मं वेदपालनर्प ब्राह्मणरिगे कोट्ट फ (ल) म पडेवर् ई धर्ममन-
लिडव
- २१ रा स्थानटोलनिनु कविलेयुमननिपे (तु) ब्राह्मणर—
२२ मा ॥ नामा—

[यह लेख चालुक्य मन्नाद् त्रैलोक्यमल्ल (सोमेश्वर प्रथम) के राज्यकालमें शक ९६९ की चैत्र अमावास्याके दिन लिखा गया था । इन समय अक्कादेवी गोकुण्ड किलेके समीप गिविरमें थी । उसने विक्रमपुरके गोण्ड वेडगि जिनमन्दिरके लिए मूलमंथसेनगण-होगरि गच्छके नागसेन पण्डितको कुछ दान दिया था ।]

[ए० ई० १७ पृ० १२१]

१३५

नन्दवाङ्मिका (मंमूर)

११वीं सदी-मध्य, कन्नड

[यह लेख चालुक्य मन्नाद् त्रैलोक्यमल्लदेवके समयका है । उसकी रानी मैल्लदेवी थी । उनके एक नामन्त भावनगन्धवारणने कई मठ, मन्दिर, तालाव आदि बनवाये थे जो निम्न स्थानोंपर थे — कल्याण, अण्णिगरे, मुल्लुगुन्द, (कोल्बु) गे, नन्दापुर, कोहल्लि, मण्डल्लिगरे, वेल्गलि, वनवासेपुर, करिविडि, नविले, नन्दवाङ्मिका, प्रेरुह । उसने पौन्गुन्दका त्रिभुवनतिलक जिनालय, महाश्रीमन्त वसदि, पुरगूरका वीरजिनालय, कुन्दरगोका जिनालय आदिका जीर्णोद्धार किया था । उसके द्वारा दिये गये

कई दानोका उल्लेख लेखमें किया है । इसका समय उत्तरायण संक्रान्ति कहा है । वर्ष निश्चित नहीं है ।]

[मूल कन्नडमें मुद्रित]

[सा० ६० ६० ११ पृ० ९९]

१३६

कल्याण (नासिक, महाराष्ट्र)

११वीं सदी-पूर्वार्ध, सस्कृत-नागरी

[यह साम्रपत्र परमारवंशीय महाराज भोजके सामन्त यक्षोवर्मेन्-द्वारा दिया गया है । श्वेतपद देशमें स्थित कल्कलेश्वर तीर्थके महीशमुद्रिक स्थानके मुनिसुव्रतमन्दिरके लिए कुछ जमीन, तेलघानियाँ, दूकानें, और १४ ब्रह्म दान दिये जानेका इसमें निर्देश है ।]

[रि० आ० स० १९२१-२२ पृ० ११८]

१३७

हेब्बैल्लु (मैसूर)

शक ९७५ = सन् १०५३, कन्नड

- १ स्वस्थित समस्तमुखनाथय श्रीपृथ्वी-
- २ बल्लभ महाराजाधिराज परम-
- ३ श्वर परममठारक सत्थाश्रयकुल-
- ४ तिलक चालुक्याभरण श्रीमत् त्रैलोक्य-
- ५ मल्लदेवर विजयराज्यमुत्त-
- ६ रोत्तरामिवृद्धिप्रवर्धमानमाचं-
- ७ द्राकतार सल्लुत्तमिरे स्वस्थित स-
- ८ मधिगतपंचमहाशब्द महाम-
- ९ षड्लेश्वर पट्टिपोम्बुचैपुरवरेश्वरं पञ्चा-

- १० वतीलब्धवरप्रसादं मृगमदामोदं
 ११ कन्दुकाचार्य मन्दरधैर्यं सुमदसंस्तु-
 १२ त्प्यं सान्तरादित्यं रिपुकरौद्रकंठोरव रण-
 १३ रंगमैरवं कीर्तिनारायणं सौर्यपा-
 १४ रायणं रिपुमंडलिकगोत्रगोत्राचलवज्र-
 १५ दण्ड विरुद्भेद महोपान्वयनमस्त-
 १६ लगमस्तिमालियतुलबलसौर्य-
 १७ शालि वन्दिसन्दोहानन्दोक्तसुन्दरकलरल-
 १८ तांकुरनरिमंडलिकपतंगदीपांकु-
 १९ रं विसिसनविजयविपुलोक्तकृत-
 २० प्रतिज्ञं विरुदसर्वज्ञ नामाद्यनेकां-
 २१ कमालासमलकृत् श्रीमत्
 दूसरी ओर
 २२ वीरसान्तरदेवर् सान्तलिंगे-
 २४ गि प्रतिपालिसि सुखसंक-
 २६ मिरे तत्पादपद्मोपजीवि
 २८ तीमकुंभस्थलीविदारुणदा-
 ३० पलमालालंकार वीरनारीम-
 ३२ तमहावाहिनीमहीधरव-
 ३४ निजगोत्रनिस्तारं धर्मरत्ना-
 ३६ हिताजनेयं सौर्यगां-
 ३८ कं वैरिकोटिघरट्टं रण-
 ४० बरेल्लेयसूल डल्लिटिं
 ४२ रेवं सुकविकोक्किलसह-
 ४४ थाधरं धैर्यमहीधरन्
 ४६ रायणं वीरुगनगरुड-
 २३ सासिरसुमं निष्कंटकमा-
 २५ याविनोद्विं राज्य गेय्युत्त-
 २७ स्वस्ति समस्तदुस्तरारा-
 २९ रुणकरासिधारासक्तमुक्ता-
 ३१ णिहारायितमुजादण्डनहि-
 ३३ ज्रदण्डं जिनधर्मप्राकारं
 ३५ करं सुमटारिभीकरं पति-
 ३७ गेयं स्वामिद्रोहदिशाप-
 ३९ रंगक्षेत्रपालं मच्चरिसु-
 ४१ मुन्निरिव आयुमं मे-
 ४३ कारनेकांगवीरं बिलासवि-
 ४५ उपायनारायणं नीतिपा-
 ४७ नामादिसमस्तप्रशास्तस-

- ४८ हित श्रीमन् नकुलरसर्
 ४९ स्मररूपरन्नतर नकुलर-
- ५० सन तनयर् जनकके रा
 ५१ मन् लक्ष्मीधररन्दे-
- ५२ न्दडे चात्रुण्डराय-
 ५२ तु नागमर्मुं कर-
- ५४ मंसेदरे ॥ मंगल
 तीमरी ओर
- ५५ वृत्त ॥ केडेयद पे (म्) महामहिमराज-
- ५६ सुतप्रतिपत्तियेमिं तडेयदे वीरसान्त-
- ५७ रमहीपति ता दयेगेट्टु कोरयोड त्रि-
- ५८ डे निजपुत्र नी वरिसेनिपी नेगलत्तयनेय्दं
- ५९ कोट्टेन्दडे डोग्यापंरार् नगुलभूप-
- ६० नोली वसुधातलाप्रटोलु । परम-
- ६१ आग्निनिष्टैवमनेपोर् शास्त्राग-
- ६२ मामोधिगल् गुरुगल् भाविमे पु-
- ६३ अज्ञेनमुत्तिपर अज्ञिप्रिय वीरमा-
- ६४ क्कर अमिपति तन्डे ता पदियर
- ६५ श्रीकाटि ताम् पंपलकरिसुत्तिलदरे-
- ६६ अद्ये ये (जे) नगुलभूपाल महा-
- ६७ भन्धनो ॥ नगुलरसत चित्तप्रिये
- ६८ सृगलोङ्गने दण्डनायकोट्टुम्मन
- ६९ येट्टु मन्दिन, सासि-
- ७० वरकण्डु, कापर-
- ७१ अक्के इट्टनकित्त कू-
- ७२ विलेयनलिटं
- ७३ त्रिज्जारिकेतोजन मग वहु
- ७४ गि आय्वोज ई शासनद
कल्लं
- ७५ गेट्टु,
चीयी ओर
- ७६ पुत्रि गुणान्विते चट्ट-
- ७७ धर्मशीलोक्तियोल
- ७७ इधरसिगे दोरेयार् ढान-
- ७९ सकवर्प ९७५ नेय दु-

- ८० र्भतिसंवत्सरं प्रवर्तित्से
 ८१ वैशाखमानदकृष्णप
 ८२ क्षदेकादशि आदित्य
 ८३ चारदद्दु श्रीमन्महा-
 ८४ मण्डलेश्वर वीरमान्तर
 ८५ नगुलसगे पर्वय-
 ८६ ल् पन्नेरदर किरुदेरे
 ८७ विट्टियुम काडु परिहा-
 ८८ रं विट्टिकेगेडु कल्नाडिन्ती : ८९ मयादियनलिद वा-
 ९० रणासियोल् कुरुक्षे
 ९१ अदोल् सामिरकविलेयुं
 ९२ पार्वरुमनलिद पातकन-
 ९३ ककुं । स्वदत्तां परदत्ता वा यो
 ९४ हरंत वसुधरां पट्टिर्वर्षम-
 ९५ हन्नाणि विष्टायां जायते क्रि-
 ९६ मि । विप्रकुलाधरचंद्र
 ९७ श्रीप्रतिमंय मारसिग-
 ९८ तनय विद्वद्विप्र गगननृपनि- ९९ योगप्रभु कविराज वल्लभ गो
 १०० विन्दं
 १०१ पर्वयल् पन्नेरदु
 १०२ पौडुर्चनाडोले
 १०३ भक्तगावे हट्टिगा-
 १०४ ल कडगोद मैसंपन्नेर-
 १०५ हुमनेलिवयलुं पा-
 १०६ लिगार । शीरसिनु नगुल-
 १०७ रसनुमंयद्विवेत सासिर-
 १०८ गद्याण ॥ भंगलं

[यह लेख एक स्तम्भके चारो बाजुओपर लिखा है । चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्लके अधीन पट्टिपोवुर्चके महामण्डलेश्वर वीरसान्तरके समयका यह लेख है । इसके मन्त्रीका नाम नकुलरम था । ये दोनों जैन कहे गये हैं । इनके गुरु पुष्पसेनदेव थे । नगुलरसके पिता पडियर काटि, माता अरेयन्ने तथा पत्नी चट्टरसि थी । इनके दो पुत्र चावुण्डराय और नागवर्म थे । लेखमें वीरमान्तर-द्वारा अकेगेडु ग्राम और पर्वयल् विभागके कुछ करोका उत्पन्न नकुलरसको अर्पित किये जानेका उल्लेख है । इस लेखके पाठकी रचना गोविन्दने की थी जो मारसिगका पुत्र था और गगराजाओके समयमें कवियोमें प्रिय था । लेखको चित्तारि केतोजके पुत्र आयवोजने उकेरा था । लेखनिर्दिष्ट दानकी तिथि वैशाख व०, ११, रविवार, शक

९७५ दुर्मति संवत्सर है (यह अनियमित है क्योंकि शक ९७५ विजय संवत्सर था) ।]

[६० रि० मै० १९३१ पृ० १९०]

१३८

मुत्तगुन्द (मैसूर)

शक ९७५ = सन् १०५३, कन्नड

- १-२ श्रीमद्भक्तिभरानतामरकिरीटानर्घ्यरत्नप्रभाजालालीढपटारविन्द-
युगल. कन्दर्पदर्पापह. । त्रैलोक्योदरवर्तिकीर्तिविशदश्चन्द्रप्रभ.
सुप्रभो मन्थाना निवहं निराकुलमल पायादपायाज्जिन ॥१
- ३ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज परमे-
श्वर परममहारक सत्पा-
- ४ श्रयकुलतिलक चालुक्यामरण श्रीमत् त्रैलोक्यमल्लदेव विजय-
राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रव-
- ५ ईमानचन्द्रार्कतार सलुत्तमिरे । तत्तनयं समधिगतपंचमहाशब्द-
महामण्डलेश्वरं वैगी-
- ६ पुरवरेश्वरं समरप्रचण्ड कुमारमार्तण्ड परकरिमदनिवारणनम्न
गन्धवारण परिवारनिधानं
- ७ दानकानीनं हयवत्सराज रूपमनोजं रिपुनृपतिहृदयसेखल भुवनै-
कमल्लं मण्डलिकक्षिरो-
- ८ मणि चालुक्यचूडामणि विद्विष्टसहार कटकप्राकारं श्रीमत्-
त्रैलोक्यमल्लदेवपादपकनत्र-
- ९ मर श्रीसोमेश्वरदेवं वैल्वोलमूनसं पुळिगेरेमूनसुम सुखसंक-
थाविनोद्दिनालुत्तमि-

- १० रे तत्पादपशोपजोवि ॥ वृत्तं । विनयक्काधारभूतं पतिहितचरित-
क्काश्रयं सद्विवेकक्के निवास—
- ११ संपत्तिगे, कुलभवनं सन्ततानूनदानक्के निधानं मान्तनक्कागर-
मेने नेगल्द सद्वचोभूषण भूविनु (तं) (वे-)
- १२ ल्देवनुद्यद्विधुविशदयशोव्याप्नटिक्चक्रवाल ॥२ ईव गुणं गुणं
पतिहिताचरित चरितं परोप (का-)
- १३ रावसथार्थमथमघमिज्जिनतत्त्वमे तत्त्वमेव सदभावने तम्मोळोन्दि
नेलेवेत्तिरे कीर्तिगे नोन्तरिन्तु
- १४ वेल्देवनुमोल्पनाब्द वलदेवनुमंकद शाम्भितवमंनुं ॥३॥ वचनं ॥
अन्तु सकलगुणगणोत्तुगारु जिनधर्म-
- १५ निर्मलं निखिलजनोपकारनिरतरुमुदात्तकीर्तिलतानिकेतनरुम-
गलदेवप्रियतनूमवहं गोजि-
- १६ काम्बिकाकृशोढरनिविडनिवद्धपट्टरुमागि पोगल्लेवेत्त तरसहोढर-
त्रयदोल् अग्रमववन्प सन्धिविप्र-
- १७ हाधिकारि ॥ वृत्तं । जिनपादांहुजमृंगनगजनिम गम्यार्थरस्नाकरं
मनुमार्गं विनयार्णवं कलिमलप्रध्वंस-
- १८ कं केशिराजन वटिं नयसेनसूरिपदपद्माराधनारक्तचित्तनुदात्तं
नेगल्द विवेक—महीभाग-
- १९ दोल् ॥ ४ आ महानुमाव धर्मप्रभावप्रकटीकृतचित्तनागे ॥
कन्दं । सिन्दु—कनवलानन्दनकरु-
- २० पनसमसाहसनिलयं सिन्दुपनन्दनं लसदिन्दुकरप्रतिमकीर्ति-
कान्ताकान्त ॥ ५ जिनधर्मनिर्मलं सत्यनिधा-
- २१ नननूनदान—अनन्दिन कंचरसं पंचेषुनिमं मुलुगुन्दसिन्ददेश-
ललामं ॥ ६ पुंव पेंपिंग जसक्कभागरमा—

- २२ द कंचरसं तन्न सीवटदोलो घर्मानुरागचित्तं सहिरण्यपूर्वकं
कुठे कोण्डु ॥ श्रीमूलसघवारा-
- २३ शौ मणीनामिध सार्चिपा । महापुरुपरत्नानां स्थान सेनान्वयो-
जनि ॥ ७ व । आ चन्द्रकषाटान्वयवरिष्ठ-
- २४ रजितसेनमट्टारकर् तदन्तेवासिगल् कनकसेनमट्टारकरवर शिष्यर् ॥
कन्द । चान्द्र कातन्न जैनेन्द्रं श-
- २५ छटानुशासनं पाणिनि मत्तैन्द्र नरेन्द्रसेनमुनीन्द्र गेकाक्षरं पेरगिनु
मोग्गे ॥ ८ अन्तु जगद्दिव्यात्तरादर
- २६ रवर शिष्यर् ॥ वृत्त । निनगेनेवेनो शाकटायनमुनीशबन्ताने
शब्दानुशासनदोल् पाणिनि पाणिनीयदोले चन्द्रं चा-
- २७ न्द्रदोल् तज्जिनेन्द्रने जैनेन्द्रदोला कुमारने गड कौमारदोल्
पोल्परन्तेने पोल् नयसेनपण्डितरोल्न्यर्द्वार्धि-
- २८ वीतोर्विथोल् ॥ ९ इन्तु समस्तशब्दशास्त्रपारावारपारगर् नयसेन
पण्डितदेघर पाठप्रक्षालनगे-
- २९ य्दु । शकवर्षमावयन्नूरेल्पत्तय्दनेय विजयसवत्तरदुत्तरायण-
सम्क्रान्तिथुं तीर्थं व-
- ३० सदिगाहारठाननिमित्त निजाधिकेयप्प गोज्जिक्कवेगे परोक्षविनय
नगरमहाजनसु पचमठस्था-
- ३१ नमुमरिये नगरेश्वरद् गडिबद कोलोल्लेदु किरुगेरेय केय्योलोगे
सर्ववाघापरिहारमा-
- ३२ ने विट्ट केय्मत्तर् पन्नेरहु । आ केय्ये गुट्टे ईशान्यदोल् कविलेय
कल् आग्नेयदोलादित्यत्त, कल् कैक्क-
- ३३ त्यदोल् चन्द्रन कल् त्रायव्यदोल् पद्मावत्तिय कल् असगगेरेय
तेक सात्तिर वल्लिक्य तौटवोन्दु ॥ स्वदत्तां—

३४ (परदत्तां वा) यो हरेत् वसुन्धरां । पट्टिर्वर्षसहस्राणि
चिप्थायां जायते कृमिः ॥१०

[यह लेख चालुक्य सम्राट् सोमेव्वर (प्रथम) त्रैलोक्यमल्लके राज्य-
में शक ९७५ में लिखा गया था । उस समय वेल्वोल तथा पुलिगेरे
प्रदेशपर सम्राट्का पुत्र सोमेव्वर (द्वितीय) शासन कर रहा था । वहाँके
सन्धिविग्रहाधिकारी वेल्देव थे । ये अगलदेव तथा गोज्जकव्वेके पुत्र थे ।
बलदेव तथा शान्तिवर्मा उनके बन्धु थे । वेल्देवकी प्रेरणासे सिन्दकुलके
सरदार कंचरसेने नयसेन पण्डितदेवको कुछ भूमि दान दी । नयसेनकी गुरु-
परम्परा इस प्रकार थी — मूलसंघ-सनान्वय-चन्द्रकवाट अन्वयके अजितसेन-
कनकसेन-नरेन्द्रसेन-नयसेन । नरेन्द्रसेन तथा नयसेन दोनों व्याकरणशास्त्रके
विशेषज्ञ थे ।

[ए० ई० १६ पृ० ५३]

१३६-१४०

नन्दिचेवूरु (बेल्लारी, मैसूर)

शक ९७६ = सन् १०२४, कन्नड

[यह लेख चालुक्य राजा त्रैलोक्यमल्लके समय शक ९७६, उत्तरायण
सक्रान्ति, रविवार, जय सवत्सरका है । इसमें नोलम्ब पल्लव पेरुमान्दिके
राज्यकालमें देसिगणके अष्टोपवासि भटारको रेन्चूरुके महाजनो-द्वारा
भूमि, उद्यान आदिके दानका उल्लेख है । लेखमें जगदेकमल्ल नोलम्ब
ब्रह्माधिराजका सामन्तके रूपमें उल्लेख किया है । इस लेखके पीछेकी ओर
प्रायः ऐसे ही लेखमें अष्टोपवासिमुनिको वैद्वुचमें दिये हुए दानका वर्णन है ।
इसमें बोरणन्दिसिद्धान्तिका भी उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९१८-१९ क्र० २०१ पृ० १६]

१४१

कोगलि (जि० बेल्लारी, मैसूर)

शक ९७७ = सन् १०५१

जैन मन्दिरके आगे एक शोडमें, कन्नड

यह लेख चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्लके राज्यकालका है । इसमें कहा है कि इस मन्दिरका निर्माण गग राजा दुविनीतने किया था । लेखके समय जैन आचार्य इन्द्रकीर्तिने इस मन्दिरको कुछ दान दिया था । इन्द्रकीर्तिका वर्णन इस प्रकार किया है—

श्रीमदरुहचरणसरसिंहभृग, कोण्डकुन्दान्वयसमूहमुखमडन, देशीयगण कुमुदवनशरच्चन्द्र, कोकलिपुरेन्द्र, त्रैलोक्यमल्लसद सरसिकलहस, कविजनाचार्य, पण्डितमुखाम्बुरुहचण्डमार्तण्ड, सर्वशास्त्रज्ञ, कविकुमुदराज, त्रैलोक्यमल्लेन्द्रकीर्तिहरिमूर्ति]

[६० ए० ५५, १९२६ पृ० ७४, ६० म० बेल्लारी १९६]

१४२

डम्बल (मैसूर)

शक ९८१ = सन् १०५९, कन्नड

[यह लेख चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्लदेव (सोमेश्वर १) के समय चैत्र शु० १३, रविवार शक ९८१, विकोरि सबत्सरके दिन लिखा गया था । इसमें धर्मवील्लके नगरजिनालयके लिए बाचय्यसेट्टिके जमात वीरय्यसेट्टि द्वारा कुछ सुवर्णदान दिये जानेका उल्लेख है ।]

[मूल कन्नडमें मुद्रित]

[सा० ६० ६० ११ पृ० ८९]

१४३

भोरव (धारवाड, मैसूर)

शक ९८१ = सन् १०६०, संस्कृत-कन्नड

[यह लेख मार्गशिर शु० २ शक ९८१ विकारि सवत्सरका है। इसमें यापनीय सघके जयकीर्तिदेवके शिष्य नागचन्द्र सिद्धान्तदेवके समाधि-मरणका उल्लेख है। उनके शिष्य कनकशक्ति सिद्धान्तदेवने यह निसिधि स्थापित की थी। नागचन्द्रको मन्त्रचूडामणि यह विरुद दिया है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ई० २३९ पृ० ५६]

१४४

छुट्टि (जि० धारवाड, मैसूर)

शक ९८० = सन् १०६०, कन्नड

[इस लेखमें सव्वि नगरके घोरजिनालयके आचार्य कनकनन्दिके समाधिमरणका उल्लेख है। इनकी निसिधि भागियब्दे-द्वारा स्थापित की गयी। इस लेखकी रचना वज्रने की तथा नाकिगने उसे उत्कीर्ण किया। तिथि वैशाख शु० ५, रविवार शक ९८२ शर्वरी सवत्सर ऐसी थी।]

[रि० सा० ए० १९४१-४२ ई० क्र० १५ पृ० २५६]

१४५

तोललु (मैसूर)

शक ९८३ = सन् १०६२, कन्नड

इस लेखकी पहली ८ पक्तियाँ धिस गयी हैं।

- ९ . कम्बुकन्धरे केलेयव्वरिसि वीरगाग पोयिसलगं
- १० पेम्पनवद्यु व्विनयार्क पो-
- ११ यिसलजनप' भाडि ॥ श्रीवर्धमानस्वामि-

- १२ गल धर्मतीर्थ प्रवर्तिसुवलि गीतमस्वामिगलि भद्रवाहुस्वामि-
गलिचलि
- १३ पुष्पदन्तमट्टारकरि मेघचन्द्र
- १४ ...श्रीमूलसघ-
- १५ व बेलवेय अमयचन्द्रपण्डितगे विनयादित्यहोयिमलदेवर शक-
वर्ष ९८३ शुभकृतसवत्सरद
- १६ उत्तरायणसक्रमणद दानार्थदेमण धारापूर्वक कोट्ट भद्रके तरे ह
- १७ णवन्दु हणवारमत्तठि देवर चरुपिगे यिप्पत्तयरहु सकगेय
धारापूर्वक माटि
- १८ विट्ट दत्ति तोल्ललहल्लिय मुहगोदनु तिप्पगोदनु सुरतेकल्लु
यिरभुगाम्भ होर-
- १९ गेरिय मूढणभूमि विग्गुड्डेय भूमिय अमयचन्द्रपण्डितरिगे धारापू-
२० र्वक माटि विट्टर ई धर्मवन् भवनोव्यनु "

[इस लेखमें हीयसल राजा विनयादित्य-द्वारा शक ९८३ में उत्तरा-
यणसक्रमणके अवसर पर मूठसघके पण्डित अमयचन्द्रको कुछ भूमिदान
दिये जानेका उल्लेख है। अमयचन्द्रको पूर्वपरम्परामें गीतमस्वामी,
भद्रवाहुस्वामी, पुष्पदन्तमट्टारक तथा मेघचन्द्रका उल्लेख किया है।
मुहगोड तथा तिप्पगोड द्वारा भी कुछ भूमिदान दी गयी थी। ये दोनों तोल-
लहल्लिके निवासी थे।] [ए० रि० मै० १९२७ पृ० ४३]

१४६

पालियड (गुजरात)

सवत् १११२ = सन् १०६६, सङ्कृत-नागरी

१ सिद्ध विक्रम सवत् १११२ चैत्र सुदि १५ अघेह आकाशिका-
ग्रामावासे समस्त-

- २ राजावलीविराजितमहाराजाधिराजश्रीमीमदेव ॥
वायदाधिष्ठानप्रति-
- ३ वद्वो (पो) दशोत्तरग्रामशतान्त पातिसमस्तराजपुराणान् त्रा(ह्य)
णोत्त (रान्) ज-
- ४ नपद्रांद्द्व बोधयत्यस्तु व मविदितं यथा अद्य सोमग्रहणपर्वणि
चराचर-
- ५ गुरुं सर्वज्ञमभ्यर्च्य वायदाधिष्ठानीयवसतिकार्यै अत्रैव वायदा-
(धि)ष्ठाने
- ६ (च) रीक्षेत्रान्तरितया गुढहुलापालिसंज्ञग्नयावणिकमात्राकभूर्मी-
सं (वध्य)-
- ७ मानया कलसिकाद्वयवापभुवा सहास्यैव माडाकस्य सत्का
हृदद्वयस्य २
- ८ भूः शामन (ने) नौदकपूर्वमस्मामि प्रदत्तास्याश्च भूमे पूर्वस्या
त्रिंशि कस्य
- ९ पालकेयरिसत्कं क्षेत्रं दक्षिणस्यां च राजर्काया चरी । पश्चिमा
- १० यां च वाणिय (ज) कमामलीयं क्षेत्रमुत्तरस्यां च पालवाड-
ग्राममा-
- ११ गं इति चनुरावाटोपलक्षितां भुवमेतामवगम्य पृथञ्चिवासि-
जनपदै-
- १२ यथा टीयमानभागभोगकरहिरण्यादि सर्वमाज्ञा(श्रव)णविधेयै-
- १३ भूत्वास्यै वसतिकार्यै समुपनेतव्यं सामान्यं चैतत्पुण्यफल
मत्वास्म-
- १४ द्वांशजैरन्यैरपि भाविभोक्तृभिरस्मत्प्रदत्तधर्मदायोयमनुमन्तव्यः
- १५ - १६ नित्य-के शापात्मकश्लोक
- १६ लिखितमिदं कायस्थ-

१७ कांचनसुतवटेश्वरंण । दूत-स्रोत्र महामाधिधिप्रहिकश्रीभोगादित्य
इ (ति)

१८ श्रीभीमदेवस्य ॥

[इस ताम्रपत्रमें चौलुस्य राजा भीमदेव (प्रथम) द्वारा वायड
अधिष्ठानकी एक बसतिका (जिनमन्दिर) के लिए चैत्र शु० १५ मंघत्
१११२ के दिन कुछ भूमिके दानका उल्लेख है ।]

[ए० इ० ३३ पृ० २३५]

१४७

मोटे वेन्नूर (धारवाट, मंसूर)

शक ९८८ = सन् १०६६, कन्नड

[यह लेख चालुक्य राजा श्रीलोचयमल्लके समय शक ९८८, पुष्य
शु० ५, सोमवार, पराभव सवत्सरके दिनका है । इसमें महामण्डलेश्वर
लक्ष्मणस-द्वारा मूलसघ-चन्द्रिकावाटवशके धान्तिनन्दि भट्टारकको भूमि दान
दी जानिका उल्लेख है । यह दान वेन्नूरमें आयुचिमय्य नायक-द्वारा
निर्मित बसतिके लिए था ।]

[रि० सा० ए० १६३३-३४ क्र० ई० ११३ पृ० १२९]

१४८

चांदकवटे (विजापूर, मंसूर)

शक ९८९ = सन् १०६७, कन्नड

[इस लेखमें फाल्गुन व० ३ शक ९८९ प्लवग सवत्सरके दिन सूरस्त
गणके माघनन्दि भट्टारककी निसिधिका उल्लेख है । सिन्दिगे निवामी
जाकिमब्बेने यह निसिधि स्थापित की थी ।]

[रि० सा० इ० १९३६-३७ क्र० ई० १४ पृ० १८२]

१४६

मत्तिकट्टि (जि० धारवाड, मैसूर)

शक ९९० = सन् १०६८, कन्नड

[यह लेख टूटा हुआ है । मत्तिकट्टि ग्रामकी कुछ जमीन पेगंडे कालि-
मय्यने मत्तिसेन भट्टारकको दान दी इसका इसमें निर्देश है । (यह नाम
मत्तिसेन अथवा मल्लिसेन हो सकता है) । यह दान कालिमय्य-द्वारा
निर्मित एक जिनालयके लिए दिया था । कालिमय्यको (चालुक्य) सम्राट्
त्रैलोक्य (मल्लदेव) का पादपद्मोपजीवी कहा है ।]

[रि० सा० ए० १९४४-४५ एफ् ४२]

१५०-१५१

करन्दै (उत्तर अर्काट, मद्रास)

सन् १०६८, तमिल

[इस लेखमें चोल वंशके राजा राजकेसरिवर्मन् वीरराजेन्द्रदेवके राज्य
वर्ष ५ में तिरुक्कामकोट्टपुरम्के निकट करन्दै ग्रामके जिन मन्दिरके लिए कुछ
भूमि ग्रामसभाके तीन सदस्यों-द्वारा दान दिये जानेका उल्लेख है । यहीके
दूसरे लेखमें इस मन्दिरमें सततदीप रखनेके लिए कुछ वकरियोंके दानका
उल्लेख है । इस लेखमें मन्दिरके देवताका उल्लेख अरुगर् देवर् वीर-
राजेन्द्रपेरुम्बल्लि आल्वार् ऐसा किया है । यह दान कालियूर प्रदेशके
परम्बूर ग्रामके तुगिलिकिलान् अरयन् उडैयान्-द्वारा दिया गया था ।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १२९-१३०]

१५२

मत्तावार (मैसूर)

शक ९९१ = सन् १०६९, कन्नड

१ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादादामोषलांछ-

- २ न । जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शाम्न जि-
- ३ नशासन ॥
- ४ स्वस्ति समधिगतपंचमहाशब्द महामण्डलेष-
- ५ २ द्वारावर्तापुरवराधीश्वर यादवकुला-
- ६ यरधुमणि सम्यक्तचूडामणि मल-
- ७ परोल्लुगण्डाद्यनेकनाभावलीचिराजितरण्य श्री-
- ८ मत्त्रै (लो) क्यमल्ल विनथादित्य होय्मल-
- ९ देवर् गगधादित्तोमत्तन्सासिरमनाल्दु
- १० सुखदिं पृथ्वीराज्य गेय्ये सकवपं ९९१ ने-
- ११ य पिगलसवत्सरद् बैशाख शुद्धश्रयोदशि गृह-
- १२ वारदल् पिद्दु श्रेषमं हाठ्पकदेवर् मत्तयुरकं
- १३ कालं तिर्वितद्दु विजयगंग्यद्दु यमदिगे यदि
- १४ देवर् कटि येद्दुदोके कल्लवरय चिन्लियकं मादि-
- १५ मिट्ठुरोळगे मादिसिर्वेदडे माणिकसेट्टि
- १६ चिन्तेद्दु विन्नपगेय्दम् देवर् नीवूरोळोद्दु
- १७ यमदियं मादिसि भूमिय विट्ट मा-
- १८ नमहिमेगळ कोट्टेडं यद्वव्यर् निर्मट-
- १९ ददयंकके प्रमाणुटे देवर्यमं मलेय-
- २० रसुगळ हदद भत्तयु समानमट्टर
- २१ माणिकसेट्टिय मातिं मेच्चि नक्कु करवोल्लित्तं-
- २२ हु यमदियजूरालगे मादिसि मामिय
- २३ माणिकसेट्टि राजगावुण्ड मुद्दग-धुण्डरिं ये-
- २४ मायिदेन्नुर् (?) भत्तकके विदिमि ॥ तरेयोल् ५-
- २५ ङ माडलियलि सिद्धायदलिक भत्तजुळ नेळ वि-
- २६ नथायितनू पम्पेत्तेरेगळ मत्तवूर् य-
- २७ सदिगे विट्टं ॥ अत्तु विट्टु यमदियवसदलियकव-

- २८ मनेगल माडिसि रिपिहत्त्रियेदु पेसरनिदु
 २९ मनेदेरे मादुवेदेरे ऊरट्टिगे तौडे सु-
 ३० रंद्दु कवर्ते सेसे ओसगे मनकरे कूट क-
 ३१ कन्डि वीरवण कोडतिवण कत्तरिवण अडेकलु-
 ३२ वण हडवलेय हदियराय कुवर वि-
 ३३ ट्टि कंमर विट्टि यिवोलगागि हलवु महिमे-
 ३४ गलं विनयाडिस्थहोरुपलदेवर् आचद्राकं-
 ३५ तारंवरं सलो ॥ इन्ती धर्मदोलावनानुं तप्पिद-
 ३६ वं गगेयलु गंगेयं कौंद्दु तिन्दं लिंगालि-
 ३७ पं नेय्दनिस्थानवे कट्टेगल स्थानं जागवल्ल
 ३८ मत्तावुर हल्लिय गावुण्ड तानित्तुदक्के पे-
 ३९ न्दे नित्तुददक्के देवगृह
 ४० वह नानवक—होलंहा-त्रागिर्पं ॥ ४०००००

[यह लेख होयमल वगके राजा विनयादित्यके समय वैशाख शु० १३, बृहस्पतिवार, शक ९९१ पिंगल संवत्सरके दिन लिखा गया था। मत्तवूर ग्रामके लिए एक नहर बनवायी थी तब राजा विनयादित्य वहाँ गये थे। इस ग्रामकी बसदि ग्रामके बाहर एक पहाडीपर थी। उसे देखकर राजाने ग्रामीणोंसे पूछा कि ग्राममें बसदि क्यों नहीं है? इसपर माणिकसेट्टिने कहा कि ग्राममें बसदि बनानेकी हमारी इच्छा है किन्तु हम गरीब हैं। तब राजाने ग्राममें बसदि बनवाकर नाडलि ग्रामके कुछ करोका उत्पन्न उसे दान दिया। माणिकसेट्टि, राजगावुण्ड तथा मुद्दगावुण्डने भी बसदिके लिए कुछ भूमि दान दी।]

[ए० रि० मै० १९३२ पृ० १७१]

१५३

सोरटूर (मैसूर)

शक ९९३ = सन् १०७१, कन्नड

[यह लेख चालुक्य सम्राट् भुवनैकमल्लदेव (सोमेश्वर २) के समय माघ शु० १, रविवार, शक ९९३, विरोधकृत् सवत्सर, उत्तरायणसंक्रान्तिके अवसरपर लिखा गया था (यहाँ माघ स्पष्टत गलत है जो पीप हीना चाहिए ।) उक्त समय महाप्रबान सेनाधिपति कडितवेगंडे दण्डनायक बलदेवय्य-द्वारा सरटवुर ग्राममे स्थित बलदेवजिनालयके लिए कुछ भूमि अर्पण की गई थी । बलदेवय्यके पिता गग कुलके अगलदेव थे, माता गोज्जिकब्बे थी तथा उसके ज्येष्ठ बन्धुका नाम वेल्देव था । इस दानकी व्यवस्थापिका हुलियव्वाज्जिके सूरस्तगण-चित्रकूटान्धयके सिरिणदिपण्डितकी शिष्या थी । उक्त मन्दिरको सरटवुरके दो-सौ महाजनोंने भी कुछ भूमि, तेलधानी तथा धर अर्पण किये थे । सिरिणन्दिपण्डितकी गुरुपरम्परा इस प्रकार दी है - चंदणदि - दावणदि - सकलचन्द्र - कनकनदि - सिरिणदि ।]

[मूल कन्नडमे मुद्रित]

[सा० इ० इ० ११ पृ० १०७]

१५४

गावरवाड (जि० धारवाड, मैसूर)

शक ९९६-९४ = सन् १०७१-७२, कन्नड

१ श्रीमत्परमगामीरस्याद्वादामोघर्लाछन । जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासन ॥

२ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराजं परमेश्वर परममहाराजक स-

३ त्याश्रयकुलतिलक चालुक्याभरण श्रीमद्भुवनैकमल्लदेवर विजय-राज्यमुत्तरोत्तरामिबुद्धिप्रवर्धमानमाच-

- ४ द्राकृतारं सल्लुत्तमिरे । तत्पादपद्योपजोवि समधिगतपचमहाशब्द
महामडलेस्वरनुदारमहेश्वरं चलके बल्लुगंड (शौर्यभार्तड)
पतिगे-
- ५ कदाड संग्रामगरुडं मनुजमान्धातं कीर्तिविख्यातं गोत्रमाणिक्यं
विवेकचाणाक्यं परनारीसहोदरं वीरवृकोदरं को-
- ६ टंडपार्थं सौजन्यतीर्थं मंडलीककंठीरव परचक्रमैरवं शयटंडगोपालं
मलेय मंडलीकमृगशार्दूलं श्रीमद्भुव-
- ७ नैकमल्लदेवपादपंकजभ्रमरं श्रीमन्महामंडलेस्वरं लक्ष्मरसरु
बेल्वोलमूनूरुमं पुलिगेरेमूनूरुमन्तेरडरु
- ८ मं दुष्टनिग्रहशिष्टप्रतिपालनेयिं प्रतिपालिसुत्तमिरे ॥३॥ अणुगाल्
कार्यदं शौर्यदाल् विजयदाल् चालुक्यराज्यक्के कार-
- ९ णमाठाल् तुलिकात्तनक्के नेरेदाल् कट्टायदाल् मिक्कमन्नणियाल्
मान्तनदाल् नेगल्लत्तेवडेदाल् विक्रान्तदाल् मेलदाल् रणदाला-
ल्लुनेन-
- १० शुभावेडेभोलं विद्वासदोल्लु लक्ष्मण ॥ कलितनमिल्ल चागिगे
वदान्धते मेय्गलिगिल्ल चागि मेय्गलियेनिपंगे शौचगुणमि-
- ११ ल्ल कर कलि चागि शौचिगं निले बुद्धिबोजेयिल्ल कलि चागि
महाशुद्धिसत्यवादि मंडलिकरोलीतनेन्दु पोगल्लुं बुधमड-
- १२ लि लक्ष्मभूपन ॥ कुटुरेय मेले विल् परसु तीरिगे सूलिगे पिंडि-
वालमेत्तिद करवालचारिडुव कर्कडे पारुव चक्रमेन्दोडेन्तो-
- १३ दरुवरेन्नु पायिसुवरेन्नु तरुम्भुवरेन्नु निल्लपरेन्तोदरुवरेन्नु लक्ष्मण-
नोलान्तु वट्टुकुवरन्धभूभुजर् ॥ एने ने-
- १४ गल्द लक्ष्मभूपति जनपतिभुवनैकमश्चरेवादेशं तनगेसठिरे नाडि-
सिदं [जिनशा-]सनवृद्धियं प्रवर्धनमागल्लु ॥ आ चैत्याल-

- १५ यद् पूर्वावतारमन्त्रेने ॥क॥ श्रीवसुधेशन याव रंघकनिर्मदिय
चलमं वृत्तगनाम्नावगतमकलशास्त्रनिळाविश्रुतकीर्ति
- १६ गगमदलनाथ ॥ वृ ॥ रुद्धिगे रुद्धिवेत्सेसेद येल्बलदेदामनाल्
गगपेर्माद्धिगलिन्दमण्णगरे नालकेरेवट्टेनिमित्त नाढ नाढा-
- १७ द्धिगलुंथमेंविनेगमा पुरदोलु जयदुत्तरंग पंर्माद्धियनाय्यु वृत्तग-
नरेंद्रनिनल्लि जि-
- १८ नेंद्रमदिर ॥ वृ ॥ संगतभागे माद्धि तलवृत्तियनल्लिंगे मूढगरे
गुम्मुंगोलनादियाने नेगल्दिट्ट-
- १९ गें गावरिधाद्धमैव याद्धगल शासनं घेरसु मध्नमस्थमिधेंदु मिट्टु
कोट्ट गुणकीर्तिपद्धितगें भक्ति-
- २० यिनुत्तमदानशक्तिर्यि ॥क॥ उद्धितोद्धितमेने विभवास्पदमेने भुवन-
यक्वन्धमेने संचलमागटे गगा-
- २१ न्दयमुद्धिनमिदु सर्वनमस्थवागि नड्युत्तमिरलु ॥ वृ ॥ परम-
श्रीजिनशासनक्के मोदलार्त्ता मूलसधं
- २२ निरन्तरमोप्पुत्तिरे नन्दिंसंघवेमरिंदादन्नय पेपुधेत्तिरे सन्दर्
धलगारमुल्यगणदोलु गगान्वयक्कि-
- २३ न्तिवर्गुल्लु तामेने वधंमानसुनिनाथर् धारिणीचक्रदोलु ॥
श्रीनाथर् जैनमार्गात्तमरेनिसि तपःख्यात्तिय
- २४ ताल्दिट्टिदर् सज्जानात्तमर् धधंमानप्रवरवर शिष्यर् महावादिगलु
विद्यानन्दस्वामिगल् तन्मुनिपत्तिगजुजर् तार्किका-
- २५ कांमिधानाधीनर् माणिक्यनंदिव्रतिपत्तिगलवर शासनोदात्त-
हस्वर ॥ तटपत्यर् गुणकीर्तिपद्धितर् अवरर् तच्छास-

- २६ नल्यातिकोविदरा सूरिगलात्मजर् विमलचन्द्रर् तत्पाद्रामोजषट्-
पदर उद्यद्गुणचन्द्ररन्तवर शिष्यर नोडिशास्त्रा-
- २७ थंटोलु विद्रितरु गण्डविमुन्तरिन्नमयनन्द्याचार्यार्योत्तमरु ॥
वृ ॥ पोले चाल नेलेगेट् तन्न कुल-
- २८ धर्माचारमं थिट्टु बेलवलदेशकडियिट्ट डेवगृहसंडोहगलं
सुट्टु कय्यले पापं वेलेडेत्तै-
- २९ नल्के धुरदोलु त्रैलोक्यमल्लगे पदलेयं कोटसुवं विसुट्टु निज-
वंशोच्छित्तियं माडिद ॥क॥ श्रीपेर्मा-
- ३० नडि माडिसिदी परमजिनालयंगल पोलेवदिट्टा पाण्डयचौलनेव
महापातकतिवुलनलिद्रधोगतिगिलि-
- ३१ ट ॥ वृ ॥ बलिकी बेलवलदेशमं पडेद दंडाधीशसामन्तमंडलिकर्
धर्मद वट्टेगेट्टु नडेयुत्तिर्दल्लि तज्ज मनं-
- ३२ गोल्ले कालीयगुणेतार कृतयुगाचारान्वितं लक्ष्ममंडलिकं निर्मल-
धर्मवत्तलेय नष्टोद्धारमं माडि-
- ३३ ट ॥ ई नेलदोलु नेगहतेय पोगल्लेय वाल्लेय पुण्यतीर्थ-
मन्तानदोलिन्नविल्लेनिसि संदुट्टु दक्षिणगंगे तुंगम-
- ३४ ड्रानट्टि तन्नटीतट्टोलोप्पुव कक्करगोण्डमंबधिष्ठानदोलुवराराधिपति
चक्रधरं नेलसिदं वीडिनोलु ॥
- ३५ वृ ॥ शककाल गुणलब्धिरंध्रगणनाविद्ययातमागल् विरोधकृदब्दं
वरे चैत्रमागे विपुवत्सक्रान्तियोलु पु-
- ३६ प्यतारके पूर्णांगिरमागे चक्रधरदत्तादेशदि देशपालकचूडामणि
धर्मवत्तलेयनत्युत्साहिदिं

- ३७ माडिठ ॥ क ॥ त्रिभुवनचन्द्रसुनीन्द्ररनमिवांदिमि भक्तिरिदिं
काल्गचिं जगत्प्रभुवनि त्रेसदिं लक्ष्मणविभु
- ३८ कोदं हस्तधारिं शासनम ॥ वृ ॥ परदन्ूर वाददोलगो जिन-
गेहवे पूज्यमैदकरसर कां-
- ३९ के विल्दु वियमुंयलमुवलिदायमाद्रियांगरदरुवत्त पोन्नरुवण
ममकहेनं माडि शासन ।
- ४० वरंयिसि कोदु धर्मगुणम मेरेद नृपमेरु लक्ष्मण ॥ जिननाथा-
वासमं वासवरित्तुनिभम कष्ट-
- ४१ कालेयदुर्मावनेयि चांडालचोल सुदिमि किडिसं विच्छित्तियागि-
दुंरे नेदने नद्योद्वारम शाश्वतमतिशय-
- ४२ मायूतंविन माडि तच्छाम्नमाचद्रार्कतार मिले जिलिसिदनें
धन्यनी लक्ष्मभूप ॥ भरसगं संसेयेन्द-
- ४३ रसर काणिकेयेन्दु दायधर्मद तेरेयेन्दरुवणद्विदग्गलमेन्दरेवीमम-
नक्कि कौदवर् चांडालद ॥
- ४४ स्वस्ति समधिगतपचमहाशब्दमहासामन्त भुजवलोपार्जित-
विजयलक्ष्मीकान्त समस्तारिविजय-
- ४५ दक्षदक्षिणदोर्दण्डं कत्तलेकुलकमलमार्तण्ड मयूरावर्तापुरवराधीश्वरं
ज्वालिनीलवधवरप्रमाद क-
- ४६ पूरवर्षं जिनधर्मनिमल नेरेकटियककार नामादिसमस्तप्रशस्ति-
सहित श्रीमन्महासामन्त ये-
- ४७ ल्वलाधिपति भुजवलकाटरमरु ॥क॥ जगमल्लं टेसेगे कय्मुगि-
गेम कोदरियनोन्दु कागिणियुम-
- ४८ ना गगनदोर्लिपादित्य अगेदुदनिन्तपने वेल्बलादित्यन चोलु ॥
इन्तेनिमिद वेल्बलादित्य मकवर्षं ९९४ ने

- ४९ य परिधाविसवत्सरद पुष्यसुद्ध पंचमि वृहस्पतिवारदद अणि-
गेरेय गंगपेर्माडिय वस-
- ५० द्विय दानमालेगळिलगालव गावरिवाढद तम्म सिवदद मत्तर-
य्वत्तुमन् अण्डिगेरेयोळु क्रयविक्रय-
- ५१ टिं थल्लियाचार्यरु त्रिभुवनचन्द्रपंडितर कालं कर्चि धारापूर्वकं
माडि त्रिट्टु कोदरु ॥
- ५२ स्वस्ति समस्नविनमदमरमकुटतदवन्तिशोणमाणिक्यमौक्तिक-
मयूखकुं कुमलयजाम्यर्चि-
- ५३ तश्रीमद्रहंत्परमेश्वरप्रणीतपरमागमविभारदत्मनवरतपरमागमो -
पदेशप्रसंगरुमप्य श्रीमद्रु-
- ५४ दयचन्द्रसैदान्तदेवर त्रिच्यश्रीपाद्रपञ्चारावकरं श्रीमत्वलात्कारग-
णांशुजमरोवरराजहंरुमप्य श्री-
- ५५ मत्तमकलचंद्रदेवरु श्रीमद्राजधानीवहणमणिगेरेय महास्थानं
श्रीमद्रंगपेर्माडिय वस-
- ५६ त्रिगालव ग्रामाडि वाडदळु याचार्यरु चबुडगाबुडमुख्यबागि
हेगडे महित मूवत्तुमनुष्य-
- ५७ देवपुत्रगे कोद वृत्तिय क्रम ॥ चंदवेय मगं हेगडे मल्लय्यबु
यादिनायस्वामिगेयल्लियाचा-
- ५८ रियगे वेसकेट्टुं व वृत्ति मत्तर (प)न्नेरडु केतगाबुड याचार्यगे पाद-
पूजेयं कोदु
- ५९ तम्म सेनगणद वसडिगे कूलिगोलद सीमेडिट्टु कुलुपल्लडि
पडुवल्लु मत्तरेंदु यरुवणं गद्याणं
- ६० नाल्करिंदधिक कौंडवर् चांडालरु ॥ एम्मेय केति सेडिय साम्यके
मत्तरेंदु मने वौडु भोगवाडगे गद्याणं ना-

- ६१ ल्कु कणविय सेदिय बम्मि सेदिय साम्यक्के मत्तरेट्टु मने वौट्टु
भोगवाडगे गद्याण नात्कु कत्ते-
- ६२ थ दारि सेदिय साम्यक्के मत्तरेट्टु मने वौट्टु भोगवाडगे गद्याण
नात्कु हृत्वेय देवि सेदिय
- ६३ साम्यक्के मत्तरेट्टु मने वौट्टु भोगवाडगे गद्याण नात्कु गोलिय
चवुडि सेदिय साम्यक्के मत्त-
- ६४ रेट्टु मने वौट्टु भोगवाडगे गद्याण नात्कु रुडुलिय लंकि सेदिय
साम्यक्के मत्तरेट्टु मने
- ६५ वौट्टु भोगवाडगे गद्याणं नात्कु कटल मल्लि सेदिय साम्यक्के
मत्तरेट्टु मने वौट्टु भोगवाडगे गद्याण
- ६६ नात्कु मल्लवेय पुन्नरु चण्डि सेदिय साम्यक्के मत्तरेट्टु मने
वौट्टु भोगवाडगे गद्याण नात्कु माध-
- ६७ वसेदिय साम्यक्के मत्तरेट्टु मने वौट्टु भोगवाडगे गद्याणं नात्कु

[इसी तरह ८३वीं पक्ति तक वयसर बोप्पि सेट्टि, नेमिसेट्टि, गोखर
बम्मि सेट्टि, मयिलि सेट्टि, गोखर बोसि सेट्टि, चदि सेट्टि, एम्मेयर चवुडि
सेट्टि, होय्मर चवुडि सेट्टि, केल्लर गोरवि सेट्टि, तालबम्मि सेट्टि, कडवर
देवि सेट्टि, मंचल बोसि सेट्टि, वेणिल मल्लि सेट्टि, वेण्णोय नालि सेट्टि,
दोडुर कैति सेट्टि, मज्जिय येचि सेट्टि, गडि सेट्टि, मुरियर कलि सेट्टि,
वयिसर वसवि सेट्टि, नूति सेट्टि, चिचिक सेट्टि, इनके वारेमें निर्देश है ।]

- ६९ नात्कु चिचिक सेदिय साम्यक्के मत्तरेट्टु मने वौट्टु भोगवाडगे
गद्याण नात्कु यिन्ता देवपुत्रिकरोलगे याव-
- ८४ नोवणु धम्मक्क याचार्यं विरोधियागि राजगामित्व माड्ढिदन-
प्पडे वृत्तिच्छेदसमयवाह्य ॥
- ८५ स्वस्ति समस्तप्रशस्तिसहित श्रीमन्महाप्रधान वसुधैकव्यान्धवं
श्रीरेचिदेवदहनाय वट्ठेके-

- ८६ य श्रीकलिदेवस्वामिजिनश्रीपादाचनेगे कर्पूरकुंकुमश्रीगंधसहित
यष्टविधार्चनेगे
- ८७ कौड केयियरकेरेयिं मूडल्लु मत्तर् पन्नेरहुम याचार्यं देवपुत्रि-
करं सर्वावाधप-
- ८८ रिहारवागि प्रतिपालिपरु ॥ दक्षिण पेयाबोलेयुमप्य आमादिं
वाढक्के श्रीगंगपेर्माडि-
- ८९ य वसदिय पुरद मयादिय घले मूवत्तेडु गोणु हस्त वेगोल्लदंगे
वृत्ति सल्लहु ॥ वधतां जिनशा-
- ९० सनं ॥
- ९१ गंगासागरयमुनासंगमदोल्लु बाणारसि गयेयेम्बी तीर्थगलोल्लात्म-
कुलद्विजपुंगवगोकुलमनलिदरिन्तिदनलि-
- ९२ दरु ॥ स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत् वसुंधरां । षष्ठिवर्षसहस्राणि
विष्टायां जायते कृमि. ॥
- ९३ याचार्यर येह्दटिगनागि वेसकेण्डुव वृत्ति कुरिबर केते
- ९४ न्दु ॥ याचार्यरु चवुड गवुडन हेसरिहुढक्के मूगवाढ रन' "
- ९५ लद् सीमेयल्लु कौड वृत्ति मत्तरु वौडु यदु हॉल्लगेरे ॥

[इस बृहत् शिलालेखके चार भाग हैं । पहले भागमें (पंक्ति १-४३) अण्णिगेरे नगरके गंगपेर्माडि जिनमन्दिरका वर्णन है । यह मन्दिर रेवकनिर्मडिके पति वृत्तुगके स्मरणार्थ वेल्वल प्रदेशके शासक गंगपेर्माडिने बनाया था तथा उसने उसे मूडगेरी, गुम्मुंगोल, इट्टुगे और गावरवाढ ये चार गाँव दान दिये थे । यह दान मूलसघनदिसंघ—बलगार गणके गुणकीर्ति पण्डितको दिया गया था । गुणकीर्तिकी गुरुपरम्परा इस प्रकार थी—गग

१ रेवकनिर्मडि राष्ट्रकूट सम्राट्कृष्ण (तृतीय) की बहन थी जो गग राजा वृत्तुगको ब्याही गयी थी । गंग पेर्माडि इनके पुत्र मारसिंह (तृतीय) (सन् ६६०-७४) अथवा पौत्र राजमल्ल (चतुर्थ) होंगे ।

वशके गुरु वर्धमान - विद्यानन्द स्वामी - उनके गुरुबन्धु तार्किकार्क माणिक्यनन्दि - गुणकीर्ति - विमलचन्द्र - गुणचन्द्र - गण्टविभुक्त - उनके गुरुबन्धु अभयनन्दि । कालान्तरसे चोल राजाने वेल्वल प्रदेशपर आक्रमण किया तब इस मन्दिरको नष्ट-भ्रष्ट किया किन्तु शीघ्र ही डम चोल राजा-को अपने पापका प्रायश्चित्त करना पडा क्योंकि चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्य-मल्ल सोमेश्वर (प्रथम) द्वारा वह युद्धमें मारा गया ।^१ तदनन्तर वेल्वल प्रदेशके कई शासक हुए जिनने इस मन्दिरकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया । चालुक्य सम्राट् भुवनेकमल्ल सोमेश्वर (द्वितीय) के समय वेल्वल तथा पुलिगेरे प्रदेशका शासन महामण्डलेश्वर लक्ष्मरमको सौंपा गया । उसने इस मन्दिरका जीर्णोद्धार किया तथा उसके लिए भुनि त्रिभुवनचन्द्रको समुचित दान दिया ।^२ इस दानकी अनुज्ञा देते समय सम्राट् सोमेश्वर तुंगभद्रा नदीके तीरपर कक्करगोटके सेनाशिविरमे थे तथा शक ९९३ वर्ष चल रहा था ।

इस शिलालेखके दूसरे भागमें वेल्वलके अगले शासक काटरसका उल्लेख है जो भयूरावती नगरका स्वामी था । तथा ज्वालिनी देवीका उपासक था । इसने उपर्युक्त मन्दिरको शक ९९४ में कुछ दान दिया । यह दान भी त्रिभुवनचन्द्रको दिया था ।

तीसरे भागमें इस मन्दिरके व्यवस्थापक उदयचन्द्रके शिष्य सकलचन्द्रका उल्लेख है । इनने मन्दिरकी जमीन जोतनेके लिए मल्लय्य आदि तीस श्रेष्ठियोंको सौंपी थी ।

चौथे भागमें महाप्रधान रेचिदेव - द्वारा बट्टेकरे नगरके जिन तथा कलिदेवकी पूजाके लिए कुछ जमीन दान दिये जानेका उल्लेख है ।

१. यह राजा चोल राजाधिराज होगा । (सन् १०१८-१२)

२. यह युद्ध सन् १०५२ के आरम्भमें हुआ था ।

३. पूर्वोक्त गुरुपरम्परासे त्रिभुवनचन्द्रका सम्बन्ध अगले लेखमें स्पष्ट किया है ।

यह शिलालेख अन्तिम रूपसे मन् ११५० के करीब लिखा गया होगा ।]

[ए० इ० १५ पृ० ३३७]

१५५

अणिगोरि (मंसूर)

शक ९९३-६४ = सन् १०७१-७२, कन्नड

[यह लेख अक्षरग. गावरवाड लेखके पहले दो भागों-जैसा ही है— सिद्ध चार श्लोक इसमें अविक है । यथा— (१) मगलाचरणमें—जगत्-त्रितयनाथाय नमो जन्मप्रमाधिने । नयप्रमाणवागूरक्षिम्ब्रस्तध्वान्ताय शान्तये ॥ (२) महामण्डलेश्वर लक्ष्मरसके वर्णनमें—मले यंतो (दृ) लतुलिदं मलेयोल् मार्लेव मलेपरं मगिसिदं मलेयेळु कोपिर्दुमनलेद जलनिधियोर्ले प्रतापियो लक्ष्म ॥ (३-४) गुणकीर्ति पण्डितकी शिष्य परम्पराके वर्णनमें—कृतकृत्यरभयनन्दिगल तनूजर् सकलचन्द्रसिद्धान्तिकरप्रतिमर् सर्वागमलान्वितगण्डविमुक्तदेवरा मुनिशिष्यर् ॥ एनिसिद गण्डविमुक्तर तनूभवर् चरणकरणपदविद्यापावन मन्त्रवाददो त्रिभुवनचन्द्रमुनीन्द्ररत्ते बुवजनवन्धर् ॥ इससे अभयनन्दि - सकलचन्द्र - गण्डविमुक्त - त्रिभुवनचन्द्र इस परम्परा का पता चलता है । इस लेखमें गावरवाड लेखके अन्तिम दो भाग नहीं हैं । अतः प्रतीत होता है कि यह शक ९९४ में ही खुदवाया गया होगा ।]

[ए० इ० १५ पृ० ३४७]

१५६

हैदराबाद म्युजियम (आन्ध्र)

सं० ११ (२) ८ = सन् १०७२, संस्कृत-नागरी

[इस मूर्तिलेखमें वीतरागकी उपासिका रावदेवी-द्वारा देवागना तथा क्षोणीपतिकी मूर्तियोंकी स्थापना किये जानेका उल्लेख है । समय संबत्

११ (२) ८ है। इसका तीसरा अंक कुछ अस्पष्ट है।]

[रि० इ० ए० १९४६-४७ क्र० १५३]

१५७

लक्ष्मेश्वर (मैसूर)

शक ९९६ — सन् १०७४, कन्नड

[यह लेख चालुक्य सम्राट् भुवनेकमल्लके ममय चैत्र शु० ८, रविवार आनन्द सबत्सर, शक ९९६के दिन लिखा गया था। मणल कुलके महामामन्त जयकेसियरसने पुरिगेरेके पेमाटिवसदिके दर्शन किये तथा मूलसंघ-वला-त्कारगणके गण्डविमुक्त भट्टारकके शिष्य त्रिभुवनचन्द्र पण्डितके निवेदनपर उसे पुरके रूपमें परिवर्तित किया ऐसा इममें उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई० २९ पृ० १६३]

१५८

हनगुन्द (मैसूर)

शक ९९६ = सन् १०७४, कन्नड

[यह लेख चालुक्य सम्राट् भुवनेकमल्लदेव सोमेश्वर (२) के ममय पौष शु० ५, रविवार, शक ९९६, आनन्द सबत्सर, उत्तरायणसंक्रान्तिके अवसरपर लिखा गया था। इममें सूरस्तगण-त्रिप्रकूटान्वयके अरुहणदि-भट्टारकके शिष्य आर्यपण्डितको पोन्नूगुन्दकी अरसर वसटिके लिए कुछ भूमि दान दिये जानेका उल्लेख है। यह दान श्रीकरण देवणय्य नायक, पेगडे नाकिमय्य, पेगडे देवणय्य, करण आय्चप्पय्य, तथा पसायित काटि-मय्यने सर्व प्रधानों-द्वारा की गयी जिन पूजाके अवसरपर दिया था। उस समय बैल्वल तथा पुलिगेरे प्रदेशोपर महामण्डलेश्वर सम्राजगण्ड लक्ष्मरस का शासन चल रहा था।]

[मूल कन्नडमें मुद्रित]

[सा० इ० इ० ११ पृ० १११]

१५६

सोमापुर (धारवाड, मैसूर)

शक ९९६ = सन् १०७४, कन्नड

[यह लेख चालुक्य राजा भुवनेकमल्लके समय शक ९९६), आनन्द संवत्सर, पुष्य शु० ५, बुधवारका है। इसमें किसी सेट्टि-द्वारा एक जैन वसतिको दिये गये दानका उल्लेख है।]

[रि० सा० प० १९३३-३४ क्र० ई० ७७ पृ० १२६]

१६०

लक्ष्मेश्वर (मिरज, मैसूर)

शक ९९९-१००० = सन् १०७७-७८, कन्नड

[इस निपिधिलेखमें सूरस्थ गणके श्रीनन्दि पण्डितदेव तथा उनके बन्धु भास्करनन्दि पण्डितदेवके समाधिमरणका उल्लेख है। पुरिकर नगर (लक्ष्मेश्वर) के आनेसेज्जेवसदिमें इन्होंने सल्लेखना ली थी। मृत्युतिथियाँ क्रमशः आपाढ शु० १२, बुधवार, पिंगल संवत्सर, शक ९९९ तथा चैत्र अमावास्या, रविवार, कालयुक्त सबत्सर, शक १००० इस प्रकार दी है।]

[रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई० ६ पृ० १६१]

१६१

अक्कलकोट (सोलापुर, महाराष्ट्र)

चालुक्यविक्रमवर्ष ४ = सन् १००८, कन्नड

[इस लेखमें एक जैन मठके लिए कुछ उद्यान, भूमि आदिके दानका उल्लेख है। तिथि पुष्य व० २, रविवार, उत्तरायण सक्रान्ति, सिद्धार्थि सबत्सर, चालुक्य विक्रम वर्ष ४ ऐसी दी है। (वस्तुतः उस वर्षका नाम कालयुक्त संवत्सर था।) चालुक्य सम्राट् विक्रमादित्य ६ के समयका यह लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ९६ पृ० ३५]

१६२

कोनकोण्डल (अनन्तपुर, आन्ध्र)

चालुक्यविक्रमवर्ष ६ = सन् १०८०, कन्नड

[यह लेख चालुक्य राजा त्रिभुवनमल्लके राज्यवर्ष ६, पुण्य व० (६) गुरुवार, दुर्मतिसंवत्सरका है। इस समय महामण्डलेद्वर जोयिमय्यरसकी पत्नी नाविकव्वेने कोण्डकुन्देयतीर्थमें चट्टिजिनालयका निर्माण किया तथा उसे कुछ भूमि दान दी थी।]

[रि० सा० ए० १९१५-१६ क्र० ५६५ पृ० ५५]

१६३

अलनावर (धारवाड, मैसूर)

शक १००३ = सन् १०८१, कन्नड

[यह लेख शक १००३ का है। कदम्ब राजा गोवलदेवके समय अलनावरके जैन धसदिके लिए नरसिगय्य सेट्टि द्वारा कुछ दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२५-२६ क्र० ४७० पृ० ७८]

१६४

वनवासि (मैसूर)

सन् १०८१, कन्नड

[यह लेख कदम्बधन्वती वीरमके राज्यवर्ष १२, दुर्मति संवत्सरमें कार्तिक कृ० ५, सोमवारके दिन लिखा गया था। इसमें तिप्पिसेट्टि सातय्य की पत्नी भोगवेके समाधिमरणका उल्लेख है। इनके गुरु देसिगण - पुस्तक-गच्छ - कुण्डकुन्दाव्यके सकलचंद्रमट्टारक थे।]

[रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई० १४३ पृ० १७२]

१६५

लक्ष्मेश्वर (मैसूर)

चालुक्यविक्रमवर्ष ६ = सन् १०८१, कन्नड

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वाढामोघलाञ्छनं(१)जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशामनं ॥१॥
- २ स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परममहारकं सत्याश्रयकुलतिलकं चालुक्या-
- ३ मरणं श्रीमत्त्रिभुवनमहलदेव ॥वृत्त॥ धरेयं वाराशिपर्यन्त-
मनवयदिं दुर्विनीतावनीपालर वेरं क्तिुं नीरोल् गलगलनलेटी-
- ४ डाडि मुञ्चिन्तु चक्रेश्वररार् निष्कंटकं माडिदरने महि निष्कंटकं
माडि चक्रेश्वररत्नं सन्ततं पालिसिद्धनतिबलं विक्रमादित्यदेवं ॥२॥
अन्तु श्रीम-
- ५ त्रिभुवनमहलदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तरामिवृद्धिप्रवर्धमानमा-
चंद्रतारं सलुत्तमिरे ॥ तदनुजं स्वस्ति समस्तभुवनसंस्तूयमान
लो-
- ६ कवित्पातं पल्लवान्वयं श्रीमहीवल्लभ भुवराज राजपरमेश्वरं
वीरमहेश्वरं विक्रमामरणं जयलक्ष्मीरमणं शरणागतरक्षामणि
चालु-
- ७ क्यचूडामणि कद्दन्ननेत्रं क्षत्रियपवित्रं मत्तगजांगराजं सहज-
मनोजं रिपुरायसूरेकारनणनककारं श्रीमत्त्रैलोक्यमल्ल
- ८ वीरनोळं पल्लवपेर्मानडि जयसिंहदेव ॥वृत्त॥ परचक्र-कालचक्रं
नलनदुधनृगाद्यादिभूपालकालोचरितं चालुक्य-चूडामणि
सहजमनोजं नतारा-

- ९ तिभूर्माश्वरसघातोत्तमागामरणमणिगणज्योतिरसंसास्वच्छरणं
सामान्यने भूपरोलपगतविद्विदकद्वय नोलथ ॥ ३ वचन ॥
एनिमिद पोगद्वतंग नेगद्वतंग नल्लेयं-
- १० निसि ॥क॥ अरसुगुणगल मेय्वेत्तिरे पगे मिगद्विरे जनानुराग
पिरिदागिरे कीर्तिलतिके निमिरुत्तिरे धीरनोलयन-वनतारिकद्वय
॥४ व॥ परद्व[भू]नूरुम चनवानंपनिर्छामिरसु-
- ११ म सान्तल्लिगेमासिरसुम ऊदूरू मासिरसुम सुप्रसंक्रयाविनोददिं
प्रतिपालिसुत्तमिरे । तत्पाठपशोपजीवि । समधिगतधंचमहाशब्द
महासामन्ताधिपति महाप्र-
- १२ चण्डदण्डनाथक रिपुमस्तकन्यस्तसायकं साहित्यविद्यांगनाभुजग
सरस्वतीमुत्पकमलभृगनाराधितहरचरणस्मरणपरिणतान्त.करण ।
सरस्वतीकर्णामरणं
- १३ श्रीमन्महाप्रधान मनेवेगंश्च दण्डनाथकनेरंयमथ्य ॥कंठ॥ सकल-
कलाग्रह्य ग्रहकुलाकं वस्मगोत्रगनारुशतकरं किरियने भुवन-
प्रकरद्वोल-
- १४ रिमृत्युभूपनेरेगचमूर्ष ॥ ५ वृ ॥ एलेयोत्तु सादश्यमप्यदरेगविभुगे
विण्पिंगे गुण्पिंगे तिण्पिंगेले पाराधारमिद्राचलमचसुरणि रामनि
कृणानि सचलम—
- १५ श्लिष्टगर्भारसुमगुल्लुयागिल्लुवारथ्ये वेरोद्वेले वेरोन्द्विध वेरोन्द-
निमिपनगमंत्तानुमुंत्पो दवकुं ॥ ६ कठ ॥ परिकिपोडे हस्ति-
मशकान्तरमेनिपुदु तन्न
- १६ गुणद्व नेगद्वदर गुणद्वन्तरमेने गुणेषु को मत्सर एव बुधोक्त एरंग-
विभुगे सदुक्तं ॥ ७ सदमलकीर्तिचल्लरि दिशान्तरमं तेरपिल्ल-
दन्तु पर्विदुदु पराक्रमं

- १७ नमिद्दुद्दु विणपेपमाणवाह्यमादुद्दु चरितं शिखापदमनेय्दु-
दार्पिन सूनु मत्ते पुट्टिदनेनिपन्नुटाय्तेरिगनुन्नतिथं पोगलल्
समर्थरार् ॥ ८
- १८ एनिसिल्ल्दी ख्याति विख्यातिगे सल्लुतिरे मन्तं वस्मन्तं तदीया-
वनिगेबुद्धानि पेत्तुत्तिरे पुल्लिगेरेसूनुत्तं स्वामिसंपत्तिन पेपं ताल्दि
कैकोण्डनुमवि—
- १९ सुत्तमाँदार्थदिं सत्यदिं कर्णजुमं मिक्कुत्सवंपेत्तिरलेरेगचमूर्प
बल्लोद्दिराज्यस्वरूपं ॥ ९ कंद ॥ तदनुजनपरिमित गुणास्पदनेसेदं
शुवनवुंमुकं सुरप—
- २० तिमंपदनतुलमुजवलं परसुदतीप्रकरप्रसूनवाणं द्रोणं ॥१०॥
कलितनदोल् कुल्लुलसंकुलमथनन तम्मननुपमानाकृतियोल्
बल्लदेवन तम्मं भुजवल—
- २१ दोल् यमसुतन तम्मनेरेगन तम्म ॥ ११ ॥ पुरेगनडिमोदलो-
लरिनुपररेगिद्रोडदनरियेनेरगदिरल्लेवोदागेरगिसुगुं गृध्रादि गलेरे-
गल् पतिकार्यं—
- २२ मरधुरीणं द्रोणं ॥ १२ वृत्त ॥ केणमुदारदोल् कोरटे सज्जन-
वृत्तियोलेगु शीलद्रोल् काणले वारदेद्रोडे पेरेर् समनप्परे मार्त्य-
लोकद्रोल् द्रोणनो
- २३ लंगनाकुसुमवाणनोलिष्टविशिष्टसकुलत्राणनोल् अज्जसंभव-
समानसमस्तकलाप्रवीणनोल् ॥ १३ परमाप्तस्वामीदेव्यं पशुपति
जितविट्टिकदंवं नोलवं
- २४ पोरेदाल्लं तदे शुंमत्तरगुणगणदिं मिक्क तिक्कं विभास्वच्चरिता-
लंकारे कल्लविके जननि तद्वीयाप्रजं वण्डनाथोत्तररत्नं रुद्धिवे-
त्तिल्लेरेकपनेने द्रोणं जसविककंदा-

- २५ ण ॥१४ (ई) कलिकालदोल् विषमकालदोल् उब्बवेथायतु धर्म-
रत्नाकरनेविर्निं पल्लु कालदिनीक्षिसकादुदितु कोल्पोकुमे धर्म-
मेन्दोसेदु तन्नन कौतुकमागे मं-
- २६ दिनीलोकमशेषमोदे कोरलोल् पोगलल् पडिचदमप्पिनं ॥१५
कमनीयक्रमविक्रमाब्दततिषट्क हुमंतिप्राब्द पुष्यमशुक्ल
भृगुषष्टियोप्पलवरोल् कूडल्ल
- २७ व्यतीपातमेय महायोगमुमुत्तरायणमहासक्रान्तिशुं मानवी-
त्तमनन्दुब्बलकीर्ति दोणलुरुधर्मत्राणलुत्साहदि ॥१६ कंठ ॥ परम-
जिनसमयरत्ना-
- २८ करहिमकरमूलसघसंभवशोभाकरसेनगणनम स्थल- सरसिजवान्ध-
वर सितयशःश्रीधवर ॥१७ वरमुनिपर विनतक्षितिपर निरवधर
नरेद्रसेन-
- २९ त्रैविधर पादप्रक्षालनपुर सर दिव्यपुरदोली पुरिकरदोल् ॥१८
चाद्रं कातंत्रं जैनंद्रं शब्दानुशासनं पाणिनि मसैद्रं नरेद्रसेनमु-
- ३० नीद्रगेकाक्षरं पेरंगिबु मोग्गे ॥१९ अवरप्रशिष्यं ॥ निनगेनेवेनो
शाकटायनमुनीशं ताने शब्दानुशासनदोल् पाणिनि पाणिनीय-
दोल् चाद्रं चाद्रदोल् तज्जिनेद्रं-
- ३१ ने जैनेद्रदोला कुमारने गहं कातत्रदोल् पोल्परन्तेने पोल्
नयसेनपण्डितरोलन्धर् वाधिंवीतोविंयोल् ॥२० सरसतिय
मनोमुदडे ताल्दिदनेन्नवज्जेगेय्दना निरेनवलिके चि-
- ३२ सबतियोल् पुहुवाल्लुहु कष्टमंहु निप्पुरवचनंगलं लुडिदु
दिकररिय परिदेरि कीर्ति तां पुहुडिसि दूरिपल् वरतपोनिधिय
नयसेनसूरिय ॥२१ अवरप्रशिष्यर् ॥ नतभू-
- ३३ पेंद्रकिरीटताहितपदाभोजद्वयं नूतनप्रतिमाभारवि नारहार-

हरहासाकाशनीहारविश्रुतकीर्तिप्रमदाननाव्जमुकुरं हा वाप्यु
सामान्यमे श्रुतवाराशि नरेंद्र-

३४ सेनमुनिपं त्रैविद्यचक्रेश्वरं ॥२२ जितविद्विष्टप्रतापान्वितदिनधिक-
शौर्यंत्वदाटोपदिदूर्जितमास्वजैनधर्मापितदृढमतिर्यि विप्रवंशां-
वराहपतियैवौदुत्तवतेजस्तवदिननु-

३५ लबलेश्वर्यदिं त्यागदौदुत्ततिर्यिदं सत्यदिदं दिनकरनतिशोभाकरं
पुण्यपुंज ॥२३ दिनकरनोदयदोल् तममनितुं तूल्दोद्भवन्ते
मिथ्यात्वत्तमं दिनकरनुदयिसे निजकुल-

३६ वनदि तूल्दोदि किहुवुदें विस्मयमे ॥२४ आतन तनयर्
जनविरयात् जिनपदपयोजभृंगर् विनयान्वितरने नेगस्रर-
स्त्रिलक्ष्मातलदोल् राजिमय्यनुं दूढमनु ॥२५ वृत्त॥

३७ जिनपावांमोजभृंगं सुजनजनमनोरजन विश्वधात्रांविनुतं दिग्द-
न्तिदन्ताश्रितविशदयशोभासि शिष्टेष्टकल्पावनिजं सत्यान्नदाना-
धिकनेनुते मनोरागादिं कूर्मु विद्वज्जनमे-

३८ ल्लं वणिणकु राजननमललसत्तेजन निच्चनिच्च ॥ २६ मनुमुनि-
मार्गनेम जिनपूजेयोर्तिगनेदु दानियेदनुपमतेजनेदु शुचियेदु
दयापरनेदु निच्चल्लं मनमो(से)-

३९ दक्करिं विडदे वणिणसुगुं जगमेय्दे कूडे राजननिनतेजनं पसुगे
गोजननाश्रितकल्पभूजन ॥ २७ तत्प्रियानुजन शौर्यंदलवं
पेत्वडे ॥ कहुपिन्द

४० घरणाञ्ज्वर वेममे चौरासीग्नं वन्दिथं पिडिदं साहसदिन्दमं
मुगेयनिन्दोर्वाग्नं कोपदि पिडिदुळा संरयिट्ट सोमननत्याश्चर्यदिं
चन्दिथं पिडि

४१ दं तानेने शौर्यदोन्दलवदे सामान्यमे दूडन ॥ २८ निजपतिथं

सेरेविडिडोडे भुजवल्दि वन्दिविडिडु विडिसिदनेन्दी त्रिजग
धणिसुगु सद्दिजकुलन शौर्य-

४२ शाखिय दूडमन ॥ २९ इन्तेनिमिड दूडन वरकान्ते मनोभवन
कान्तेग रूपिनोलत्यन्त मिगिलेने पोगलल्केन्तु नेरेयरियर्
पुचिकब्बेय रूप ॥ ३० अन्तवरगें पुट्टिदल् सुरका-

४३ न्तोपमं विचकदलिकुलालकं विलसन्मान्तनसमेते बुधजनचिन्ता-
मणि हम्मिकब्बे छलनारत्न ॥ ३१ आ नेगल्ड हम्मिकब्बेगनूल-
प्रियवल्डम मनोभवरूप दानदेडे-

४४ गन्दिना कानीनन धोल् नेगल्डनरसिमय्य जगटोल् ॥ ३२
अनुपमदानशीलगुणभूषणभूषितेयाद हम्मिकावनितेगमत्युदार-
हरसय्यमहाविभुग चिनी-

४५ तनोल्पिन कणि वैद्यशास्त्रकुशल सुजनाप्रणि वैद्यकज्ञपं सनय-
नेनल्के नोन्तनेन कन्नन वोल् कृतपुण्यनावनो ॥ ३३ जिनपद-
पकजभ्रमरनिन्दपनुद्धगुणाब्धिथीइवरं वि-

४६ नयविलासि राजि सुजन कलिदेवनगण्यपुण्यवर्धनकरनादिनाथ-
नधिक शुचि शान्ति नेगर्तेवेत्त पार्श्वनुमिधरात्मजातरेने कन्नन
वोल् कृतपुण्यनावनो ॥ ३४

[यह लेख चालुक्य सम्राट् विक्रमादित्य (षष्ठ) त्रिभुवनमल्लके छठवें
वर्षमें अर्थात् सन् १०८१ में लिखा गया था। उस समय बेल्वोल, पुलिगेरे,
वनवामि, सान्तलिगे, तथा कण्डूर प्रदेशोपर सम्राट्के पुत्र जयसिंह शासन
कर रहे थे। इन्हें त्रैलोक्यमल्ल, वीरनोलम्ब, पल्लवपेर्मानिडि ये उपाधियाँ
दी हैं। इनके अधीन महासामन्त एरेमय्य पुलिगेरे प्रदेशका अधिकारी
था। इसे एरेग या एरेकप भी कहा है। इसका बन्धु दोण था जिसकी
लेखमें बहुत प्रशंसा की है। इमने मूलसध-सेनगणके नरेन्द्रसेनके प्रशिष्य

तथा नयसेनके शिष्य नरेन्द्रनेन (द्वितीय) को पाँप कृष्ण ६, शुक्रवार, उत्तरायणमंक्रान्तिके अवसरपर कुछ दान दिया । इसके बाद लेखमें दिनकर, उसके पुत्र राजिमय्य तथा दूडम, दूडमकी पत्नी एचिकञ्चे तथा पुत्री हम्मिकञ्चे, हम्मिकञ्चेका पति भरमय्य तथा पुत्र वैद्य कन्नप एव कन्नपके पुत्र इन्दप, ईश्वर, गजि, कलिदेव, आदिनाथ, शान्ति, एव पार्विका दर्शन है । मभवन. इन लोगोंकी प्रार्थनापर दोषने उक्त दान दिया था ।]

[ए० इ० १६ पृ० ५८]

१६६

अरसीवीडि (विजापुर, मैसूर)

चालुक्यविक्रम वर्ष १० = मन् १०८५, कन्नड

[इस लेखकी तिथि आपाढ शु० १, बुधवार, शोबन नवत्सर, चालुक्य वर्ष १० ऐमी है । इस समय मुकवेर्गडे मन्तर बर्मणने विक्रमपुर (वर्तमान अरसीवीडि) स्थित गौणद वेडगि जिनालयके ऋषि-अजिकाओंको आहारदान देनेके लिए कुछ करोका उत्पन्न दान दिया था । मिन्द वंशके सिन्दरमके पुत्र बर्मदेवरसके अधीन प्रान्तीय शासकके रूपमें मुंकवेर्गडे नियुक्त था ।]

[मूल लेख कन्नडमें मुद्रित]

[ना० इ० इ० ११ पृ० २३९]

१६७

मरुत्तुचक्कुडि (तंजौर, मद्रास)

तमिल, सन् १०८६

[यह लेख ऐरावतेश्वर मन्दिरके आगे मण्डपकी दक्षिणी दीवालपर है । त्रिमूवनचक्रवर्ति कुलोत्तुंग चोलदेव, जिसने मद्रुरा जीतकर पाण्ड्य

राजाका शिरच्छेद किया था—के १६वें वर्षमें यह लेख लिखा गया था । इसमें जननाथपुरम्के दो जैन मन्दिर खेदिकुलमाणिक्यक पेरुम्बल्लि तथा गगलसुदर पेरुम्बल्लिका उल्लेख हैं ।]

[इ० म० तजोर १००३]

१६८

दोणि (धारवाड, मैसूर)

चालुक्यविक्रम वर्ष २० = सन् १०९६, कन्नड

[यह लेख फाल्गुन शु० १३ गुरुवार, चालुक्यविक्रम वर्ष २० के दिन लिखा गया था । सम्राट् त्रिभुवनमल्ल (विक्रमादित्य पष्ठ) के राज्यका यह लेख है । इस समय यापनीय सघ-वृक्षमूल गणके मुनिचन्द्र त्रैविद्य भट्टारकके शिष्य चारुकीर्ति पण्डितको सोविसेट्टि द्वारा एक उद्यान दान दिया गया था ।]

[मूल लेख कन्नडमें मुद्रित]

[सा० इ० इ० ११ पृ० १६९]

१६९-१७०

तुम्बदेवनहल्लि (मैसूर)

चालुक्यविक्रम वर्ष २१ = सन् १०९६, कन्नड

- १ श्रीमदेरेयंगदेवर असन्नवर(सि)माडिसिद बसडि मंगल महा श्री
- २ स्वस्ति समस्तसुरासुरमस्तकगणिकुटरदिभरजितधरणप्रस्तुत-
जिनेन्द्रशासन-
- ३ मस्तु चिर सकलमन्यचन्द्रजनाना ॥ (१) भद्रमस्तु जिनशासनाय
समन्नतां प्रति-
- ४ विधानहेतवे अन्यवादिमदहस्तिमस्तकस्फाटनाथ घटने पटी-
यसे ॥ (२)

- ५ जयवर्म सुदन्दिन्टं इक्षु नितयं पट्टलितेय राज्यलीलेयिनाल्-
दुज्जतिर्यि मनं-
- ६ गोलिसि विद्विष्टजक्केय्दं मीतियनित्तायमनप्युक्केय्दु च्चलमं
कैकौण्डु लोकप्रमि-
- ७ द्वियुतं माद्विदनावगन् निले क्कम्बाम्नायविरयातिय ॥३॥
श्रीमत्कदम्बवंशललामा-
- ८ वनिनाथरोलगे रणकिक्षितिप मीमपराक्रमनेनिसिदनी महियाल्
अरातिनृपजयोद-
- ९ यद्विद ॥४॥ आतन मगनमलगुणोपेतनतिप्रवलजलद्वचनपवन-
नेनिप्यानतय-
- १० शोविलासविनूततेगेडेयागि नेगल्ड कलि ह्दुवचूप ॥५॥ तत्त-
नेयनतुलवलनुद्वितरिपु-
- ११ क्षितिपक्कधरवज्रं धीरोदातनेनं नेगल्दनकुटिलचित्त पोचायिनूत-
पूरं वृत्त ॥६॥
- १२ आतंगे पुट्टि दलवदरानिमर्हाभुजरनिरिदु गेल्डमिनोळुवीतलमे
पोगळे तोरिदनाम-
- १३ तमितक्रीतिं नोमलकण्णं चिण्ण ॥७॥ पुने नेगल्ड चिण्णनृपतिगं
अनवद्यलतांगि सुगियद्वरसिग-
- १४ सुर्विनदोमगे पुट्टे पुट्टिद तनेयननिप्रकटविशदयगनेरेंयग अक्कर
नेगल्ड नृ-
- १५ परत्तनाल्वरनेवेंट्टे मीतियि वन्दु पोगळे तन्ननवर पट्टियोडेयनं
पेरगिक्कि काट्टुनिन्डाल्वरनं वगेंयट्ट-
- १६ आन्तरिसेनेयनोद्विमि गेल्डमिनेसकविं सिन्धुजंगं मिगिल्लुद्व-
वलावलेपनं भुजादण्डनी नन्निमातण्डरेव ॥८॥
- १७ मलेट्टिट्टिरनान्त चोलिकदलमत्तदोढान्नुमदिरदरेयंगन दोर्वल-
दलवनेचोगल्लुदो जक्कलद्वचननेय्दं

- १८ काहुकलिपिठ चक्षुस ॥ (९) अन्तु नेगलदेरेगनूपतिगनन्तसुत्तास्य-
द्वेयेनिष्प येचात्रिकेग वन्तुवेनिष्प
- १९ चिष्णं कान्त पुट्टिदनुदारतंजोनिलय ॥ (१०) पुट्टलोड निम्नये
पेसरिट्टपरी जगढ मनुजरन्टोडे पेसरों-
- २० दिट्टळमादडे कोल्लु पट्टुल्लिगेय चिष्णनेम्भ मयरसद्धिद ॥ (११)
आतने बुद्धिद विख्यातित्तित्तित्तकीर्-
- २१ त्तं नेगल्ल गण्हतरण्ह भूतलकं कल्पवृक्षसमोपेतनेनिष्प दानि
येरेगमहीश ॥ (१२)
- २१ स्वस्ति समधिगतपचमहाशब्द महामण्डलेश्वरं वनवासिपुर-
वराधीश्वरं कादम्ब-
- २३ चक्रेश्वर जुदारमदेश्वर नुमयवल्लगण्हं नञ्जिमातंढ तनगिल्लदीव
कर्गसहादे-
- २४ व मानिनोमनोहर हरचरणदोखरं हरिपादसरसीरुहोर्चस
सरस्वतीक-
- २५ णावत्तसं विकलकुलनूपतिहृदयसंतापकरं विवेकविद्याधरं शृगुमदा-
- २६ चार्य मन्दरधेयं कादम्बकुलकमलविकाशनादित्तं धिजातिराजता-
रागणतरुणादि-
- २७ त्तं विक्रमप्रक्रमकिन्नोरकण्ठीरवं कादम्बकण्ठीरवं मागधिकमा-
निनीमदहरिधपु-
- २८ लक लाटवपूटीमाललीलात्तिलकं विरुदन्निनेत्रं ह्यशाखिहोत्रं वृगिहृ-
- २९ सिद्धव विरुदरपेण्हिरगण्ह गण्हतरण्ह अरिविरुदरवायोले सुरि-
नेयं किरिपु
- ३० व ढोहुकवडिव गीतप्रगीतं गेयविनोदं निजकुलोत्तुंग श्रीमदेरे-
यगडे-
- ३१ च स्थिरं जीयाद् ॥ कन्द ॥ गंगेगढल्लगल नोरेणं त्तिंगल बेल्-
पिंगमोदवल्लडकिल्लेल्पिं

- ३२ संगलिसि तीविदत्तेर्यंगन जसमखिलमुवनांतरदोलु । नटनिट-
लेक्षणा-
- ३३ गिन नृगणंगणं उज्वलकीर्तिपाण्डुरभू कुरुलु जडेयागे जगक्के
- ३४ देवनाडरिविरुडत्रिनंत्रनेमगी ' कोण्डकुन्दान्वयो-
- ३५ त्पन्ने विरन्याते देसिगे गणे रविचन्द्राप्यसै' यमनियम-
- ३६ स्त्राध्यायपराणेयरप्प माचवेगान्तिथ तावरेयकेरेय केलग-
- ३७ ण आहणमण्णं धारापूर्वकं कोट्टर् चालुक्यविक्रमकालद २१ने
धातुसवत्सरद कार्तिक न-
- ३८ न्दीश्वरदष्टमियन्हु मंगलमहाश्रीं स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरंत
वसुन्धरां षष्ठिवर्ष-
- ३९ सहस्राणि विष्टायां जायते क्रिमि ॥

[यह लेख स्थानीय जिनमन्दिरके निर्माणके समयका है । यह वसदि
एरेयंगदेवकी रानी असवम्बरसि द्वारा बनवायी गयी थी । लेखमें एरेयगका
वंशवर्णन इस प्रकार दिया है—ऋदम्ब कुलमे रणकि राजा—तत्पुत्र हृदुव-
तत्पुत्र वृत्त—तत्पुत्र चिण्ण—तत्पुत्र एरेयंग—तत्पुत्र चिण्ण २—तत्पुत्र एरेयग २ ।
इस मन्दिरके लिए कोण्डकुन्दान्वय-देसिग गणके रविचन्द्र सै (द्वान्तदेव)के
उपदेशसे माचवेगन्ति द्वारा कुछ भूमि दान दी गयी थी । लेखकी तिथि
कार्तिककी नन्दीश्वर-अष्टमी (शुक्ल ८), चालुक्य विक्रम वर्ष २१, धातु
संवत्सर इस प्रकार दी है ।

इसी मन्दिरकी एक प्रतिमाके पादपीठपर ११वीं सदीकी लिपिमें
निम्न वाक्य खुदा है—

वस(दिगे) वासवुरदे विदृ ग २ भत्त ५०

अर्थात्—इस वसदिके लिए वासवुर ग्रामके उत्पन्नसे २ गद्याण
(मुद्राएँ) और ५० भत्त (चावलके परिमाण) दान दिये गये हैं ।]

[ए० रि० मै० १९३९ पृ० १४५-१५२]

१७१

हनुगुन्द (विजापूर, मैसूर)

कन्नड, ११वीं सदी उत्तरार्ध

[इस लेखमें चालुक्य सम्राट् त्रिभुवनमल्लदेव (विक्रमादित्य पष्ठ) का उल्लेख है। तिथि शक ९ दी है। मूलसंघ-देशीय गण-पुस्तक गच्छ-कुन्दकुन्दान्वयके (इन्द्र)णदिके शिष्य बाहुबलि आचार्य द्वारा एक जिन-मन्दिर बनवानेका तथा उस मन्दिरके लिए कुछ भूमिदान प्राप्त करनेका इसमें उल्लेख है।]

[मूल लेख कन्नडमें मुद्रित]

[सा० इ० इ० ११ पृ० १४१]

१७२

तोत्तल्लु (मैसूर)

कन्नड, ११वीं सदी उत्तरार्ध

- १ स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वर " त्रिभुवनमल्ल तलका-
- २ कर्माडि विट्टेन्दु ३ नडसुविरि
- ३-७ (ये पक्तिर्यो विस गयी हैं)
- ८ स्वस्तिश्रीमत्तु तोत्तल्ल वसडिगोनाडु . ९ " .
- १० हिरिय सुद गनुण्ड . गनुण्ड विलग
- ११ कु'ड वृत्तवनड " वृण्ड वूरुवर् ओक्कळ
- १२ "उत्तराण संक्रान्ति'एन्दु नविल्ल-
- १३ इं नेमिचन्द्रपण्डितगो धारापूर्वकं माडि कोट्टर आ-
- १४ नविल्लोळगे आवनागि-बदुकुववनु "हण
- १५ वेन्दु हिल्लिसिद्धव"हन्नोन्दु
- १६ तलेयं नरकडल्लिलिवरु गगोयतडियलि कविल्ले-

- १७ यं ब्राह्मणर नोय्सिठ फलमन् प्पुट्टुवरु
 १८ स्वदत्ता परदत्तां वा यो हरेत वसुन्धरां प-
 १९ छिर्वर्षसहस्राणि त्रिष्टायां जायते क्रिमि. ॥

[इस लेखमें तोललके जिनमन्दिरके लिए नेमिचन्द्र पण्डितको नविलूर ग्राम दान दिये जानेका उल्लेख है । यह दान हिरियमुद्दुगौण्ड, विलिगौण्ड तथा अन्य ५२ निवासियो द्वारा दिया गया था । लेखमें प्रारम्भमें त्रिभुवन-मल्ल (विक्रमादित्य पण्ड)के किसी माण्डलिकका उल्लेख है ।]

[ए० रि० मै० १९२७ पृ० ४४]

१७३

तिरुनिडकोण्डै (मद्रास)

तमिल, ११वीं सदी उत्तरार्ध

[इस लेखके प्रारम्भमें कुलोत्तुंग चोल (प्रथम)को ऐतिहासिक प्रशस्ति है । राजेन्द्रशोलचेदिराजन् द्वारा देवमन्दिरमें दीपके लिए कुछ धान अर्पण किये जानेका इसमें उल्लेख है । उडैयार् मल्लिपेणका उल्लेख है जो स्पष्टतः कोई जैन आचार्य थे । लेख चन्द्रनाथ मन्दिरके मुख्य द्वारके पास खुदा है ।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३०१ पृ० ६५]

१७४

ऊन (मध्यप्रदेश)

११वीं सदी, संस्कृत-नागरी

[इस स्थानमें कई जैन मन्दिरोंके ध्वस्त अवशेष हैं । इनमें एक मन्दिरके एक छोटे-से लेखमें मालवराज उदयादित्यका उल्लेख है । अत यह मन्दिर ११वीं सदीका बना है यह स्पष्ट होता है ।]

[रि० आ० स० १९१८-१९ पृ० १७]

१७५

सागरकट्टे (मैसूर)

११वीं सदी, कन्नड

१ श्रीमद्राविलस	२ घट्ट आरुंगला-
३ न्वयट नन्दिगण	४ ट शान्तिमु-
५ निगल शिष्यसन्त-	६ ति श्रीवाटिरा-
७ जट्टेवर शिष्यरु	८ श्रीवर्धमानदे-
९ वरु हाय्सल-	१० कारालियटलु
११ अग्रगण्यरु स-	१२ न्यसनदि मुदि(पि)
१३ दरवर सध-	१४ मरु कमलदे-
१५ वरु निसिधियं	१६ निरिसिडरु

[इस लेखमें द्राविल सध—अरुगल अन्वय—नन्दिगणके शान्तिमुनिकी परम्पराके वादिराजदेवके शिष्य वर्धमानदेवके समाविमरणका उल्लेख किया है । वर्धमानदेवके गुरुवन्धु कमलदेवने उनकी यह निसिधि स्थापित की थी । वर्धमानदेवकी होयसल राज्यमें प्रमुख कार्यकर्ताका स्थान प्राप्त था । लेखकी लिपि ११वी सदी की है ।]

[ए० रि० मै० १९२९ पृ० १०८]

१७६

वेणगि (जि० वेलगाव, मैसूर)

११वीं सदी, कन्नड

[इस लेखकी लिपि ११वीं सदीकी है । लेखके समय (रट्ट वंशके) कार्तवीर्य (द्वितीय) का शासन कूण्डि ३००० प्रदेश पर था । इसे जिनेन्द्रपादसरोजभू ग तथा सेननसिग कहा है ।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ ई० क्र० ८४ पृ० २४७]

१७७-१७८

चिक्कहनसोगे (मैसूर)

कन्नड, ११वीं सदी

[यह लेख आदिनाथमूर्तिके पादपीठपर है । इसमें हनसोगेके तीर्थ-वसदिकी स्थापना रामचन्द्र-द्वारा की जानेका तथा कालान्तरमें शक, नल, विक्रमादित्य, गंग एवं चंगाल्व राजाओं-द्वारा उसकी सहायताका उल्लेख है । प्रस्तुत लेखके समय नागचन्द्रदेवके शिष्य समयाभरण भानुकीर्ति पण्डितदेवने इस वसदिका जीर्णोद्धार किया था । इसी पादपीठके दूसरे लेखमें जयकीर्ति भट्टारकके शिष्य बाहुबलिदेव-द्वारा वसदिके निर्माणका उल्लेख है । इन लेखोंका समय ११वीं सदी प्रतीत होता है । ये आचार्य मूलसप्त देसिगण-पुस्तकगच्छके प्रमुख थे ।]

[ए० रि० मै० १९१३ पृ० ५०]

१७६

चिकमगलूर (मैसूर)

कन्नड, ११वीं सदी

- १ स्वस्ति श्रीमतु वृचव्वे-
- २ गन्तियर सिष्य नेचटिम-
- ३ ताय निसिधिगेय नि-
- ४ लि . मज वरेद ॥

[यह निषिधि लेख वृचव्वेके समाधिभरणका स्मारक है जो उनके शिष्य नेचतिमतायि-द्वारा स्थापित किया गया था । इसकी लिपि ११वीं सदीकी प्रतीत होती है ।]

[ए० रि० मै० १९३२ पृ० १६२]

१८०

कोष्पल (रायचूर, मैसूर)

कन्नड, ११वीं सदी

[यह लेख ११वीं सदीकी लिपिमें है । इसमें कोण्डकुन्द मन्वयके मलघारिदेव तथा अन्य आचार्योंका वर्णन है । एक गृहस्थ जैनका भी वर्णन है ।]

[रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० १९८ पृ० ३७]

१८१

मदचित्तगाम् (वेल्लारी, मैसूर)

कन्नड, ११वीं सदी

[यह लेख ११वीं सदीकी लिपिमें है । किसी जैन मन्दिरके लिए दानशाला, उद्यान आदिकी व्यवस्थाका इसमें उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९२४-२५ क्र० ३९२ पृ० ५७]

१८२

वेल्लूर (हासन, मैसूर)

११वीं सदी, कन्नड

- १ युतं जिनेन्द्रप्रगुणि-
- २ द वर्षं...सले भहे-
- ३ ..
- ४ नेयुद्विच नं .
- ५ पूर्वोक्तमन् पस्वं माणद ..थ
- ६ महीसलकति मुददि ...
- ७ बिलोक बुध बोध ..मात्य...

- ८ न्नं द्विविजविभवमं मन्द नामावि वम्मं ॥ पतिहितवृत्तियो-
 ९ लिबन् अप्रतिमन् एतल् द्विविज पद्मं महीपनियोडने
 १० कृडि पोक्कं चनुरं मायावि वम्मंन' 'आ नेगल्ड भूमि-
 ११ य मुन्नाल्दगं मले ' काक्षियं माध्य देनेताल्डनोडने सगम-
 १२ न् आल्ड' व्यन्दु वम्मं'

[इस लेखमें मानावि वम्मं नामक व्यक्तिके देहत्यागका वर्णन है । अपने स्वामीकी मृत्युपर खेद व्यक्त करनेके लिए उसने सम्भवत देहत्याग किया था । यह प्रथा हीयमल राजाओंके समय रूढ थी । लेखकी लिपि ११वीं सदीकी प्रतीत होती है ।]

[ए० रि० मै० १९४३ पृ० ५९]

१८३

हृदय (मैसूर)

१२वीं सदी-प्रारम्भ, कन्नड

[इस लेखमें हीयमल राजा बल्लाल १के समय मरियाने वण्डनायक द्वारा एक जिनमूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है । आचार्य शुभचन्द्रका भी इसमें उल्लेख है ।]

[ए० रि० मै० १९१८ पृ० ४५]

१८४

चिकमगलूर (मैसूर)

शक १०२० = मन् ११०१, कन्नड

- १ सञ्चन सक्कवर्ष १०२० नेय
- २ विक्रमसंवत्सरद् फाल्गुन शु (४)
- ३ सोमवारद्दु द-चित

- ४ सनंगेडहु दिवक्के सुन्दरव(र)सद
 ५ मिं मालेयन्नेगन्तियप्परो "वि(ने)
 ६ यमं माद्धि निसिदिगेय माद्धि
 ७ अवर गुड्डु जगमणचारि व-
 ८ रेंद

[यह लेख फाल्गुन शु० ४, सोमवार, शक १०२२ विक्रमशतवत्सरमें लिखा गया था । एक व्यक्तिके (जिसका नाम लुप्त हुआ है) समाधि-मरणके बाद उसके सहाध्यायी मालेयन्नेगन्ति-द्वारा इस निषिधिकी स्थापना का इसमें उल्लेख है । उसके शिष्य जगमणचारिने यह लेख उत्कीर्ण किया था ।]

[ए० रि० मै० १९३२ पृ० १६१]

१८५

टोंक (राजस्थान)

सवत् ११५८ = सन् ११०२, सस्कृत-नागरी

[इस मूर्तिलेखमें आलाक नामक व्यक्तिका उल्लेख है । तिथि वै (श्राव) शु० ७, सवत् ११५८ ऐसी दी है ।]

[रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ४७७ पृ० ६९]

१८६

ह्यौर (जि० वेलगाँव, मैसूर)

शक १०३० = सन् ११०८, कन्नड

[इस लेखकी तिथि सोमवार, पीय शु० ५, शक १०३०, सर्वधारि सवत्सर, उत्तरायण सक्रान्ति ऐसी है । (रट्ट वंशके) लक्ष्मीदेव-द्वारा एक बसदिके लिए राजधानी बेणुपुरसे कुछ जमीन दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है । यह बसदि लक्ष्मीदेवने ही बनवायी थी ।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ ई० क्र० १५ पृ० २४१]

१८७

मुडिगोण्डम् (मैसूर)

शक १०३ (१) = सन् ११०९, कन्नड

[इस लेखमें मुडिगोण्डचोलपुरके नगरजिनालयको हृदिनाडुका एक गांव दान दिये जानेका उल्लेख है । यहाँकी मुख्य मूर्ति चन्द्रप्रभम्बामीकी थी । तिथि शक १०३ (१)]

[रि० सा० ए० १९१० क्र० १० पृ० ५४]

१८८

श्रवणनहल्लि (मैसूर)

१२वीं सदी-पूर्वार्ध, कन्नड

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादाभोधलांछ-
- २ नं जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासन स्वस्ति
- ३ श्रीमन्महामण्डलेदेवर त्रिभुवनमल्ल तल-
- ४ काडुगोण्ड मुजवलवीरगंग विष्णुवर्धन होय्म-
- ५ लदेवर पिरियरसि चन्तलदेवियरु त्रिभुवनतिल-
- ६ 'तीर्थं वीरकौंगाल्वजिनालय-
- ७ ट देवर अगभोगक्कं रिपियराहारटानक्कं त-
- ८ म्म वप्प पृथ्वीकौंगाल्व देवर वग वलिवलि वि-
- ९ ट्ट मन्दगोरेय श्रतियोलगे कावनहल्लिय तम्म
- १० तम्म दुडमल्लदेवनु तावुं इल्लु श्रीमूलमघ
- ११ देमिगगण पुस्नकगच्छ कोण्डकुन्टान्वयट श्रीमेघ-
- १२ चन्द्रत्रैविद्यदेवर त्रिप्यरु प्रमाचन्द्रसिद्धा (न्तदेव-)
- १३ र कालं कर्चि धारापूर्वकं माडि स(र्ववाधा-)
- १४ परिहारं माडि विट्ट दत्ति सं(गल महा-

१५ श्री ॥ इदन् भावन् भोर्वं प्रतिपालिसिद्ध

१६ (क) विलेय कोड्डु कोळगम

१७ गतोय

[इस लेखमें हीयसल राजा विष्णुवर्धनकी रानी चन्तलदेवी-द्वारा तथा उसके वन्धु दुद्धमल्ल-द्वारा वीरकोगाल्व जिनालयके लिए कावनहल्लि ग्राम दान दिये जानेका उल्लेख है । यह दान मूलसघ-देसिगणके मेघचन्द्र-त्रैविद्यदेवके गिष्य प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेवको दिया गया था ।]

[ए० रि० मै० १९२७ पृ० १०३]

१८६

अंकनाथपुर (मैसूर)

१२वीं सदी-पूर्वार्ध, कन्नड

[इस लेखमें एक जिनमन्दिरके जीर्णोद्धारके लिए राजा दुद्धमल्ल-द्वारा हेण्णेगडग नगरसे अय्यवल्लि ग्रामके दानका उल्लेख है । यह दान प्रभा-चन्द्रदेवको दिया गया था । लिपि ११वीं सदीकी है ।]

[ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३३]

१६०

कण्णूर (मैसूर)

चालुक्यवर्ष ३७ = सन् १११२, कन्नड

[चालुक्यसम्राट् विक्रमादित्य (पण्ड) के समय चालुक्यविक्रम वर्ष ३७ (सन् १११२) में कालिदासदण्डनाथ-द्वारा कन्नवुरीके पार्श्वनाथ-वसतिके लिए कुछ भूमि दान दिये जानेका इस लेखमें निर्देश है । मूलसघ-देशिगण-पुस्तकगच्छके आचार्य वर्धमानमुनिके, प्रशिष्य तथा बालचन्द्रव्रतीके शिष्य अर्हणन्दिवेष्टुदेवको यह दान दिया गया था ।]

[रि० आ० स० १९३०-३४ पृ० २४२]

१९१

जङ्गलि (विजापूर, मैसूर)

चालुक्यविक्रमवर्ष ४१ = सन् १२१६, कन्नड

[इस लेखमें चालुक्यविक्रमवर्ष ४१ में उत्तरायण संक्रान्तिके समय एक जैन मन्दिरके जीर्णोद्धारके लिए कुछ दानका उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९२६-२७ क्र० ई० १९६ पृ० १७]

१६२

कोल्हापुर (महाराष्ट्र)

शक १०३७ = सन् १११५, सस्कृत-कन्नड

पहला पत्र

- १ स्वस्ति । जयत्याविष्कृत विष्णोर्वाराह क्षोभितार्णवं (१) दक्षिणोन्नतद्वाराग्रविश्रा-
- २ न्तभुवनं वपु ॥ (१) जयति जगति रुढो राजलक्ष्मीनिवासः प्रविजितरिपु-
- ३ वगंस्वीकृतोत्कृष्टदुर्ग (०) सकलसुकृतवासो वीरलक्ष्मीविलासो जनितसुजन-
- ४ राग श्रीशिलाहारवशः (॥२) श्रीमत्शिलाहारनरेन्द्रवशे श्रीकीर्तिकान्ताः कमनी-
- ५ यरूपा. (१) विख्यातशौर्या बहवो नृपेन्द्राः सपालयामासुरिमां धरि-
- ६ त्री (॥३) तद्वशे नृपतिर्बभूव जतिगो गोमन्थदुर्गाधिपो माम् श्रीचनितापतिस्सु-
- ७ चरितो गगस्य पेर्मानडेस्तस्याभूत्तनय प्रतापनिलय () श्रीनायिमां-

८ को नृपः कर्णाटीकुचकुंभमांकिततनुविद्याधराधीश्वरः (॥४)

तस्यात्म-

- ९ जस्सुपरिवर्धितराज्यलक्ष्मी प्रादुर्बभूव समुपार्जितपुण्यपुञ्ज (१)
- १० चन्द्राङ्गयो जगति विश्रुतकीर्तिकान्तत्यागार्णवो बुधनुतो नयनाभि-
- ११ राम (॥५) तस्यापि पुत्रो जतिगो नरेन्द्रो जात प्रचीरो गज-
यूथनाथ (१) तस्या-
- १२ त्मजौ गोकलगूवलाख्यौ जाताबुभौ वैरिक्कुलाद्रिवज्रौ (॥६) तद्-
गोकलस्य तनुजी रिपुदन्ति-
- १३ सिंह श्रीमारसिंहनृपतिमरुवक्कसर्प. (१) प्रादुर्बभूव समरां-
गणसूत्र-
- १४ धारो विख्यातकीर्तिरिह पण्डितपारिजात (॥७) तस्याग्रसूनुर्जग-
देकवीरो वी-
- १५ रागनावाहुलतावगूढः कीर्तिप्रियो गूवलदेवनामा बभूव भूपाल-
- १६ चरो नरेन्द्र (॥७) तस्यानुजस्सकलमंगलजन्मभूमिरासीन्नृपाल-
तिलको भुवि भोज-
- १७ देव. (१) प्रोत्तु गवीरवनिताश्रयवाहुदडश्चडारि-मडलक्षिरोगिरि-
चज्रदंढ. (॥९)
- दूसरा पत्र पहला भाग
- १८ श्रीमत्कटवांबरतिगमरश्मेक्षिरस्सरोजं खलु शान्तरस्य (१) पूजां
प्रचक्रे स च चक्रवर्तिश्रीविक्र-
- १९ मादित्यनृपेद्रपादे (॥१०) किं वण्यंते जगति वीरतरः प्रसिद्धः
कोपात्तु कोंगजनुपोपि-
- २० पपात यस्य (१) सूर्यान्वयावररविस्स च विज्जणोपि चक्रे गृहं
सुरपतेभुंवि य-
- २१ स्य कोपात् (॥११) यत्पतापप्रदोपेस्मिन् क्रोक्कलइशलभायितः
(१) पलायिता न गण्यन्ते सोय

- २२ भोजनूपाककः (॥१२) वेणुग्रामद्वानलो विजयते वैरीमकण्ठीरवो
गोविन्दप्रलयान्त-
- २३ क शिखरिणो वज्र कुरंजस्य च (१) भोज स्वीकृतकौकणो
भुजयलात् तद्मिल्लमोद्यन्ध-
- २४ कृत सांय कर्णद्विशापटो रिपुकुभृद्दोर्ढण्डकण्डहर' (॥१३)
तस्यानुजातो गुणराशि-
- २५ रामोत् बल्लालदेवो जितवैरिभूप' (१) जीमूतवाहान्त्रयरत्नदीपो
गंभीर-
- २६ मूर्तिभुवि शौर्यशाली (॥१४) भजनि तदनुजातस्तिग्मरदिम-
प्रतापो द्विविजयतिवि-
- २७ भूतिस्मर्वलक्ष्मीनिवास (१) कृतरिपुमदमगो राजविद्याप्रसगो
भुवनवि-
- २८ नुतमूर्तिगण्डरादित्यदेव (॥१५) चक्रे चालुक्यचक्रेशो विक्रमा-
दित्यचहलम (१) निशं-
- २९ कमल्ल इत्याद्यां गण्डरादित्यभूपतेः (॥१६) धन्यास्ते मान-
वास्मर्वे धन्याश्च मृगजात-
- ३० य (१) स देशस्मफलो यत्र गण्डरादित्यभूपतिः (॥१७) यत्-
खड्गाद्भुततीव्रघा-
- ३१ तच्चकितस्तत्कृण्दिदेशाधिपो ढण्डब्रह्मनृपो जगाम सदनं ससेव्य-
मान सुरै-
- ३२ स्त्यक्त्वा राष्ट्रमतीवरम्यमतुलां लक्ष्मी भुजोपार्जिता सोय गण्डर-
देवम-
- ३३ ण्डलपतिस्संशोभते भूतले (॥१८) रत्नानि यत्नेन ददाति तस्मै
रत्नाक-
- ३४ रो भगमयाज्जहात्मा (१) भापूर्यं सम्यक् सततं बहिर्त्रं सूक्ष्माणि

- ३५ वासांसि ह्याश्च तस्मै (॥१९) किमिह बहुमिरुवतैरल्पगर्भैर्ध-
चोमिर्भुवन-
दूसरा पत्र . दूसरा भाग
- ३६ विदितवीरः क्रूरसग्रामधीर. (१) अपरनृपतिक्रीडां देशमत्यन्तशोभं
यदि स कुपितचित्तः
- ३७ कारयत्यात्मकीर्यं (॥२०) समधिगतपंचमहाशब्द महामण्डलेश्वरः
तगरपुरचरा-
- ३८ पीश्वरः । श्रीशिलालेखहारनरेन्द्र । जीमूतवाहनान्वयप्रसूत सुध-
र्णगरुड-
- ३९ ध्वजः । भवकक्षसर्प । अच्यनसिंह. (१) रिपुमण्डलिकभैरवः
(१) विद्विष्टगजकण्ठी-
- ४० रव । गणिकामनोजः । ह्यचत्सराज । शौचगागेय । नश्यराधेयः ।
- ४१ इडुवरादित्यः रूपनारायणः । कलियुगाविक्रमादित्य । शनिवार-
- ४२ सिद्धिः । गिरिदुर्गलघन श्रीमन्महालक्ष्मीलब्धचरप्रसादादि-
समस्तराजाव-
- ४३ लीविराजित श्रीमन्महामण्डलेश्वरः श्रीगण्डरादित्यदेव श्रीम-
द्वलय-
- ४४ वाडशिविरे सुखसंकथाविनोदेन राज्य कुर्वाणः । सप्तत्रिंशदु-
त्तरसह-
- ४५ खेपु शकवर्षेषु १०३७ अतीतेषु मन्मथसवत्सरे कार्तिकमासे
शुक्लपक्षे ।
- ४६ अष्टम्यां बुधवारे मिरिजदेशे । मिरिजेगम्पणमध्ये । अंकुलग्ने वोप्ये-
- ४७ यवाड इति ग्रामद्वय आढगेनामग्रामस्य प्रविष्टं कृत्वा तद्ग्रा-
- ४८ मारुवण त्यक्त्वा तत्रत्यनागावृण्ढा यदि नायकत्वं कुर्वन्ति तेषां
शरी-

- ४९ रजीवितार्थं सुवर्णं न ददाति यदि नायकत्वं नेच्छन्ति स्वेच्छया
तिष्ठन्ति त-
- ५० दा कोदेवण नास्ति । एवमनेन क्रमेण ० श्रीमत्पवित्रेण निगुं व-
र्तासरा पत्र
- ५१ वशो जातः पुमान् होरिमनामधेयः (१) कीर्तिप्रियः पुण्यधनः
प्रसिद्धः श्री-
- ५२ जैनसंघांशुजतिग्मरश्मि (॥२१) तस्यात्मजोभूदिह वीरणाख्यस्त-
स्यानुजोभू-
- ५३ दरिकेंसरोति (१) तद्वीरणस्यापि तनूमवोयं बभूव कुंडातिरिति
प्रसिद्धः (॥२२)
- ५४ तस्यानुजस्सुपरिपालितवन्धुवर्गः श्रीनायिमो जिनमतांशुधिच-
- ५५ द्र एषः (१) त्यागान्वितस्सुचरितस्सुजनो बभूव प्रत्यातर्काति-
रिह धर्मप-
- ५६ र प्रसिद्धः (॥२३) तस्यापि वीर सुजनोपकारी नोलंबनामा
तनयो बभूव (१)
- ५७ श्रीगण्डरादित्यपदाब्जभृंगो धर्मान्वितो वैरिमतंगसिह (॥२४)
तस्मै
- ५८ समस्तगुणालंकृताय निगुं वक्रुलकमलमार्तण्डाय । सुवर्णम-
- ५९ त्त्योरगेंद्रध्वजविराजिताय सम्यक्त्वरत्नाकराय पद्मावतीदेवी-
लक्ष्मवर-
- ६० प्रसादाय नोलंबसामन्ताय सर्वानमस्यं सर्ववाधापरिहारं पुत्र-
- ६१ पौत्रकमान्त्राकं दत्तवान् ०

[यह ताम्रपत्र चालुक्य मम्राट् विक्रमादित्य (पष्ठ)के माण्डलिक
शिलाहार राजा गण्डरादित्यदेव-द्वारा कार्तिक शुक्ल ८, बुधवार, शक
१०३७ के दिन दिया गया था । निगुं वंशके सामन्त नोलंबको मिरिज

प्रदेशके अकूलगे तथा घोप्येयवाड इन दो ग्रामोंका अधिकार अर्पण करनेका उल्लेख इसमें किया है । नोलवकी वशावली इस प्रकार थी—होरिम-वीरण-कुदाति—उसका वन्धु नायिम-नोलव । नोलवको सम्यक्त्वरत्नाकर तथा पद्मावतीलववरप्रसाद ये विशेषण दिये हैं ।]

[ए० इ० २७ पृ० १७६]

१६३

होले नरसिपुर (मैसूर)

१२वीं सदी : पूर्वार्ध (सन् १११५), कन्नड

[इस लेखमें महामण्डलेश्वर वीर कौगात्त्वदेव-द्वारा मूलसंघ-वैसिगण-के मेघचन्द्र त्रैविद्यके शिष्य प्रभाचन्द्रसिद्धान्तदेवके उपदेशसे सत्यवाक्य जिनालयके निर्माणका तथा उसे ह्ण्णेगडलु ग्राम दान देनेका उल्लेख है । (समय लगभग सन् १११५ ।)]

[ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३३]

१६४

करन्दै (उत्तर अर्काट, मद्रास)

सन् १११५, तमिल

[यह लेख चोल मन्नाड कुलोत्तुग राजकेसरिवर्मन्के ४५वें वर्षमें लिखा गया था । तिरुप्परम्बूरकी ग्रामसभा-द्वारा तिरुक्काट्टामल्लि आल्वार जिनमन्दिरके लिए कुछ भूमि विक्रय किये जानेका इसमें उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १३५]

१९५

तिरुप्परत्तिकुण्डम् (चिगलपेट, मद्रास)

राज्यवर्ष ४६ = सन् १११६, तमिल

[यह लेख राजकेसरिवर्मन् कुलोत्तुग चोलके ४६वें राज्यवर्षका है ।

इसमें तिरुप्पुत्तिकुण्डुके ऋपिसमुदायके लिए एक नहर बनवानेके लिए कैतडुप्पूरकी ग्रामसभा-द्वारा कुछ भूमि करमुक्त रूपमें वेची जानेका उल्लेख है। यह लेख त्रिकूटवसदिके छतमें लगा है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ३८२ पृ० ३७]

१६६

पुढुप्पट्टु (चिगलपेट, मद्रास)

११वीं-१३वीं सदी, तमिल

[स्थानीय जैन मन्दिरके मण्डपके एक स्तम्भपर यह लेख है। अस्पष्ट और अधूरा है। इसमें चोल राजा परकेसरिवर्मनका उल्लेख हुआ है।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० ७९ पृ० १२]

१६७

अनमकोंडा स्तम्भ लेख (वरंगलके समीप, आन्ध्र)

चालुक्य विक्रम वर्ष ४२ = सन् १११७, कन्नड
पूर्वकी ओर

- | | |
|---------------------------------|---------------------------------------|
| १ श्रीमज्जिनेद्रपदपद्म- | २ शेषमव्यानव्यात् त्रिलोकनृ- |
| ३ पर्तीन्द्रमुनीन्द्रवद्यं नि - | ४ शेषदोषपरिसंढनचडका- |
| ५ ण्डं रत्नत्रयप्रभवमुद्भव- | ६ गुणैकतान॥(१)स्वस्ति समस्त- |
| ७ सुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लभ- | ८ महाराजाधिराजपरमेश्वर- |
| ९ परममट्टारक सत्याश्रयकु- | १० कतिलक चालुक्यामरणश्रीम- |
| ११ त्रिसुवनमल्लदेवरविजयरा- | १२ ज्यमुत्तरोत्तरामिन्द्रद्विप्रवर्ध- |
| १३ मानमाचंद्राकर्तारं सलुत्त- | १४ मिरे। तस्यादपञ्चोपजीवि समधि |
| १५ गतपंचमहाशब्द महामं(ड) | १६ लेश्वरनन्मकुडापुरवरेश्वरं |
| १७ परममाहेश्वरं परिहितच- | १८ रितं विन(य)विभूषणं श्रीम- |

- १९ न्महामण्डलेश्वरं काकतीवेत(भू) २० पालकुलक्रमागतं तदीयरा-
 २१ ज्यमरनिरूपितमहामास्यप- २२ दवीविराजमान मानोज्ञत प्र-
 २३ सुमन्त्रोऽसाहशक्तिवन्नयसं- २४ पन्नना(गि)॥घनशौर्याटोप(दिं)
 २५ मान्तनद महियेयिं चारुचारि- २६ त्रिदिं(दो)ल्पिन तेलूपिं सत्क-
 २७ लदिनो)द्विदाइचयं(सौं)- लाकौश-

उत्तरकी ओर

- २८ दयंदिं(यिं)निकायप्रार्थितार्थ-
 २९ (प्र)द धितरण(धि)ख्यात- ३० (धि)नुत श्रीकाकतीयेतरसन
 नार्द धरित्री मच्चि-
 ३१ व वैज दडाधिनाथ ॥(२)अगणितशौर्यं-
 ३२ दिं नेगलद काकतिवेतनरेडन जग
 ३३ पोगले चलुक्यचक्रिचरण सले का-
 ३४ णिसि तत्प्रसाददिं वगेगोले मन्दिभया-
 ३५ यिरमनालिसि(दु)द्वयशो- ३६ धिनाथन पोगलदरारी मंड(लि)
 ३७ ककाकतिवेतन मत्रि वैज्ञन ॥- ३८ तगं विरुसितकजातानने या-
 (३)आ-
 ३९ कमन्वेगं जनियिसिद रयातं ४० धरेयोळु पेगडे वेत म-
 ४१ त्रिजनमकुटचूडारसन ॥(४) ४२ आतं मा(धा)तरामोपम-
 ४३ नेविसिद श्रीकाकतीप्रोलभू- ४४ पख्यातामात्य विचेकाग्रणि
 ४५ सकलकलाकोविद सचरित्र- ४६ प्रीतं माहित्यविद्यानिधि वु-
 ४७ धविश्रुधोर्वीरुह सत्यधर्मो- ४८ पेत स्वग्रामदोळ् माडिदनविमु
 ४९ दिं हत्तु देवाल्यगल्लु ॥(६) ५० अतिशयजैनधर्मसमयोचित-
 ५१ क्षामनदेधि भारतीसति क्षभिर्विवव(क्त्र)-
 ५२ दशनच्छडे शुद्धसुवर्णकुमसन्नुतत-

- ५३ नुवर्णपीवरपयोधरि मैल (म या-)
 ५४ कमांत्रिकासुततद्रमात्यवेतह-
 ५५ दयेश्वरि निदधललडिम भाविसलु ॥ (६)

पश्चिमकी ओर

- ५६ पददिंढालुलितालकं वेरेग (मं) गो-
 ५७ पांगमं पचरत्नदिनांगोचितमागे ५८ निर्भिसि सुरस्त्रीमान्यसौभाग्य-
 ५९ सम्म (द्व) सौंदर्यमनाच्छु तीवि ६० पददं कंजातसंजातनी
 सु(द्वती)-
 ६१ रत्नमनेंद्रु मैलमननारार् वणिगल-६२ लोकोदोल् ॥ (७) नुतरूपवति
 कला (व)-
 ६३ ति रतिरति श्रामतिघटान्तकी- ६४ णीसतियेद्रमात्यवेतन सतियं
 सति घा-
 ६५ क्षितियेत्तलमेष्ट्रे नुतियिसुनिडुं- ६६ मुद्रदिंढेने नेगल्ल रमास्पद्रे मै-
 ॥ (८)
 ६७ लम सक्तिरिंढे माडिमि तन- ६८ यकरमागिरलु वेष्ट्र (मं) गण
 गभ्युद-
 ६९ कडलालयवमद्वियनेमेयलु ॥ (९) ७० अद्रके नित्यपूजेगं धूपद्रीप
 (नि) वेद्य-
 ७१ ककं पूजारिगाहा (र) वस्त्रादि- ७२ श्रीमत्रिसुवमल्लमंडलिकभू-
 गल्लगं (पा)-
 ७३ लपुत्रनप्य काकतियपोलरमन रा- ७४ ज्यमुत्तरोत्तरामिवृद्धिप्रवर्ध
 मानमा-
 ७५ गमम्मकुन्द्रेयलाचंद्राकर्तारं स- ७६ लुत्तमिरं श्रीमञ्चालुक्य-
 विक्रमवर्ध-

- ७७ द नाल्वत्तेरलेनेय हेमलवि(सं)- ७८ वरसरपौष्यबहुल १५ सोमवा-
 ७९ रददिनुत्तरायणसक्रांतिनिमि- ८० स धारापूर्वकमाणि तन्न
वल्लमनप्प
 ८१ वेतन-पेगंडे तन्न पेसरिद माडि- ८२ सिद केरेयेरिय केलगनेरहु
 ८३ हासरेगल्लुगल नडुवण गट्टे(य) ८४ मत्तरेरहुं मत्तमाकेरेय य-
 ८५ हुवण नेल टोणेय तंकलेरेय ८६ मत्तर्नालुकुं करवं मत्तरास-
 ८७ म कोट्टु निरिसिदलोशासनगंगं ॥

दक्षिणकी ओर

८८ मत्तमी धर्मक्के तेलुटियागे ॥

- ८६ अ(ष्टौ) वन्तिसहस्राणि दशको- ९० टो च वाजिनामनन्त पादसं-
 ९१ घातमित्येते माधववर्म- ९२ वशोद्भवरप्प श्रीमन्महा-
 ९३ मण्डलेश्वरनुभवा (डि)- ९४ य मेलरत्तं तन्ना (लि) कं-
 ९५ थोरुगल्ल कूचिकेरे- ९६ येरिय केलगे कालुवेय
 ९७ भोटल गट्टेय मत्तरोन्दा स- ९८ मीपदले करवं मत्त-
 ९९ रु हत्तुमनित्त ॥ निरुत्तमि- १०० टनलिटवं सासिरकवि (ले)-
 १०१ यनलि (द) पापमं (पो) दुं- १०२ गुमादरटिं रत्ति (सि) टं सा-
 १०३ सिरयज्ञद पलमनेयटि १०४ शुम (मं) पडेगु ॥ (१०) स्वद-
 १०५ त्ता परट्ठां वा यो हरेत १०६ वसुंधरा । पट्टिर्वपंसहस्रा-
 १०७ णि विद्याया जायते १०८ बहुनिर्वसुधा टत्ता राजमित्स-
कृमिः ॥ (११)
 १०९ गरादिमि । यस्य यस्य य- ११० दा भूमिस्तस्य तस्य तटा
फलं ॥ (१२)
 १११ अद्विक्क वसदिय कसं गलेव वो- ११२ यपट्टगे पाग वौट्टु ॥

[यह स्तम्भ चालुक्यविक्रमवर्ष ४२ (सन् १११७) में पीप अमा-
 वस्याको उत्तरायण सक्रान्तिके समय स्थापित किया था । उस समय

वास्तुशिल्पशास्त्रे विद्वत्संस्कृत विद्वत्संस्कृत (३२) के माण्डविक वास्तुशास्त्र
 वेदका पुराणशास्त्र (३०३) मन्त्रि प्रदेगण शासन का ग्रा था । वेदका
 मन्त्राण्डा वेद था । वेदका पन्नी यज्ञमन्त्रे थी तथा पुर वेद पण्डिते था ।
 वेद पण्डिते प्राणका मन्त्रे था । इत्येकी पन्नी मन्त्रे थी । एतन्ने इत्येकान्
 पन्नाईगरे कदम्बान्देरीका मन्त्रि वनवाग तथा एते इत्ये निधिको कृष्ण
 जर्मन दान की । इयो मन्त्रिको उग्रवाइते मन्त्रमन्ने तो माववदमन्त्रि
 इत्ये उग्रवा इग था—मी कृष्ण मन्त्रे दान की । कदम्बान्देरी मन्त्रवन
 पन्नावनीका नाम है । इम मन्त्र यह मन्त्रि श्राव्यांकि उग्रिकागमे है तथा
 वे एते पन्नाई वेरी कदम्बर ग्रा मन्ने है ।]

[१० ई० १५० २५६]

१६८

कौटिल्यसंग्रहम् (गणनाइ, मन्त्राण्डा)

मन् १११८, मन्त्रि

[एक मन्त्र मन्त्रिके दक्षिण तथा पश्चिमकी छावागदिलार उह
 लेख विद्वत्संस्कृतमन्त्रि कृष्णानु गत्रोत्तरेवके ४८वें वर्गका है । कुम्भतूरके २५
 लैनी-द्वारा मन्त्रुईगरेके लिए एक मन्त्र तथा सुवर्ग विमान वनवानेका इत्ये
 निदेष है । कुम्भतूर गाँव वेम्बुवल्लनाइ प्रदेसके शैवाट्टिकके विभागमे था ।
 इयो लेखमे विद्वत्संस्कृतमन्त्रि वेद तथा एक उर्याकी ताँबेकी मूनीयाँकी
 म्यान्नाका भी उल्लेख है । इम मन्त्रिके लिए जर्मन शौण्ड आर्यके लिए
 नी दान दिग गग था । इम लेखकी तमिल भाषा माहिन्धिक दृष्टिमे
 बहुत अच्छी है ।]

[३० म० गणनाइ १३]

१६९

पेहोले (विजापुर, मद्रास)

वास्तुशिल्प विद्वत्संस्कृत १४ = मन् १११०, कथक

[यह लेख विद्वत्संस्कृतमन्त्रि विद्वत्संस्कृत एतके सुवर्ग वेदाल शुक ३,
 १०]

सोमवार, विकारी मंत्रसर, चालुक्य विक्रमवर्ष ४४ के दिन लिखा गया था। इसमें जेमवार्य तथा जातियकर्कके पुत्र केणवर्य नेट्टिका खरलेख हैं जिसने स्थानीय जिनमन्दिरमें पूर्व और पश्चिमकी ओर बमदिया, एक पट्टशाला तथा कूपका निर्माण कराकर लोकपाल-मूर्तियोंकी स्थापना की थी और देवपूजाके लिए कुछ भूमि आदि दान दिया था।]

[मूल लेख कन्नडमें मुद्रित]

[गा० ६० ६० ११ पृ० २१९]

२००

कुमारवीडु (मैसूर)

शक १०४४ = सन् ११२२, रुद्रद

- १ श्रीमतपरमगभीरस्याद्वाढामोघकाठन (I) जीयान
- २ त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशामन (II) इत्ति समविग (त) पच-
- ३ महाशब्द महामण्डलेडधर कुलान्त गचोलमुजव-
- ४ लवीरगगहोय्मलदेवरु गगवाटि तांमट्टर-
- ५ सासिरमनेकच्छत्रदि तलकाट्टिहुं सुखमरुताधि-
- ६ नाददि राज्य गेय्युत्तमिरे शरुवर्ष १०४४ ने-
- ७ य प्लवसंघत्परद मार्गमिर मुध ५ म्योमवार-
- ८ दहु महाप्रधान दण्डनायक गगपटय-
- ९ गलु तम्म सोवणदण्डनायकंग हादरिवागिल-
- १० वीदिनलु परोक्षविनयककं मादिसिट वसदिगे
- ११ विट्ट दत्ति मैनेनाड चन्दवनहरिलियु वीडिं
- १२ मृदण कम्मादिय केरेय गहे ३० सलगंयु
- १३ आ केरेयि घटगलु पुरिय वेहले वेळि २
- १४ आ केरेय ददुवण कट्ट केळगे तां
- १५ ५०० गुलियु वीदिन २ गाणद पण्णैयु

- १६ सोडरिगे सल्लुबुदु ॥ वसदिगे विट्टीधर्मम-
 १७ नोसदु कर मलिसुतित्रंगंक्कु पुण्य भसव-
 १८ मट्टि केंडिमिदवर्गलु पसुदु ब्राह्मण-
 १९ न कोंड वधे ममनिसुगु ॥ स्वदत्तां पर-
 २० दत्ता वा शं हरेत वसुंधरा पट्टिर्षस-
 २१ हन्नाणि विष्टाया जायते क्रिमि ()

[यह लेख होयसल राजा विष्णुवर्धनके राज्यमें मार्गशिर शु० ५, सोमवार, राक १०४४, प्लव नवत्सरके दिन लिखा गया था । दण्डनायक गगपय्य-द्वारा मोवणदण्डनायककी स्मृतिमें हादरवागिल्लु ग्राममें एक जैन मन्दिरकी स्थापनाका तथा उसे दिये गये दानका उल्लेख इस लेखमें किया है ।]

[ए० रि० मै० १९३८ पृ० १६६]

२०१

बेलूर (मैसूर)

१२वीं सदी — पूर्वार्ध, कन्नड

- १ पुणिसचमूपनेम्ब्रेसेव क्षामनवाचकचक्रवर्तिगिन्तेनिसलोड पोगर्ते
 तनगागिरे पुट्टिड चामराज नाकण कुमरय्यनेम्ब रत्नत्रयमू-
 २ तिंगे पुत्रनोप्पिड पुणिमदण्डनाथनुदितोदितचामचमूपसमव (I)
 नमः सिद्धेभ्यः (II)

[यह लेख किसी जैन मन्दिरके स्तम्भपर था । वह स्तम्भ वादमें केशवमन्दिरमें लगाया हुआ पाया गया । इसमें सेनापति पुणिस तथा उसके तीन पुत्र चामराज, नाकण तथा कुमरय्यकी प्रशंसा की है । यह पद्य अन्य लेखोंमें भी पाया गया है । पुणिस राजा विष्णुवर्धनका जैन सेनापति था ।]

[ए० रि० मै० १९३४ पृ० ८३]

२०२

अरताल (जि० घारवाड, मैसूर)

शक १०४५ = मन् ११२३, कन्नड

[यह लेख चालुक्यसम्राट् त्रिभुवनमल्लके समयका है । उस समय वनवासि तथा पानुगल प्रदेशोंपर कदम्ब कुलका महामण्डलेश्वर तैलपदेव शासन कर रहा था । मूलमघक्राणूगणके कनकचन्द्रके दिग्गज गगर बम्बिसेट्टिने कौन्तकुलि विभागके प्रमुख नगर पयिट्टणमे एक मन्दिर बनवाया । बम्बिसेट्टि बट्टकैरेका निवासी था । इस लेखकी तिथि पीप अमावास्या, सूर्यग्रहण, रविवार, शक १०४५, शुभकृत् सवत्सर ऐसी दी है ।]

[रि० सा० ए० १९४३-४४ एफ् १]

२०३

हिरैसिंगनगुत्ति (विजापुर, मैसूर)

११वीं-१२वीं सदी, कन्नड

[इस खण्डित लेखका समय चालुक्यसम्राट् त्रिभुवनमल्लदेव (विक्रमादित्य पण्ड) के राज्यका है । देसिगण-पुस्तक गच्छके आचार्य बालचन्द्रका इसमें उल्लेख है । किमी मन्दिरके लिए उन्हें कुछ भूमि अर्पण की गयी थी ।]

[मूल लेख कन्नडमे मुद्रित]

[सा० इ० इ० ११ पृ० २६२]

२०४

तोगरकुण्ट (अनन्तपुर, आन्ध्र)

११वीं-१२वीं सदी, कन्नड

[यह लेख चालुक्यराजा त्रिभुवनमल्लके समय एक सूर्यग्रहणके अवसरपर लिखा है । इसमें तोगरकुण्टके चन्द्रप्रभदेववसदिके लिए दण्डनायक

कोम्मणार्य-द्वारा कुमारतैलपदेवकी पुण्यवृद्धिके लिए कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है। यह दान मूलसघके पद्मनन्दिदेवके शिष्यको अर्पित किया गया था।]

[रि० सा० ए० १९२५-२६ क्र० ३४४ पृ० ६६]

२०५

उगरगोल (वेलगांव, मैमूर)

११वीं-१२वीं सदी, कन्नड

[यह लेख जिनगामनकी प्रगंसासे प्रारम्भ होता है। चालुक्यसम्राट् त्रिभुवनमल्लदेवके किसी महाप्रधानका इसमें उल्लेख है। लेख क्षण्डित है।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ ई० क्र० ८२ पृ० २४७]

२०६

सिरसंगि (जि० वेलगांव, मैमूर)

१२वीं सदी, कन्नड

[चालुक्यसम्राट् त्रिभुवनमल्लके समयका यह लेख है। तिथि पौष शु० १३, रविवार, उत्तरायण सक्रान्ति ऐसी है। ऋषिशृंगीके छह गावुण्डोका इसमें उल्लेख है। वाचि गावुण्ड तथा अन्य व्यक्तियों-द्वारा किसी वसदिको जमीन आदिके दानका उल्लेख है। गण्डवि (मुक्त) सिद्धान्तदेव, अत्तिमन्ने, देवरस, तथा कलिदेवसेट्टिका भी उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ ई० क्र० ७६ पृ० २४६]

२०७

हूल्लि (जि० वेलगांव, मैमूर)

१२वीं सदी-पूर्वार्ध, संस्कृत-कन्नड

१ (श्रीमत्परमगंभी)रस्यादवादाभोघलांछनं । जीयात् त्रैलोक्य-

- नाथस्य शासनं जिनशासन ॥(१) श्रीचीरनाथस्य गणेश्वरोभूत्
सुधर्मनामा प्रविभूत
- २ यापनीयं सं(धे) पुनस्तत्र च चारुमागं ॥(२) कण्डूरविख्यातगणे
यभूत्तु पुरा मुनीन्द्रा बहवो महा
- ३ दैकसिंहां मुनीश्वरो यादुवली यभूत् ॥(३) जयत्तु शुभचन्द्रदेव
कण्डूरगणपुडरीकवनमातं दृष्टचन्द्रिन्द्र
- ४ पारगो युधविनुत् ॥(४) नुतथापनीयसघप्रतीतकण्डूरगणाधि-
चन्द्रमरेन्द्री क्षितिवलय पोगल्विनमुनतिचेत्तर् मोनि (दे-
वद्विन्यमुनीन्द्र) रु ॥(५) श्रीमाघनद्वित्रिनाथमोडे कामारिमोमो
(र) गवैनतेय । नम्रावनीपालकधिन्दर्कीलिं सि(न्दां)त त(स्वा)
र्णवपूर्णच(न्द्र) ॥(६)
- ६ (स्वस्ति । समस्तभुव) नाश्रय श्रीपृथ्वीचरलभं महाराजाधि-
राज परमेश्वरं परममहारक सत्याश्रयकुलतिलक चालुष्यामरण
श्रीमलत्रिभुवनमल-
- ७ (देवर विजय) राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्धमानमाचद्राकं तार-
वर सलुत्तमिरं । क्षितिगेत्ल तन्न तंज तालगि देलगे तन्नाजे चोला
(वनी)-
- ८ लु नतिसुतिरं मले तन्नापुं लोकनके कत्पक्षितिजात कूडं पण्णतिरं
कलियुगदोलु गुट्टियु राघवादिक्षितिपालानीकरोलु पा
- ९ (विक्र)मादित्यदेव ॥(७) जलधिपरीतभूतलव ध्राटगे हुतलदददिं
मनगोलिसुधुदेत्तु नोपडमं कुतलदंशमदयकं चिन्नपूगल तंरदतं
रजि'
- १० दृ मां कित्कायलिय पोदल्द हारद वोलिपुंहु नोपडं पुलि लीलेयिं
॥(८) मत्त । पोंगलसंगलिंदेसेव देवगृहगलिनांपुवेत्त चारांग-
नेयकंल

- ११ 'पोद) लुद् वेदंगले मूर्तिगोह्नु देनिपंददलोप्पुच विप्ररिदे ग्रामंगल चक्रवर्तियेसेडिदुदु नोर्पडे पूलि लीलेयि ॥९) मत्तमल्लिय विप्रर महिमये (न्तेदोडे) ।
- १२ पौठनेनिप श्रीकृष्णदेवं सविस्तरदि तन्न सहस्रमप्य पेसरं रूपा-
गिरलु माडि साक्षरवेदाक्षरजीवमंत्रचयम तीविट्टु पुलीमहापुर
- १३ (एसेदरु) सामिर्वरित्तुर्वियोलु ॥१०) उपमातीतमेनिप्य पेंपु
गुणमोदार्यं चल साहसं जपहोम नियम महोन्नतिकसत्य
शौचमा
- १४ * शास्त्रदोदवि श्रीकेशवाटित्यदेवपादांभोजवरप्रसादरसेदरु सासि-
वर्रित्तुर्वियोलु ॥११) हरि किलेनेलेयिं चलिसिद हरिवदवेदि
- १५ ककेंदु निराकरिपुदु सासिर्वरुचित्तदे चलितवचन ॥१२) स्व-
स्थनवरतविनमदम (र) राजक्किरीटकोटिताडित्तजिनेंद्रचरणा-
रविदम—
- १६ * (चल) दुत्तरग। वीरविद्विष्टसंहरणप्रतापकार्तिकेय । गगगांगेय ।
चपलवैरिवाहिनीसंहननप्रतापलकेश्वरं । कोलालपु(रघराधीश्वरं) ।
- १७ * (एते) दोडे । मंडलिकजगदल मार्कोडर जवनाथिजनके कल्प-
महीज गंडर तीर्थ सितगर गड मार्कोल भैरवं पिट्टनृपं ॥१३)
मत्त
- १८ * पुट्टिदोप्येपर्मनृप विज्जमहीपति कीत्तिभूपनु जेट्टिग गोमंलुं नेगदं
(रु) मैललदेवियुमते रूपिनिधिद्वलवागि ।
- १९ ॥१४) लिकडंकरिभूसुजरं तवे कोह्नु गुर्वराष्ट्र जयसिहदेव
धरणीश्वरनं निजराज्यलक्ष्मियोलु पट्टु
- २० पोगलुत्तिपुदु विज्जलभूमिपालन ॥१५) मत्तं । रेवकनिमडि
कन्हरदेवंगंतवकनंते भूनुते सिरिया (देवि)

- २१ '॥(१६) दु दल्लतायचनेयेदु विज्जलनृपं चट्टीमतीर्थकलं
मुददि माडिसि कल्लेमं नमंसि
- २२ डिं विट्ट—वेल्बलदोल्लितोप्पिप्प पेगुम्मिय ॥(१७) हरलार-
याडकसि
- २३ चालुक्यचक्रवर्तिं पेमाडिरायञ् कटथोल्
- २४ माडिसिद माणिक्यनीर्थं

[यह लेख चालुक्यसम्राट् विक्रमादित्य (पष्ठ) के राज्यकालका है। इसमें प्रथम सुधर्म गणधरकी परंपरामें यापनीय सध—कण्टूरु गणके बाहुवली, शुभचद्र, मौनिदेव तथा माघनदि इन आचार्योंका उल्लेख है। इनका परस्पर सम्बन्ध स्पष्ट नहीं है। अनन्तर एक पूलि नगरके पिट्ट नृपका उल्लेख है जो गगवशमें उत्पन्न हुआ था। इसके चार पुत्र थे—पेमं, विज्जल, कीर्ति, गोर्म—तथा एक कन्या थी—मैल्लदेवी। विज्जलके सम्बन्धमें गूर्जराष्ट्रके जयसिंहका उल्लेख किया है किन्तु इसका ठीक अर्थ स्पष्ट नहीं क्योंकि यहाँके कई अक्षर घिस गये हैं। इसी तरह कृष्णराजकी बहिन रेवकनिर्मडिकी एक श्लोकमें सिरियादेवीसे तुलना की है उसका पूर्वापर सम्बन्ध भी स्पष्ट नहीं है। अनन्तर कहा है कि विज्जलने एक जैन मन्दिर बनवाया तथा उसे पेगुमि ग्राम दान दिया। लेखके अन्तिम भागमें माणिक्यतीर्थका उल्लेख है। इसका सम्बन्ध भी स्पष्ट नहीं है।]

[ए० ड० १८ पृ० २०१]

२०८

वेलवत्ति (वारवाड, मैसूर)

१२वीं सदी - पूर्वाध, कन्नड

[इस लेखमें सवणूरके वम्मिसेट्टि-द्वारा एक ब्रह्मजिनालयके निर्माणका उल्लेख है। इस जिनालयके लिए वम्मिसेट्टिने वेलवत्तिके ३०० महाजनो-

को कई दान दिये थे। इस स्थानके कुछ आचार्योंके नाम भी लेखमें दिये हैं। तिथि आषाढ शु० प्रतिपदा, सोमवार, उत्तरायणसक्रान्ति, शोभकृत सवत्सर ऐसी दी है। उस समयके चालुक्यसम्राट् त्रिभुवनमल्लदेवके राज्यका उल्लेख किया है।]

[रि० इ० ए० १९४६-४७ क्र० २१६]

२०६

चैल होंगल (बेलगाँव, मैसूर)

११वीं - १२वीं सदी, कन्नड

[यह लेख चालुक्य राजा त्रिभुवनमल्लदेवके समयका है। शक वर्षके अंक अस्पष्ट हुए हैं। इमें रट्टवर्गीय महासामन्त अक, शान्तियक तथा कूण्ड प्रदेशका उल्लेख है। अनन्तर यापनीयसघ-मैलाप अन्वय-कारेय-गणके मुल्लभट्टारक तथा जिनदेवमूरिका उल्लेख है। यह सम्भवत किसी जिनमन्दिरको दिये गये दानका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५१-५२ क्र० ३३ पृ० १२]

२१०

गोलिहल्लि (जि० बेलगाँव)

सिद्धेश्वरमन्दिरके नमीप शिलापर

१२वीं सदी, कन्नड

[मल्लदेवी तथा जयकेशिन्के पुत्र वीर पेर्माडि तथा विजयादित्यके शासनका इस लेखमें निर्देश है। अगडिय मल्लिसेट्टि-द्वारा किरुसपगाडिमें बनवाये गये जैन मन्दिरके लिए भूमिदान देनेका इसमें उल्लेख है। मूलसघ, बलात्कारगणके नेमिचन्द्र भट्टारकके शिष्य वासुपूज्य भट्टारकको यह दान दिया गया। वासुपूज्यकी गुरुपरम्परा कुछ विस्तारसे दी है। लेखके समय फाल्गुन शु० १५, गुरुवार, मन्मथ सवत्सर था तथा चालुक्य भूलोकमल्ल सम्राट् थे।]

[रि० इ० ए० १९५०-५१ क्र० १५]

२११

घरांग (मैसूर)

१२वीं सदी-मध्य, कन्नड

[यह लेख आलुप राजा कुलमेखरके समयका है । इसमें मायवचन्द्र, प्रभाचन्द्र, तथा श्रीचन्द्र इन आचार्योंका उल्लेख किया गया है ।]

[रि० आ० सं० १९२८-२९ पृ० १२७]

२१२

दडग (माटया, मैसूर)

१२वीं सदी - पूर्वार्ध, कन्नड

- १ श्रीमतपरमगर्भारस्याद्वादाभोजलाञ्छनं (।) जी-
- २ यात् त्रैलोक्यनाथम्य क्षामन जिनधासन (॥)
- ३ कुलरत्नाकरशैलु कांस्तुमादिगल शोलु पल्लरं लोकोपकारपरिणतरू
एकीकृ-
- ४ तसकलराजगुणरु सकलजनांक्ति यादवकुलशैलु पुलि पाये
- ५ सलेयि पुलिय पोय सल येने पायडुडरिं पांशमणत्रेसरबनिद
वावुद-
- ६ रिंलदं"नयं प्रदरण नना " युरादि जग-
- ७ नयनिमि पोरेद विनयादित्य समस्तमुचनस्तुत्य आतंगतिमहिम-
- ८ समारयावकीर्ति सन्मूर्धिमनोजात मर्दितरिपुनृपजातं तनुजात-
नादन् एरंयग-
- ९ नृपं ॥ च 'धर्मार्थकामसिद्धिबोल् अचनीचटलमर् आतन तन-
- १० यर् बल्लाल विट्टिवेयन् उदयादित्य ॥ मृवर्- तनयरोल तां
भाषिसं म

- ११ व्यमनागिरुं मद्रगुगम्भूमावद्दिन उचमनाद् विनुतविमवद्भूत-
त्रिप्यु वि-
- १२ प्युनर्हाशं । स्वस्ति मनधिगतपंचमहाशक्त महानंडले-
- १३ उवरं द्दारावनीपुरवराधाडवरं यादवकुलांबद्युमणि सं-
- १४ न्यव्वचूडानणि मरुपगेलुगण्डं गडवेरुगट शशकपुगतिवाम
- १५ वासुनिकादेवीलड्यवरप्रसाद दानमन्मानसंपाटिनविप्रगामोद
- १६ नामादिममस्तप्रशस्ति महिनं तलकादु कौगु तंगति गंगवादि नौ-
- १७ णंघवाटि इनवामे दानुंगलु गौड सुजवल्वांगंग प्रवार
- १८ द्योयुषगदेवर् प्रथ्वीगर्ज्यं गेयुत्तमिरे तत्सादयद्योगजीविगतप्य ॥
नाम अ-
- १९ दुमलवकुशगं मान्केयेनलु अंते पुट्टिरे मेरुदु श्रीमनुमगियाने-
- २० युं उदामगुणु मगतगजद टावियन ॥ कस्तिगति सिद्धमध्यं कल-
- २१ मन्तानि दोन्त्ररुपुगवार्थि मिश्रनत्रिकटाक्षे वलिमुवि वेग्यहि
- २२ गेडविलापल्लस्मि नामुरं मुसनोंदिमाने गुणगन्तयगोहादि कौ-
- २३ निर्गोपनि म्पिरम्भवे उक्कियक्कनेने पाल्वरु अरु अमलकान्त
तदुर्व ॥
- २४ वल्लेजनधीशं उगितार्थं नेगलुद तन्ते मगयर् ॥ महयग्मजिन-
द्व्यमंन्दि
- २५ हरियदेयन्नेरुं नोन्त कन्तेप्रगोन्तं ॥ श्रीमन्नेव्व कुगटकुंडान्ध-
- २६ य क रुगग निर्दिगिगिच्छद उवलिगंथ मुनिमन्दिमिदालुदेवर
दिप्य
- २७ मेवचन्दिमिदालुदेवरो श्रीमन्नेहाप्रधान दगटनायक मगिया-
- २८ नेयुं श्रीमन्नेहाप्रधान दगटनायक मगिसव्यगलुं उदिग-
- २९ नकेरंथ पंचवम्पद्विद्योत्तरो वाहुवलिदुटम वारादुव-
- ३० कं मादि कौट्टु मगियानेसमुदुदु दयलुनं

- ३१ मल्लहल्लिय मुदण क्रिकरंय अल्लिय णालगुत्त-
 ३२ गेसु कौटियहल्लिय मुदण क्रिकरंय आवेदलेय
 ३३ तिरियकरंय फेलगण अहकेय ताटमु ॥ धन्तु मयाय मुदवागि
 देवियगणद यमदि २ वरु काणरगणद य-
 ३४ मदि धोन्टकरु अन्तु पच यमदिगे ममानयागे उल्लि हृष्टि-
 ३५ द माचिर्गाटनु कमयर्गाटनु ॥
 ३६ म्यदत्ता परदत्ता वा यां हत वसुधरा पट्टिचपं सह-
 ३७ माणि त्रिष्टाया जायतं क्रिमि

[इस लेखमें त्रयोमल राजा विष्णुवर्धनके महाप्रधान दण्डनायक मरि-
 याने तथा भक्तिमय्य-द्वारा दण्डिनकेरे स्थानकी पाँच यमतियामे बाहुवल्लि-
 कूट नामक वसतिका दान तथा कुछ भूमिके दानका निर्देश है । यह दान
 काणूरगण-तित्रिणिगच्छके मुनिभद्र गिद्वान्देवके विष्णु भेषचन्द्रदेवकी दिया
 गया था ।] [ए० रि० मं० १९४० पृ० १५६]

२१३

कम्बदहल्लि (मसूर)

१०वीं सदी—पूर्वाध (मन् ११३०), कम्बद

१ (द्रोह)वरदृ दण्डनायक गगराज्जन मग बोप्पदेवरिगे रुवारि

२ द्रोहवरदृाचारि क्खेवमदिम माडिड ॥ मंगल महाश्री

[यह लेख स्थानीय धान्तीप्पर वसतिके भग्नावशेषोंमें है । यह वसदि
 दण्डनायक गगराजके पुत्र बोप्पदेवके लिए द्रोहवरदृाचारि नामक धिल्पकार-
 ने बनवायी गेमा लेखमें कहा गया है । यह क्खेवमदि अर्थात् निर्माता-
 द्वारा बनवायी पहली वसदि थी । अतः इसका समय लगभग मन् ११३०
 है क्योंकि बोप्प-द्वारा मन् ११३३ में हरेवितमें निमित्तमा दीप्परवमदि
 विद्यमान है ।]

(ए० रि० मं० १९३९ पृ० १९३]

२१४

सालूर (मैतूर)

सन १९३०, कन्नड

- १ श्रीमन्परमगंभीरस्याद्वाडामोघलाहनं जीथान ब्रलोक्य-
- २ (नाथन्य शामन जिन) ग्रामन ॥ स्वन्ति ममस्तनुवना-
- ३ ' (म)हाराजाविराज परमेश्वर पर-
- ४ (मत्या)श्रयकुलनिलक चालुक्यामरण
- ५ श्रीम(द्भूलोकमल्ल)देवर विजयराज्यमुत्तरोत्तगमिवृ-
- ६ (द्विप्रवर्धमान) माचंद्राकंतार मलुत्तमिरे । समधिगतपञ्चम-
- ७ (हाशब्द महामं)डलेडवरं वनवामिपुरवरावीडवर त्रिक्षयड्मा-
- ८ (समव चनुरागोतिनग)राधिष्ठितल(लाटल्लोचन)चनुसुंज
- ९ श्रीजयतीमधुकेश्वरदेवल्लक्ष्मणवरप्रसाठं नामादि-
- १० ममस्तनप्रगस्तिसहित श्रीमन्महामण्डलेडवरं मथू-
- ११ रवमंडेव तत्पाठपञ्चोपजीवि श्रीमन्महामण्डलेडवर
- १२ मगर कारगरसर् सान्तलिलेसाधिरमुमं दुष्टनि-
- १३ ग्रहत्रिशिष्टप्रतिपालनडिनालुत्तिरे ॥ श्रीमूलसवकां-
- १४ (ण्ट) कुन्डान्वय काणूरुगण्ड मेष(पा)पाणगच्छड श्रीप्रमाच-
- १५ त्रिमिद्वान्तदेवर मिप्य कुलचद्रपं(दिव)देवर गुड्ड(म)-
- १६ द्रराधिसेष्टि श्रीमदनादियग्रहार सालियूर मामिर्व-
- १७ र ब्रह्मजिनालयठ वसडिय निवेद्यकके भूलोकवर्षट
- १८ ५ नेय साधारणमवत्सरठ पुप्य सुद्ध ३ मोमवारठ वुत्त

[यह लेन चालुक्यसत्राद् भूलोकमल्लके ५वें वर्षमे पीप शु० ३ मोमवारको लिखा गया था । उन समय कदम्बवशीय मण्डलेडवर मयूरवर्माके धामनान्तर्गत सान्तलिले प्रदेशपर मगर कारगरसर् शासन कर रहा था । उक्त तिथिको मालियूर अग्रहारमे स्थित ब्रह्मजिनालय वसुदिको भद्र-

राशिसेट्टिने कुछ दान दिया था । मूलमंघ-काणूरगण-मेघपापाणगच्छके प्रभाचन्द्र मित्रान्तदेवके निप्य कुलचन्द्रपण्डित भद्रराधि सेट्टिके गुरु थे ।]

[१० रि० मी० १९३० पृ० २४५]

२१५

तिरुप्परुत्तिकुण्डम् (चिगलपेट, मद्रास)

राज्यवर्ष १३ तथा १७ = मन् ११३१ तथा ११३५, तमिल

[यह लेख चोल राजा परकमग्विमन् विक्रमचोलके राज्यवर्ष १३का है । इसमें विलयार्की ग्राममना-द्वारा शैलोनयनाथजिनमन्दिरके लिए कुछ भूमि करमुक्त रूपमें देची जानेका उल्लेख है । इसीके बाद इसी राजाके १७वें वर्षमें तिरुप्परुत्तिकुण्डकी कुछ भूमि आरम्भनन्दिकी देची जानेका भी उल्लेख है ।]

[रि० मा० ए० १९२८-२९ क्र० ३८१ पृ० ३७]

२१६

लक्ष्मेश्वर (मैसूर)

मन् ११३२, कन्नड

[इस लेखमें गोगियवमदिके इन्द्रकीर्ति पण्डितका उल्लेख है । उन्होंने तथा पेण्डे भरिलयण आदिने वसदिकी भूमिमें घर आदि बनवानेके कुछ नियम बनाये थे । हेमदेव-द्वारा वसदिके पुजारीको कुछ भूमि दान दी जानेका भी उल्लेख है । तिथि ज्येष्ठ पूर्णिमा, परिव्रावि सधत्सर, भूलोक-वर्ष (चालुक्यमन्नाद भूलोकमत्तका राज्यवर्ष) ७, बुधवार इस प्रकार दी है ।]

[रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ४८ पृ० १६४]

२१७

बहुरीधंद (जि० जवळपुर, मध्यप्रदेश)

१२वीं मदी-पूर्वाध, संस्कृत-नागरी

स्वस्ति ' 'वदि ० सीमे श्रामदृगयाकर्णदवधिनयगज्ये राष्ट्रकूटकूटोद-
 मवमहाभामंताधिपतिश्रामदृगोल्हणःवस्य प्रवर्धमानस्य ॥ श्रामदृगोल्हा-
 पूर्वास्नाये वेदप्रभाटिकायामुरुकूनास्नाये नरुंनार्किरुचूडामणिश्रामन्माव-
 नदिनानुगृहीतः माधुश्रामवर्धरः तस्य पुत्र. महाभोज धर्मदानाभ्ययन-
 र्गम् । तनेदृ क्कानिं रस्यं ज्ञानिनावस्य मंदिं ॥ स्वच्छायममजकमृत्रागः
 श्रंष्टिनामा चितानं च महाभ्येनं निर्मितमनिमुंदर ॥ श्रीयदृकगचार्या-
 स्नायदृग्वागणान्त्रयं ममस्त्रिय्याचिनयानंदितविद्वजनाः प्रतिष्ठाचार्य-
 श्रीमम्भद्राष्टिवं नयंतु ॥

[यह लेख कलचुरि, राजा गणकर्णक, मामन्त राष्ट्रकूट गोल्लणदवर्क
 राज्यमानमें लिखा गया है । वेण्णप्रभाटिका गाँवमें गोल्लापूर्य तानिका
 महाभोज नामक श्रावक था । या माधवनन्दिके जिये मवर्धरका पुत्र था ।
 उगनें ज्ञानिनावका एक मुन्दर मन्दिर बनवाया । इस मन्दिरकी प्रतिष्ठा
 चन्द्रकगचार्यास्नाय-देर्जागणके आचार्य मुगडके हाथों हुई थी ।]

[इन्क्रियन्म आफ दि क-रुर्गि-वेदि एग पू० ३००]

२१८

आदिनाथमन्दिर, नाडुल्लाई (जि० देगुरी, गजराज)

संवत् ११८० = मन् ११३३, संस्कृत-नागरी

१ ओं ॥ संवत् ११८० भावमुदि पंचम्या श्रीचाहमानान्त्रय श्री-
 महागजाविगत (शयपा) ळ

- ० देव तन्म्य पुत्रो रुद्रपालश्चमृतपा (लीं) ताभ्यां माता श्रीराज्ञी मा
(त्त) हृदेयी तथा (नद्) ल (टा) गिका-
- ३ यां सता परजर्ताना (रा)ज कुठपल (म) ध्यान पलिकाद्वय
घाण (रु) प्रनि अर्माय प्रदत्त । भ० वागामि-
- ४ अग्रसुव्यममस्तगामीणक । रा० तिमटा द्वि० मिरिया वणिक
पोसरि । लस्मण एते मा ।
- ५ खिं कृत्वा दत्त । लोपकस्य यदु पापं गौहत्यासरमूण । ग्रह-
हत्यासतेन च । तेन
- ६ पापेन लिप्यते स ॥ श्री ॥

[यह लेख मवत् ११८९ में चाहमान राजा रायपालके राज्यमें लिखा गया था । इसके दो पुत्र थे—रुद्रपाल तथा अमृतपाल । इनकी माता मानलदेवीने नहुलडागिका आनेवाले यतियोंके लिए कुछ दान दिया था ।]

[ए० इ० ११ पृ० ३४]

२१६

तिरुनिडंकोण्डै (मद्रास)

सन् ११३४, तमिल

[यह लेख परकेसरिवर्मन् विक्रम चोल राजाके १६वें वर्षमें लिखा गया था । इसमें वैशाखि मासमें उत्सवोंके अवसरपर अरुमोलिदेव (अर्हत) तथा नित्यकल्याण देवकी पालकी-यात्राकी व्यवस्थाके लिए मलयन् मल्लन् अर्थात् विक्रमचोलमल्लन-द्वारा कुछ भूमि दान दिये जानेका उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३१० पृ० ६६]

२२०

शेरगढ (कोटा, राजस्थान)

मवत् ११९१ = सन् ११३५, मस्कृत-नागरी

- १ माद्रिह्यमायान्तिमा—स्य तिलके सूर्याश्रमे प (त्त) ने । श्रापालो गुणपालकञ्च विपु-
- २ ले गण्डि (लुवा) ले कुले स्य (यी) चन्द्रमसाचिवाम्बरतले प्राप्ता क्रमान्मालवे ॥१॥ श्रापालादिह देवपालतनयो दानेन चिन्नामणि(ः) शा-
- ३ (न्नेः श्री) गुणपालकङ्कुरसुनाद् रूपेण कामोपमात् । पूर्णामर्थ-जनसङ्घकप्रभृतय पुत्राञ्च येप्रा नव तैः सर्वैरपि कौश्रवधेनत-
- ४ ले रत्नत्रय कारित() ॥२॥ वर्षे रुद्रशतैर्गते शुभतर्करकानव-स्थाधिकैर्वैशाख(श्वे) धवले द्वितीयदिवसे देवान् प्रतिष्ठा-
- ५ पितान् । वन्दन्ते नतदेवपालतनया माल्हुमधान्वाढय पूर्णा-शान्तिमुत्तञ्च नेमिभरता श्रीशान्तिमखुन्धरान् ।
- ६ ॥३॥ द्वादिसूत्रधारोत्पन्नः शिलाश्रीसूत्रधारिणा । शान्तिबुन्धरना-मानो जयन्तु घटिता जिनाः ॥४॥ देवपालसु-
- ७ तेल्लुङ्ग गोण्डिवीमललल्लुक मोक हरिश्चन्द्रादि नागासुपुत्र () अल्लक ॥५॥ मवत् ११९१ वैसाप सुदि ० (म)-
- ८ गलढिने प्रतिष्ठा कागपिता ॥

[यह लेख वैशाख शु० २, मगलवार, मवत् ११९१ का है । इस समय खण्डिल्लवाल कुलके शान्तिके पुत्रोने रत्नत्रय अर्थात् शान्ति, कुन्ध तथा अर इन तीन तीर्थकरोकी मूर्तिर्या स्थापित की थी । इनका निर्माण सूत्रवार दादिके पुत्र शिलाश्रीने किया था ।]

[ए० ड० ३१ पृ० ८३]

२२१

कोल्हापुर (महाराष्ट्र)

शक १०५८ = सन् ११३५ कन्नड

- १ श्रीमत्परमर्गमीरस्थाद्वाढामोधलाञ्जन । जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य
शासन जिनशासन ॥ (१) स्वस्ति समधिगतपंचमहाशब्द
महाम-
- २ ण्डलेश्वरं । तगरपुरवराधीश्वरं श्रीशिल्लाहारनरं । जीमूत-
वाहानान्वयप्रसूत । सुवर्णगरुडध्वज सरबोक्कनर्प । अय्यन
- ३ सिंग । रिपुमण्डलिकमैरव । विद्विष्टगजकण्ठीरवं । इहुवरादित्य ।
रूपनारायण । कलियुगविक्रमादित्य । क्षनिवारसिद्धि गिरिदु-
- ४ गंलघन । श्रीमहालक्ष्मीदेवीलब्धवरप्रसादादिसमस्तराजावली-
विराजितरूप श्रीमन्महामण्डलेश्वर गण्डरादित्यदेवरु वल-
वाहद ने-
- ५ लेवीदिनल् सुखसकथाचिनोददि राज्यगेय्युत्तमिरे । तत्पाठपद्मोप-
जीवि समधिगतपंचमहाशब्द महासामन्त । विजयल-
- ६ क्षमीकान्न । रिपुसामन्तसीमन्तिनीसामन्तभग । वीरवरागना-
प्रियभुजग । वैरिमासन्तमंघविघटनसर्मारणं । नागलदेविय
गन्धवा-
- ७ रण विद्विष्टसामन्तविलयकालं । सामन्तगण्डगोपालं । टायानसा-
मन्ततारासुरवीरकुमार । सामन्तकंठार । तोण्डसामन्त-
पुण्डरीक-
- ८ षण्डप्रचण्डमन्त्रवेदण्ड । गण्डरादित्यदेवदक्षदक्षिणभुजाद्रण्ड ।
याचरुजनमनोभिलपितविन्तामणि । सामन्तक्षिरोमणि । जिन-
चरणसरसिह-

- ९ द्रमधुकरं मन्यन्स्वरत्नाकरनाहाराभयभयशशास्त्रदानविनोदं
पद्मावतीदेवीलब्धवरप्रसाद । नामादिममस्त्रप्रशस्तिमहित श्री-
मन्महा ।
- १० मामन्न । निवदेवरसरु । कवडेगोस्त्रलठ वलिय सन्तेय मुद्गोडे-
यल् माडिमिट वमदिय पाडवनायदेवरष्टविशार्चनक्कमा वसदिय
जीर्णाद्वारक्क-
- ११ नल्लिप्प ऋपियराहारदानक्कं । स्वास्ति । समस्तभुवनविल्यात-
पचशतवीरशामनलब्धानेकगुणगणालकृत सत्यगौचाचारचार-
चारित्रनयविनय-
- १२ विज्ञान वीरवल्लुधर्मप्रतिपालन विशुद्ध गुडुवजविराजमानानून-
माहसोत्तुग कीर्त्यङ्गनालिंगित निजभुजापाजितविजयलक्ष्मा-
निवामवक्षस्यलहं
- १३ भुवनपराक्रमोन्नत वासुदेवखण्डलीमूलमद्रवशोद्धवरं । भगवती-
लब्धवरप्रसादरं । तावु काडि सोलदरं । मरुवक्कमारिगलु
परस्त्रोपर
- १४ धनवर्जितहं चनुप्यष्टिकलेगलोल् प्रवीणरप्पुदरिं । ब्रह्मनन्नरं ।
चक्रमुल्लुदरिं नारायणनन्नरं । दृष्टियोल् नोडि कोल्लुदरिं ।
कालाग्निरदनन्नर । को-
- १५ न्त्रग्नरमि कोल्लुदरिं । परशुरामनन्नरं । तुलिदु कोल्लुदरिं ।
मदान्धगन्धमिन्धुरदन्नरं । गिरिदुर्गमं मरेवोक्करं तेगेदु कोल्ले-
डेयोल् मिहदन्नर ।
- १६ पातालम पोक्करं कोल्लेडेयोल् वासुगियन्नरं । आकाशदोलिदरं
कोल्लेडेयोल् गरत्तनन्नरं । पेपिनल् पृथिव्यन्नरं । दिण्पिनल्
कुळगि-
- १७ रियन्नरं । गुण्पिनल् महासमुद्रन्नरं । उद्योगदल् रामनन्नरं ।

- पराक्रमदौल् पार्थनन्नरु । द्वाचदौल् गांगियनन्नरु । साहमदौल्
मामनन्न-
- १८ रु । धर्मदौल् धर्मपुत्रनन्नरु । ज्ञानदौल् सहदेवनन्नरु । भोगदलि-
द्रनन्नरु । त्यागदौल् कर्णनन्नरु । तेजदलादित्यनन्नरु । अहिच्छत्र-
मेनिसुवच्यचोलेपुरप-
- १९ रमेश्वररुमप्पयन्पूर्स्वामिगल्लु गवरंयरु । गात्रियरु । सेट्टियरु ।
सेट्टियुत्तरु । गामण्डरु । गामण्डस्वामिगल्लु । वीर
- २० रु । बीरवणिगरु । कोल्लापुरदु विलपाणसेट्टियु । गोविन्द्रसेट्टियुं ।
कोमर अण्णमच्यनु । मिरिंजेय बिज्जसेट्टियु । बोप्पिसे-
- २१ ट्टियु । गण्डरादित्यदेवर राजश्रेष्ठि वेसपच्यसेट्टियरु । आ मण्ड-
लेइवरन वीद्विन वस्मिसेट्टियु । कूट्टिपट्टनदादित्यगृह-
- २२ ट सासनिग हंग्गडे रावसेट्टियु । चौधोरे बोप्पिमेट्टियु । तोर-
वणेय प्रभु कन्नपच्यसेट्टियु । मयिसिणेय काजगार चौधो-
- २३ रे गोरविसेट्टियु । वलेयवट्टणद शान्तिसेट्टियु । अच्यचोलेय्य-
नूर्वर सिंगं हालियसेट्टियु । कवडेगोल्लद प्रभु खप्परच्यना-
- २४ ट्टियागि समस्तदेश नेरेट्टु । क्षकवर्षद सासिरदय्वत्तेनेय
राक्षससवरसरद कार्तिकवहुल पवाम सोमवारदट्टु श्रीमूलसंघ-
- २५ देसीयगण-पुस्तकगच्छद कोल्लापुरदु श्रीरूपनारायणवसदिया-
चार्यरप्प श्रीश्रुतकीर्तित्रैविद्यदेवर् काल कर्षि । धारापू-
- २६ र्वकमागि कोट्टायमेन्तदोडे अदकं हेरिगे अच्यत्तु । जवलक्किर्षत्तु
हसरकरय्दु । एले हेरिगे नूरु । तलेवोरेगच्यत्तु । हसरक्किर्ष-
- २७ त्तय्दु । तुप्पमेण्णेर्येविधु कोदवके सोल्लगे सिद्धिगेगरवाण सगडि-
गोर्माण दूसिगवसरक्कमक्कसालेग होंगे हण । हत्ति मल्लवेग-
- २८ य्वल । मण्डिय करुसेय मल्लवेगेरदु वीसिगे । जवलक्कं पल

- पत्त । लंकरोकलल्लि आरु तिगलग्गे मणेतिविंगं मरविद्येविबो-
न्दक्कु । वपंक्के म-
- २९ चत्रोन्ऱक्कु । अल्लवरिमिन शुण्ठि वेल्लुटिल वजे मद्रमुस्तथेविद्यु
मोदलागि तूगि मास्त्र मण्डगलग्गे हेरिगय्वल्लं जवलक्किप्पल
हम-
- ३० रकोप्पलं जीरगे मेलसु मामविद्येविद्यु हेरिगोम्मान जवलक्क-
रवन हमारक्के मोल्लगे । उप्पु मोदलागि हन्निन्दु ध्यान-
- ३१ गलग्गं मडिगे कोलगवौदु हेरिगे मानवेरहु तलेवोरंगोमानं थाडु
कायेविद्यु मडिगे हत्तु तलेवारंगे नालक्कक्कु । अण्डगे ढण्डगे
वौदु ।
- ३२ सेवेयट्टु ह्टेयेरडक ढण्डगे वौदु सेवेयेरहु हूधिन हेडलिगेगे
माले वौन्दु कुवररिल्लि हसरक्के मडके वौन्दु ॥ इन्तीया-
- ३३ यमनञ्जिडातानि वाणराणिकुस्त्रञ्जेत्राडिगल्लोल् पंचमहापातकर्म
माडिड फलमकुं ॥

[इस लेखका माराग द्वितीय भागमें क्र० ३०२ में दिया है किन्तु उस समय मूल लेख प्रकाशित नहीं हुआ था । यह लेख गिलाहार वगके महामण्डलेस्वर गण्डरादित्यके समय शक १०५८ में लिखा गया था । इसका नामन्त निम्बदेव था जिमने तोण्डमण्डलके युद्धमें दूरता प्रदर्शित की थी । निम्बदेवने कवडेगोल्ल नगरमें एक जिनमन्दिर बनवाया था । इसके बाद वीरवल्लज लोगोंके मंधका विम्भूत वर्णन है । उसके प्रतिनिवियोंने कोल्हापुरके रूपनारायण जिनमन्दिरके व्यवस्थापक मूलमघ-देशीय गणके श्रुतकीर्ति त्रैविद्यको कवडेगोल्ल जिनमन्दिरके लिए उक्त तिथिको कुछ करोका उत्पन्न दान दिया ।]

२२२

कोल्हापुर (महाराष्ट्र)

१२वीं सदी-पूर्वाध्वं कच्छड

महालक्ष्मी मन्दिरमें छतके खम्भोंपर

[यह लेख शिलाहार राजा गण्डरावित्यके समयका है । इनके सामन्त निम्बने एक चैत्यालय बनवाया था । नाकिराजकी कन्या कणदिवीका भी उल्लेख है जो एक रानी थी । कोण्डकुन्दान्वयके माधनन्दि आचार्यका भी उल्लेख है ।]

[रि० इ० ए० १९४५-४६ क्र० ३५१]

२२३

तिरुनिडंकोण्डै (मद्रास)

सन् ११३७, तमिल

[यह लेख कुलोत्तु ग चोलदेव (द्वितीय) के राज्यवर्ष ४ में लिखा गया था । आलप्पिरन्दान् मोगन् उपनाम कुलोत्तु गचोलकाडवरायन्-द्वारा कच्चिनायनारु (चन्द्रप्रभ) की पूजाके लिये जननाथमगलम् गाँवके उत्पन्न-से ४२० कलम् (नापका प्रकार) चावल अर्पण किये जानेका इसमें उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३११ पृ० ६६]

२२४

गणपचरम् (गुण्टूर, आन्ध्र)

११वीं-१२वीं सदी, तेलुगु

[यह लेख थावण क्षु० ३ का है — अक्षरवर्षके अक्षर लुप्त हुए हैं । कुलोत्तुग राजेन्द्रके पुण्यवृत्तिके लिए अक्षरसाल कामोजु-द्वारा कुछ दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है । अन्तमें चन्द्रप्रभजिनालयका उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९१५-१६ पृ० ४३ क्र० ४५८]

२२५-२२७

तिरक्कोल (उ० अर्काट, मद्रास)

११वीं-१२वीं सदी, तमिल

[इस लेखमें तण्डपुरम्की पल्लि (जैनवसति) के लिए एरणन्दि उपनाम नरतोग पल्लवरैयन्-द्वारा कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है। यह ग्राम पोन्नूरनाडुमें सम्मिलित था। यहीके एक अन्य लेखमें शोम्बियन् शोम्बोत्तिलाडणार्-द्वारा कनकवीर शित्तडिगल्को कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है। यह चोल राजा परकेसरिवर्मन्के १२वे वर्षका लेख है। तीसरा लेख स्थानीय वर्धमानमन्दिरके दो स्तम्भोपर है। ये स्तम्भ अक्षमोलिदेव-पुरम्के इडैयारन् आट्कोण्डान् मावीरन्-द्वारा स्थापित हुए थे।]

[रि० सा० ए० १९१५-१६ क्र० २७६-२८० पृ० ९१]

२२८-२३०

चस्तिहल्लि (मैसूर)

१२वीं सदी-पूर्वार्ध, कन्नड

[यहाँ तीन लेख हैं। एक जिनमूर्तिके पादपीठपर मूलसध-देसियगणके-कुक्कुटासन-मलघारिदेव के शिष्य शुभचन्द्र सिद्धान्तिदेवके शिष्य दण्डनायक गंगपय्यका नामोल्लेख है। एक दूसरे मूर्तिके पादपीठपर मूलसध-देसियगणके दिनकरजिनालयमें हेगडे मल्लिमय्य-द्वारा मूर्तिस्थापनाका उल्लेख है। इस मन्दिरके द्वारके लेखमें इस मन्दिरकी स्थापनाका वर्ष सन् ११३८ दिया है।]

[ए० रि० मै० १९११ पृ० ४४]

२३१

नाडलार्ई (जि देमूरी, राजस्थान)

सन् ११९५ = सन् ११३९, सस्कृत-नागरी

१ ओं नम सर्वज्ञाय ॥ संवत् ११

- २ ९५ आसडज वदि १५ कुजे ।
 ३ अद्येह श्रीन (हू) लडर (गि) काया महा-
 ४ राजाधिराजश्रीराय (पा) लदेवे । धिज -
 ५ थी राज्य कुर्वतीत्येतस्मिन् काले
 ६ श्रीमदुजिततीर्थ श्री (ने)मिनाथदेव-
 ७ स्य द्वीपधूपनैवे(ध)पुष्पपूजाधर्थे गू -
 ८ हिलान्त्रय राठ० ऊधरणसूनु
 ९ ना भोक्तारि ठ० राजदेवेन स्वपु-
 १० पयार्थे स्वीयादानमध्यात् मार्गे[ग]
 ११ च्छत्तानामागताना वृषभानाशेके (पु)
 १२ यदाभाव्य भवति तन्मध्यात् विं(श)
 १३ विमो भागः चंद्रार्कं यावत् देवस्य
 १४ प्रदत्तः ॥ अस्मद्वशीयेनान्धेन वा
 १५ केनापि परिपथा न करणीया
 १६ अस्मद्वत्तं न केनापि लोप(नी)य ॥
 १७ स्वहस्ते परहस्ते वा य कोपि लाप -
 १८ यिष्यति तस्याह करे लग्नो
 १९ न लोप्य मम शासनमिद । लि०-
 २० (पा)सिलेन ॥ स्वहस्तोय सामि -
 २१ ज्ञानपूर्वकं राठ० रा(ज)देवे-
 २२ न मतु दत्त ॥ अत्राह साक्षि-(जा)-
 २३ ज्योतिषिक (दूद)पासूनुना गूगि-
 २४ ना । तथा पळा० पाला० । पृथि
 २५ वा १ मागु(ला) ॥ देपसा । रा
 २६ पसा ॥ मगल महा (श्रीः) ॥

[उक्त लेख मवत् ११९५ मे चाहमान राजा रायपालके राज्यमे लिखा गया था । इसमें नदूलडागिकाके नेमिनाथमदिरके लिए ठा० राजदेव द्वारा कुछ दान दिये जानेका निर्देश है]

[ए० इ० ११ पृ० ३६]

२३२

नाडलाई, (जि देमूरी, राजस्थान)

सवत १२०० = सन् ११४४, संस्कृत-नागरी

- १ ओ मव(व) । १२०० जेष्ट (सु)दि ५ गुरा श्रीमहाराजाधिराज-श्रीरायपालदेवराज्ये—हास -
 - २ ममये रथयात्रायां आगतेन रा० राजदेवेन आत्म-गड्डलामध्यात् (मवसाठतपुत्र) विसो—
 - ३ पको वृत्त । आत्मीयघाणकतेलव(ल)मध्यात् । मातानिमित्तं पलिकाद्वय । प्ली २ वृत्त ॥ म-
 - ४ हाजनग्रमीण । जनपदसमक्षाय । धर्माय निमित्तं विसोपको १ पलिकाद्वयं वृत्त ॥ गोह -
 - ५ स्थानां महत्त्वेण ब्रह्महत्यामतेन च । स्त्रीहत्याभ्रूणहत्या च जतु पाप तेन पापेन लिप्यते स ॥
- [यह लेख मवत् १२०० में राजा रायपालके राज्यमे लिखा गया था । यात्राके लिए आये हुए रा० राजदेव-द्वारा कुछ दान दिये जानेका इसमें निर्देश है ।]

[ए० इ० ११ पृ० ४१]

२३३

कम्बदहल्लि (मैमूर)

सन् ११४५, कन्नड

[इस लेखमें होयसल राजा नरमिहके दो दण्डनायक मरियाने तथा

भरतिमय्य-द्वारा शान्तीश्वरवसदिके लिए, मोदलियहल्लि ग्रामके दानका उल्लेख है। यह दान क्रोधनरावत्तरका है। तदनुसार मन् ११४५ का यह लेख है। ये दण्डनायक भाचार्य गण्डविमुक्तदेवके शिष्य थे।]

[ए० रि० मं० १९१५ पृ० ५१]

२३४

चालेहल्लि (धाग्घाट, मैसूर)

राज्यवर्ष ८ = सन् ११४५, कन्नड

[यह लेख चालुक्य मन्नाट् जगदेरुमल्लदेवके राज्यवर्ष ८, क्रोधन रावत्तरमें फाल्गुन शु० १, रविवारके दिन उत्कीर्ण किया गया था। वम्पिमेट्टिने बालेयहल्लिमें पादर्वनाथमन्दिरका निर्माण किया तथा उमकी रक्षाके लिए देमिगण, पुस्तकगच्छ, (कोण्डकुन्द) बन्वयके मलवारिदेवको कुछ दान दिया ऐसा हममें उल्लेख है। मन्दिरकां दिये गये कुछ अन्य दानोका भी हममें उल्लेख है।]

[रि० ड० ए० १९४७-४८ क्र० १७६ पृ० २२]

२३५

नाडलार् (जि० देसूरी, गजस्थान)

संवत् ११०२ = सन् ११४६, मस्कृत-नागरी

- १ श्री ॥ संवत् १२०० आमोज वदि ५ शुक्रे श्रीमहाराजाधिराज-श्रीरायपालदेवराज्यं प्रवर्त(माने)
- २ श्रीमदलडागिकाया रा० राजदेवठकुरेण प्रव(र्त)मानेन श्रीमहा-धीरचैत्ये माधुत-
- ३ पोधननि(प्राधे) श्रीश्रामिनवपुशीय वशायी अ(त्रि)पु स(म)स्त-वणजारकेपु टेमी मिलित्वा वृ -

४ (प) म (म) रिन जनु पाइलालगमाने ततु वीस प्रति रुआ २
किराडठभा गाड प्रति रु १ वण -

५ जारकै धर्माय प्रदत्तं ॥ लोपकस्य जनु पापं गोहत्यामहत्तेण
ब्रह्महत्यासत्तेन पापेन लिग्यते स ॥

[यह लेख नवन् १२०२ मे चाहमान राजा राजपालके राज्यमें
लिखा गया था। इसमें नदूलडागिकाके महावीर मन्दिरमे आये हुए नाबुआ-
के लिए ठ० राजदेव-द्वारा कुछ दान दिये जानेका निर्देश है ।]

[ए० ई० ११ पृ० ४२]

२३६

कुण्टन होसल्लि (जि० धारवाड, मैसूर)

राज्यवर्ष १० = सन् ११४८, कन्नड

वसवण मन्दिरके मर्माप शिलापर

[यह लेख खराव हुआ है। चालुक्य सम्राट् जगदेकमल्लके समय
दसवें वर्ष, प्रभव मंवलरमे यह लिखा गया था। नागिनेट्टि-द्वारा किसी
जैन देवताको कुछ जमीन दान दिये जानेका इसमें निर्देश है। कदम्ब-
वंशीय तैल मण्डलेण तथा आचलदेवीका भी इसमें उल्लेख है ।]

(रि० ई० ए० ११५०-५१ क्र० ६८)

२३७

नीरल्लिगि (धारवाड, मैसूर)

राज्यवर्ष १० = सन् ११४८, कन्नड

[यह लेख चालुक्य राजा जगदेकमल्लके राज्यवर्ष १० में पुष्य गु०
१३, गुस्वार, उत्तरायण सक्रान्तिके दिनका है। इसमें नेरिल्लिगि नाल्प्रभु
मल्लगावुण्ड-द्वारा स्वनिर्मित मल्लिनाय-जिनाल्लिके लिए कुछ भूमि मूलसध-

सूरस्य गण-चित्रकूट गच्छके हरिणन्दिदेवको अपित की जानेका उल्लेख है ।
मल्लगावुण्ड चतुर्भुजातिका व्यक्ति था ।]

[रि० मा० १० १९३३-३८ ४० ई० ६१ पृ० १२४]

२३८

करगुदरि (जि० घाग्घाट, मीमूर)

सन ११४८, कन्नड

[यह लेख पीप शुक्ल १, सोमवार, प्रभव मन्वन्तर, के दिन लिखा गया था । महावट्टुव्यवहारि कल्लिमेट्टि-ढाग करेगुदुरेमें विजयपार्श्वजितेन्द्र मन्दिर बनवाया गया उसे कुछ जमीन दान देनेका इममें निर्देश है । यह दान सूरस्य गण, चित्रकूट अन्वयके वामुपूज्यके शिष्य हरिणन्दिके शिष्य नागचन्द्र भट्टारकको दिया गया था । उस समय महाप्रचण्डदण्डनायक सोवरसका शासन हानुगल ५०० के प्रदेशपर चल रहा था तथा उसके एक भागपर मण्डलेश कदम्बवर्गीय तैलका अधिकार था । इस समय चालुक्य प्रतापचक्रवर्ती जगदेकमन्ल मन्नाट थे ।]

[रि० इ० ए० १९५०-५१ क्र० ६७]

२३९

हुलगूर (जि० बारवाट, मीमूर)

१२वीं सदी - मध्य, कन्नड

[यह लेख अधूरा है । चालुक्य मन्नाट जगदेकमन्लके समय पुरिगेरे नरः तन्वोल प्रदेशोपर महाप्रचण्डदण्डनायक वावणरम शासन कर रहा था । इसका सामन्त मण्णेर कुलका जयकेशी या जो पुरिगेरेके राष्ट्रकूट पदका अधिकारी था । इसके समयकी एक जैन श्राविका नालिकन्वेका इन लेखमें निर्देश है ।]

(रि० सा० ए० १९४४-४५ एफ् ३२)

२४०

शृंगेरी (मंसूर)

शक १०७१ = मन् ११२०, कन्नड

- १ श्रीमत्तरमगंमोगन्याद्वादानोघलां-
- २ छलं जीयान् त्रेलाक्यनायन्य ग्रामनं जितशामन
- ३ स्वस्ति श्री(म)नु मन्वन्पंगलु १०७१ ने प्रमोद-
- ४ तमंवंमरद वयिमाग्माम्मद शुद्ध मसमि
- ५ म दन्दु श्रीकाणूरुगण मूलसध
- ६ पुस्तकगच्छका इममे उल्लेख है।
- ७ मगल

[यह लेख पाश्चिमायतनदिके मुचमण्डपके एक पापाणपर है । वैनाख नु० ७, शक १०७१, प्रमोदून नवम्बर इम तिथिका तथा मूलसध-काणूर-गण-पुस्तकगच्छका इममे उल्लेख है । लेख अस्पष्ट होनेसे इमका उद्देश्य ज्ञादि विवरण ज्ञात नहीं हो सकता ।]

[ए० रि० मै० १९३४ पृ० ११३]

२४१

अरसीवीडि (विजापूर, मैसूर)

चालुक्यविक्रम वर्ष ७६ = मन् ११२१, कन्नड

[इम लेखमें चालुक्य राजा त्रेलाक्यमल्लदेवके नामन्त वीरचाउण्डरम तथा उमका पत्नी देमलदेवी-द्वारा पीप व०-२, बुधवार, चालुक्य विक्रम वर्ष ७(६)के दिन मूलसध-देशियगणके आचार्य नयकोति मिद्धान्तदेवके शिष्य नेमिचन्द्र पण्डितदेवको कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ई ३३ पृ० ४३]

२४२-२४३

छुतरपुर (मध्यप्रदेश)

सं० १२०८ = सन् ११५१, सस्कृत-नागरी

[ये दो लेख लखनऊ म्युजियमकी दो मूर्तियोंके पादपोठोपर हैं। ये मूर्तिया छतरपुरसे प्राप्त हुई थी। सुविधिनाथ तथा नेमिनाथकी इन मूर्तियोंकी स्थापनातिथि आपाढ शु० ५, गुस्वार, सं० १२०८ थी ऐसा लेखमें कहा है।]

[मे० आ० सं० ११ (१९२२) पृ० १४]

२४४

स्टेट म्युजियम, भरतपुर (गजस्थान)

सं० ११०९ = सन् १०५३, सस्कृत-नागरी

[इस लेखमें ज्येष्ठ शु० (?) रविवार, मवत् ११०९ के दिन पार्व-नाथमूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। लेख मूर्तिके पादपोठपर उत्कीर्ण किया है।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० १६३ पृ० २१]

२४५

शेडवाल (वेलगाँव, मैसूर)

शक १०७५ = सन् ११०३, कन्नड

[यह लेख बसवण्णमन्दिरमें लगा हुआ है। इसमें सेगिग कोत्तलि-द्वारा निर्मित जिनमन्दिरके लिए कुछ करोके उत्पन्नके दानका उल्लेख किया है। तिथि चैत्र शु० ५, रविवार, श्रीमुख सवत्सर शक १०७८ ऐसी दी है। किन्तु तिथि आदिकी गणनानुसार यह शक १०७५ का लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० १८७ पृ० ३६]

२४६

वैलूर (मंभूर)

शक १०७६ = मन् ११५३, कन्नड

- १ निन्द्योपशान्त्रवाराणिपारगैः । श्रीवर्धमानस्वामिगल धर्मतार्थ प्र -
- २ मद्रवाहुमट्टारकरिद्रं । भूतवलिपुष्पद्रंनस्वामिगलिद्रं । एकसधि-
सु(मानिगलिद्रं भ) -
- ३ कलकडंवरिद्रं । वक्रग्रीवाचार्यरिद्रं । वज्रणट्टिमट्टारकरिद्रं
सिंहणं(द्रि कनक-)
- ४ न्नेन वाट्टिराजडंवरिद्रं । श्रीविजयदेवरिद्रं । शातिडंवरिद्रं पुष्प-
मेन(देवरिद्रं ।)
- ५ अजिनमेनपंडितडंवरिद्रं । कुमारमेनडंवरिद्रं । मल्लिपेण मलधा-
गिद्रं(वरिद्रं)
- ६ (श्रु)नकीति श्रीपाल घरवाणिश्रीपालं थिरुडवाट्टिमडविस्फालं ॥
तमगे -
- ७ (भ)मडंत्ति धरंगेडडे तम्म मुखडंळ् पट्टुर्कवारारिशिविभ्रममापो
- ८ र्म्म कील्पाडिमिन्नु पेपिनेसकं श्रीपालयोगीन्द्र ॥ आवन
त्रिपयमो
- ९ (ग)अपद्यवचोविन्यास निसगंविजयविलासं । कश्चिद् वाट्ट-
त्रिनोडकोविद .
- १० दक्ष कश्चन कश्चनापि नमको वाग्मी पर कश्चन । पाडित्ये
सुचतुविधेपि निपुण श्रीपालदेव पुनस्तर्कन्याकरणानम-
- ११ प्रवणवीश्ट्रैविद्यविद्यानिधि । अवर मधमर् । वगंत्यागड
सूचितमार्गोपन्यासदलम मानुंडियक्कामर्गगवरिद्रे-
- १२ नक्के निरगलमादत्तनन्तर्चार्यं व्रतियोल् ॥ आ श्रीपालत्रैविद्यदेवर
शिष्यर् ॥ श्रीमत्त्रैविद्यविद्यापतिपदकमलारा-

- १३ धनालव्यवृद्धि. सिद्धातामोनिधानप्रविसरदसृतास्वात्पुष्टप्रसोद ।
 दाक्षिणाक्षिसुरक्षाक्रमकृतिनिपु-
- १४ ण सन्तत भव्यसेव्य सोय दाक्षिण्यमुर्तिर्जगति विजयते
 वासुपुत्र्यवर्तोद्ग ॥ मन्थकौचकरुणागुणोत्करैरस्य-
- १५ क्तलोभमदमानरोपणं । शुद्धवृत्तियुतधाधर्म्मैर्वाद्रिराज मुनिराज
 राजसे ॥ श्रापालत्रैविद्यश्रोपादप-
- १६ मान्तरगसगतभृग श्रीपरिपूर्ण होय्सलभूपालक्रमत्रि माचदण्डा-
 धांश ॥ जिननास पोरंठ नृपालतिलक श्री-
- १७ विष्णु (भूपा)लक जनक स प्ररंयगवेगडे जगद्विरयाते राजन्वे
 ताथ् तनगिाञ्चम्मडिदण्डनायकने ता माव महामत्रि
- १८ येभेनला माचिणदण्डनायने वल धन्य पर धन्यने ॥ सुरगुर-
 मत्रक्रमदोल् धुरदोल् सिंहप्रतापनप्र-
- १९ तिमतेज सुरतरु वितरणगुणदि नरसिंहमहोशमंत्रि माचचमूप ॥
 स्वस्ति ममस्तप्रशस्तिमहित श्री-
- २० मन्महाप्रधान माचियणदण्डनायक तनगे ब्रवगुरगल्लु श्रुतगुरु-
 गल्लुमैनिसिद परवादिमल्ल-
- २१ चादीमर्मिह महामण्डलाचार्य श्रापालत्रैविद्यदेवर् माडिसि-
 दादिदेवर उसदिय केरसठ कोरतंग देवर्
- २२ अष्टविधाचनेग ऋदियराहारदानककवागि शकवर्ष १०७६ नेय
 श्रीमुखसवस्तरदुत्तरायणसक्रमण-
- २३ ददु महादानगल माहु तिर्पा समयदोले माचिणदण्डनायक
 विन्नप गेय्यल् होय्सलश्रीनारसिं-
- २४ हदंवर् कब्बुणाड नागरहाल सर्ववाधापरिहारवागियादिदेवर्गे
 धारापूर्वक माडि कोट्ट दत्तिय-
- २५ तु देवदानवादा नागरहाल चतु.सामेयप्पुदु मूडलु क्कल दोणे
 सचरिवल्ल । आग्नेयदल्लु कडवट्टो

- २६ लठ होरेयणि भागवागि बन्द हेववटे । तेंकल् जालुदहल्ल नल्लि
हडुवल्लु कंदलिरहल्ल । नैऋत्यदल्लु हुलियद-
- २७ रजाल हडुवल्लु हुलियहल्ल । वायव्यदल्लु सुल्लद हिरियकणि ।
वडगल् भागेडेगे होइ हेंद्वारियव-
- २८ डगण मोरडि । इंसान्यदोल् कोडेयाळवल्लि तेकल्लु नद कल्लु ।
इती चतुःमीमे वेरसु नागरहाल वल्लजिना (ल)य-
- २९ क्के सर्वनमस्यवागि पडिसलिसुववगे गगेय तडियल् सायिर
कविलेयं कोडुं कोलुगुमं होन्नल्लु कट्टिसि चतु-
- ३० गुंत्तरायणसंक्रमणग्रहणव्यतीपातददु दान माडिट फलुवी
धर्ममं कि-
- ३१ • यत्ता कविलेयुमना ब्राह्मणरुमना तियिवारदल्लु-
- ३२ मंम प्रतिपालिसुवुदु ॥ स्वदन्ता परदन्ता वा यां हरंत
- ३३ ... जायते क्रिमि ॥ मंगळ महा श्रीं श्रीं पालित
- ३४ जालोळं विशदयशोलील गुणसेनपंडित बुधनिं
- ३५ • पुरंदर गुणसेनपंडित •

[यह लेख केशवमन्दिरके छतमें लगा पाया गया । इसमें पहले वर्ष-
मानस्वामी (महावीर) से प्रारम्भ कर कई आचार्योंकी परम्परामें श्रीपाल
त्रैविद्यदेवका वर्णन किया है । इनके द्वारा निर्मित आदिदेवकी वसदिके
लिए होयसल राजा नरमिहके सेनापति भात्रियणने नागगृहाल ग्राम दान
दिया था । दानकी तिथि शक १०७६ की उत्तरायणसक्रान्ति थी । लेखमें
श्रीपाल त्रैविद्यके गुरुवन्धु अनन्तवीर्य तथा विप्य वामुपूज्य एव वादिगज-
का भी वर्णन है । अन्तमें गुणसेन पण्डितका भी उल्लेख है ।]

[ए० रि० मै० १९३८ पृ० १०२]

२४७

वल्लुगेरि (वेलगाँव, मैसूर)

शक १०७८ = सन् ११५६, कन्नड

[इस लेखमें चालुक्य सम्राट् त्रैलोक्यमल्लके राज्यकालमें कलचुरि वंशके विज्जल (द्वितीय) तकके सामन्तोकी वशावली दी है । विज्जलके बन्धु मँलुगि तथा उसकी पत्नी लक्ष्मादेवीका शासन वेलवल ३०० प्रदेशपर चल रहा था उस समय राजाके मन्त्री कालिदास चमूपने पार्वनाथतीर्थकी यात्रा कर एक मन्दिर बनवाया तथा उसके लिए कुछ दान दिया । इसकी तिथि पुष्य शु० (१२), वातु सवत्सर, शक, १०७८, उत्तरायण-सक्रान्ति ऐसी दी है ।]

[रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० १७५ पृ० ३५]

२४८

करन्दै (उत्तर अर्काट, मद्रास)

सन् ११५६, तमिल

[यह लेख चोल सम्राट् राजराजदेवके १०वें वर्षमें लिखा गया था । इस मन्दिरमें सन्ध्यासमय दीप प्रज्वलित रखनेके लिए मन्दिर-अधिकारी-द्वारा ३०० काशु स्वीकार किये जानेका इसमें निर्देश है ।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १४१]

२४६-२५०

करन्दै (उत्तर अर्काट, मद्रास)

सन् ११५६-५७ तमिल

[इस लेखमें जयगोण्डशोलमण्टलम् प्रदेशके ऊरुक्काडु ग्रामके एक वेल्लाल-द्वारा करन्दैस्थित जिनमन्दिरमें दीप प्रज्वलित रखनेके लिए कुछ

गार्गे दान दी जानेका उल्लेख है। यह बोल मन्नाट् राजराजदेवके १०वें वर्षमें दिया गया था। राजराजदेवके ११वें वर्षका एक लेख यही है! इनमें फर्नेसूनाडु प्रदेशके अन्मोल्लिदेवपुरम् स्थानके नगरत्ताद् लोगो-द्वारा निग्गरम्बूरके जिनमन्दिरमें प्रबोधन ममारोह्के अवसन्पर दिये गये दीपदानोका विवरण दिया है।]

[रि० मा० ए० १९३१-८० क्र० १३१-१३२]

२५१

करडकल (रायचूर, मैसूर)

शक १०८१ = मन् ११७९, कन्नड

[यह लेख क्लृचूर्य राजा त्रिभुवनैकवीर विज्जलके राज्यकालमें आयाड, दक्षिणान मन्त्रान्ति, शक १०८१, प्रमाप्ति मन्वन्पर, गुन्वारके दिन लिखा गया था। इनमें एक मेनापति तथा पयलदेवीका उल्लेख है तथा मूलम्ब-देमिगाण-पुन्कगञ्जके किमी आचार्यको दान दिये जानेका उल्लेख है। इन मन्त्र यह लेख वीरभद्रमन्दिर्ममें लगा है।]

[रि० ड० ए० १९५३-५४ क्र० २३८ पृ० ४१]

२५२

केरेसन्ने (कडूर, मैसूर)

१०वीं शता (मन् ११७९), कन्नड ।

- १ बहुधान्यसंवन्परड माव सु १७ ग्लु
- २ श्रीमन् प्रतापचक्रवर्ति होयमण श्री
- ३ श्रीर नारसिंहदेवरायर् अडकेय पा-
- ४ गिगदेवन मग चिक्कमलण्णगे केण्चमंये-
- ५ थ द्रविलसंवद आदिनाथदेवर पाडवडवर
- ६ वमदिगलिगे आ केरेयसंयेय हिर्यकेण्च

- ७ केलगुलतह स्थलवृत्तिय तोट गहे वेदलु म-
 ८ ने आ देवहगलिगुलतह समस्ततेजस्वा-
 ९ म्यवनु आ श्रीवीरनारसिंहदेवरमरु आ मल्ल-
 १० षणगे दानवागि नारापूर्वक माडि आचडार्क-
 ११ तारवर सखतागि काट्टरु मगल महा आ श्री

[इस लेखमें हीयसल राजा नरसिंह-द्वारा केरेयमथे स्थित द्रविलसघकी आदिनाथ-पार्श्वनाथ वसदिके लिए चिक्कमतलणको कुछ भूमि दान दिये जानेका उल्लेख है। लिपि १२वीं सदीकी है तदनुसार यह लेख बहुधान्य भवत्सर = सन् ११५९ का होगा। तब नरसिंह प्रथमका राज्य चल रहा था। इस समय यह लेख जनार्दनमन्दिरमें लगा है।]

[ए० रि० मै० १९४५ पृ० ११२]

२५३

हुलियार (मैसूर)

१२वीं सदी-मध्य, कन्नड

[इस लेखमें हीयसल राजा नरसिंह १ के समय चान्द्रायण देवके शिष्य सामन्त गोवकी -त्नी श्रीयादेवी-द्वारा एक जिनमूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। इस समय यह पादपीठ विष्णुमूर्तिके लिए उपयोगमें लाया जाता है।]

[ए० रि० मै० १९१८ पृ० ४५]

२५४

हरिड्वार (उत्तरप्रदेश)

स० १२१६ = सन् ११५९, संस्कृत-नागरी

[यह लेख पीतलकी चौबीसी-मूर्तिके पीठपर है। इसमें मूर्तिकी स्थापनातिथि आषाढ ९, स० १२१६ दी है। मूर्ति इस समय लखनऊ म्युजियममें है।]

[मै० आ० स० ११ (१९२२) पृ० १५]

२५५

शृंगेरी (मंत्र)

शक १०८२ = मन् ११६०, कण्ड

- १ श्रीमन्परमगंभीरस्याद्वाद्यामोचलाष्टनं (१)
- २ जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शाम्न जिनशासन (॥)
- ३ स्वस्ति श्रीमत् मकवर्षं ढ १०८३
- ४ त्रिकमसवरपरद कुम्भ शु-
- ५ द् दशमि वृहवारदन्दु श्रीमन्निडुगोड
- ६ विजयनारायण शान्तिसेट्टिय पुत्र वा-
- ७ मिनेट्टियर अक्क सिरियवेमेट्टियर म-
- ८ गलु नागवेमेट्टियर मगलु मिरिय-
- ९ लेमेट्टितिग हेम्माडिमेट्टिगं सुपुत्रन-
- १० प्प मारिसेट्टिगे परोक्षचिनयक्के मा-
- ११ डिंसिट्ट वसदिगे त्रिट्ट दत्ति केरेय केलग-
- १२ ण द्विरिय गडेय वमदिय वढगण होम-
- १३ यु मडियु होलेयुं नडुवण हुट्टुविन होरद
- १४ मण्णु कण्डुग सुल्लिगोड अरुगण्डुग मण्णु
- १५ वणजमु नानदेसियु विट्टय
- १६ मलवेगे हाग हज हात्तिय मल
- १७ ले मेलमिन मारक्के हागमु
- १८ मत्तं पोंत्तोडबलुप्पु हेरिगय्वत्तेले अरिसिनद मलवेगे वीसक्के त्रिट्टं
नपिट्टडे तप्पिट्टवजु गगेय-
- १९ लु माडर कविलेय कोण्ड पात्तक

[यह लेख पार्वनाथमन्दिरके सनागृहमें है । इनकी तिथि शक

१०८२, विक्रमसंवत्सर, कुम्भ मास शु० १० गुरुवार ऐमी है। इस दिन इस मन्दिरके लिए कुछ भूमि तथा व्यापारियों-द्वारा कुछ करोका उत्पन्न दान दिया गया था। यह मन्दिर हेम्माडिसेट्टिकी पत्नी मिरियवेके पुत्र मारिसेट्टिकी स्मृतिमें बनवाया गया था। मन्दिरके गर्भगृहकी पार्श्वनाथ-मूर्तिके पादपीठपर इसी समयकी लिपिमें निम्न वाक्य खुदा है—श्रीमत्-पारिसनाथाय नमः ।]

[ए० रि० मं० १९३३ पृ० १२२, १२५]

२५६

वावानगर (विजापूर, मैसूर)

शक १०८३ = सन् ११६१, कन्नड

[यह लेख कलचुर्य राजा विज्जणदेवके समय शक १०८३, विक्रम संवत्सरका है। इसमें मूलसघ-देसिगणके मगलिवेडके आचार्य माणिक्य-भट्टारकका तथा मैलुगि नामक शासकका उल्लेख है। इसने कन्नडिगेके जैन वसदिको कुछ दान दिया था ।]

[रि० सा० ए० १९३३-३४ पृ० १३० क्र० ई १२०]

२५७

गुत्तल (वारवाड, मैसूर)

शक १०(८४) = सन् ११६२, कन्नड

[यह लेख गुत्त वंशके महामण्डलेन्बर विक्रमादित्यरसके समय पीप शु० १५, सोमवार, शक १०(८४) का है। इसमें केतिसेट्टि-द्वारा निर्मित पार्व्वदेवमन्दिरके लिए राजा-द्वारा भूमि दान दिये जानेका उल्लेख है। पुस्तकगच्छके मलवारिदेव तथा सोमेश्वरपण्डितदेवका भी उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९३२-३३ क्र० ई ५१ पृ० ९६]

२५८

हालुगुड्डे (मैसूर)

शक १०८४ = मन् ११६७, वज्रद

- १ नमस्तुंगाशिरश्चुम्बिचन्द्रचामरचारत्रे । त्रैलोक्यनगरारम्भमूलस्त-
म्माय शम्भवे ॥ स्वस्ति ममविगतपञ्चमहाशब्द
- २ अशेषमहामण्डलेऽवरनुत्तरमधुगधीऽवर पट्टिपोम्बुच्चपुरवरऽवर
पद्मावर्तोलङ्घवरप्रभाद सृगमदामोद मन्तत-
- ३ मकलजनस्तुत्य नानिशास्त्रज्ञ-विरदम्बज्ञ-नामादिप्रशस्तिसहितं
श्रीमन्महामण्डलेऽवर प्रतापभुजवल
- ४ शान्तरद्रेवरु सान्तलिगेमाथिरम सुखसकथाविनोदार्दि राज्यं
गेर्युत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीवि समधिगतपञ्च-
- ५ महाशब्द महाप्रचण्डकुमार वेदण्डपंचानन रिपुकुमारतारक-
पदाननं भरसकगाल विजयलक्ष्मीलोल श्रीमतु-
- ६ ह्रीमगुन्दद वीररमर मेलुसान्तलिगेयुमं अग्रहारमुम सुखदि-
नालुत्तमिरं शकवर्ष १०८४ नेथ चित्रमानुसंबत्परद
- ७ वैशाख सुद १० बहुवारदन्टु कटद टण्डु अलिय वम्मणेयनुं
पाण्ड्यरसनुम्बलिगारनु ममस्तमावन वेरसि वृग्लु विट्टु
- ८ वत्ति बहल्लि नेल्लिवडेयल्लु जिनपादशेखर मन्विधिग्रहि माचि-
राजन ॥ कं० तलपारिनायकगे प्लेयल्लु धोप्येयम्बं नायन्ति
- ९ मगं भूवल्लयटोल् अधिकं पुट्टिद कलिलाल मुखतिलव्वं गोगिग-
मण्डद्रेव । रूपिनाल्लु काममन्निम कृपिनांला नरतनूज अभिमन्नु
- १० तां वेपं जनङ्गीवेडेयोल्लु नोर्पडे कलि गोगिग वररवृक्ष जगटोल्
धुगटोल् अरातिसूभुजगनन्तघट्टिदग्मकगाल वीर
- ११ नल्लङ्गियि वेममे गोगगणन्तिरिवल्लि विट्टं वीरर नोरेनेत्तरिं नेणन
रण्डद टिण्डंगत्ल्लुगलि मयकरं एने विक्रमं कलिग ..

- १२ ना जगद्वेकधीरन । अणियरमोड्डिदडुणठ वीररनान्तिमुतिर्षं ब्रिह
बहुणिय तुरग साधनमनान्तिरिवल्लि महामय
- १३ (ने)णमय खण्ड विण्डि चोरेनेत्तर कार्पुरमन्दु नोपोडेनणकमो
गोविगयान्तिरिद विक्रममाहवरगभूसियो (ल्)
- १४ कलहढोलान्त वीरचतुरगवलगलनान्तु गोविग तोलुवालघट्टिन्दे
तलुदिरियं विहरिसेनेय लाहिताम्बुधिं पलवु मिरंगल
- १५ रत्त घोलोपिरे वीररट्टेगल् तोलुतोलगन्दु तलुत्तिरिव मम्भ्रम
सगररगभूलियोल्
- १६ णमय लोहितवारि नेणद केसरुगल कुणिवट्टेगल् एन्डडिदेन-
णकमो विक्रमद
- १७ वागलोन्दु तिरुधिं विडुवाग्लु नूह परिधे साधिरवरिय
नेहुवल्लि कोटियेने पोडावियोल्
- १८ ह ॥ तरिसन्दोड्डिदरातिय मरुवकमनान्तु गोविग यिरियल्
धुरदोलु परिदलेपोलु मह
- १९ वल्लव ॥ नायकतन मुम्भरिसिद नायकरिदिरागि गोविगयोळु
तागुवहु सायकट्टिनेष्णु तू
- २० देवरदेन पेलुवे ॥ मामलेदोड्डिदन्यनृपसैन्यपयोधिगे वीरभूसुज
नूर्मडि वाडवानल
- २१ नोपुंहु कूर्मनराखमेम्भुरिय नालगेगल् विडेयट्टियेवेहु मुम्म-
लियायत्तु वैरिव
- २२ कृताखनो ॥ धुरदोलरिसेनेय निर्भरभिरियल् गोविग वैरिवि-
क्रान्तसरल् मरदिवन् तनुवसुच्चा
- २३ दोला सिन्धुसुत्तन पोत्त ॥ सन्ततमोड्डि निन्दरिवलालगल-
नान्तिरिवल्लि वैरिविक्रान्तसराळिगल् तनुवसुच्चा
- २४ अदोल् ॥ सन्तनसुनुवेन्तु सरसैयेयोलोपिटनन्ते गोविग
विक्रान्तमनासेवट्टु सरलोट्टिदनाह

- २५ . योल् ॥ मगरदोलिरिद वीरमं शृगारममंक्केवत्त गोग्गिय
तम्मुल्पंगटोल् इट्टुय्दि निलिपागनेयर्
२६ ..(अ)मरावतिर्यं ॥ अन्तु तलप्रहारिनायकन मग गोग्गिय-
नायक कटकमनान्तिरिट्टु तुमुल
२७ ...ममान्तरनेनिसिद श्रीवल्लभदेवनग्रपुत्र प्रतापमुजवळ मान्तर-
मेनिमिद तैलपदेवरु विद्रियम्मग्गन पुत्र श्रीमत्तु
२८ रु तम्मरसर हेमरलु (?) गोट्टनेन्दु (?) हालुगुड्डेय त्रिमोगा-
भ्यन्तरमिद्रियागि करलु नट्टु कारुण्यं गेय्दु कोट्ट होस
२९ . वरं मने वडि (?) डविन कैयोलगे हांड कैय मक्कि (?)
सहितमागि कोट्टरु ॥ मगल महा श्री श्री

[यह लेख वैशाख शु० १०, बुधवार, शक १०८४, चित्रभानु संवत्सरके दिन लिखा गया था । पट्टिपोम्बुच्चके मान्तरवगीय राजा श्रीवल्लभदेवके पुत्र तैलपदेव-द्वारा हालुगुड्डे ग्राम दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है । तलप्रहारि नायकके पुत्र मेनापति गोग्गिकी पाण्डधरमके विरुद्ध लडते हुए मृत्यु हुई थी । गोग्गिके कुटुम्बियोंको यह ग्राम दान दिया गया था । लेखमें तैलपदेवको पद्मावतीलव्ववरप्रसाद यह विशेषण दिया है तथा गोग्गिको जिनपादगेखर कहा है । तैलपदेवके अधीन मेलु-सान्तलिंगे प्रदेशके शासक वीररमका भी उल्लेख किया गया है ।]

[ए० रि० मै० १९२३ पृ० ७४]

२५९

एकसम्बि (बेलगाँव, मैसूर)

शक १०८७ = मन् ११६५, कन्नड

[यह लेख शिलाहार राजा गण्डरादित्यके पुत्र विजयादित्यके समय-का है । रट्टवगीय कत्तम (कार्तवीर्य) का सेवक मारगौड था । इमकी

वशपरम्परा इस प्रकार दी है — मारगोट — आचगौड — होल्लिगौड — जिन्नण, कालण तथा मदुवण । इनमें जिन्नण गण्टगादित्यका मेनापति था तथा कालण विजयादित्यका । कालणकी पत्नी ल-च्छले थी तथा उसे तीन पुत्र थे — जिन्नण, आचण तथा रामण । कालणने एकरुमम्बुगेमे नेमिनाथवमद्वि वनवायो, तथा उमके ग्गिए यापनीय मघ — पुन्नागवृक्षमूलगणके महामण्टलाचार्य विजयकीर्तिको कुछ भूमि दान दी । विजयकीर्तिकी गुरु-परम्परा यह थी — मुनिचन्द्र-विजयकीर्ति-कुमारकीर्ति त्रैविद्य-विजयकीर्ति (प्रस्तुत) । इस मन्दिरकी कीर्ति मुनकर राजा कार्तवीर्यने भी इसके दर्शन किये तथा फाल्गुन शु० १३ शक १०८७ को विजयकीर्तिको कुछ भूमि दान दी ।]

[ए० रि० मै० १९१६ पृ० ४८]

२६०

मन्तगि (धारवाड, मैसूर)

राज्यवर्ष १० = सन् ११६५, कन्नड

[यह लेख कलचुर्य राजा विज्जणदेवके राज्यवर्ष १०, पाथिव सवत्सरमे (?) मासके शु० ५, गुरुवारके दिन लिखा गया था । पान्थिपुर (वर्तमान हनगल) के कलिदेवमेट्टि-द्वारा चतुर्विंशति तीर्थकरमूर्तिकी प्रतिष्ठा तथा मन्दिरके निर्माणका इसमें उल्लेख है । इसके लिए नागचन्द्र भट्टारकको कुछ दान दिया गया था । हानुगल नगर तथा कलिदेवमेट्टिकी विस्तृत प्रशंसा की है ।]

[रि० ड० ए० १९४७-४८ क्र० २०७ पृ० २५]

२६१

अरसीवीडि (विजापुर, मैसूर)

राज्यवर्ष १२ = सन् ११६७, कन्नड

[इस लेखमें कलचुर्य राजा भुजवलमरुके राज्यवर्ष १२, सर्वजित

संवत्सरमे पुष्य शु० १४, नोमनाके दिन मन्द कुलके विद्वरमके पुत्र होलरम द्वारा गुणवेडगिर धनदिके लिए कुछ करीके उप्यन्त दान देनेका उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ई ४० पृ० ४१]

२६२

नदिहरलहलि (धारवाड, मैसूर)

शक १०९० = मन् ११६८, कन्नड

[इन लेखमे कलचुर्य राजा विज्जादेवके समय शक १०९० सबवारि मंत्रसर, चैत्र पूर्णिमा, नोमनाके दिन जैन नाथु-नाथियोंके आहारदानके लिए कुछ भूमि दान दी जानेका उल्लेख है ।]

[रि० ना० ए० १९३४-३५ क्र० ई ५८ पृ० १५२]

२६३

हलसंगि (विजापूर, मैसूर)

शक १०९० = मन् ११६८, कन्नड

[इन लेखमे शक १०९० में चन्द्राहणके समय घोग्जिनालयके लिए कुछ भूमिदानका उल्लेख है ।]

[रि० ना० ए० १९३७-३८, क्र० ई० २५ पृ० २०१]

२६४

हिरेमन्नूर (धारवाड, मैसूर)

शक १०९१ = मन् ११७०, कन्नड

[यह लेख पुष्य शु० ५, गुस्वार शक १०९१ विगेवि संवत्सरका है । इन्में मन्द कुलके महानाटलेखर चावुडरम-द्वारा त्रिरिमणियुगे जैनमालाके अविद्याक दानवोवकी प्रार्थनापर कुछ भूमि दानका उल्लेख है ।]

[रि० ना० ए० १९२७-२८ क्र० ई ४ पृ० २०]

२६५

विजोलिया (राजस्थान)

संवत् १२०६ = मन् ११७०, मस्कृत-नागरी

- १ सिद्धम् ॥ ॐ नमो वीतरागाय । चित्रप महजोद्रित निरवधिं
ज्ञानैकनिष्ठापित निस्थोन्मीलितमुल्लसत्परमल स्थस्कारविस्फा-
रितं । सुच्यवर्त परमाद्भुत द्विचन्द्रानन्दास्पदं शास्वत नामि
स्तौमि जपामि यामि क्षरण नञ्ज्योनिरारामो(स्थितं) ॥ ॥ नाम्न
गत कुग्रहमग्रं न नां तीव्रतेजा
- २ नैव सुदुष्टदेहोऽपूर्वो रविभतात् स मुद्रे वृषो व ॥२॥ [स]
भूयाच्छीनाति शुभत्रिमवमगोमवभृता विमोर्धस्यामानि
स्फुरितनगरोचि करयुग । दिनश्राणामेयामग्निलङ्घनिनां मगल-
मर्थी स्थिरीकर्तुं लक्ष्मोऽमुपरचितरज्जु व्रजमिव ॥३॥ नासाश्वा-
सेन येन प्रवलयलभृता पूरित पाचजन्य
- ३ वरदलमलि(नीपाठ)पद्माग्रदेशं । हस्तांगुष्ठेन शार्गं धनुरनुल-
बल वृष्टमारोप्य विष्णोरंगुल्या टांलितोयं हलभृदवनित तस्य
नेमेस्तनोमि ॥४॥ प्राशुप्राकारकातात्रिदशपरिवृद्धस्यूहृदवाकाशां
वाचाला क्तुं कंठि(क्व)णदनणुमणीकिंक्विपोमि ममतात् । यस्थ
व्याख्यानभूभामहह किमिदमिन्याकुला नौतुकेन प्रेक्षते
प्राणमाज
- ४ (स भुवि) विजयतां तार्थं कृत् पाश्चं नाथः ॥ ५ ॥ वर्धता
वर्धमानस्य वर्धमानमहोदय । वर्धता वर्धमानस्य वर्धमान-
(महो) दय ॥ ६ ॥ मारदा सारदा स्तौमि सारदानविमारदा ।
भारतीं भारती मक्तमुक्तिमुक्तिविभारदां ॥७॥ नि प्रथ्यूह-
मुपास्महे जिनपतीनन्यानपि स्वामिन श्रीनाभेयपुर सरान् पर-
कृपापीथूपपायीनिधीन् । ये ज्योति परभागमाज-

- ५ ननया मुक्तस्मतामा(श्रि)ता श्रीमन्मुक्तिनितत्रिनास्ननतटे
 हागश्रिय त्रिजति ॥१॥ मन्त्राना हृदयामिरामध्वनि मद्धमं-
 (ममं)न्यति कर्मोन्मल्लनमंगनि शुभनति. निवात्र(श्री)बो-
 द्यति. । जीवानानुपकारकाणरि श्रेय श्रिया समृति.
 देयान्ने भवमंभृति शिव(म)नि जैने चतुर्विंशति ॥ ९ ॥
 श्रीचाहमानक्षितिगजवदः पोवोप्यदूर्वो न जडावनद्र । मिश्रो
 न चां-
- ६ (गो न च) रं प्रयुक्तो नो नि फर मारयुतो नतो नो ॥१०॥
 लावप्यनिर्मलनहोञ्जलिनांगयष्टिरच्छोच्छलच्छुचिपय परिधानधा-
 (श्री । उर्ध्वं)गपवतपयोधरमाग्मुना शकमराजनि जनीव
 ततोपि विष्णो. ॥११॥ विप्र श्रीवस्मगोत्रेभूदहिच्छन्नपुरे पुग ।
 मामंतोततमामन्त. पूर्णतरलो नृपस्तत ॥१२॥ तन्माच्छ्री-
 जयराजविग्रहनृपो श्रीचन्द्रगोपेन्द्रको तस्माद्दु(लं)नगूवको शशि-
 नृपो गूत्राकसच्चंदनो । श्रीमद्दृष्ययराजविध्यनृपती श्रीमिह-
 राड्विग्रहो । श्रीमद्दुर्लभगुदुवाक्पनिनृपा श्रीवीर्यगमोऽनुजः
 ॥१३॥ (चातुंडो) वनिपोऽतिष्ठ च गणकवर श्रीविद्यो दूम-
 लन्नभ्राताथ ततोपि वामलनृप श्राजदेवीप्रिय । पृथ्वीराज-
 नृपोथ नत्तनुभवो गसल्लदेवीविभुस्तपुत्रो जयदेव इत्यवनिप
 मोमल्लदेवीपति ॥१४॥ इत्या चञ्चिगामिधन्वामिधयसोराजादि-
 वारत्रयं ।
- ८ क्षिप्रं क्रूरकृतांतवक्त्रकुहरं श्रीमार्गदुर्हान्वित । श्रीन्तमो(ल्ल)ण-
 दण्डनायकवर सप्रामरगागणे जीवन्नेव नियंत्रित करमके
 येन (क्षि)मान ॥१५॥ अर्णोराजोस्य सूनुर्धृतहृदयहरि मत्व-
 वाग्निष्टर्मासो गार्भार्यौदार्यवथं ममभवद(चि)रालब्धनभ्यो न
 दान । तच्चिप्रं जं न जाड्यस्थितिरवृत्त महापकडेतुनं मध्या न
 श्रीमुक्तो न टोपाकरगचितरतिर्न द्विजिह्वाविसंख्य ॥१६॥

- ९ यद्वाज्य कुशवारणं प्रतिकृतं राजाकुशोन स्वयं येनात्रैव नु
चित्रमेतत् पुनर्मन्यामहे त प्रत । तच्चित्र प्रतिमासते सुकृतिना
निर्वाणनारायणन्यङ्काराचरणेन भंगकरण श्रीदेवराज प्रति ॥१७॥
कुवलयविकासकर्ता विग्रहराजोजनि (स्तु) नो चित्र । तत्तनयस्त-
च्चित्र य(क्ष) जडक्षीणसकलक ॥१८॥ मादानत्व चक्रे मादान-
पत्रे. परस्य मादान. । यस्य दधत्करवाल करतलाकलित
- १० करतलाकलित ॥१९॥ कृतातपथमज्जोभूत् सज्जनो सज्जनो
भुव । वैकुत कुतपालोगा(द्यत) वै कु(त)पालक ॥२०॥
जावालिपुर ज्वाला(पु)रं कृता पल्लिकापि पल्लिव । नद्वल-
तुल्य रोपासदृल येन शौर्येण ॥२१॥ प्रतोल्या च बलभ्या च
येन विश्रामितं यश. । दिल्लीकाग्रहणश्चातमाशिकालामलमित
॥२२॥ तज्ज्येष्टभ्रातृपुत्रोऽभूत् पृथ्वीराज पृथूपम । तस्माद-
जितहेमागो हेमपर्वतदानतः ॥२३॥ अतिधर्मरतेना-
- ११ पि पार्श्वनाथस्वयमुवे । दत्त मोराक्षरीग्राम भुक्तिमुक्तिश्च
हेतुना ॥२४॥ स्वर्णादिदाननिवर्द्धंशमिर्महद्मिस्तोलानरंनगर-
दानचयैश्च विप्रा. । येनाचिताश्चतुरभूपतिधन्तुपालमाक्रम्य
चारुमनसिद्धिकरी गृहीत ॥२५॥ सोमेश्वरः५लधराज्यस्तत
सोमेश्वरो नृप । सोमेश्वरानो यस्माज्जनः सोमेश्वरोमवत्
॥२६॥ प्रतापलक्ष्मिस्वर इत्यसिख्या यः प्राप्नवान् प्रोढपृथुप्रताप ।
यस्यामिसुर्ये चरवैरिमुख्या केचिन्मृता केचिदसिद्धताश्च ॥२७॥
येन श्रा-
- १२ पार्श्वनाथाय रेवातीरे स्वयमुवे । सासने रेवणाग्रामं दत्त स्वर्गाय
काक्षया ॥२८॥ छ ॥ अथ कारापकवशानुक्रम. ॥ तीर्थे श्रीनेमि-
नाथस्य राज्ये नारायणस्य च । अंभोधिमथनादेवबन्धिमिर्बल-
शालिमि. ॥२९॥ निगंत प्रवरो वंशा देवघृष्टे समाश्रित ।
श्रीमालपत्तने स्थाने स्थापित शतमन्थुना ॥३०॥ श्रीमालशैलप्र-

वरावचूल पूर्वात्तरमत्वगुरु सुवृत्त । प्राग्वाटवशोस्ति बभूव तस्मिन्
मुक्तोपमो वैश्रवणामिधान ॥३१॥ तद्वागपत्तने येन कारित

१३ जिनमंदिर । (नीत्वा) आत्वा यशस्तत्वमेकत्र स्थिरतां गत
॥३२॥ यांचोकरच्चद्रसुचिप्रमाणि व्याघ्रेरकाठौ जिनमदिराणि ।
कीर्तिद्रुमारामसमृद्धिहेतोर्विभाति कदा इव यान्यमदा ॥३३॥
कल्लोलमांमलिनकीर्तिसुधासमुद्र . मद्बुद्धिबहुरवधूधरणे
ध(रंशः) । .. पांकारकरणप्रगुणातरात्मा श्रीचच्चुलस्वननय
पदेभूत् ॥३४॥ शुभकरस्तस्य सुतो जनिष्ट शिष्टेर्महिष्यैः परि-
कीर्त्यंकीर्ति । श्रीजामटोसून तदगजन्मा यदगजन्मा खलु
पुण्यराशि ॥३५॥ मंदिर वर्ध-

१४ मानस्य श्रीनाराणकसस्थित । माति यन्कारित स्वीयपुण्य-
स्कं वमिबोज्वल ॥३६॥ चत्वारश्चतुराचारा पुत्रा . पात्र शुभ-
श्रिय . अमुप्यामुप्यधर्माणोर्वभूवुर्भाययोर्द्वयो ॥३७॥ पृक्स्या
द्वावजायेता श्रीमदाम्बटपद्मटो । अपरस्या (सुतां जातो श्रामल्ल)-
ह्मटत्रेम्लो ॥३८॥ पाकाणा नरवरे वीरवेदमकारणपाटव ।
प्रकाटेत् स्वीयचित्तेन धातुनेव महांतल ॥३८॥ पुत्रौ पवित्रा
गुणरत्नपात्री विशुद्धगात्रौ ममशालसत्यौ । बभूवनुर्लक्ष्मटकस्य
जैत्रौ मुनींदुरामेद्वभिधौ प्रशन्तो ॥४०॥

१५ पट्त्रडागमवदसोहठमरा पड्जीवरक्षेश्वराः षड्भेदेप्रियवच्यता-
परिकरा पट्कर्मकलृसादराः । पट्त्रडावनिकीर्तिपालनपरा षाड्-
गुण्यचिंताकरा पडदृष्टयवुजभास्करा मममव पट् देशलस्या-
गजा . ॥४१॥ श्रेष्टी द्रुचकनाथक प्रथमक श्रीभोमलो वीगडि-
द्वेवम्पर्श इतोपि सीयकवर श्रीराहको नामतः पृते तु क्रमतो
जिनक्रमयुगांभोजैकभृगोपमा मान्या राजशतैर्वदान्यमतयो
राजति जंबूत्सवा ॥४२॥ इम्यं श्रीवर्धमानस्याजयमेरोर्विभूषणं
कारितं यैर्महाभागैर्वि-

- १६ मानसिव नाकिना ॥४३॥ तेषामत- श्रियः पात्रं (सीय)कः
 श्रेष्ठभूषण । मडलकरमहादुर्गं भूपयामास भूतिना ॥४४॥
 यो न्यायाङ्कुरतेचनैकजलद कोर्तेर्निधान पर र्जाजन्यातुजिनो
 विकामनरवि पापाद्भिद्रे पवि । कारुण्यामृतवारिधेर्विलसने
 राकाशशाकोपमो नित्य म्नाधुजनोपकारकरणव्यापाश्चदादरः ॥४५॥
 येनाकार जिठारिनेमिसवन देवाद्भिश्चगोदुधुर चंचतकाचन-
 चार्ददकलक्षश्रेणाप्रमामास्वरं । र्नेलत्-ल्लेचरसुन्दरीश्रमभरं
 मजद् ध्वजोद्दीजनैर्धत्तेष्टापदशैलशृंगजिनमृतप्रोद्दामसद्यश्रियं
 ॥४६॥ श्रीसीयकस्य भार्ये द्वे
- १७ सोनागशोभामटाभिधे । आद्यायास्तु त्रयः पुत्रा द्विर्तीयायाः
 सुतद्वय ॥४७॥ पचाचारपरायणात्ममतयः पचागमश्रीज्वला
 पञ्चज्ञानविचारणासुचतुराः पचेन्द्रियार्थोज्ञयाः । श्रीमत्पचगु-
 प्रणाममनस पचाणुशुद्धप्रताः पचैते तनया गृही(तवि)नया
 श्रीसीयकश्रेष्ठिन ॥४८॥ भाद्य. श्रीनागदेवाऽमूल्लोलाकश्रीज्व-
 लस्तथा । महीधरो देवधरो द्वावेतावन्यमातृजो ॥४९॥ उज्वल-
 स्थागजन्भार्ता श्रीमद्दुर्लभलक्ष्मणा । भमूलासुवनोद्भासियशो
 दुर्लभलक्ष्मणौ ॥५०॥ गामीयं जलधे स्थित्वमचलात्तेज-
- १८ स्त्रिणां मास्वत सौम्य चंद्रमसः शुचित्वममरस्रोतस्त्रिनीत परं ।
 एकैक परिगृह्य विडम्बितो यो वेधसा सादर मन्ये वीजकृते
 कृत सुकृतिना सल्लोलकश्रेष्ठिन ॥५१॥ अथागमन्म (दिरमं)
 पकीर्ते श्रीवि(ध्यव)र्द्धी धनधान्यचर्द्धी । तत्रालु(लोके ह्यमितल्प-
 सुप्त) कच्चिन्नरंश पुरत स्थित स ॥५२॥ उवाच कस्त्व
 किमिहाभ्युपेत कुत स त प्राह फणीश्वरोह । पातालमूलोत्तव
 देशनाय (श्री) पाउर्वनाय स्वयमेप्यतीह ॥५३॥ प्रातस्तेन
 समुत्थाय न किंचन विवेचित । स्वप्नस्यांतर्मनोभावा यतो
 वातादिदूषिता ॥५४॥ लोला-

१९ क(स्य) प्रियास्तिस्रो बभूवुर्मनस प्रिया । ललिता कमलश्रीश्च
 लक्ष्मीर्लक्ष्मीसनामय ॥५५॥ तत स भक्तां ललिता वमापे
 गत्वा प्रियां तस्य निशि प्रसुप्तां । ऋणुष्व मग्ने धरणोहमंहि
 श्री (पाश्र्वनाथ खलु द)शंयामि ॥५६॥ तथा स चोक्तो
 (यत्त्व न हि) सत्यमेतत् । श्रीपाश्र्वनाथस्य समुद्घृतिं स
 प्रासादमर्चा च करिष्यतीह ॥५७॥ गत्वा पुनर्लौकिकमेवमृचे
 भो भक्त शक्तानुगतातिरिक्त । देवे घने धर्मविधो जिनोद्यौ श्री-
 रेवतीतीरमिहाप पाश्र्वं ॥५८॥ समुद्धरेन कुरु धर्मकार्यं त्व
 कारय श्रीजिनचै-

२० त्यगोहं । येनाप्स्यसि श्रीकुलकीर्तिपुत्रपौत्रोरसतान-सुखादिवृद्धिं
 ॥५९॥ त(देवत्री) माख्यं वनमिह निवासो जिनपतेस्त पृते
 प्रावाण. शठकमठमुक्ता गगनतः । सदारा(म) (शश्वत्स)
 दुपचयत कुडसरितांस्तदत्रैतत् स्थानं (नि)गमं प्रायपरम ॥६०॥
 अत्रास्त्युत्तममुत्तमाद्रिसिखरं साधिष्ठमचोच्छ्रितं तीर्थं श्रीवर-
 लाइकात्र परमं देवोतिमुक्ताभिध । सत्यश्चात्र घटेश्वर
 सुरनतो देव कुमारेश्वरः सोभाग्येश्वरदक्षिणेश्वरसुरो मार्कंड-
 रिच्छेश्वरी ॥६१॥ सत्योवरेश्वरो देवो ब्रह्ममहोश्वरावपि कुटि-

२१ लेशः कर्करेशो यत्रास्ति कपिलेश्वर ॥६२॥ महानाल-महा
 का(लम)रथेश्वरसंज्ञका. श्रीत्रिपुष्करता प्राप्ता(संति) त्रिभुवना-
 चिताः ॥६३॥ कीर्तिनाथश्च (केदार) मिस्वामिन. । संगमेश
 पुटीशश्च मुखेश्वरवटेश्वराः ॥६४॥ नित्यप्रमोदितो देवो सिद्धेश्वर-
 गयेश्वरा. । (गगामेदश्च) सोमेश. गगानाथत्रिपुरातका. ॥६५॥
 सस्नात्री कोटिलिगानां यत्रास्ति कुटिला नदी । स्वर्णजालेश्वरो
 देव सम कपिलधारया ॥६६॥ नाल्पमृत्युर्न वा रोगा न
 दुर्मिन्नमवर्षणं । यत्र देवप्रभावेन कलि-

२२ पंकप्रघर्षणं ॥६७॥ षण्मासे जायते यत्र शिवलिंगं स्वयंभुवं ।

तत्र कोटीश्वरे तीर्थे का इलाघा क्रियते मया ॥६८॥ इत्येवं .
 कृत्वावतारक्रिया । कर्ता पार्श्वजिनेश्वरोत्र कृपया सोथाय वासः
 पतेः शक्तेर्वैक्रियिक. श्रियस्त्रिभुवनप्राणिप्रबोध प्रभुः ॥६९॥ इत्या-
 कर्ण्यं वचो विभाव्य मनसा तस्योरगस्वामिनः न प्रातः प्रतिबुध्य
 पार्श्वमभित क्षाणो विदार्य क्षणात् । तावत्तत्र त्रिभुं ददर्श
 सहसा नि.प्राकृताकारिण कुडाभ्यर्णत एव धाम वधतं स्वायमुव
 श्रीश्रितं ॥७०॥

२३ नासीघत्र जिनेन्द्रपादनमन नो धर्मकर्माजिनं (न स्नानं) न
 विलेपन न च तपो ध्यानं न ढानार्चनं । नो वा सन्मुनिदशनं
 (न) ॥७१॥ तत्कुडमध्यादथ निर्जगाम श्रीमीयकस्यागमनेन
 पद्मा । श्रीक्षेत्रपालस्तदथाविका च (श्रीज्वा)किनी श्रीधरणोर-
 गेंद्र ॥७२॥ यदावतारमकार्पाटत्र पाश्वर्जिनेश्वरः । तदा नागहृदे
 यक्षगिरिस्तथ पपात स ॥७३॥ यक्षोपि दत्तवान् स्वप्नं
 लक्ष्मणव्यह्वारिण । तत्राहमपि यास्यामि यत्र पाश्वर्विभुर्मम
 ॥७४॥ रेवतीकुण्ड-

२४ नीरेण या नारी स्नानमाचरेत् । सा पुत्रं भर्तृसौभाग्य (लक्ष्मीं
 च) लभते स्थिरं ॥७५॥ ब्राह्मणः क्षत्रियो वापि वैश्यो वा शूद्र
 एव वा । रेवतीस्नानकर्ता य. स प्राप्नोत्युत्तमां गतिं ॥७६॥
 धन धान्य धरा धाम धैर्यं धौरयतां धियं । धराधिपतिस्नमान
 लक्ष्मीं चाप्नोति पुष्कलां ॥७७॥ तीर्थाश्रयमिदं जनेन विदित
 यद्गायते सांभत बुध्प्रेतपिशाच-कुञ्जररुजाहीनागगंडापह ,
 संन्यास च चकार निर्गतमय धूकसृगालीद्वय काली नाकमवाय
 देवकलया किं किं न संपद्यते ॥७८॥ इकार्थं जन्म कृत धन
 च सफलं नीता प्रसिद्धिं मतिः ।

२५ सद्धर्मोपि च दक्षितस्तनुरुदस्वप्नोर्पितः सत्यता म 'रदष्टिदूषित-
 मना सदाष्टिभागो कृतो जै(ने) 'ना श्रीलोलकश्रेष्ठिनः ॥७९॥

किं मेरोः शृगमेतत् किमुत हिमगिरं कूटकोटिप्रकाढ किं वा
कैलासकूटं किमथ सुगपते स्वर्विमानं विमान । इत्थ यत्कथ्यते
स्म प्रतिदिनममरंमंस्पर्शराजोत्करैर्वा मन्थे श्रीलोलकस्य त्रिभुवन-
भरणाद्गुच्छ्रितं कीर्तिपुंज ॥८०॥ पवनधुतपताकापाणिनो भव्य-
सुरयां पट्टपट्टहनिनाडाडाह्वयत्पेप जैनः । कलिकलुपमथोच्चैर्दूर-
सुत्सारयेद्वा त्रिभुवनाव-

२६ (शुला) भानृत्यतोवालयोय ॥८१॥ (काश्चित् स्या) नकमावर नि
दधते काश्चिच्च गातोत्सवं काश्चिद् विभ्रति तालक मुललित
कुर्वन्ति नृत्यं च का । काश्चिद् बाद्यमुपानयति निभृन वीणास्वर
काश्चन यत्रोच्चैर्ध्वजकिंकिर्णायुवतयः कंषा मुटे नामवन् ॥८२॥
यः सद्बृत्तयुत सुदीप्तिकलितस्त्राम्नादिदोपोज्जितश्चिताख्यात-
पदार्थदानचतुरश्रितामणे सोदर । सोभूच्छ्रीजिनचंद्रसूरिसुगुर-
स्वत्गाढपंकेरुहं यो मृंगायत पव लोलकवरस्तीर्थ चकारैष सः
॥८३॥ रेवत्या मरितस्तटे तरुवरा यत्राह्वयते शृग

२७ शाखाबाहुल्यतोत्करेनं (रसु) रात् पुस्कोकिलाना रुतैः । मत्पुणो-
च्चयपन्नमत्फलचयैरानि(मंले)र्वारिभिर्भो मोभ्यचैयतामिपेकयत
वा श्रीपाश्र्वनाथ विभुं ॥८४॥ यावत्पुष्करतीर्थमैकनकुल यावच्च
गगाजल यावत्तारकचद्रमास्करकरा यावच्च द्विक्कुजरा । याव-
च्छ्रीजिनचद्रशासनमद् यावन्म(हें) द्र पठं तावत्तिष्ठत तत्
प्रशस्तिस्सहितं जैन स्थिर मंदिर ॥८५॥ पूर्वतां रेवतीमिधुर्देव-
स्यापि पुर तथा । दक्षिणस्या मठस्थानमुदीच्यां कृण्डमुत्तम
॥८६॥ दक्षिणोत्तरगो वाटी नानावृक्षैरलकृता । कारितं

२८ लोलिकेनैतत् मफ्तायतनसयुत ॥८७॥ श्रीमन्मा(थु) रमघेद्रद्
गुणमद्रो महामुनि । कृता प्रशस्तिरेपा च कवि (क) ठ (नि)
भूषणा ॥८८॥ नेगमान्वयकायस्थछोतगस्य च सूनना । लिखिता
वेशवेनेद मुक्ताफलमियोज्वला ॥ ८९ ॥ हरसिगसूत्रधाराय

तत्पुत्रो पाल्हणो भुवि । तदगजेभाहडेनापि निर्मापित जिनमदिरं
॥६०॥ नानिग. पुत्रगोविंदपाल्हणसुतटेरुहणौ । उत्कीर्णा प्रक्ष-
स्तिरेपा च कीर्तिस्तम्भ प्रतिष्ठितं ॥६१॥ प्रसिद्धिमगमडेव काले
विक्रममास्वत षड्विंशे द्वादशशते फाल्गुने कृष्णपक्षके ॥६२॥

२६ (तृ)तीयायां तियो चारे गुरुस्तारे च हस्तके । धृतिनामनि योगे
च करणे तैतिले तथा ॥६३॥ (स) वत् १२२६ फाल्गुन वदि ३
कांवारेवण।ग्रामयोरतराले गुहिलपुत्र रा० दाधरमहं वणसीहाम्यां
दत्त क्षेत्र डोहली १ खटुवराग्रामवास्तव्य गौडसोनिगवासुदेवा-
भ्यां दत्त डोहलिका १ आंतरीप्रतिगणके रायताग्रामीय महंतम-
लीवडिपोपलिम्या दत्त क्षेत्र डोहलिका लघुवीज्ञोलिग्राम सगुहिल-
पुत्र राब्राहरूमहतममाहवा—

३० (भ्या द) त्त क्षे (त्र) डोहलिका १ बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभि-
र्मरतादिमि । यस्य यस्य यदा भूमी तस्य तस्य तदा फल ॥छ॥

[इस लेखका निर्देश जै० वि० स० के तृतीय भाग में क्र० ३७४ पर
हुआ है किन्तु उस समय इसे श्वेताम्बर लेख समझकर मूल पाठ नहीं दिया
गया था । इसमें पहले २८ श्लोकोमें सामरके चौहान राजाओंकी बचावली
चाहुमानसे सोमेश्वर तक दी है । इसमें कुल ३१ राजाओंके नाम हैं । इनमें
अन्तिम दो राजाओंने इस स्थानके पार्श्वनाथ मन्दिरको दो गाँव दान दिये
ये—पृथ्वीराज (द्वितीय) ने मोराक्षरी गाँव और सोमेश्वरने रेवणा गाँव
दिया था । तदनन्तर इस मन्दिरके निर्माताकी बचावली विस्तारसे ५१वें
श्लोक तक दी है जो इस प्रकार है —

प्राग्वाटवशीय वैश्रवण (इसने तडागपत्तन, व्याघ्रेरक आदि स्थानोंमें
मन्दिर बनवाये) — उसका पुत्र चञ्चुल — उसका पुत्र शुभकर — उसका
पुत्र जामट (इसने नाराणक स्थानमें वर्धमान मन्दिर बनवाया) — उसकी
दो स्त्रियोसे दो दो पुत्र हुए — आम्बट, पचट, लक्ष्मट तथा देसल (इनने

नरवर नगरमें बीरजितमन्दिर बनवाया) - लक्ष्मणके पुत्र मुनीन्द्र तथा रामेन्द्र - देमलके पुत्र दुष्यक, मोमल, वीगडि, देवस्यर्षा, सीरक तथा राहक-मीयकने मण्डलकर दुर्ग विभूषित किया और नेमिनाथ मन्दिर बनवाया - उसकी स्त्रिया नागथी तथा मामटा - नागथीके पुत्र नागदेव, लोलक तथा उज्वल - मामटाके पुत्र महीधर तथा देवधर - उज्वलके दो पुत्र दुर्लभ तथा लक्ष्मण । इनमें मीयकके पुत्र लोलकने यह मन्दिर बनवाया । मन्दिरके निर्माणका वर्णन ८७वें श्लोक तक किया है । कहा है कि लोलक तथा उसकी पत्नियाँ ललिता, कमलथी और लक्ष्मी विष्यवल्ली नगरमें थे उस समय धरणेन्द्रने स्वप्नमें लोलाक श्रेष्ठीको इस मन्दिरके निर्माणका आदेश दिया । तदनुसार जमीन खोदते हुए एक पार्श्वनाथमूर्ति मिली और उसके लिए लोलकने यह मन्दिर बनवाया । इस स्थानको वरलाडका तीर्थ कहकर यहाँके कई शिवमन्दिरोंका माहात्म्य भी इस लेखमें दिया है । यहाँके रेवनीकृण्डमें स्नान करनेमें कोढ़ आदि रोग दूर होनेका भी वर्णन है । लोलाकके गुरु जिनचन्द्रमूर्ति थे । इस लेखकी रचना माथुर सबके महामुनि गुणभद्रने की । इसे केशवने शिलापर लिखा और गोविन्द तथा देल्हणने उत्कीर्ण किया । यह कार्य फाल्गुन क० ३ सवत् १२२६ को सम्पन्न हुआ । अन्तमें इस मन्दिरको दानरूपमें प्राप्त कुछ जमोनोका विवरण दिया है ।]

(ए० इ० २६ पृ० १०२)

२६६

इन्दौर म्युजियम (मध्यप्रदेश)

सवत् १००७ = सन् १९७१, संस्कृत-नागरी

[इस लेखमें गद्य चिह्न है जिसमें प्रतीत होता है कि यह नेमिनाथकी मूर्तिका पादपीठ होगा । इसमें देशीगणके गुणचन्द्र, श्रीकीर्ति, रत्नचन्द्र तथा भावचन्द्रका उल्लेख है और गुर्जर जातिके वीन नामक व्यक्तिका भी उल्लेख है । समय सवत् १२२ (७) ।]

[रि० इ० ए० क्र० (१९५०-५१) १६१]

२६७

नदिहरलहलि (धारवाड, मैसूर)

शक १०९(५) = सन् ११७३, कन्नड

[यह लेख कलचुर्य राजा रायमुरारि सोविदेवके समय श्रावण शु० (?) गुरुवार, शक १०९ (५), नन्दन सवत्तरका है । इसमें उल्लेख है कि दण्डनायक महेश्वरदेवके अधीन कर मग्नह करनेवाले अधिकारियोने गोट्टगडि स्थित नागगानुण्डकी बसदिके लिए कुछ करोका उत्पन्न दान दिया । उस समय वनवासि प्रदेशपर कासिमय्य दण्डनायकका शासन चल रहा था ।]

[रि० सा० ए० १९३४-३५ क्र० ई० ५९ पृ० १५२]

२६८

वोगाडि (माड्या, मैसूर)

शक १०९५ = सन् ११७३, कन्नड

- १ श्रीमत् पार्थिवकुलेचन्द्र यदुवशवाधिबर्धनचन्द्र मीमसुजं ललना-
जनकामाभिरामन् वल्लाल ॥ दिगिभंगलु मदविहलुगल मलुंकलु
कूर्मनिन्तोमैयुं भोगभीयं भुजगाधिपं बहुमुख सारल्लु यार्सग-
मैन्दुगुणोदग्रमसप्रलक्ष्यालसदोर्दण्डदौल संतोष भिने भूकामिनि
विर्दल आपदुलदि वल्लालभूपालन ॥ आ नृपनगण्यपुण्यं
मानसरूपाहुडेविन भुवनजन मानोन्नतकनकाचलन् धानतरक्षैक-
दक्षरत्ननिधानं ॥ महागमन्त्रकमनीयालवितसुरराजपूज्यचरणा-
व्यन् एनलु सचित्तकीतिपराक्रमप्रभावनन् एनिसि
- २ माधिराज नेगल्लं ॥ तनुविं कामन(न)थिंगीव गुणदि कल्याद्विय
हेमाचलम चारुचरित्रदिदुदधिय गार्भीर्यदिं स्वैर्यदिं कनकाद्रीन्द्र-

मनिंद्रनं विभवदिं गेखिर्दना माचिराजनन् आर्मणिण (सल्लापं
ई) विश्वंमरामागडोलु ॥ आ विमु माचिराजन मावं बल्लय्यन्
अय्यन् ई धरगेल्ल काव गुणदिन् आठन् अटाव गुणगणदिन्
आतन् एणोयप्पनं ॥ अधिगमसम्यग्दृष्टियन् अधिगतसकलाग-
मार्यनं कविबुधमागधदीनजैनजनतानिधियं पोगलल्लुके बल्लर्
आर् बल्लय्यनं विरिदवन् ईयल्लु वल्लं सरणोदहे करुणादिं कयल्लु
वल्लं पुरुषांतरमं बल्ल परिकिपदन्तस्ते •

३ ल नाटं वल्ल ॥ परकान्ताळकजालक्वके पर''''टाराहरलक्के
पानतरोत्तुगस्तनद्वन्द्वसुंदरमंगक्के परांगनाभुजलतासंश्लेषणक्की-
दिसं निरत्त आं • वल्लदेव निटं परिहृतपरदार दीनांधनाय''''
विदितविशदकीतिविश्रुतोदारमूर्तिं स जयतु वल्लदेव श्रीजिने-
न्द्रांघ्रिसेव • ॥ अन्ता बल्लालमहीकांतन वरमन्निवल्लमं बल्लय्य
सन्ततजिनपूजनेगागन्तुकम मो(ग)वदिय वसदिगे विद ॥
नीचेकी ओर

४ हीरवारु ओलवारु मगदेरे कालधोवनहल्लिय यिनितर मचंतु
मनेसुक नेरे मलवत्तियसुक विनित ॥ ''॥ वनपालम सुक-
वनितं मनुभार्गं मदनमूर्तिं विमु बल्लय्यं मनमोसदु भोगवमदि-
योल्लु जिनपूजेगे भक्तिरिंदिदा

५ दिदिन्तिदनेय्ये काव पुरुषंगायुं जयश्री टं कायदे कान्य
पापिगे वारणासियोल्लु एक्कोट्टिमुनीन्द्रं कविल्लेयं वेदाध्यरं
कान्हुट्टोदयशं पोहुंगुमेंहु सारिदपुटीशैलाक्षरं धान्नियोल्लु ॥ विपं
न विषमित्वाहु. देव-

६ स्वं विषमुच्यते विषमेकाकिनं हन्ति देवस्वं पुत्रपौत्रकं ॥
स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत् वसुंधरा • षष्टिर्वर्षसहस्राणि
त्रिष्टायां जायते क्रिसिः ॥ मंगल

- ७ सामान्योय धर्ममेतुर्नृपाणा काले-काले पालनीयो मवद्मि
 सर्वानेवान् माविन. पार्थिवेन्द्रान् भूयो-भूयां याचते रामचंद्रः ॥
 एवस्ति श्रीमन्महामंदलेश्वर त्रिभुवनमल्ल वीरराग वल्लालदेवरु
 टोरसमुद्रदल्ल सुप्रसंकथाचिनोददि राज्य गेयुत्त विरल्लु तरपाड-
 पन्नोपजीवि महाप्रधान सर्वाधिकारि हेग्गडे वल्लुय्य शककालं
 सासिरद् ताम्भैदनेय विजयसंवत्सरद कार्तिक शुद्ध पचमि
 सोमवारददु कालबोवनहल्लिसहितवागि बोगवदियल्लु समस्त-
 सुक्कव श्रीकरणजिनालयद श्रीपाश्वदेवर् अष्टविधार्चनेगदु
 श्रीमदकलंकदेव(सिंहा-)
- ८ हासनस्थितरप्प श्रीपद्मप्रमस्वामिगल्लगे धारापूर्वक माडि कोट्टरु

(इस लेखमें होयसल राजा वल्लालके महाप्रधान हेग्गडे वल्लुय्य-द्वारा
 भोगवदिके पार्श्वजिनालयके लिए अकलकदेवकी परम्पराने पद्मप्रम स्वामी-
 को कुछ करीका उत्पन्न दान दिये जानेका निर्देश है । यह दान कार्तिक
 शु० ५, शक १०९५, विजयसंवत्सर, के दिन दिया गया था । हेग्गडे
 वल्लुय्य महाप्रधान माचिराजका भाव (ससुर या चाचा था)

[ए० रि० मै० १९४० पृ० १५०]

२६६

सोगि (जि० वेल्लारी, मैसूर)

१२वीं सदी, कन्नड (धोरप्पके घरके आगे पक शिलारण्डपर)

[इस लेखमें होयसल राजा विष्णुवर्धन वीरवल्लाल-द्वारा कार्तिक
 कृ० ५, गुरुवारको किसी जैन सस्थाको भूमिदान दिये जानेका
 निर्देश है ।]

[इ० म० वेल्लारी २३७]

२७०

चिक्कहृन्दिगोल (धारवाड, मैसूर)

राज्यवर्ष ८ = सन् ११७५, कन्नड

[इम लेखमें कलचुर्य राजा मोविदेवके राज्यवर्ष 'जयमवत्सरमे शस्त्र-जिनालयको दिये गये दानका वर्णन है। इम लेखकी रचना 'अनुपमकवि-कालिदाम' हित्तिन मेनवोव-द्वारा की गयी थी।]

[रि० मा० ए० १९२६-२७ क्र० ई० १५० पृ० १२]

२७१

कलसापुर (कडूर, मैसूर)

शक १०६८ = सन् ११७६, कन्नड

१ (विम गर्था हँ)

२ कैवल्यवोधेन्द्राधाम षोडशतत्त्र(तीर्थ)कर्तृ विमलज्ञानासिय
मत्सुखारामं माल्के विनेयसन्ततिगे नित्य शान्ति-

३ तीर्थेश्वरं ॥ (१) श्री स्वस्ति होयिमलवगाय प्रतापार्जिनकीर्तये ।
यदुवशनृपान भूमृ-

४ ते ॥ (२) तदन्वयावतारमेन्तेन्द्रोडे ॥ मरसीजोटरनामिपद्मजनज
तत्पुत्रनन्तत्रियत्रिरुहांद्भूतद्भु-

५ धं पुरुरवने तज्ज तत्तनृजायुवायुरपत्य नहुप ययातिमहिप
तत्सम्भवं नरेश्वरजा-

६ तं । यद्दु तत्कुल मलनृपं लोकोत्तमं पुष्टिद । (३) यादवरोळे
होयिमलवेमराद्दुदु सलनिन्दं हुलि-

७ य मेलेयुण्डिगेयाद्दुदु चिह्न वग्मन्नाद्दुदु सले शकपुरद
चासन्तिकेथि ॥ (४) सलनृपनि य-

- ८ लियिं यदुकुलद्रोल् पलम्भरोगेदर् अघरन्वयद्रोल् । यलवद्-
विरोधिकुलिज जनिथिमिदनेसेथेवि-
- ९ नयादित्य ॥ (५) घनमार्गानुगत जगतप्रणुनमित्रं मण्डलाप्र-
प्रतापनियुक्त रिपुभूपसन्तम-
- १० समेद सञ्जन नसन्तोपकर स्वयन्भुजनचक्राह्लादक पुष्टिद
विनयादित्यनृपाल-
- ११ क यदुकुलोत्तुगोदयार्द्रान्द्रिं ॥ (६) विनयादित्यनृपालन कुल-
वधुवेनिमि सिरियोल्-
- १२ वाणियोल् तनगे केलेयोल्नु सुभजनवेने केलियव्वरसि
सरसिजानेनेयेसेदल् ॥ (७) मति केलियव्वरसिगमा-
- १३ विनयादित्यनृपनिग पुष्टिदमुद्धतवैरिद्रर्पदलनोद्यतमयनयशीर्ष-
शालियेरेयंगनृप ॥ (८)
- १४ विनयादित्यावनिपालन सुतनेरेयंगं सगवित् मू निरन्व्यं
धर्मदीक्षागुरुविनतमहीभृत्स्यमू-
- १५ हैकरक्षावनधिमिय समस्ताश्रितनटनटीसिन्वमू कलनिव निजत-
सस्यवाणिमुखमणि मा-
- १६ पुरनिर्मलाधोधसुतं द्विमरुचियन्ते सेवादरविय नित्यं सरसिजम
मनोरमकुसुमंगल् कद-
- १७ नयं मदन विदियागि ताने तोयुदसृत्तदिनेष्टे निर्मिसिदनेज्ञदे
केलवेय भूरमणन कान्तेय पेरत-
- १८ नेञ्जद्विर् एचकदंविशरणिय ॥ (९) अन्तेरेयंगमहीशन कान्तेगे
जनिथिसिदरेसेव बल्लालमहीकान्त विष्णुमहिपननन्तगुण
- १९ नृपलकामनुदयादित्य । (१०) अघरोधद्रुमनागियु शुधनिकाय-
स्त्यमानि श्री विशोपोक्षतियिन्दमु -
- २० सतनेनिप्यं सञ्चरिताद्वि धगगाजलधौतनिर्मलकुलदृप्तारिदर्यापहं
सुव 'विभव' श-

- २१ श्रीविष्णुभूपालकं ॥ (११) जनियिसिडं विष्णुमहीक्षन ल ·
विदनुपम नरसिंहावनिप नतरिपुभूराल-निकायलला -
- २२ टतटविघटितचरण देवतृसिंहन प्रियमहिपीपट्टोलरेत्तु पट्टमहि-
पिये देचलदेवा लसल्लतागि
- २३ राजीवदलाक्षि पल्लवनिमाधरं पाटलकण्ठि कौकिलारावे · राजीव-
नल" य । यनेये ताल्दिदल ॥ (१२) कालनिमप्रत -
- २४ जनरसिंहमर्हापतिग मडंमलालसयानेकम्बुनिमकन्धरे यंचल-
देविग · श्रीललनेशन्तानेने पुट्टिदन्जित -
- २५ पुण्यमूर्ति वल्लालनृपाल समदत्रेरिमहीमुलदपर्मजन ॥ (१३)
क्रा" वादिधरावनितेय चातुर्यदि नार्ढा (?)
- २६ निरमणि रमणाशकुलम श्रीयोलायशानुरत्यागदि वन्दिद्वन्द-
मनित्यानतसत्यदि चरितदि सन्तमु तन्नोल् क्रमदि निश्चल -
- २७ मपूर्व तलेद वल्लालभूपालक ॥ (१४) निजपाठानत दित-
लक्ष्मीवल्लम - ला "मूर्ति विवुधाराध्य
- २८ जगन्नेत्र नीरलमित्र स" दे कान्तनेनिप प्रतापदेवं समस्त-
जगद्वन्धपठारविन्द" रारा · नल ॥ (१५) पुरूहू (त)
- २९ ख्यातभोगं शिखिनिमघनतेज यमाचार्यशौर्यं नरबाहातोष · वायु-
सत्रं धनार्धीश्वरसं -
- ३० घर महेशप्रकटितमहिम लोकपालप्रभावान्तरनादं दिग्बधूमण्डन-
विशदयशं वीरवल्लालदेव ॥ (१६) भृगुगेमि वसराज
- ३१ ह्यदिनिमसमारूढप्रौढियिन्त्रं मगदसं वेषदिन्त्रं द्विविजपति कं
सस्त्रगुण प्रभूति
- ३२ राघवन् इनतनय त्यागदि वादिभूपाल नद्विदतप्रतिमनेनिमिद
वीरवल्लालदेवं ॥ (१७) स्वरित समधिगतपच -
- ३३ महागण्डमण्डलेश्वर द्वारावतीपुरवराधीश्वर यादवकुलाम्बर-
धमणि मम्यक्त्वचूडामणि तलकाडुकौण्डिगिब -

- ३४ नवामिवुच्छगिहानुंगलगोण्ड भुजवल्वारशंगनमहायद्यर् निश्का-
कप्रताप होयमलवारयद्दालदेवरमर् द्वारमसु -
- ३५ द्रदोल् सुग्गदि राज्यं गेयुतिर तत्पादपशोपजीधिगाल् एनिमिद
श्रीमन्महावद्दुच्यवहारि कचडेमय्य नति
- ३६ द्यवर गुरुकुलान्वय क्रममन्तेन्द्राडे ॥ विमलश्रीजैनधर्मकमल-
सोऽविनन्तोप्पुगु मूलमंघ कमर्नायं
- ३७ कोण्डकुन्दान्वयम परगण देशि गच्छ क्रमदि तत' 'वर्ध' .
गेमेयं श्रीवधुटीरम -
- ३८ ण देवेन्द्रसैद्धान्तिक मुनियेसेद महोत्साहधामं ॥ (१८) तच्छिष्य
नाडे विधुतगुण वृपनमन्दि मुनि कार्या -
- ३९ स्पर्गाण्डुपद्यामिन्द चतुर्मुखाख्येयनाल्दम् । (१९) अवरग्र-
शिष्यरोलश्रन्तदि द्विजराजिकुमनवाद्मददपडे -
- ४० नावर्तिकीर्तिवृक्षुनु श्रीगोपनन्दिपण्डितदेवर ॥ (२०) जिनसमय-
यशश्चन्द्र जिनागमाग्मोनिधिप्रवर्धनचन्द्र जिनमुनिकु -
- ४१ वलयचन्द्र' जिनचन्द्र धितुधनिकरराकाचन्द्र' ॥ (२१) निरवद-
यधोधदशानचरणयुत्तर माघनन्दिसेद्धान्तिकदेवरशि -
- ४२ प्यरार् क्षमान्त्रितनिरुपमधमेन्द्र रत्ननन्दिमुर्नान्द्र ॥ (२२)
तस्मधर्मर संहिताद्यापिलागमार्यनिपुणन्यारण्यसशुद्धि -
- ४३ यिं ह सैद्धान्तिकतस्त्रनिणयवचोविन्यासदि श्रुतिसम्बद्ध .
तयनार्थक्षास्त्रमरतालकारमाहित्यटिरुद्धान्ह
- ४४ बालचन्द्रमुनियं विद्याधर (२३) चक्रे श्रीमूलसध' पद्मकर-
- राजहमो' 'निपुणप्रवराचतस' जीया -
- ४५ जिज्ञेनेन्द्रसमयार्णवपूर्णचन्द्रः क्रुधा. । (२४) अन्तेनिसिद्ध
श्री हलाचार्यर गुड्ड देदी -
- ४६ उज्जयान्त्रयदारिधिचन्द्रमनु . ग् अहन्त्य . चरितनुं चरजैनसमय-
कुमुदेन्दु अन्यायार्जितधनम -

- १७ नेयत्रे क्वडमय्यन् अणुवन्तय्यम् ॥ (२५) वरसुगुणसमन्वित
क्वडमय्य तन्न • पूज्ययशःमद्गुणि केतिसेद्वियुसुदात्त -
- २८ प्रणयरेचिसंदिगामन्ता पूणुमसेदिगामिलासंस्तुत्य देकवेग प्रियपुत्र
प्रसु दाम् • सम्पूर्णमव्योदय
- ३९ अनुपम • नेदि • यदा कान्ते • अनूनशौर्य निवि
- ५० • नामादि • अपूर्व • जनविनुत जक्किमेद्विय वनिते सु -
- ५१ • दामे • निय तलेदल ॥ (२७) अवराध्मीयोद्दयपुण्योदय
- ५२ • नितिल्लगुणक्कास्थान त्रमेन पुण्य कुलवत्तु देक-
- ५३ • दिनादात्तल्लभोनिचामं ॥ (२८) नोत्तिल्लता दानधर्मपयो-
- ५५ धिचन्द्रम रादिभनु • ब्रंढदानकलयमूज विरो-
- ५५ तनुजोत्तत णिमेद्विय ॥ (२९) स्वदिन श्रीमन्महामण्डलेश्वर
मुजवलवीरगंगनमहायशूर नि शंकर-
- ५६ ताप होयमलत्रंवरमह शकवर्य १०६८ नेय दुर्मुखिमं वत्सरद
उत्तरायणसक्रमणदोल् अमरदानव-
- ५७ माहुवल्लि • श्रीमन्महावडुव्यवहारि क्वडमय्यन देविसंद्विय
तां मादिसिद श्रावीरवल्लालजिनाल-
- ५८ यद यकलाहारदानक्क खण्डस्फुटितर्जाणोदारक्कमेन्दु विन्नपं
गेय्यलवर
- ५९ • गणत्र • तंढ श्रीमन्महामण्डलाचार्य वालचन्द्रसिद्धान्त-
देवर्गे चारा-
- ६० पूर्वक वालचन्द्र • होसनाडोलगण कोरटिकेरेयनदर काव्वा-
ल्लिगळो-
- ६१ कनादि • नाचहल्लि मडवद मरियहल्लियोलगाद् हल्लिगल
सामासम्बन्धमेन्तेन्दाडे म्-
- ६२ वनाल • प्यडु - रि - कक्य हलेयिलेय मोरदि तँकलारदिगेरं
नैरित्य-

- ६३ ' यदोल् घाययदोल् नेरिलकरेथोलरण माविनमर टंवर
भरगल्ला '
- ६४ बहसु नगर मुन्ता वायय्य
- ६५ लाल तिगुल तेलुग कर्नाडिग देश मुख्यमाद सु-
- ६६ ' इद नेरंपुलिय चिकहद्विचय केतलदेविय गडिय वाचलेश्वरदे
सम-
- ६७ स्तनस्त्र श्रीशान्तिनाथदेवर 'कर कैकर्यकके विट्टायमेन्नेन्नेडे
होयपल नाडोल
- ६८ ति हेरिंगे हागवेरदु कत्तिय हेरिंगे हाग ओन्दु कुट्टुरे
- ६९ कर्पूरपट्टनूलण्ड-नके हणवोन्दु श्रीगन्वद मालवेगे
- ७० हणनस्त्र वडिय मलवेगे हण नाळ्कु येत्तिन मलवेगे हण
घोण्
- ७१ हसुवेगे हाग वोन्दु पडसालेय गडिगे वरिसके हण वोन्दु
आविडिव
- ७२ रल देविय गडिगे वरिसकके हाग वोन्दु निच्च संडिवत्त
दवसद हेरिंगे मान वोन्दु
- ७३ मलसु दड हेरिंगे मान वोन्दु गणदोल् धारथर
- ७४ गेय तडियोल् शतसहस्रब्राह्मणगंलंकारममन्वत्त शतसहस्र-
ल-त्रिलेगलं
- ७५ क्षेत्रदोळानवर् ब्राह्मणरुमननितुकविलेगल कोन्ड महापताक-
नक्कु परिपालिपु
- ७६ गन्ते वर ' निगिरं धरेगे शिलानासनाक्षराधलियेसेणुं ॥
स्वदत्ता
- ७७ हरत वसुन्वरा पट्टिर्षमहस्त्राणि त्रिष्टाया जायते क्रिमि ॥
सामान्योर्थं वर्मसे -

७८ 'लनीयो भवन्ति । सर्वानितान् भात्रिन पार्थिवेन्द्रान् भूयो-
भूयो याचते राम -

७९ य स्थलद चनुस्तीमेय निवेगनमेन्तेन्दोडे मूडलु हिरिय
राजधीडि मांडल

८० 'य घलेयलु पश्चिमके नीलविप्यत्तु वडगण मोदलोल
तेकलु अ .

[यह विस्तृत लेख दुर्मुखि सवत्सर, शक १०९८ में लिखा गया था । इसके प्रारम्भमें हीयसल वशके राजाओका कुलवर्णन वीरवल्लालदेव (द्वितीय) तक किया है । इनके समय देविसेट्टि नामक धनिकने वीरवल्लालजिनालय नामक मन्दिर बनवाया । मूलसंघ-देसिगण-कोण्डकुन्दान्वयके आचार्य वालचन्द्रकी प्रेरणासे यह कार्य हुआ । इस मन्दिरके लिए राजा वीरवल्लाल-ने कुछ गाँव तथा कुछ करोका उत्पन्न अर्पण किया था । वालचन्द्रकी गुरुपरम्परा देवेन्द्र मैद्धान्तिक - वृषभनन्दि-धतुमुंख-गोपनन्दि-जिनचन्द्र-माघनन्दि-रत्ननन्दि-उनके गुरुबन्धु वालचन्द्र इस प्रकार दो है ।]

[ए० रि० मै० १९२३ पृ० ३६]

२७२

कुचंगि (तुकूर, मैमूर)

१२वीं सदी (सन् ११८०) कक्षड

[यह लेख एक जिनमूर्तिके पादपीठपर है । इसकी स्थापना मूलमघ-देशीगण-पनसोणे गाखाके नयकीतिसिद्धान्त चक्रवर्तिके शिष्य अघ्यात्मि वालचन्द्रके उपदेशसे बम्मिनेट्टिके पुत्र केसरिसेट्टिने वेलूरमें की थी । (समय लगभग ११८० ई०) ।]

[ए० रि० मै० १९१६ पृ० ८३]

२७३

पाटशीवरम् (अनन्तपुर, आन्ध्र)

शक ११०७ = सन् ११८५, कन्नड

[यह लेख चालुक्य राजा वीर सोमेश्वरके समय शक ११०७ विष्वा-
वसु सबत्सरका है। इसमें राजाके सामन्त भोगदेव चोल महाराजाका तथा
वीरणन्दिसिद्धान्तचक्रवर्ति और उनके शिष्य पद्मप्रभमलधारिदेवका
उल्लेख है। [रि० सा० ए० १९१७-१८ क्र० २८ पृ० ७२]

२७४

लक्षकुण्ड (धारवाड, मैसूर)

राज्यवर्ष ४ = सन् ११८५, कन्नड

[यह लेख त्रिभुवनमल्ल वीरसोमेश्वरके राज्यवर्ष ४, विश्वावसु
सबत्सरमें पुष्य शु० २ बुधवारका है। इसमें कुछ सेट्टियो द्वारा अष्ट-
विधार्चनके लिए नोम्पियवसदिको कुछ दान देनेका उल्लेख है। कुछ
शिल्पकारो द्वारा शान्तिनाथदेवको दिये हुए दानोका भी उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२६-२७ क्र० ई० ५५ पृ० ५]

२७५-२७६

कुमठ (उत्तर कनडा, मैसूर)

१२वीं सदी, कन्नड

[यह लेख कदम्ब राजा वीर कावदेवरसके राज्यकालमें चैत्र व० १,
मगलवार, श्रीमुख सबत्सरके दिन लिखा गया था। चन्द्रकीर्ति भट्टारकके
शिष्य तथा वर्धमानसेट्टिके पुत्र सातिपेह्के समाधिमरणका इसमें उल्लेख है।
यहीके एक अन्य लेखमें एक सेट्टिके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[रि० ई० रा० १९४७-४८ क्र० २३८-२४० पृ० २७]

२७७-२७८

चम्बई (महाराष्ट्र)

१२वीं सदी, कन्नड

[यह लेख भायसलाके जैन मन्दिरमे है । कदम्ब राजा कावदेवके राज्यवर्ष ४४, ईश्वर मन्वत्सरमे भाद्रपद शु० १२, सोमवारके दिन नागव्य-के समाधिमरणका इनमें उल्लेख है । यहीके एक अन्य समाधिलेखमें दी हुई तिथि इस प्रकार है - भाद्रपद शु० ७, सोमवार विक्रम मन्वत्सर ।]

[रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० १९९-२०० पृ० ३७]

२७६

नागपुर म्युजियम (महाराष्ट्र)

संवत् १२४५ = सन् ११८८, संस्कृत-नागरी

[यह लेख एक मूर्तिके ऊपर है । माणिकसेनदेव, वीरसेनदेव तथा वाजसेन (?) देवका इसमें उल्लेख है जो मम्भवत जैन आचार्य थे । तिथि संवत् १२४५ दी है ।]

[रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० २६७ पृ० ५०]

२८०

चिलिगिरि रंगनवेष्ट (मैसूर)

शक १११२ = सन् ११६०, कन्नड

- | | |
|--------------------------------|-----------------------------|
| १ शुभमस्तु श्रीमत्परमगंभी- | २ रस्याद्वाढामोषलाञ्जनं जी- |
| ३ यात् श्रेष्ठांश्चनाथस्य शासन | ४ जिनशासन स्वस्ति श्रीप्र- |
| ५ तापचक्रवर्ति होयिमरु श्रीवी- | ६ खल्लाकण्ठेवरसरु पृथुविरा- |
| ७ ज्यं गेर्युत्तिरल्लु सकवरुम | ८ १११२ साधारण सवरट वै- |
| ९ साकसुद्ध पंचमि मिह | १० ... |

[यह लेख गगनवेदिके नमीप जगल्लमं श्रवणनअरे नामक पापाणपर मुदा है । होयमल गजा वीरवल्लाल (द्वितीय) के राज्यमें वैशाल्य शु० ५, गुरुवार, शक १११२, मावारण मवत्सर्गके दिन यह लिखा गया था । लेख टूटा होनेमें इसका उद्घ जात नहीं हो सकता । किन्तु प्रारम्भमें जिनशामनकी प्रशंसा है अत यह किमी जैन व्यक्तिगता निमिधिलेख था किमी जैन मन्दिरका दिये गये दानका उल्लेख प्रतीत होता है ।]

[ए० रि० मै० १९३८ पृ० १९३]

२८१

होसनगर (मैसूर)

शक १११२ = सन् ११९०, कन्नड

- १ श्रीमत्परमगभारस्याद्वाढामांघलाठनं
- २ जीयात् श्र्लोक्यनाथम्य शामन जिनशासनं
- ३ इरस्ति श्रावत्लाळदेवरमर-
- ४ .
- ५ जेय उत्तरात्तरामिरद्धमिरलु सक वरुप
- ६ १११२ इरद्धनेय मर्वधारिसवत्सरद
- ७ ज्येष्ठ सुध ष्टादशि वष्टवारदलु गु-
- ८ णसपन्नरुष्य पुष्पयोऽश्वर गुट्टि श्री-
- ९ मनु मर्वाधिऋारि बम्माचारिय इण्दति इ-
- १० श्वकरुनु सुरलोकप्राप्त्यादलु

[इस लेखकी तिथि ज्येष्ठ शु० ११, शनिवार, शक १११२, सर्वधारि सवत्सर है (यह तिथि अनिगमित है क्योंकि शक १११२ साधारण सवत्सर था) । उक्त समय होयसल राजा बल्लाल (द्वितीय) का राज्य था । सर्वाधिकारी बम्माचारिकी पत्नी हव्वकाके समाधिभरणका इम लेखमें निर्देश है । इनके गुरु पुष्पसेनदेव थे ।]

[ए० रि० मै० १९३१ पृ० १७२]

२८२

सोमपुर (मंमूर)

शक १११४ = मन् १९९०, कन्नड

- १ श्रीमतपरमगर्भारस्याद्वाढामोचलांछन जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य
शामन जिनशासनं ॥ (१) जयति सकलविद्यादेवता -
- २ रत्नपीठं हृदयमनुपलेप थस्य दीर्घं म देव (१) जयति तदनु
शास्त्र तस्य यत् सर्वमिथ्याममयनिमिरघातिज्योतिरेक
नराणा ॥२)
- ३ द्वाप्रदिं सलनेम्बनाग पुलियं पोय्द्रा सल पोय्मल थोगं
- ४ पंलम्बह राज्य गेयुत्तिर्पिनं । (३) विनयप्रतापमंथी जननाथो-
चिनचरित्रयुगादिं जगम जननयनवेनिमि नेगल्दं विनया-
- ५ द्वित्य समस्तभुवनस्तुत्य । (४) आतगतिमहिमं हिमसेनुममा-
- ६ ग्यातकीर्तिं मन्मूतिमनोजातं मर्दितरिपुनृपजातं तनुजातनादने-
रेयंगनृपं । (५) बल्लिद्ररवनीपतिमम्पाद्रितधर्मार्थ-
- ७ कामसिद्धिबोलवर्नावल्लभरातन तनयर् बल्लाल विष्टिदेवमुदया-
दित्य । (६) मूवररमुगलोलं तां भाविमे मध्यमनडागियु
- ८ नृगुणमद्भावदिनुत्तमनाद भाविसवद्भूतजिष्णु विष्णुनृपाल ।
(७) मलेयं भाधिमि माण्डने तलवन काचीपुर कायतू -
- ९ र् मलेनाटा तुलुनाडु नीलगिरिया कोलालमाक्रोंगु नन्गन्थि-
च्छगि विराटराजनगरं बल्लरिवैल्ल दुर्वारदोर्वलदिं
- १० लीलेयि माघ्यमाद्रुवेणैयार् विष्णुक्षमापालनोल् । (८) येन-
लाल्द चूडामणि हारमने
- ११ किन्नरंइवरशिरःप्रोत्तुग फण्णि गुणमणि
- १२ मय्यक्तचूडामणिः भा विष्णुवर्धनंग येनिमित् लक्ष्मादेविगमुद्-
भविसिदनी भूविश्रुत नरसिंहनाहव-

- १३ सिंह ॥ (६) पदेमातेम्बन्धु कण्ठंगमृतजलधि तां गर्वति गण्ट-
वातं जुडिवातंशेननेश्चै प्रलयसमयदोल् मेरेय मोरि वर्षा
कडलन्-
- १४ न कालन्त मुलिट कुलिकनन्त युगान्तागिनयन्तं मिडिलक्षं
सिगदन्तं पुरहरनुरिगण्णनन्ननी नारसिंह । (१०) रिपुसपद्वर्ष-
दावानलवहलशि-
- १५ खाजालकालाम्बुवाहं रिपुभूपालप्रदीपप्रकरपट्टतरस्फारक्षंशासमीरं
रिपुनागानीकताक्ष्यं रिपुनुपलिनी-
- १६ षण्ढवेतण्डरूप रिपुभूभृद्भूरिब्र रिपुनुपमटमातगसिंहं नृसिंहं ॥
(११) " पोगल्द तीक्ष्णत्ताप' गिटु पोगल्दुट मा-
- १७ षण्ढोड शत्रुगान्नप्रगलद्रक्तप्रवाहप्रबलगुरुध्वानसुं शत्रुभूभृद्भू-
सन्दोहदाहप्रचुरचिटिचिटिध्यानसु निविक-
- १८ क्षपं पोगलुत्तिकुं नृसिंहप्रबल भुजवकाटोपम धात्रिगोळं ॥ (१२)
आ विमुनिन पट्टमहादेविगे सद्गुणचरित्रादिन्दं सीतादेविगे मि-
- १९ गिलाडेचलदेविगे वल्लालदेवनुद्यगेष्ट ॥ (१३) कलिकाल-
क्षत्रपुत्रप्रबलतरदुराचारसन्दोहदिन्दं-पोले पोर्त्त पोस् वेसत्तलव-
- २० लिट महाकान्तेय रक्षिसलका जलजाक्षं ताने बन्दिन्तवतरिसि-
टवोल् वीरवल्लालदेवं कुलजात्याचारसार नृपवरनुद्यगेष्ट-
- २१ नाश्चर्यशौर्यं ॥ (१४) विनयश्रीनिधिय विवेकनिधियं ब्रह्मण्यन
पूर्णपुण्यननुदामयशोधिय जितजगत्प्रस्थथिय सर्वसज्ज-
- २२ नसस्तुत्यननुद्भवद्वितरणश्रीविक्रमादित्यन मनुजेश्वर मलेराज-
राजननठे वल्लालन पास्वरं । (१५) उरिगण्णिं वेन्द चण्ढा
तिपुर-
- २३ सुरिडवोल् सुसुरिर्लदास्गार्ग रि दन्दर धगिल धन्धग धग
चेदे चेल्चेल्चितिलगट्टु पोर्त्तेश्वरव कैगण्मे दिक्पालकर भलवलय-

- २४ ल् वीरवल्लालनिं (दिं) दुरिदुत्तुच्छगियोडे रिपुनृपति पेल-
लुण्टे ॥ (१६) रणरंगागणशूद्रक नडेदोडिन्तुच्छंगि नुर्चलित्त
- २५ नन्क्षणदि नोडे विराटराजपुर वीनुत्तायन् सुन्नान् संवुणरापोञ-
नमात्रक नेरेडरिल्लेन्डन्डु वल्लालदीर्गुणव वाणिसलण्ण
- २६ वल्लवरदारी भूरिभूचक्रदोल् ॥ (१७) विलयाद्रि येनिप मेवुण-
यलन 'निचयाविल मकराकुलवी यदुकुलपरितरग-
- २७ तवायत्तु वन्डु' .. ॥ (१८) वन्डनदृप्तारिरक्त कूडे ह्यसुर-
दिन्डा 'गेलिगेत्तगद था द्रोल् सुम्पेण पेणन वेत्ति-
- २८ 'भूनालि पुण्यराशीकृतविपुलतल वीरवल्लालदेवं ॥ (१९)
- २९ स्वस्ति ममन्तसुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लम राजाधिराजपरमेश्वर
परममटारक द्वारग्वतीपुरवराधीश्वर वामन्तिकारंवीलवध-
- ३० वरप्रमाद रिपु-भमर्दनविनोद यादवकुलाम्बरद्युमणि सम्यक्स्व-
चूडामणि शत्रुक्षत्रिय-
- ३१ मानमर्दन वीररिपुदर्पशर्पञ्जानिल श्रीमद्वीर्य पराक्रमैक-
प्रभाव । निरुपमात-
- ३२ क्यं प्रताप नयविनयस्वभाव । मकलजनमस्याशीर्वाट । सुद्गर-
समरकेलिमम-
- ३३ क्त रिपुविजितादित्यप्रताप । म्पतांग विल्लास सरम्बती
- स्तम्बेरम राज-
- ३४ कण्ठीरव । पाण्डयकुल ' दण्ड । पल्लवकुलयशोविपिनटावानल ।
...मिहलसपालकुरगकुलपलायनकार-
- ३५ ण कठोरनिजविजयदोर्दण्ड'.. । सकररिपुनृपकुल इत्यादि-
नामादि-
- ३६ ममस्नप्रशस्तिसहितं श्रीमत्मार्वभौम सप्रामराम मिल्लमदिशा-
पट्ट ' धरित्रीपट्ट मलेराजराज मलेपरोल्गण्ड

- ३७ तलकाहु-गंगवाडि-नोलम्बवाडि-वनवासे - पातुंगल-हुकिंगरे-हल-
सिंगे-बेलवल-तलवल्लि-तलिथुगणोण्ड मुजवलवीरगं-
- ३८ गनेकागवीर सनिवारसिद्धि गिरिदुगंमहल चलदकरामनसहाय-
शूर निष्कंप्रतापचक्रवर्ति श्रीवीरवल्लालदेवनसम्भ्यातनिजचतु-
रगवलं
- ३९ वेरसु सेवुणवलमेल्लमं वीरविकामनेम्ब पट्टमानदिं तालुदुल्लुलिये ।
सेवुणवलजलधि-वडवानलकनेकागदि सप्तागसा-
- ४० आज्यमनलवडिसि राष्ट्रकण्टकर निर्मूलमं माडि कल्याणपर्यन्त-
मागि सुखसकथाचिनोददिं राज्य गेटयुत्तमिरे
- ४१ तदूराज्यपूज्यमप्य राजधानि दूरसमुद्रटोलु श्रीमद्वादीमसिंह
तार्किकचक्रवर्ति श्रीपालत्रैविद्यदेवरमवर गुडुगल मा-
- ४२ रिसेट्टियु कणिसेट्टियु भरतिनेट्टियुमिन्ती नालवरु नानाटंसियुं
नगरसु श्रीमद्रामिनवशान्तिनाथदेवर भव्यजिनालयमेनि-
- ४३ प नगरजिनालयम माडिसिट राजसेट्टियन्वयमुमाचार्यवलियु-
मेन्तेन्टोदे(१)श्रीमद्दमिलसंघेस्मन् नन्दिंसंघास्स्य-
- ४४ रुगल (१)अन्वयो माति निश्कौषशास्त्रवारागिपारगै(१)श्रीवर्ध-
मानस्वामिगल धर्मतीर्थं प्रवर्तिसुवह्नि गौतमस्वामिगळिं भद्रवा-
- ४५ हुस्वामिगळिं भूतवल्लिपुष्पदन्तस्वामिगळिं सुमतिभटारकरिन-
कळकंदवरिन्द वक्रग्रावाचार्यरिं वज्रनन्दिगळिं सिहनन्दिगळिं
परवादिमहळरिं
- ४६ श्रीपालदेवरिं श्रीहंसनेरिं दयापालमुनीन्द्ररिं श्रीधिमयदेवरिं
शान्तिदेवरिं पुष्पसेनदेवरिं चक्र-
- ४७ वर्तिं श्रावाडिराजदेवरिं श्रीशान्तदेवरिं शब्दप्रह्वरवामिदेवरिं
अजितसेनपण्डितदेवरिं मल्लिपेणमलधारिस्वामिगळिं
- ४८ श्रीपालत्रैविद्य गद्यपद्यवचोविन्यासं निसर्गं विजयविलास । तद-
नन्तरं श्रीमत्त्रैविद्यविद्यापात-पठकम-

- ४६ लाराधनालब्धबुद्धि सिद्धान्ताम्भोनिधान मृतास्वाद...दीक्षा-
शिक्षासुरक्षा' 'ऋचाकपतिनिपुण सन्तत मव्यसेव्य सोयं
- ५० दाक्षिण्यमूर्तिर्जगति विजयतेवासुपूज्यव्रतीन्द्रः (॥) तदनन्तर
सुरराजेन्द्रमदेमदन्तचयदोल् ङिगामि . मन्दिरदोल् म-
- ५१ गंकराल वि लतमो हिमाद्रिकूटंगलोल् धरणान्द्रोद्धकिरीटकूट-
तलदोल् वाग्देवि येन्द्रविल् श्रीमुनि वज्र-
- ५२ नन्दिय गभीरोदार वलसित ज-
- ५३ गल कोडिनोल् पोदल्देसेद्दु मन्दरमनेय्दे . यशोलतेये मुनि
वज्रनन्दिय
- ५४ इगडलन्नरुवलि वज्रनन्दिव्रतिया । तत्स-
- ५५ मयदोल् कुमारनन्दु ममस्तप्रभुगावुण्डगलि नाड कायु प्रताप-
चक्रवर्ति वीरवल्लाल
- ५६ देवनं काणल्वेडि वन्दिर्दल्लि अमिनवश्रीशान्तिनाथदेव ममष्ट-
विधाचनेयुम पूज्युमं ऋषियराहारदानमुमं
- ५७ कण्डु पिरिदुं सन्तस माडि देवर श्रीकार्यक्के नाडगौण्डगल्
तम्मोलैकमत्यवागि प्रतापचक्र-
- ५८ वर्ति वीरवल्लालदेव वन्दु शान्तिदेवरष्ट-विधाचनेगं खण्डस्फु-
टितजीर्णोद्दारकक ऋषियराहारदानककवागि
- ५९ शकवर्ष १११४ नेय विरोधिकृत्संवत्सरद उत्तरायणसंकवाण-
दन्दु वज्रनन्दिसैद्धान्त-देवरिगे धारापूर्वकं नाड मैसेनाड
- ६० गुम्मनवृत्तियोल् मुष्ण्डियं कडलहल्लिय कडलहल्लिय ईशा-
न्यद तारेना-
- ६१ ड सन्तेनाडा गण्णिनाड नडदु थेल्लुवलद सीमेय नट्ट कत्तु
अल्लि गुरविनगुण्डिये मरनितालेयमो -
- ६२ रडि मोरडि चचरिवल्लद तडि कडलेयहल्लिय आग्नेयदल्लुरिद-
वालिकेय लविवल्लिय गुम्मनवृत्तिय ना-

६३ गव य मोरडि चचरिवल्ल मत्तवी कडलेयहल्लिय नैश्रत्त्यद
वल्लुरेय कणि--

६४ यकलु खडंय 'कालवूरवल्ल मत्तिय मरन 'गल्लुत्तट्टु
मत्तवी कल्लेयहल्लिय वायव्य--

६५ द तोरेनाड हल्लियधीडिन त्रिसन्धियोल्लु 'कगल्लुमोरडि अल्लि
चंचरिवल्ल तेत्तट्टु घट्टुसु अ

६६ ल्लि मत्तवी कडलेयहल्लिय इयान्य गुम्मनवृत्तिय त्रिसन्धिय
नहुगणेय कूडिसु इन्तिट्टु सीमाक्रम । मंगल महाश्री

६७ भूमिदानात् पर दान ॥ स्वठत्ता परदत्तां वा थो

६८ हरत वसुन्धरो पट्टिर्षंसहस्राणि त्रिष्टायां जायते क्रिमि'

[इस लेखके प्रारम्भमें होयसल राजाओकी वशावली वीरवल्लाल (द्वितीय) तक दी है। वीरवल्लालने मैसेनाट प्रदेशके दो ग्राम-मुच्छण्ड तथा कडलेहल्लि अभिनवशान्तिनाथमन्दिरको अर्पण किये थे। इस दानकी तिथि अंक १११४ की उत्तरायणसक्रान्ति थी। यह मन्दिर कई नाडुगौण्डोंने तथा सेट्टियोने मिलकर बनाया था। मन्दिरके कार्यका निरीक्षण कर युवराजके प्रसन्न होनेपर राजाने यह दान दिया था। वासुपूज्य व्रतीन्द्रके शिष्य वज्रनन्दि सिद्धान्तदेव इस मन्दिरके प्रमुख थे। इनकी गुरुपरम्परामें द्रमिलसघ-नन्दिसघ-अरुगल्लवयके निम्नलिखित आचार्योंके नाम दिये हैं- गौतम, भद्रवाहु, भूतबाल, पुष्पदन्त, सुमति, अकलक, वक्रधीव, वज्रनन्दि, सिद्धनन्दि, परवादिमरल, श्रीपाल, हेमसेन, दयापाल, श्रीत्रिजय, शान्तिदेव, पुष्पसेन, वादिराज, शान्तदेव, अश्वरूपा, अजितसेन, भरिलपेण, श्रीपाल (द्वितीय)। श्रीपाल त्रैविश्वके शिष्य वासुपूज्यव्रतीन्द्र ही वज्रनन्दिके गुरु थे। वर्तमान समयमें यह लेख सोमपुरके निकट नजेंदेवरगुहू नामक पहाडीपर है। वहाँके मन्दिरका रूपान्तर क्लिवमन्दिरमें हो गया है।]

[ए० रि० मै० १९२६ पृ० ४७]

२८३

इंगलेश्वर (विजापूर, मैसूर)

शक १११७ = मन् ११६२, कन्नड

[इस लेखमें तीर्थ चन्द्रप्रभदेवकी शिष्या पेण्डर वाचि मुत्तब्रेके ममाविमरणका उल्लेख है । शक १११७ का उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९३०-३१ क्र० ई १४ पृ० ८५]

२८४

ताडपत्री (जि० अनतपुर, आन्ध्र)

शक ११२० = मन् ११६८, कन्नड

रामेश्वर मन्दिरके प्राकारके उत्तर पश्चिम कोनेपर

[इस लेखमें नोमिदेव तथा काचैलादेवीके पुत्र उदगादित्यका उल्लेख है जो जैन था और ताडिपर ताडपत्रीमें रहता था ।]

[इ० म० अनन्तपुर २०३]

२८५

वेलगामि (मैसूर)

सन् ११६९, कन्नड

[इस लेखमें होयमल राजा वीरवल्लालके समग्र सन् ११९९ में महाप्रधान मल्लिकर्ण दण्डनायकके अबोन हेगडे निरियण्ण-द्वारा मल्लिका-मोदगान्तिनायजिनालकके लिए आचार्य पद्मनन्दिको कुछ करोका उत्पन्न दान दिये जानेका उल्लेख है ।]

[ए० रि० मै० १९११ पृ० ४६]

२८६

कान्तराजपुर (मैसूर)

१२वीं सदी, कन्नड

- १ श्रीमत्परमगभीरस्याद्वादामोघ-
- २ लालनं (१) जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शा-
- ३ सन जिनज्ञासन ॥
- ४ स्वस्ति श्रोमन्महाप्रतापचक्रवर्ति गण्डभेरुण्ड मलपरोल्
- ५ गण्ड शनिवारसिद्धि गिरिदुर्गमक्कल चलदकराम होयसलवी-
- ६ रबल्लालडेवरु सुखसंकयाविनोददि पृ(ध्वी) राज्य गेयुत्तु-
- ७ तमिरे ॥ तत्तुश्रीपादसेवकरु कब्बहिनवृत्तिय अधिष्ठा-
- ८ थकरु महापसायतरु परमविश्वासिगल् सामिसन्-
- ९ तोषकरु सेनुणकटक सुरेकाररु शरणागतचज्रपं ज५-
- १० रुमप्य बेहूरभोतड सुग्गियनहल्लिय भरकरेय वां-
- ११ केयनायक होनहल्ल मादेयनायक कलियनायक
- १२ वाचिहल्लिय बोकयनायक बेल्तूर माचयनायक मोन्-
- १३ गलाचार्य केसवेयनायक चलुवन माचयनाय-
- १४ क अरसयनायक बरजियन माचयनायक मसणैय-
- १५ नायक कोलेयादिनायक वचन मारेयनायक कोलेयत-
- १६ न माचयनायक बलेयन मारेयनायक हलवनाय-
- १७ कन वचेयनायक बोमंर कयिदालद वयक कसविय-
- १८ नायक हेग्गडेनायक मैलेयनायक मारदेव बालना-

- १६ यक काचिनायक पम्भणनायक माविथनाय (क)
- २० मावुकनायक चिकयनायक मादियनायक वडचर विज-
- २१ पनायक वडुंगयनायक मनियमनायक हं-
- २२ मादिनायक हरियणनायक पूमयनाय-
- २३ क जवनेयनायक मैलयनायक वैजयणनायक मा-
- २४ केयनाय (क) वमय नायवेयनायक गुडेयनायक
- २५ मारनमनायक मल्लेयनायक हरियबूर माचर्गाड मि-
- २६ गर्गाड भोमर्गाड वदियर्गाडन मादियर्गाड उत्तर्गाड वयचिर्गाड
- २७ मारर्गाड मादियर्गाड भविर्गाड हलुवाडिगट्ट वुत्रंगे कं-
- २८ चर्गाड मकरनायकर नायक मल्लिर्गाड कंसिय-हलिय वा-
- २९ हुवल्लिमेट्टि पारिमसेट्टि विजेमेट्टि अवर पुत्रक वल्लुगोड व-
- ३० सवर्गाड माचेय भरतय मादय आलय माचयउत्त-
- ३१ गर्गाडन मारय पापय चिककम्म विरिजेट्टिय मग आलर्गा-
- ३२ ड चिकर्गाड मंगर्गाड चिणयर्गाड मारर्गाड कसवर्गाड
श्रीमन्महा(मं)ण-
- ३३ दळाचार्यरु राजगुरुगल्लु नयकीर्तिसिद्धातदेवर शिग्यर नेमि-
- ३४ चट्टपडितदेवरु बालचट्टदेवरु नयकीर्तितेवरुगुड-
- ३५ गल्लु बाहुवल्लिसेट्टि पारिससेट्टि माडिसिट्ट पक्कोट्टिजिनालय-
- ३६ ड पन्नप्रमदेवर अष्टविधाचर्नगे वूर मुन्दे आरिय मारं-
- ३७ यनायक कट्टिमिट्ट केरे आ कीलेरिय गहे आ मूडल्लु सुत्तल्लु नट्ट
- ३८ वेहलेय हरियकेरेय मोठलेरि-
- ३९ गदेय श्रीमुरत्तसवत्थग्ग वयि

- ४० बोम्म नातिवेय सा सेनबोव सामन्त
 ४१ पूर्वक माडि बिट्ट दत्ति यिधमं व प्रतिपालिसिद् गगे
 ४२

[यह लेख होयसल राजा वीरवल्लालदेवके राज्यकालमें वैशाख, श्रीमुखसवत्परमे लिखा गया था । ब्राह्मवल्लिसेट्टि तथा पारिससेट्टि-द्वारा निर्मित एक्कोटि जिनालयके पद्मप्रभदेवकी पूजाके लिए अरेय मारेयनायक-द्वारा एक तालाव तथा अन्य कई नायको, गौडो तथा सेट्टियो-द्वारा जमीन दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है । इनमे नयकीर्तिसिद्धान्तदेवके शिष्य नेमिचन्द्र तथा वालचन्द्र पण्डित भी सम्मिलित थे ।]

[ए०रि० मै० १९२७ पृ० ४५]

२८७

चेरावल (सौराष्ट्र, गुजरात)

१२वीं सदी, अन्तिम चरण सस्कृत-नागरी

- १ ज्ञवम्प्रति नित्यमद्यापि वारिधौ ॥ १ भूयगढभीष्टससिद्ध्यै मु-
 २ पाटकाख्यं पत्तन तद्विराजते ॥ ३ मन्य वेधा विवाथैतद्विधिसु-
 पुनरीदश-
 ३ रैत्रैत्र्यमत्रजैर्यत्र लक्ष्मी स्थिरीकृता ॥ ५ तन्निःशेषमहीपाल-
 मौलिषृष्टाहि
 ४ मौ नृप । तेनोत्वातासुहृन्मूलो मूलराज स उच्यते ॥७
 पकैकाधिकभूपाला सम --
 ५ जित्रजसुरादत । अतुच्छमुच्छलत्सूर्यपर्वभ्रममजीजनत् ॥ ६
 पौरुषेण प्रतापेन पुण्येन--

- ६ * रन्धूनविक्रम । श्रीर्माभूपतिस्तेषा राज्य प्राज्य करोत्ययं ॥११
भालाक्षराण्यनभ्राणा यो वमज म--
- ७ न्निन्दिमघे गणेश्वरा । वभूद्यु कुटकुंदायथा साक्षात्कृत-
जगत्त्रयाः ॥१३ येपामाऋशगामित्व त्या--
- ८ * तपंचक्रमुज्वल । रचयित्वाथ जल्पति येऽन्यन्नियमपूर्वकं ॥१५
कालेऽस्मिन् भारते क्षेत्रे जाता--
- ९ * रीणास्तत्त्ववर्मनि तेषां चारित्रिणा वशे भूरय सूरयोऽभवन्
॥१७ सद्गेषा भपि निद्वेषाः सकला भक्त-
- १० भावस्याहरोह तत् । श्रीकीर्तिं प्राप्य सत्कीर्तिं सूरि सूरिगुणं तत.
॥१९ यदीर्यं देशनावारि सम्यग्वि-
- ११ कश्चिन्नकृटाञ्चाल स । श्रीमन्नेमिजिनार्धाशतीर्थयात्रानिमित्तत-
॥२१ अणहिल्लपुर रम्यमाजगाम-
- १२ * नीन्द्राय ददां नृपः । विरुल मंडलाचार्यं सछत्रं ससुखासनं
॥२३ ॥२३ श्रीमूलवमतिक्राप्य जिनमवनं तत्र
- १३ * सज्ञयैव यतीश्वरः । उच्यतेऽजितचंद्रो यस्ततोभूत्स गणीश्वर
॥२५ चास्कीर्तियश कीर्ती ध-
- १४ मुक्तो यो रत्नत्रयवानपि । यथावद् विद्वितार्थोभूत् क्षेमकीर्ति-
स्ततो गणी ॥२७ उदरैत स्म लसज्ज्योति
- १५ * लेपि वासिते हंमसूरिणा । वस्त्रप्रावरणाय-
- १६ कीर्तियंस्कीतिर्नर्तकीव नरिनर्ति । त्रिभुवनरगे वासुकिनूपुरशशि-
तिलकनेपथ्या ॥३१ ते
- १७ * ति ॥ ३२ समुद्घृतसमुच्छलदर्शार्णजीर्णजिनालय . । य
कृतारमनिर्वाहसमुत्साहगिराम (णि ॥३३)

- १८ च ईश्वरगण्यने ॥३५ चादिनो यत्पद्मद्वन्द्वनखचद्रेषु विथिता ।
सुते रिगतश्रीका कलक-
- १९ इ तार्थभूतमनादिक ॥३६ सीताया स्थापना यत्र सोमेश-
पक्षपागृत् । त्रामशैलोक्य-
- २० गदुद्धृत तेन जातोद्वारमनेकशः ॥३८ चैत्यमिदं ध्वजमिपतो
निजभुजमुद्गत्य सक-
- २१ पतो मडलगणिललितकीर्तिसत्कीति । चतुरधिकविंशतिकम-
द्वध्वजपटपट्टस्तक-
- २२ मंतर्तीयमद्गोष्ठिकानामपि गल्लकानां ॥४१ यस्य स्नानपयो-
नुलिप्तमग्निल कुष्ट दर्नी-
- २३ चद्रप्रभ म प्रभुस्तीरे पश्चिमसागरस्य जयताद् दिग्वाससां शासन
॥४० जिनपनिगृह-
- १४ चार्यचर्यो व्रतविनयममेतं शिष्यवर्गेश्च मारुतं ॥४३ श्रीमद्भक्तिम-
भूतस्य उपाणां द्वात्र (श)-
- २० ककार्तिलघुयशुः । चक्रे प्रदाम्ति मनघा (मतिशिष्या) प्रवरकीति-
रिमा ॥४५ म १०

२८६

ग्राम (हासन, मैसूर)

कन्नड, १०वीं सदी

[इस लेखमें त्रिगी होयसल राजाके सेवक पेगडे वासुदेवके पुत्र जिाभवन उदयशित्तिका वर्णन है । इसने सूरस्थयणके चन्द्रनन्दि गुफके उपरगने वामुदेवजिनवगतिका निर्माण किया था । यह लेख इस समय केजयमन्दिरमें लगा है ।]

[ए० रि० मं० १९१७ पृ० ४४]

२६०

ग्राम (हासन, मैसूर)

कन्नड, १०वीं सदी

[इस लेखमें धान्तिग्रामके होन्निमेट्टि तथा अन्य भव्यों-द्वारा देगिगणप-
देवके प्राणके इति आचार्यके उपदेशसे सुमतिभट्टारकवी मूर्तिसी
स्थापनाका उल्लेख है । लिपि १२वीं सदीकी है ।]

[ए० रि० मं० १९१७ पृ० ६०]

२६१

कुप्पटूर (मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

पाण्यनाथमूर्तिके पारशोत्तर है । मूलमहापाण्यण-
पर्यन्तमूर्ति का नाम उल्लेख है । लिपि १२वीं सदीकी है ।]

[ए० रि० मं० १९११ पृ० ४०]

२६२

माचिनकेरे (कडूर, मैसूर)

संस्कृत-कन्नड १२वीं सदी

- १ श्रीमूलसंघपनसोगवर्ताप्रमिद्धदेशीयविद्रितपु-
 २ स्तकचारुाच्छे । य कुण्डकुंडमुनिर्व-
 ३ शल्लाममूल्ललितकीर्तिमहा-
 ४ मुनींद्र . ॥ तत्ताद्युगलांभोजशेखरी-
 ५ भूनमस्तक जिनदत्तान्वयः स्वामी योभूत...
 ६ नन्दन . ॥ स्वस्तिश्रीशकवत्सरं...
 ७ पृथ्वीपतिः सो- ८ यं श्रीकलगा-
 ९ ख्यचारुनगरं श्रीचं- १० द्रनाथप्रसो(ः)प्रि(प्री)-
 ११ त्या साधयदुत्स- १२ वेन महता विव-
 १३ प्रतिष्ठापितं ॥ श्री १४ श्रीदेवचं-
 १५ द्रदेवरु गे १६ यि ओद्रु

[यह लेख स्थानीय वनदिके चन्द्रनाथमूर्तिके समीप है । मूलसंघ-
 देशीयगण-पनसोगा शास्त्राके ललितकीर्ति मुनिके शिष्य देवचन्द्र-द्वारा यह
 मूर्ति स्थापित की गयी थी । जिनदत्तके वंशके किसी राजाका इममें उल्लेख
 है । शकवर्षके अंक लुप्त हुए हैं । लिपि १२वीं सदीकी है ।]

[ए० रि० मै० १९४६ पृ० ३६]

२६३-२६४

निट्टूर (मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

[यह लेख शान्तीश्वरवनदिके द्वारपर है । मालवेके पुत्र मलय-द्वारा
 यहाँके मूर्तियोंके निर्माणका इसमें उल्लेख है । लिपि १२वीं सदीकी है ।
 यहाँके एक अन्य लेखमें शिवनहसेट्टिकी निषिधिका उल्लेख है ।]

[ए० रि० मै० १९१९ पृ० ५१]

२६५

कोनकोण्डल (अनन्तपुर, आन्ध्र)

कन्नड, १०वीं सदी

[यह लेख रमामिद्धलुगुट्ट नामक पहाड़ोंपर एक पाषाणपर खुदा है। इसमें गुम्मिमेटिके पुत्र प्रमदेवका उल्लेख किया है। लिपि १२वीं सदीकी है।]

[रि० सा० ए० १९६०-४१ क्र० ४५७ पृ० १२६]

२६६

हलि (जि० बेलगाँव, मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

[इस लेखकी लिपि १२वीं सदीकी है। नेमिचन्द्र मिद्धान्त-चक्रवर्तीके शिष्य नविलूरुके गोवरिय कल्लिगावुण्ड, तावरे महादेविगट्टि आदिके द्वारा इस दरवाजेके बनवाये जानेका इसमें उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ ई क्र० २४ पृ० २४२]

२६७

गोरूर (हामन, मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

[इस लेखमें मलवसेट्टि, कटकद वम्मिमेट्टि तथा केमिमेट्टि इन तीन व्यक्तियों-द्वारा गोरवूर ग्रामकी वसदिके लिए पाँच एडुग भूमि दान दिये जानेका वर्णन है। मल्लियक्का नामक स्त्रीकी भी प्रशंसा की है। लेखकी लिपि १२वीं सदीकी है। इसका बहुत-सा भाग चिमनेमें नष्ट हो गया है।]

(मूल लेख कन्नड लिपिमें मुद्रित)

[ए० रि० मै० १९४३ पृ० ७४]

२६८-३००

मनोली (जि० वेलगांव, मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

[इस लेखकी लिपि १२वीं सदीकी है । यापनीय सघके आचार्य मुनिवल्लिके मुनिचन्द्रदेवकी समाधि कुल्लेयकेतगावुडकी पुत्री गगोवे-द्वारा स्थापित की गयी थी । ये मुनिचन्द्र सिरियादेवी-द्वारा स्थापित वसदिके आचार्य थे ।

इसी ममयके दूसरे लेखमे मुनिचन्द्रके शिष्य पाल्यकी(ति) देवके समाधिमरणका उल्लेख है । तिथि आश्विन कृ० ५, शुक्रवार, साघा(रण) सवत्सर, ऐसी है ।

यहाँके तीसरे लेखमे इसी परम्पराके एक और आचार्यके समाधिमरणका उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १६४०-४१ ई० क्र० ६३-६५ पृ० २४५]

३०१

कीलवकुडि (जि० मडुरा, मद्रास)

कन्नड, १२वीं सदी

समणरमलै पहाडीपर पापाणके दीपस्तम्भके समीप

[इस लेखमें आरियदेव, वेलगुलके मूलसघके बालचन्द्र देव, नेमिदेव, अजितसेनदेव तथा गोवर्धनदेवका निर्देश है । लिपिके अनुसार यह १२वीं सदीका लेख होगा ।]

[रि० इ० ए० १९५०-५१ क्र० २४४]

३०२

चेह्वार (नरसिंहगढ, मध्यप्रदेश)

प्राकृत-नागरी, १२वीं सदी

- १ अं घणोमम सुंदरं
- २ सि.....
- ३ । तिहुभणतिलभ सो-
- ४ री- शावडत्स भमराल-
- ५ अ रम्मं ॥ श्रीभाण-
- ६ देवेन गाथा वि-
- ७ रचिता

[यह लेख सोलखभ नामक उध्वस्त जैन मन्दिरमे एक स्तम्भपर है । इसमे श्री आपणदेव-द्वारा लिखित एक गाथा है जो किसी तिहुवणतिलभ (त्रिभुवनतिलक) मन्दिर तथा उसके स्थापक शावडके बारेमें है । इसी स्तम्भपर कुछ अन्य व्यक्तियोंके नाम भी खुदे हैं । गाथाकी लिपि १२वी सदीकी है ।]

[रि० इ० ए० १९४६-४७ क्र० १७४]

३०३

सवणूर (धारवाड, मैसूर)

कन्नड, १२वी सदी

[यह निसिधि लेख मलघारि आचार्यके समाधिमरणका स्मारक है । तिथि शुचि व० ८, सोमवार, विश्वावसु सवत्सर ऐसी दी है । लिपि १२वी सदीकी है ।]

[रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ५९ पृ० ३३]

३०४

अम्मिनभावि (धारवाड, मैसूर)

[यह लेख वर्धमानमूर्तिके पादपीठपर है । बहुत अस्यष्ट हुआ है ।
लिपि १२वीं सदीकी है ।]

[रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ७० पृ० ३८]

३०५-६

मण्डूर (धारवाड, मैसूर)

[यहाँ १२वीं सदीकी लिपिमें दो लेख हैं जो जैनोने मम्बन्वित
प्रतीत होते हैं ।]

[रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ९४-९५ पृ० ३६]

३०७

सालिग्राम (मैसूर)

कन्नड १२वीं सदी

[यह लेख अनन्तनाथकी मूर्तिके पीठपर है । मूलनघ-त्रलान्कारगणके
मापनन्दि सिद्धान्तचक्रवर्तिके दिप्य गम्बुदेवकी पत्नी बोम्मव्वे-द्वारा अनन्त-
व्रतकी समाप्तिपर यह मूर्ति स्थापित की गयी थी । लिपि १२वीं सदी
की है ।]

[ए० रि० मै० १९१३ पृ० ३६]

३०८

गौरुर (हासन, मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

१ ओं श्रीमनु परमगंभीरस्याद्वाडामोषलांछनं(१)जीयात् त्रैलोक्य-
नाथस्य शासनं जिनशासनं(॥)

- २ ओं मेलेनिसिपुंही मलेगे धात्रियोळ किसुचल्लियन्तद पालिसि
सततं मुग्गट्टिन् इर्विनेग सिरि
- ३ पुट्टे पुट्टिट्ट हेरिचवामेवेगडेगघासन वलभं निजिकध्येग लालेयोळ्
पुंद्दे वण्णिपुहु पं-
- ४ गांडे सत्यमनं जगज्जन ॥ स्थिरने वाप्पमराट्टियिठधिकर्गंभीरने
वाप्पु सागरट्टिदगलद-
- ५ न्तु टानिये सुरोर्वाजकं मारण्डलं सुरराजंगेणेपुंटे कीर्तिपुहु
केकोण्डकरि सततं
- ६ धरेयेरुलं मले सत्यवेगांडेयोळ् आंटायं सौर्यं ॥ कोट्टेपेनेंदोद्
ईश्वरन कोट्ट वर

दूसरा

- ७ सरणेंदु थदर नेट्टने ' डे वज्जि 'पूण्डु कोट्टिट्ट विरो' .
- ८ तरिवन् पुण्डोडे ताने कृतान्त यि' पेगांडे' .
- ९ आतन माय सकक मही 'जवसिल वेनिसि नेगल्वं भूतल
- १० टोलगंसंयं कच्छवेगांडेय' पुपु ' थ वण्णिपु
- ११ नाडे कंसरिय पोदपुं 'मभो'...यनि
- १२ सिदं वीरनोळ् थदंजु करं नलि' तरिपुहु क' ले पलरं निरन्तरं
तीसरा भाग
- १३ पुंने नेगलद कच्छवेगांडेगनुपम कुल' ने धां
- १४ थल्लु विनुत त थगे
- १५ रेनिप्यरु' मणिय-
- १६ न्तवरीर्घरीतन थ' 'मन्तन जस'...
- १७ थल्लु अरिल्ल भूमण्डलदडे 'रयातंग मले नेगलद गंगेगं गौरिग वेम्म
- १८ नो वारंयेनिप्यरु' भूतलदोल्लु' थं ॥ ...गस्यंतंयसि-
- १९ थ समर समथदोल्ल वस 'मन पोल्लितर'...भा विमुचिन

- २० कुलवधु ता भूविनुत श्रीं नैलेयेनिप्य गनेयर् पलहं
पेण्डितिगेनेगे वपरै
- २१ योलु ॥ आतन किरिय पेण्टति रतियं पोह्वलु तूपिपति-
चरियोल् अतियद्ये
- २२ प्रोह्वलनिधि तत यशोवलरिय मतिहानर् अटेनु वणिणपर्
वाचवेय ॥ अवरीवर् गु-
- २३ (ह)गल् अवर् भुवनजनाराध्यगखिलगुणगणनिलयर् कडि***वर
नयकीर्ति-
- २४ देवसिद्धान्तेशर ॥ आ महादुभावनघांगियरवमान कालवांलु ॥
बोधिसुत जिनपदमं वा-
- २५ व सिद्धपदमन् अक्षय पदमं विनुतं मुनिपदमं वाचवे वेग्गाडि-
तियर् सुरगतिय
- २६ ***परम जिनेश्वर पदपकरहमनानंददि नेनेयुतागलु पिरिदोंदु
मक्तिं
- २७ तियं वाचियकन् एय्दिदल् आगलु ॥ अवर् परोक्षदौल् आदं
मचिनयदि केल्
- २८ यिन्ति क्खल् भुवनजन्वरियं निरिसिदल् अविचलमप्पन्तु
चंद्रतारंवरं ॥

[इस लेखमें किमुवल्लि ग्रामके शासक सत्यवेगडेका उल्लेख है । यह हेरियवासेवेगडे तथा उनकी पत्नी निजिकब्बेका पुत्र था । इस सत्य-वेगडेकी पत्नी वाचवे थी । वह कच्छवेगडेकी पुत्री थी । इसके गुरु नयकीर्ति सिद्धान्तदेव थे । लेखमें वाचवेके देहत्यागका उल्लेख है जो मम्मवन. सत्यवेगडेकी मृत्युके कारण किया गया था । लेखकी लिपि १२वीं सदीकी प्रतीत होती है ।]

३०६

हलेवीड (मैसूर)

कलद, १२वीं सदी

- १ इति श्रीमन्नयकीर्तिसिद्धातचंद्रयनिदेवगं कवडेयर जकब्देयर माडिसि कोट्ट पट्टशालेय शान्तिनाथदेवर अष्टविधार्च(न)ग खडस्फुटितजीर्णोद्धारक ...
- २ शिष्यरु सुरभिकुमुदचंद्रापरनामधेयरप्य नेमिचन्द्रपदितदेवर जीवगल् हिरियकेरेय थोलवगट्ट डोलगरेय हुणमेय
- ३ रलगे मूरु गगवुरट्ट उत्तमत्रागि ? मूनूरु चेदकेयं सर्वथाध-परिहारवागि चंद्राकृतारथरं सख्यतागि कोट्टरु ई धर्मवं अवर शिष्यसंतानगल्ल नडेसुवरु

[यह लेख १२वीं सदीकी लिपिमें है । कवडेयर जकब्दे-द्वारा निर्मित पट्टशालाके शान्तिनाथदेवकी पूजा आदिके लिए कुछ भूमि थोलवगट्ट तालावके समीप और गगवुर ग्रामके समीप दान दी गयी ऐमा इसमें निर्देश है । यह दान सुरभिकुमुदचन्द्र अपरनाम नेमिचन्द्र पण्डितदेवने दिया था । जकब्देके गुरु नयकीर्ति सिद्धान्तचन्द्र थे ।]

[ए० रि० मै० १९३७ पृ० १८५]

३१०

अथनी (वेलगाव, मैसूर)

कलद, १२वीं सदी

[इस लेखमें वम्मण-द्वारा देसिगण-इगलेखवरवलिके सामन्तण वसदिसे सम्बद्ध रत्नत्रयमन्दिरके जीर्णोद्धारका उल्लेख है । लिपि १२वीं सदीकी है ।]

[रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० १७३ पृ० ३४]

३११

मरसे (मैमूर)

मस्कृत-कन्नड, १२वीं मदी

- १ श्रीमद्द्रविलमघेस्मिन् नन्दिसघेस्त्यरंगलः अ-
- २ न्वयो भाति योनोपशाम्त्रवा-
- ३ राशिपारगै

[यह लेख एक खेतमे मिली पार्श्वनाथमूर्तिके पादपीठपर है । इसमें द्रविलमघ-नन्दिमघके अन्तर्गत अरुगल अन्वलीकी प्रथमा है । यह श्लोक अन्य कई लेखोंमे पाया जाता है । लेखकी लिपि १२वीं मदीकी है । मूर्तिके चारों ओर अन्य कुछ विवरण नहीं दिया है ।]

[ए० रि० मै० १९२९ पृ० १०६]

३१२

मावलि (मैमूर)

कन्नड, १२वीं मदी

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वा(दा)-
- २ भोवलाछन जीयात् त्रिलोक्य-
- ३ नाथस्य शामनं जिनशासनं ॥ श्री (मृ)-
- ४ लसग कुण्डकुन्दान्वयद
- ५ काणूर्गण माधवचन्द्रदेव(र गु)-
- ६ द्वि नागध्वे गोकत्रेय मगल्लु म(मा)-
- ७ धिचिधियिट मुडिपि स्वर्ग-
- ८ स्तेयात्रल्लु मगल नहा
- ९ श्री श्री

[इम निसिबिलेखमे मूलमघ-कुण्डकुन्दान्तरय-काभूर गणके माघवचन्द्र-देवकी शिष्या तथा गोकर्णकी कन्या नागवैके ममाधिमरणका उल्लेख है। लेखकी लिपि १२वीं सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९४१ पृ० १९२]

३१३

हम्पी (वेल्लारी, मैसूर)

कन्नड, १२वीं सदी

[यह लेख एक भग्न स्तम्भपर १२वीं सदीकी लिपिमें है। इसमें गोरलाचार्य, उनके शिष्य गुणचन्द्र तथा उनके शिष्य इन्द्रनन्दि, नन्दिमुनि तथा कन्तिका उल्लेख हैं।]

[रि० ६० ए० १९५५-५६ क्र० ३३५ पृ० ५०]

३१४

कलकत्ता (नाहर म्यूजियम)

कन्नड, १२वीं सदी

१ देमायपगलान्तिथनोपि निमित्त-

२ वाणि माडिसिड प्रतिष्ठे

[यह लेख पीतलकी चौबीस तीर्थंकरमूर्तिके पिछले भागपर खुदा है। यह मूर्ति देमायप नामक व्यक्तिके अनन्तव्रतकी समाप्तिके समय स्थापित की थी। लिपि १२वीं सदीकी है। लिपिसे पता चलता है कि इसका निर्माण कर्नाटकमें हुआ था।]

[ए० रि० मै० १९४१ पृ० २५०]

३१५

रुग्नि (बिजापुर, मैसूर)

कन्नड १२वीं सदी

[यह लेग विभी जैन आचार्यके ममाधिमरणका स्मारक है । लिपि १२वीं सदीकी है ।]

[रि० ना० ए० १९३६-३७ क्र० ड० ७९ पृ० १८८]

३१६

शेरगढ (कोटा, राजस्थान)

मस्फून-नागरी, १०वीं सदी

[इस लेखमें आचार्य श्रीरमेन तथा नागरमेन पण्डितका उल्लेख है । लिपि १२वीं सदीकी है ।]

[रि० ड० ए० १९५२-५३ क्र० ४३१ पृ० ७०]

३१७

रायबाग (वेङ्गाव, मैसूर)

कन्नड, शक ११०२ = मन् १२०१

[यह लेग रट्ट वंशके कार्तवीर्य ४ के समयका है । इन राजाने बैशाख पूर्णिमा, शक ११२४, शुक्रवारको एक जिनमन्दिरके लिए कूण्डि ३००० प्रदेशका चिचन्दि ग्राम दान दिया था ।]

[रि० ड० ए० १९५५-५६ क्र० १५१ पृ० ३३]

३१८

चेत्तगाँव (क्रमाक १ त्रिटिग म्यूजियम)

कन्नड, शक ११२७ = सन् १२०४

- १ श्रीमत्परमगमीरस्याद्वाढामोघलाळनम् । जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य
शासन जिनशासनम् ॥ नमो वीतरागाय शान्तये ॥
- २ श्रीजिनसमयनवाधुधि राजिसुतिकैमथनोर्जितास्तुतरसन-श्रीजनवगृह
सत्वदयाजीवनमपरिमितगमीरमपार ॥ नवमौक्तिकहारं
३ श्रीयुवतिगिदेनिसिर्दं कृष्णनृपवंशलपार्यिवचयडोल् सेनरस
भुवननुत मिसुपनेसेव नाथकमणिवोल् ॥ वरकं-
- ४ द्विमडलाधोश्वरनेनिपा सेनविभुगे सुतनाठ दुधरवैरिभूप-
भीकरपराक्रम कातर्वीर्यननुपमशीर्यं ॥ भा विभुगादल् सति पञ्चा-
- ५ वति जिनसमयवृद्धिकरणापरपद्यावति बुधामिमतपद्यावति बज्रा-
युधगे पौलोमिय बोल् ॥ अवरिवैरंगं पुष्टिद्वनवनीश्वरमौ-
- ६ लिमडन लक्ष्मनृप परिमलमुक्ताफलमोसेव वार्धिंगं ताम्रपणेगं
पुट्टुवचोल् ॥ एनेवे लक्ष्मदेवक्षितिमुजन भुजाटोपमं विद्विषदा-
त्रीनाथर् संने-
- ७ गेप मटपदहतिरिदिदाद कंटूलिचैदालीनाभ्रव्रानम तांनयतुरग-
सुरोदपोषमैदजि नानास्थानस्यायित्वम केल्पडेयदे विडदी-
- ८ हृत्तमिर्दपरिन्नुं ॥ अपराधिगलने नोल्पुट्टु नृपालकरदंडनीति
वाप्पु घनाज्ञाधिपनागे लक्ष्मभूविभुवपराध दंडमैवि-
विल्ले कृतियो ॥
- ९ भस्ततामोराशियोल् पुष्टिद सिरियनणं बरनु धात्रं स्वमायाक्रमादिं
बेरोवैलं निर्मिसि चपलेपना कृष्णनोल् कूडि मत्ता विम-

- १० लोद्यद्भाग्येयं सुस्थिरैर्यनोसेद्दु कोटं महीभृन्निकायोत्तमनप्पी
लक्ष्मिदेवगेने मिगे तलेदल् चद्रिकादेवि चेतव ॥ प्रणुतश्रीनिधि
चंद्रिका-
- ११ सतिय शीलव्रातमं कूडे धारिणियोल् वणिसलारुमार्तपरं
लक्ष्मोर्वाशन क्षत्रियाप्रणियं शीलद्रे मेच्चिमल् फणियनं पूण्डे-
- १२ ते ता तन्न कयूगुणम कहुदरिद्व पोगल्लार्प विश्वजिह्वालियि ॥
नरपतिलक्ष्मिदेवसति चदलद्रेवि निजोद्वहस्तदि धरंगेसयल्ले
- १३ संक्रमणदोल् कुडे काचनम वेरल्गलोल् वेरेसेद हेमकालिकेय कर्प-
सेदिपुंद्दु वाहुकल्पवत्तरिय तलप्रवालद नखप्र-
- १४ सवक्केलसिदं तुंबिवोल् ॥ श्रीवसुदेवनतेस्व लक्ष्मनृपंगवनिद्य-
देवकीदेविबोलोपुवो विनुतचदलद्रेविगमादरात्मजर भूवल्य-
- १५ प्रदद्वल्लकेशवरदेने कार्तवीर्यधात्रीवरमल्लिकार्जुनकुमारकलजित-
शौर्यशाळिगल् ॥ दृढशौर्य कार्तवीर्य तल-
- १६ रे वलयुतं द्विजयक्कन्यधात्रीपतिगल् वेच्चिनु नीर पुगलवर शरी-
रोष्णदि वत्ति चित्तोद्गतमीत्युत्कर्षवृत्तिप्रसरणविमरद्व-
- १७ मंतोयोर्मियि विस्तृतमागळ हानियुं वृद्धियुमदु निजमंभोधिव-
र्विमूदर ॥ ई कमनंयवाजिच्चयमी क-
- १८ रिमकुलमी विलासिनीलोकमिवेम्मवा कविय कालेगदोल् वयला-
जियोल् पुराणीकद युद्धदोल् पिडिदनिंतिवनी कलिकार्तवीर्यनेदा-
- १९ कुलमागि नोडुवुदु वन्धनशालेयोल् इदंरिद्रजम् ॥ श्रीरट्टवशमंभ
सुमंस्वनाश्रयिसि कल्पकुजननमंनलें राराजि-
- २० पृदुदो विद्वधाधारं श्रीमत्कुलं प्रमोदनिवासं ॥ आ महनीय-
कुलक्के शिरोमणि मय्यांजुजक्के तेजोमणि रक्षामणि बुधविततिगे

- २१ चिंतामणि बेलपगैनलके रंजिपनुदयं ॥ ललितगुणौघं लक्ष्मीनिलय
संश्रितमधुम्रन तलेड निर्मळमप्पुटयसरोवरदोल् वदयमं पुरुष-
पुंडरीक वी-
- २२ च ॥ प्रकटश्रानिधि वीचणं कुलगृह क्षौलकके लीलाश्रयं सुकृत-
वकुट्मवमठिर सिरगे सेवास्थानकं सद्गुणकके कलाभ्यामपड
सरस्वतिगे संचारालय
- २३ धर्मकार्यकलापकमिवृद्धिगोहममलाचारककेनल् रंजिपं ॥ वीचगे
सुकवि सस्तुतवाचगाडर् सुतर् जिनेंद्रमतश्रीलोचनसंनिभरात्महिता-
- २४ चारपर् नेगलूट् पेर्मणजुमप्पणजुं ॥ पापापहारिजिनपश्रीपडमकं
सुपात्रसकुलदानव्यापारगमितदिननेनिपी पेर्मगे पेर्मण
तधर्मनेयाड ॥
- २५ स्थिरपद्मोदयमधुजकके कमल पद्माकरककुजाकरमुद्यानवनकके पूर्ण-
फलितारामं पुरककोप्पुर्वतिरे लोकोत्तमकार्तवीर्यंनृपराज्य-
- २६ गोप्पुव मद्गुणाभरण श्रीकरणाग्रनप्यवेनिसिदंप्प जगं थाप्पेनल् ॥
अनवधोक्ति विनूतघाणिगुणदेका चागमस्वप्नभुजनिकायकविद्विस्म-
- २७ यस्सियतिकर जैनक्रमामोजपूजनमैद्दध्वजविभ्रमश्रुतिलसत्संवाडिये-
दंदिनिद्यनयश्रीकरणाप्पणगे टोरियारी चात्रिधं-
- २८ क् धामिकर् ॥ अचलितगुणनिलयं चगुश्चतुर्मुखनेनिसुवप्पण
वल्लभे सुप्रसुरविवेकास्पदचारुचरिते चाग्नेद्वियेव पेसरिदेसेवल् ॥
वरवा-
- २९ गुद्रेविगमप्पणप्रभुगमादर् नदनर् श्रीजिनेश्वरमार्गप्रतिभासक-
प्रविलसद्वत्नत्रयंगल् चिनेयर पूर्वार्जितपुण्यदिदे निरुत्तं मेव्येत्त-
वैयते-

- ३० सुस्थिरलक्ष्मीपतिधीचवेजवलदेवर् सज्जनानंदकर् ॥ प्रणुनोद्यत्-
पात्रदान व्रतगुणचरित मज्जिनावासनिर्माणवात्तमोर्वी-
- ३१ शराज्याभ्युदयनयचय तम्मोलोप्पुत्तिरल् धारिणियोल् विरयाति-
वेत्तिवरे मोगयिपरा गडरादित्यमेनाग्रणी निव कातर्वीर्यक्षि-
- ३२ तिपतिसच्चिवोत्तंसनी वीचिराजं ॥ सुजनाकर्षणमात्मवल्लभ-
वशीकारं सुहृन्मोहन कुजनोच्चाटनमन्यमत्रिचयमानस्तंमनं
दुर्णयव-
- ३३ ज्वित्पेपणमेंविवागे निजमन्नागर्लि रजिप विजयश्रीनिवि-
कातर्वीर्यसच्चिवं लक्ष्मीचण वीचण ॥ परवधुगनुमतिर्यं जैनरीय-
लागद्दु परप्र-
- ३४ वर्तनेयोल् जैनरोलधिक वीचं तदरिनृपभुजविजयलक्ष्मिय
पतिगीव ॥ हृदयाह्लाडकनादनुर्विगिवनोर्वं सर्वंमपद्गुणास्पद-
श्रीचानुजवैजणं वि-
- ३५ भूनेयोल् धर्मात्मज मृत्तियोल् मदन चागदोल् वाववतनूज
जैनपूजाभिपेकदोलिद नयदोल् वृहस्पति रणोद्यत्कीडेयोल्
राववं ॥ विदि-
- ३६ तजिनागामावुनिधिवधनदोल् निजवंशवारिजाभ्युदयविधानदोल्
दुवमनोमिमतापणदोल् कलकमिल्लद हिमरोचि तापकृतिथिल्लद
मानुविम-
- ३७ दवृत्तिथिल्लिद सुरभूरुहं धरथोलप्यसुत वलदेवनोपुवं ॥ स्वस्ति
न्मधिगतपंचमहाशब्दमहामण्डलेश्वरं कातर्वीर्यदेव निजानु-
- ३८ जयुवराजकुमारवीरमल्लिकार्जुनदं च वेरसु वेणुग्रामस्वन्वाचारदं
साम्राज्यसुखमनुमविसुत्तमात्मीयश्रीकरणाप्र-
- ३९ गण्यनुमत्तिलमत्रिजनवरंण्यनुमप्य वीचिराज माडिसिद

- रहजिनालयद् श्रीशान्तिनाथदेवर नित्यपूजामिपेकं भोदकाद्
धर्मकार्यनिमित्त-
- ४० मागि तज्जिनालयाचार्यश्रीशुभचन्द्रभट्टारकदेवगौं शकवर्षद ११२७
नेय रक्ताक्षिसंवत्सरद पुष्यसुद्धयिदिगे वहुवारदोल् भाद
सक्रमण-
- ४१ समयदोल् नाल्छामिर्ष महाजनंगल् सहितमागि धारापूर्वक
माहि वेणुग्रामेयोल् कोट्ट स्थलवृत्ति अठर तँक देसेय बज्य
खारिगेयि प-
- ४२ हुवल् कोडगेय्य इपत्तनालकनेय हत्तियक्लि इरिसिल्लगट्टे सहित
मत्तरदु ॥ आ वेणुग्रामेयक्लि हिरिय मूडगेरिय पडुवण
वरियो-
- ४३ ल् दुगियर तीकणन मनेयि वडगल् मनेयोदु । पडुवगेरिय
पडुवण हरियोल् मनेयोदु । पडुवण गवनियक्लि मनेयोदु ।
साल बसदियि मूडण-
- ४४ कपिलेइवरदेवर धवलारद् कट्टिदिरोल्मने भूह । आनेयकेरगे
होद वट्टेयि वडगल् हूदोद आ वेणुग्रामद कोळि मत्तरइह
कम्मविन्नूरेल्पत्तार । कणवुरिगे-
- ४५ याल्लरि पडुवण हेगेरियि पडुवल् कंय्मत्तर हनेरदु । पडुवण
हट्टियक्लि तँकगेरियोल् अय्गदयगलद्विप्पत्ताद् कय्नीलद
मनेयोदु ॥ मत्त स्वस्त्य-
- ४६ नेकगुणगणालकृतसत्यशौचाचारनयविनयसपन्नरुमाश्रितजन-
प्रसन्नरं मधपट्टियुरप्रतिष्ठितजिनमुनिजनोपदिष्टगुहृशास्त्र क्रमप-
- ४७ रिपालितवीरवणजुधर्मरं समाचरितपुण्यकर्मरं । पद्मावतीदेवी-
लठधवरप्रसादरं विहितसकलजनाह्लादरं । न्यायोपार्जनव्यवहार-
प्रशस्तरं

- ४८ मल्लुंकिट्टंडहस्तरुमप्प समयचक्रवर्ति जयपति सेट्टि सुत्थमागि वेणुप्रामद स्थलदु समस्तमुम्मुरिट्टंडंगलुं कूंडिमूसासिरद पट्टणिग मोदलादु-
- ४९ भयनानादेशिमुम्मुरिट्टंडंगलुं परशुराम नायक पोम्मण नायक अम्मुगि नायक प्रमुत्तरप्प समस्तलालव्यवहारिगलुं पडप नायक कों-
- ५० ड नंबि सेट्टि पारेयच सेट्टि मोदलादेह्ला मलेयालव्यवहारिगलु मत्तमा वेणुप्रामद स्थलदु चिन्नगेयिकदवरं दूसिगरं सुत्थमागुलिद परदरु । तेलिगरं । टिक-
- ५१ सालिगरुमिंतिवरेल्ल नेरेदा शान्तिनायदेवर वसदिगे विट्टायवेट्टे-ठोडे वडगणि वंद कुट्टुरेगे नेलमेट्टु हागवोट्टु । तैकल् नडेववकें सुंक हागवोट्टु । मलेयालर
- ५२ कुट्टुरेगे हागवोट्टु । अरुवत्तयुदत्तु कोनंगलोलें परिदोडं सर्वावाध-परिहारं । चिन्नगेयिकद चीरक्के दूसिगवसरक्के । हत्तिवसरक्के । मणिगारवसरक्के । गधवण-
- ५३ वमरक्के गधवणिगर गडिगे । अक्कसालेगमटक्के वेरेवेरे वरिसदेरे वरिसदेरे हिरिय हागवोट्टु । होरगणि वंद सीरेय कडगेगे वीमवोट्टु । होरगणि वंद गंधवणक्के । कक्षमंडक्के । आ मं-
- ५४ डं गद्याणं तूकवट्टु । हत्तिय मंडिगे तारं मूरु आ पेरिंगे काणियोट्टु । मत्तद मंडिगे मत्तवोर्वल्लं आ पेरिंगे मत्तवोर्मनं । अंकणथ मत्तं मारिट्टा मत्तमोर्वल्लं । मत्त-
- ५५ वसरदंगडिगे मत्तं निच्चसोल्लगे । अक्किवसरक्के अक्कियडं । मेलसिण हेरिंगे मेलसोर्मनं आ जवक्के अरेवानं । इंगिन पेट्टिगेगे इंगु गद्याणं तूकवारु अरुलअरिसिनद जवळक्के आ म-

- ५६ षड् पलवद्यद् आ हेरिंगे अल्लघरिसिन पल हत्तु । गाणक्के मिच्चत्वेण्णेयहं । अडकेय हेरिंगे अडकेयिप्पत्तय्हु आ जवलक्क अडके हनेरद्दु । प्लेय हेरिंगेले नूरु हो
- ५७ रंगेलेयय्वत्तु । तंगिन काय हेरिंगा कायोंदु । ओलेय हेरिंगे ओलेय सूडेरद्दु आ होरेगे सूडोंदु । होरगणि वन्द वेल्द मडिगे वेल्ददच्चु हट्टिनय्हु आ
- ५८ होरंगे अच्चोंदु । चालेय हेरिंगा कायारु आ होरेगे कायमूरु । नेल्लिय काय हेरिंगा कायय्वल्लवोंदु । कविन हगरक्के अोंदु कधुं । वल्लहद हेरिं-
- ५९ गे वल्लहवोर्पल मत्तमा शान्तिनाथत्रेचर वसट्टिगे श्रीकार्तवीर्य-
देव कोट्ट अगडि वडगगेरिय वडगण हरिय पड्डुवण कडेयोल्
राजवीथियि मूडल् नाक्कु ॥
- ६० वड्डुमिर्वसुधा भुक्ता राजमि. सगरादिमिः, यस्य यस्य यदा
भूमिस्तस्य तस्य तदा फल ॥ अपि गगादितीर्थेषु हन्तुर्गामथवा
द्विज निष्कृति. स्यान्न देवस्व-
- ६१ ब्रह्मस्वहरणे नृथा ॥ ओठविंटी धात्रियेक्क मिगे पोगले चिर
वर्तिसुत्तिकं नित्याभ्युदयश्रीकार्तवीर्यक्षितिपविपुलसाम्राज्य-
सन्तानसुर्वीविदि-
- ६२ तश्रीवीचिरामप्रथितविमलशान्तीशरावासधर्मं सडलंकारस्फुटार्था-
न्वितपटकविकन्दर्पसुब्ब्यक्कसूक्त ॥ दोपय्यतीतमर्थविक्षेपमिदंने
पेल्दुनोदुद्दु शासनम पीयू-
- ६३ पसमसूक्ति चातुर्मापाऋविचक्रवर्ति कविकन्दर्प ॥ धोमन्माधवचन्द्र-
श्रैविद्यचक्रवर्तिवाक्सुधारसनाभ्युदितनित्यसाहित्यकमलवनमराल
वालचन्द्रदेव पेस्व शासनं

[इस लेखका साराग जै० शि० मं० भा० ३ में क्रमांक ४५३ में आ गया है । किन्तु उस समय मूल लेख प्राप्त नहीं हुआ था । पाठकोकी सुविधाके लिए साराशकी मुख्य बातें यहाँ दोहरायी जाती हैं । इस लेखमें रट्ट वंशके राजा कार्तवीर्य (चतुर्थ) तथा उनके बन्धु मरिलकार्जुनका एव उनके मन्त्री वीचणका उनके पूर्वजोसहित परिचय दिया है । वीचणने बेलगाँवमें रट्टजिनालय स्थापित किया था । इस मन्दिरके प्रधान भट्टारक गुणचन्द्रको शक ११२७, रक्ताक्षी संवत्सरमें द्वितीय पौष शुक्ल २ को बेलगाँवकी कुछ जमीन तथा कुछ करोका उत्पन्न दान दिया गया था । इस शिलालेखके पाठकी रचना माधवचन्द्र त्रैविद्यके गिष्य बालचन्द्र कविकन्दर्पने की थी ।]

[ए० इ० १३ पृ० १५]

३१६

बेलगाँव (क्रमांक २) (ब्रिटिश म्यूजियम)

शक ११२७ = सन् १२०४, कन्नड

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्याठाठानोघलांछन । जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासनं ॥ नमो वीतरागाय शान्तये ॥
- २ श्रीजिनसमयनवाञ्छुधि राजिसुतिर्कमथनूर्जितामृतरसनश्रीजननगृहं सत्वदयाजोवनमपरिमितगभीरम-
- ३ पारं ॥ जंबूद्वीपद भरतडोलुजुजभवसारासृष्टि कृडिमर्हाचक्र वगे-गोलिपुट्टु सकलजनावकवनसुकु-
- ४ तफलविलासनिवास ॥ श्रीराष्ट्रकूटवशसरोरहवनराजहंसनाद-नाह्यं विस्त्रारियशोनिधि सेनमर्हारमण
- ५ संभृतामलोमयपदं ॥ मिरिय निजानुजेयनादरादिं शशियित्तु राजनादं नण्पं धरियिसि मिक्ता सेनराजो-

- ६ ल् सेणसि राजनेनिपवनावं ॥ स्थिरतेयनुत्तंगतेयं धरिथिसिदा
सेननृपघरोदयदोल् भासुरतेजोनिधि पद्माभिराम-
- ७ नेने कार्तवीर्यरविथुठथिसिदं ॥ चिनतारिपुप्रतिविंवालि नितान्तं
कार्तवीर्यपदनखदोल् चेल्वेनिक्कु पूर्वपदाश्रि-
- ८ तरनलिट्टु तन्मंत्रकृतिगे पटेदप्पुवचोल् ॥ स्थितिकारिणि विमल-
गुणान्विते पद्मालदेवि कार्तवीर्यधरित्रीपतिदयिते तां श्रिव-
- ९ गौञ्जतिसाधिकेयपरनीतिविद्येवोलेसेवल् ॥ जनियिसिद समस्त-
गुणसकुलसस्तुतलक्ष्मभूमिपं जननुतकार्तवीर्य-
- १० विभुग सतिपद्मालदेविग सुतं जनियिपवोल् जयन्तनमरप्रभुगं
शच्चिगं मयूरवाहनभवंगवद्विजेगमगमव हरिगं
- ११ रमाख्येग ॥ वनितेयर मरुल्लुव समाकृत्तिय सुमनोमिवृद्धिय
जनियिप शीलदि कुवल्लयङ्के विकासमनीव मय्मेयि जन-
- १२ नयनङ्के कामनो वसन्तनो चङ्गमनो दिट्टङ्के पेळेने विभु लक्ष्मी-
देवनेसेव कविसंकुलकल्पभूरुह ॥ विजितरिपुराजराजात्म-
- १३ जे चटलदेवि लक्ष्मनपसतियेसेवल् विजितघटसर्पमदे विङ्गजन-
स्तुतचारुचरितेयेने धारिणियोल् ॥ अवरिवर्गं कलिकार्तवी-
- १४ र्यनु मल्लिकार्जुननुमाट् प्रोद्भवसान्नान्परामाधिपयुवराज-
कुमाररात्मजर् घनतेजर् ॥ जनमेल्ल पेञ्चे ँङ्क
- १५ पेगेवहरट सेल्लं जयश्रीगे नल्ल मज्जुमार्गं सन्निवर्गं तनगेसेये
निसर्गं गुहोत्तारिद्रुगं सनयाळापं
- १६ सुरूप नेगलदनतिदिलीपं जितारातिभूपं घनशौर्यं क्षत्रवर्यं
सुरकुजसदशौदार्यनी कार्तवीर्यं ॥
- १७ श्रीमल्लुलाधिधवर्धनसोमनेनिप्पुटयविभुविनात्मजनत्युदाभयशो-
निधि बीच भूमहितं सौम्यवृत्तिय तलेदेसेव ॥ बीच-
- १८ गे सुकविसस्तुतवाचंगाट् सुतर् जिनेद्रमतश्रीलोचनसमिमरात्म-
हिताचरणर् नेगलद् पेर्मणनुमप्पणजुं ॥ तनग

- १९ ब्रह्मंगमुद्यन्तुरने तनग वाधिग गुण्पु चागं तनगं कर्णंगमत्युच्चनि
मरि तनग मेत्तग भू प्रियन्त्र तनग चंद्रगमह्न्मतर-
- २० चि तनग वारिपेणगमेटेतनिश मन्त्यालि वणिणप्पुदु गुणियेनि-
मिदंप्पणं प्रीतियिद ॥ श्रीकरणाग्रणिगप्पगाकलितलम्-
- २१ चरित्रे त्रयितेयलंकाराकीर्णे विनुने वरवर्णाकृति वागट्टेवियुच्चिन-
नामदिनेसेवल् ॥ वनलक्ष्मीपतिपाहुगं नेगट्ट कु-
- २२ न्तीदेविगं धमनदनमोमाजुंनरादवोल् तनुजराट्टर् विद्युत्तर्
कात्तंवीर्यनृपश्रीकरणाप्पणगमेमेवी वागट्टेविग सारशो-
- २३ यंनिधानर् विमुत्रीचवैजयलट्टेवर् निजितारातिगल् ॥ अनुपम-
विद्येगुद्द्विनय मिरिगोप्पुव चागट्टेल्गे जीवनके विनिर्मला-
- २४ चरणमायुगे विमृतकीर्ति वाक्प्रवर्तनेगे ऋतोक्ति तनेसकटि
मले मंडनमागे वरिप जनपतिकात्तंवीर्यंसच्चिवैकशिरो-
- २५ मणि वीचनुर्विथोल् ॥ इट्टु तां श्रीकरणाप्पणाप्रसुतसनपुण्यप्रमा-
जालमन्तिदु रट्टक्षिनिपालमंत्रिय रमाम्मेरावलोकाशु-
- २६ मत्तिट्टु दल् धार्मिकचक्रवर्तिय दयाट्टुग्धाधिधीचिसमभ्युदयं
तानेने वीचिराजन यश पर्वित्तु मूलोकम ॥ विनुतनिज-
- २७ प्रमुगालोचनट्टोल् नयशास्त्रदष्टि दुर्धर्ममावनिथोल् निशित-
जयास्त्रं विनोट्टोल् नर्मसच्चिवनेनिपं वैज ॥ मरट्टि तनं नो-
- २८ डिट्टु तर्णीजनवेरेट्ट वदिट्टु मत्तंवीरनीश्रिमट्टेरयट्टेनल् सुरूपन-
नतिशयवितरणं बलट्टेव ॥ श्रीकार्णवीर्यनृपति-
- २९ श्रीकरणाधिपन वीचणन गुरक्कुलट्टोल् लोकोत्तरसुचरित्रिविवेकर्
मलधारिट्टेवमुनिपर् नेगट्टर् ॥ भा मुनिमुल्यर् शिायर्
भूमीश्वर-
- ३० वंदरमलतरमिद्धातश्रीमुखतिलकर् प्रथितोद्दामगुणर् नेगट्ट
नेमिचंद्रमुनींद्दर् ॥ निरुपमतपोनिवानर् धरणीश्वरजालर्मा-

- ३१ क्लिक्कित्तपदरेदुक्कुडडिं कीर्त्तिपुदुवरं विमुञ्जुमच्चद्वेवमट्टारकरं ॥
स्वस्ति ममधिगतपच्चमहाशच्छमहामद-
- ३२ लेद्वरं कार्तवीर्यद्व निजानुजयुवराजकुमारवीरमल्लिकार्जुनदं
वेरसु वेणुग्रामस्कधावारदाल् म्नाम्राज्यसुरमनु-
- ३३ मविमुत्तमात्मीयश्रीकरणाग्रगण्यनुमगण्यपुण्यनुमप्य धीचिराज
माडिमिद्र रट्टजिनालयद श्रीशान्तिनाथदेवर भगमोग-
- ३४ रगमोगनिस्थामिपेकार्चनतटावासरखडस्फुटिनर्जाणोद्वरणाहारादि-
दाननिमित्त श्रीमूकसंबकांडकु टान्वयदेशीयगणपु-
- ३५ स्तफगच्छहनसोगप्रतिबद्धतजिनालयाचार्यश्रीशुमच्चद्वमट्टारकरं
शकवर्षद ११२७ नेय रक्ताक्षिसवत्सरद पु-
- ३६ प्यशुद्धविट्ठे घट्टुवारदोलाट संक्रमणसमयदोल् कूडिमूमासिर-
दोलगण कोरवल्लिगंपदण उवरवाणियं व प्रा-
- ३७ मम सर्वाबाधपरिहारमष्टमोगतेजस्वाभ्यसहितं निधिनिक्षेप-
जलपापाणरामादिममन्वितं सर्वनमस्यं माडि स्वकीयमा-
- ३८ आज्यसतानयशोमिद्वुद्धयर्थमागि धारापूर्वकमतिप्रीतिय कोट्टनदके
सोमं ऐशानियकोणोल् नस्वल मोनेय-
- ३९ ल्लि नट्ट कल्लिं तं मोगदे मूदण दिक्किनोल् नट्ट कल्लिं मुंते
नट्ट कल्लिं मुंते नगरकेरियांल्लि मुंते आमोऽथकोणोल् मू-
- ४० लवल्लियेकगोड मुग्गुड्डेयल्लि नट्ट कल्लिं पडुव मोगदे तंकेण
दिक्किनोल् वम्मणवाडकट्टकवाडद मुग्गुड्डेय इंगुणिगेरे-
- ४१ य केलगे नट्ट कल्लिं मुंते कुनिकिल्गल्लि नट्ट कल्लिं मुंते
निरुत्तियकोणोल् कट्टकवाडकरवसेय मुग्गुड्डेयल्लि नट्ट कल्लिं
वडग मो-
- ४२ गदे पडुवण दिक्किनोल् मेल्लुगुंठिय करवसेय मुग्गुड्डेयल्लि नट्ट
कल्लिं मुंते कंदरिय मोकिनोल् नट्ट कल्लिं मुंते वायुविन-

- ४३ कौणोल् मेलगुंडिय नाविडिगेय सुग्गुडुय गौय्टे गट्टिनलि नट्ट कल्लिं मूड मोगने वडगण विडिनोल् सुणणट्ट कौडिय मेगणो-
ट्टुगल-
- ४४ लिं मुडे मिंठिकेवेट्टट्ट पनुवण नोनेयलि नट्ट कल्लिं मुते हेरदिनकोडिय कल्लहुजिकेय मेल्ल नट्ट कल्लि मुटे मालट्ट मेल्ल
नट्ट कल्ल ॥
- ४५ मत्तं नादोल् कोट्ट स्थलवृत्ति कवृर काल्वलि मूलवलिओल्लरि
मूडल्ल वेलकट्टेय केरिय तेकल्ल केयक्कम्मवेट्ट नूरु आकवृरो-
- ४६ ल्ल मट्टि गावुडन मनेयि पडुवल्लरगय्यगलट्टिप्पत्तोडु कय्नीलट्ट
मनेयोडु ॥ कुलियवाल्लिगेमोळ्ळरिंगीशान्य-
- ४७ दलि केनेश्वरदेवर केरिय मूडल्ल कूडिय कोल मत्तरोडु वसविडिय
तेकल्ल हन्निकय्यगलट्टिपत्तोडु कय्नीलट्ट मनेयोडु ॥
- ४८ हरिगन्वेयाल्लरोळ्ळरिं पडुवल्ल हिंगलजेय वट्टेयि वडगला कोल
मत्तरोडु वडगण केरियलि हन्निकय्यगलट्टिपत्तु
- ४९ कय्नीलट्ट मनेयोडु ॥ च्चल्लक्कियलि मूडण प्रभुमान्यदोलगे
वोच्चुल्लगेरियि मूडल्ल मुट्टुगोडेय वट्टेयि तेकल्ल हारुव-
- ५० गोल मत्तर मूवत्तु मेट्टिगुत्त नागणन मनेयि वडगल्ल हन्निक-
य्यगलट्टिपत्तु कय्नीलट्ट मनेयोडु ॥ बेलगलेय हलि हट्टिगु-
- ५१ तियोळ्ळरिं मूडणोत्ति पडुवल्ल कम्म नालनूरुवत्तु ॥ उच्चुगावेय
हलि निट्टूरोळ्ळरिं नैक्कत्त्यट्टोल् महाजनगल्ल कोट्ट-
- ५२ ग्गोडगेय अप्पेय सावन्तनुथलियलि कोट्ट केयं सीमे कडेय केरियि
वडगल्ल हुल्लगन गुत्तिरियि मूडल्ल भावन्तन कोडगे-
- ५३ रिय तेकल्ल सेल्लमरालिं पडुवल्ल नट्ट कल्ल मूडगेरियलि टनगर
मनेय स्थलट्टोल् हट्टिना (ल्लु) गय्यडुवने मुत्तंरडु गोडिगे ॥
क्कणगावेया-

- ५४ स्वरि नैर्ऋत्यदक्षि एलेदौं हारुवगोल मत्तरोदु कम्मवेल्नूररुवचेंदु
तेंकणि वद मुगुलिय हल्लघटके तेंकण हेले प-
- ५५ डुवला हल्ल वडगरुत्तवयाविय तौं । मूडल् मूलस्थानदेवर तौं ।
आग्नेयकोणोरुल नहुवण दंवालयद तौं । भा ए-
- ५६ लेय तोटदिं तेकला हल्लदिं मूडल् हूदोतं कम्म नाल्लूरु ॥ ई
सामेगलोलेल्ल नट्ट कल्लगल् ॥ ओसेदी शासनमार्गादिं नृपरदार
पालिप्परी
- ५७ धर्मंमं निसद तत्सुकृतात्तरात्मबलमित्रप्रेयसीगोत्रप्रसमृद-
द्वदोलादि विश्वधरेयं निष्कंटक माडि सतोसदिं राज्यमनप्पु-
केन्दु पडेव-
- ५८ दीर्वायुम श्रीयुमं ॥ एनिसुं लोमदे शासनक्रममनावीं मीरिद
तद्दुरात्मनसेव्याचरणान्वित पल्लिगे पैशून्यक्के पापक्के मानन-
नत्पा-
- ५९ यु रुजाविल रिपुहतात्तोर्वीतल दुर्व्वल घनहुःखास्पदनागुं
नरकदोलोल् काडुगु मूडुगु ॥ सामान्योय धर्मसे-
- ६० तुनृपाणां काले काले पालनीयो भवन्ति । सर्वानेतान् भाविनः
पार्थिवेद्रान् भूयो मूयो याचते राममद्रः ॥ ॥ अट्टता परदत्तां
- ६१ वा थो हरेत वसुन्धरा पठिं वर्षसहस्राणि विष्टायां जायते
कृमि ॥ प्रहृत्तारिन्नज्जातवीर्यंसखिवं श्रीवीचिराजं यशोमहि-
- ६२ त पेल्लिमेनल्के शासनमनोल्पिं बालचर्द्धं गुणाग्रहिं चिद्द्वज्जन-
समतस्फुटपटार्याल्लक्रियासकुकुलावहमप्पन्तिरे पेल्लनिन्तु कवि-
कन्टर्पं शुधाधीश्वरं ॥

[इम लेखका माराश जै० जि० स० भाग ३ मे क्रमाक ४५४ में दिया है । किन्तु उस समय मूल लेख प्राप्त नहीं हो सका था । यह लेख भी पहले लेखके ही दिन अर्थात् पीप शुक्ल २ शक ११२७ को लिखा गया

था। इसमें भी गृह बजके गजा कार्तवीर्य (चतुर्थ) तथा उनके मन्त्री वीचणका उनके पूर्वजोंके साथ परिचय दिया है। बेलगाँवमें वीचणके द्वारा स्थापित रट्टजिनालयके अविष्टाता शुभचन्द्र भट्टारक थे। ये मूलमघ - कोण्डकुन्दान्वय-देशीयगण-पुस्तकगच्छके मलधारिदेवके शिष्य नेमिचन्द्रके शिष्य थे। इन्हें कूण्ड प्रदेशके कौरवल्लि विभागका उम्बरवाणि ग्राम दान दिया गया था।]

[ए० ड० १३ पृ० २७]

३२०

वालूर (धारवाड, मैसूर)

कन्नड, राज्यवर्ष १६ = मन् १२०५

[इस लेखमें होयसन राजा वीरवल्लाल २ के समय राज्यवर्ष १६, क्रोधन नवत्सरमें आपाड व० ३ बुधवारके दिन मेघचन्द्रभट्टारकके शिष्य कसप गावुण्डकी इम निसिधिकी स्थापनाका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९४५-४६ क्र० २१९]

३२१

वालूर (धारवाड, मैसूर)

कन्नड, १३वीं सदी

[यह निसिविलेख बहुत घिस गया है। 'श्रीवीतराग' इतने अक्षर पढ़े जा सकते हैं।]

[रि० इ० ए० १९४५-४६ क्र० २१४]

३२२

बेलगामे (मैसूर)

कन्नड, सन् १२०६

- १ स्वस्ति श्रीमत् वीरवल्लालदेववर्षे १६ नेय क्षयसव-
 २ स्सरद भाद्रपद व ११ घृहस्पतिचारदन्दु कमलसेन-
 ३ देवर गुड्डि ज-कौब्बे समाधिनिधिर्धि मुडिपि सुगति-
 ४ य प्राप्नेयादल्लु ॥ श्रीवातरागाय नमो

[इस लेखमें होयसल राजा वीरवल्लालके १६वें वर्ष क्षयसंवत्सरके भाद्रपद कृष्णपक्षमें ११ को कमलसेनकी शिष्या जकौब्बेके समाधिमरणका उल्लेख है ।]

३२३

हंचि (मैसूर)

सन् १२०७, कन्नड

[यह लेख सन् १२०७ का है । होयसल राजा वीरवल्लालके राज्यमें नागरखण्ड प्रदेशके बान्धवनगरमें कदम्बवशीय सामन्त बोप्पके पुत्र ब्रह्मका शासन चल रहा था । उस समय सावन्त मुद्देने मागुण्डिमें एक बसदि बनवायी तथा उसे कुछ भूमि दान दी । यह दान मूलसंघ-काणूर गण-तित्रि-णोक गच्छके अनन्तकीर्ति भट्टारकको दिया गया था । उनकी गुरुपरम्परा इस प्रकार है - गोवर्धन सैद्धान्ति-मेघनन्दि सैद्धान्ति-दिवाकर सिद्धान्तदेव-पद्मनन्दि सैद्धान्त - मुनिचन्द्र सैद्धान्त - मानुकीर्ति सैद्धान्त - अनन्तकीर्ति भट्टारक । मुद्देकी प्रशंसा विस्तारसे की है तथा उसे रेचचमूपतिके समान कोप्पण तीर्थका रक्षक कहा है ।]

[ए रि मै १९११ पृ० ४६]

३२४

आनन्दमंगलम् (विजयपेट, मद्रास)

राज्यवर्ष ६८ = मन्. १०१६ तमिल

[इस लेखने विजापुर कुम्भडिगलके निम्न वर्तमानपेरिगडिगल्-द्वारा निनगिरिपट्टिने एक श्रावस्कां काहान्दान देनेके लिए ५ कलनु (मूर्त्तिमुद्रा) वर्ग करकेका उल्लेख है । यह लेख चोल राजा (कुलोत्तुंग-गः) मद्रिरेङ्गोड परकेसन्निवर्तने ३८वें वर्षका है ।]

[रि. मा ए. १००२-२३ क्र. ४३० पृ २५]

३२५

मनगुन्दि (वारवाड-मैसूर)

शक ११३८-२० = मन्. १२१६-१८, कन्नड

[यह लेख कन्नड राजा जयशेखि तथा बज्जडेवके समय चैत्र व ७, शक ११३८ तथा कार्तिक शु. ८, शक ११४० इन तिथियोंका है । इसमें मणिगुन्दिके जिनालयेके जीर्णोद्धारके लिए कई भव्य पुण्या-द्वारा दान दिये जानेका उल्लेख है तथा वहाँके जैन आचार्योंकी नामावली दी है ।]

[रि. मा ए. १०२५-२६ क्र. ४३९ पृ ७५]

३२६

कंदगल (विजापुर, मैसूर)

राज्यवर्ष (२) १ = मन्. १२३२, कन्नड

[यह लेख यादव राजा मिहणदेवके राज्यवर्ष (२) १, विक्रम संवत्सर उग्रेष्ठ अमावास्याका है । इसमें मूलसंब-काणूरगणके सुकलचन्द्र भट्टारककी शिष्या नागसिरियन्ने-द्वारा निम्न पार्वनाथ बसदिके लिए भूमि आदिके दानका उल्लेख है ।]

[रि. सा ए. १९२८-२९ क्र. ई ५० पृ ४५]

३२७

हस्तेवीड (मँमूर)

शक ११५७ = सन् १२३६, संस्कृत-कन्नड

- १ श्रीमद्देवासुराहोन्द्रपूजितश्रांगजन्मजिद् देव. श्री-
- २ वीरतीर्थेशः पायाद् मव्यजनव्रजान् ॥ (१) श्रीमल्लोकैकधिरया-
- ३ तमूलसंधो विराजते कोण्डकुन्दान्वयस्तत्र देशीयाख्यगणा-
- ४ व्रणां ॥ (२) श्रावोरनन्दिसिद्धान्चक्रवर्त्यनुजो महान्
श्रीमद्वा-
- ५ हुयर्ला नाम मुनि सिद्धान्तपारग ॥ (३) सकलज्ञ-
प्रतिपादितोभयनया-
- ६ भिक्षानसपन्नको मदनोद्यद्द्रवदावतोयत्रविभु सद्धर्मरक्षामणि.
दक्षिता-
- ७ श्वाशसत्पदार्थनिपुण. पद्मद्रव्यवेदो जयत्यखिलोर्वाणुतचारु
वाहुबलिमिद्धान्तीश्वर -
- ८ सन्मुनि. ॥ (४) तस्याग्रशिष्योखिलशब्दशास्त्रपारगम स्वात्म-
सुखानुषर्ती । स्याद्वादविद्याकुश-
- ९ लो विमालि कामाभुजेन्दु सकलेन्दुयोगी ॥ (५) अर्हणदिसुनी-
न्द्राणां चारित्रि विस्मयावह ।
- १० तेषा प्रणयिनी वाणी तस्यास्तन्मुनय प्रिया ॥ (६) जल्प-
वितण्डकथासु च शब्दाग-
- ११ मज्जिनमुखोत्थपरमागमयोरुच्चित्र यच्चित्त स त्रैविद्यारुहोर्हणन्दि-
- १२ मुनि ॥ (७) एष श्रुतगुरुर्यस्य सकलेन्दुमहाव्रते । तस्य
विद्यामहाप्रौढिर्मा-
- १३ दशोर्वण्यते कथ ॥ (८) इत्थभूतो यमीशो वरजिनमुनिसद्गुण्ड-
मध्ये विराजत् षड्विंशत्यर्धि-

- १४ तोरुर्जितचरितपर मपनतत्त्वप्रवेदो । प्रायश्चित्तादिपद्वृद्धिगुणित-
सुतपाश्र्वयं-
- १५ वयंप्रमिद्धो द्वात्रिंशद्भागमन्नावनयुतसकलेन्दुवर्तान्द्रो विभाति ॥
(९) पुरं कतिपर-
- १६ काले प्रवर्तिते ग्रामनगरस्त्रेडेपु तत्रत्यामन्योत्पलविकाशयन्
सकलचन्द्रमु-
- १७ निरायाति (॥ १०) सत्पाण्ड्यदेशमध्यस्थितविल्डिचाग्रामचैत्य-
गृहमामाद्य ज्ञात्वा स्वान्त्य
- १८ त्रिदिनादनशनविधिना त्रिविष्टपं संप्राप्तः ॥ (११) सप्ताप्रवाणे-
न्दुशशिप्रमाब्दशकारयके म-
- १९ न्मथवत्सरं च सत्फाल्गुने शुद्धतृतीयकेन्दुवारंगमत् श्रीसकलेन्दु-
देवः ॥ (१२) अरहं नमः
- २० श्रीमद्द्वारणन्दिंसिद्धान्तचक्रवर्तिगल सधर्मरत्न बाहुबलिसिद्धान्ति-
देवरं दीक्षा-
- २१ गुस्गल् श्रीमद्वर्हणन्दित्रेविद्यदेवर् श्रुतगुरुगलमप्य श्रीम-
- २२ कलचन्द्रमट्टारकदेवर् श्रीमद्व्राजधानि टोरसमुद्रद समस्तमव्य-
- २३ नगरगल् परोक्षविनयार्थवागि माडिमिद्व मंगलमहाश्रीश्री

[यह निमिविलेख राजधानी दोरममुद्रके नागरिकोने सकलचन्द्र भट्टा-
रकके समाधिमरणकी स्मृतिमें स्थापित किया था । वीरनन्दि सिद्धान्तचक्र-
वर्तिके गुरुवन्दु बाहुबलि सिद्धान्तीसे दीक्षा लेकर अर्हणन्दि मुनीन्द्रके पास
सकलचन्द्रने शास्त्राध्ययन किया था । उनकी मृत्यु पाण्ड्य देगके विलिचा
ग्राममें फाल्गुन शु० ३, सोमवार शक ११५७ मन्मथ मवत्सरके दिन हुई
थी । वे मूलसध-कोण्डकुन्दान्वयदेशीयगणके आचार्य थे ।]

[ए० रि० मै० १९२९ पृ० ७४]

३२८

हृचिनसिगलि (धारनाट, मैसूर)

शक ११ (६) ७ = मन् १०४५, कन्नड

[यह लेख यादव राजा मिषणदेवके समय चैत्र शु० ५ रविवार, विरोधकृत् मवत्सर, शक ११(६)७ के दिन लिखा गया है। इसमें एक आबिका-द्वारा मिगलि ग्राममें चैत्यालय बनवानेका उल्लेख है। इस क्रमदिके जानिनायदेवके लिए महाप्रधान नर्वाधिकारि प्रनाकरदेवने तथा पुलिगेरेके मन्नेय एव भाठ त्रिट्टुओने कुछ भूमि दान दी थी।]

[रि० इ० ए० १९४५-४६ क्र० २९६]

३२९

कलकेरि (विजापुर, मैसूर)

शक ११६० = मन् १०४५, कन्नड

[इस लेखमें यादव राजा मिषणदेवके समय भाद्रपद शु० ४ रविवार शक ११६७ क्रौति मवत्सरके दिन महाप्रधान मल्ल, वाच तथा पायिमेट्टि-द्वारा निर्मित अनन्ततीर्थरामन्दिरके लिए कलुकेरेके महाजनो-द्वारा भूमि आदि दान देनेका उल्लेख है। यह मन्दिर कमलमेन मुनिके उपदेशमे बन-बाया गया था।]

[रि० मा० ए० १९३६-३७, ११, ३५३ पृ० १८६]

३३०

लक्ष्मेश्वर (मैसूर)

शक ११६६ = मन् १०४०, कन्नड

[यह लेख यादव राजा सिहणके समय ज्येष्ठ अमावास्या, शक ११६९, प्लुग मवत्सरके दिन लिखा गया है। इसमें महाप्रधान वीचिराजकी कन्या राजलदेवी-द्वारा पुरिकरनगरके श्रीविजयजिनालयके लिए कुछ भूमि तथा द्रव्य दान दिये जानेका उल्लेख है। इनके गुरु पद्ममेन मुनि थे।]

[रि० मा० ए० १९३५-३६ क्र० इ० ९ पृ० १६१]

३३१-३३२

शिगिकुलम् (तिन्नेवेली मद्रास)

सन् १२५३, तमिल

[ये दो लेख भगवती मन्दिरके दीवारोपर खुदे है । पहलेकी तिथि मारवर्मन् सुन्दर पाण्ड्यदेव (द्वितीय) के राज्यवर्ष १५ का ३६०वा दिन यह दो है तथा दूसरेकी तिथि कोणेरिण्मैकोण्डान्के राज्यवर्ष १५ का ३८८वाँ दिन यह दो है । पहलेमें जो राजाज्ञा है उमीका पालन होनेका वर्णन दूसरे लेखमें है । इस आज्ञाके अनुसार राजमन्त्री अण्णन् तमिलप्पलवरैयनकी प्रार्थनापर राजा-द्वारा स्थानीय जिनमन्दिरकी भूमिको करमुक्त किया गया था । यह भूमि पुगलोकर्नाथनल्लूरनिवासी मदि-सागरन् आदिमट्टारकन्-द्वारा मन्दिरको अर्पित की गयी थी । मन्दिरका नाम न्यायपरिपालपेरुम्बल्लि तथा उसमें स्थित जिनमूर्तिका नाम एणक्कु-नल्लनायकर् था । मन्दिर जिस पहाडीपर था उसको जिनगिरिमल्लै यह नाम दिया गया था । वर्तमान समयमें इस मन्दिरकी जिनमूर्ति गौतम ऋषिके नामसे पूजी जाती है ।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० २६९-७० पृ० १०५]

३३३

सहेट महेट (उत्तरप्रदेश)

संवत् ११७७ = सन् १२५५, सस्कृत-नागरी

[तीन चरणपाटुकाओके एक पट्टपर यह लेख है । इसके मध्यमें संवत् ११७७ ऐसा निर्माणकालका उल्लेख है । लेखका अन्त 'प्रणमति नित्य' इन अक्षरोसे हुआ है । अत यह जैन लेख प्रतीत होता है ।]

[रि० आ० स० १९१०-११ पृ० १८]

३३४

विजापूर (मैसूर)

शक ११७९ = सन् १०५७, कन्नड

[यह लेख करीमुद्दीनकी मसजिदमें पाया गया । यह मसजिद एक जैन मन्दिरके स्थानपर बनवायी गयी थी । इस मन्दिरके आचार्य करसिदेवके लिए यादव राजा कन्हरदेवके समय शक ११७९ में कुछ भूमि दान दिये जानेका इस लेखमें निर्देश है ।]

[रि० आ० स० १९३०-३४ पृ० २२४]

३३५

वस्तिहल्लि (मैसूर)

सन् १२५७, कन्नड

[यह मूर्तिलेख होयसल राजा नरसिंहके समय सन् १२५७ का है । इस समय श्रीकरणद मन्त्रकण्णके पुत्र विजयण्ण तथा दोरसमुद्रके अन्य जैनोंने मूलसघ-देसिगण हनसोगे शाखाके शान्तिनाथ मन्दिरका निर्माण किया था । इस मन्दिरके लिए हीरगुप्पे नामक ग्राम नयकीर्ति सिद्धान्तचक्रवर्तिको अर्पित किया गया था ।]

[ए० रि० ५८ १९११ पृ० ४९]

३३६

कलकेरि (विजापूर, मैसूर)

राज्यवर्ष ४ = सन् १२६०, कन्नड

[यह लेख यादव राजा कन्नरदेवके राज्यवर्ष ४ साधारण सवत्सरमें लिखा गया था । इसमें अनन्ततीर्थकरमन्दिरके लिए रगरस-द्वारा-पुत्र प्राप्तिके उपलक्ष्यमें कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है । करसग्राहक सर्व-देव नायक-द्वारा भी इस समय कुछ दान दिया गया था ।]

[रि० सा० ए० १९३६-३७ क्र० ई० ५४ पृ० १८६]

३३७

नेगलूर (धारवाड, मैसूर)

राज्यवर्ष (६) = सन् १२६२, कन्नड

[यह लेख यादव राजा कन्वरदेवके राज्यवर्ष (६) विरोधी सबत्सरमें भाद्रपद शु० १४, गुरुवारको लिखा गया था। इसमें कुलचन्द्रभट्टारकके शिष्य सकलचन्द्र भट्टारकके समाधिभरणका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३२-३३ क्र० ई० १६२ पृ० १०७]

३३८

वालूर (धारवाड, मैसूर)

शक ११८४ = सन् १२६२, कन्नड

[इस निसिधि लेखमें कहा गया है कि सेंदूरके काव्यकी माता चैकवाने यह निसिधि स्थापित की। लेखकी तिथि पीष शु० ११, सोमवार, शक ११८४, दुर्मति सबत्सर ऐसी दी है।]

[रि० इ० ए० १९४५-४६ क्र० २१८]

३३९

वालूर (धारवाड, मैसूर)

१३वीं सदी, कन्नड

[इस लेखमें यादव राजा कन्वरदेवके राज्यकालमें नल सबत्सरके पीष मासमें गुरुवारके दिन इस निसिधिके स्थापित किये जानेका उल्लेख है। लेख बहुत घिस गया है।]

[रि० इ० ए० १९४५-४६ क्र० २१७]

३४०-३४१

हत्तिमत्तूर (धारवाड, मैसूर)

राज्यवर्ष ५ तथा ९ = सन् १२६५ तथा १२६९, कन्नड

[ये दो लेख हैं । पहला लेख यादव राजा महादेवके राज्यवर्ष ५ में कार्तिक व० १३, बुधवार, क्रोधन सवत्सरके दिन सेवयर जवकयकी पत्नी मादवेके समाधिमरणका स्मारक है । दूसरेमें महादेवके राज्यवर्ष ९ में हत्तियमत्तूरकी बसदिके आचार्यके समाधिमरणका उल्लेख है । (न) न्दिम-ट्टारकदेवका भी उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९३२-३३ क्र० ई० ६८-६९ पृ० ९८]

३४२

हल्लेवीड (मैसूर)

सन् १२६५, कन्नड

[यह लेख होयसल राजा नरसिंह ३ के समय सन् १२६५ का है । इस वर्षमें राजा-द्वारा त्रिकूट रत्नत्रय शान्तिनाथ म्नालयके लिए माघ-नन्दि सैद्धान्तिको कल्लनगेरे ग्राम दान दिया गया था । माघनन्दिकी गुफ-परम्परा इस प्रकार है — मूलसध — नन्दिसध-बलात्कारमणके वर्धमानमुनि-को होयसल राजाओके गुहये, श्रीधर त्रैविद्य-पद्मनन्दि त्रैविद्य-वासुपूज्यसैद्धान्ति-धूमचन्द्र-भट्टारक-अभयनन्दिभट्टारक — अरुहणदि सिद्धान्ति, देवचन्द्र, अष्टो-पवासि कनकचन्द्र, नयकीर्ति, मासोपवासि रविचन्द्र, हरियनन्दि, श्रुतकीर्ति त्रैविद्य, वीरनन्दि, सिद्धान्ति, गण्डविमुक्त, नेमिचन्द्रभट्टारक, गुणचन्द्र, जिनचन्द्र, वर्धमान, श्रीधर, वासुपूज्य, विद्यानन्द स्वामि, कटकोपाध्याय श्रुतकीर्ति, वादिविस्वासघातक मलेयालपाण्ड्यदेव, नेमिचन्द्र, मध्याह्नकल्पवृक्ष वासुपूज्य । श्रीधरदेव-वासुपूज्य — उदयेन्दु — कुमुदेन्दु — माघनन्दि । माघनन्दिके चार

ग्रन्थोका उल्लेख किया है - मिद्धान्तमार, थावकाचारसार, पदार्थसार तथा शास्त्रसार ममुच्चय । इनके शिष्य कुमुदचन्द्र पण्डित थे । अन्तमें हम दानके सहायकके रूपमें महाप्रधान सोमेय दण्डनायकका उल्लेख किया है ।]

[ए० रि० मै० १९११ पृ० ४८]

३४३

अण्णिवोरि (धारवाड, मैसूर)

शक ११८९ = सन् १२६७, कन्नड

[हम लेखमें चैत्र व० ४, मंगलवार, शक ११८९, प्रभव संवत्सरके दिन मूलमव-कोण्डकुन्दान्वयके सोमदेवाचार्यकी शिष्या आकलपे अन्वके समाधिभरणका उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ई २०४ पृ० ५३]

३४४

संगूर (धारवाड, मैसूर)

राज्यवर्ष ६ = सन् १९६९, कन्नड

[हम लेखमें यादव राजा महादेवके राज्यवर्ष ९, विभव संवत्सरमें नन्दिमट्टारकके शिष्य नयकीति मट्टारकके शिष्य नाल्प्रमु गगर सावन्त नोवके समाधिभरणका उल्लेख है ।]

[रि० मा० ए० १९३२-३३ क्र० ई १६८ पृ० १०७]

३४५

हुलिकेरे (मैसूर)

सन् १०७१, कन्नड

१ स्वस्ति प्रजोत्पत्तिसंवत्सरद चैत्र सु १ त्रि दंडु श्रीमत् प्रतापवीर
होयसल श्रीवीरनारसि.....

२ वाहुनं सोमेयदण्णायकरु मेय्हुन वाचेयदण्णायकरु हौकुदद
बसदि जाणवा

३ दण्णायकरं जाणोद्धारवं माद्धिसिकं - य निद्धिसिदरु

[इस लेखमें होयसल राजा नरसिंहके शासनकालमें चैत्र शु १, गुस्वार, प्रजोत्पत्ति सवत्सर, के दिन होकुदकी बसदिके जीर्णोद्धारका उल्लेख है। यह कार्य सोमेय दण्डनायकके बहूनोई वाचेय दण्डनायक-द्वारा किया गया था। लिपि १३वीं सदोकी है। सवत्सर नामानुसार यह वर्ष सन् १२७१ होगा जब नरसिंह तृतीयका राज्य चल रहा था।]

[ए० रि० मै १९३७ पृ० १८७]

३४६

मुल्लगुन्द (धारवाड, मैसूर)

शक ११९७ = सन् ११७५, कन्नड

[यह लेख वैशाख व १ (३), गुस्वार, शक ११९७ युव सवत्सरका है तथा पार्श्वनाथबसदिके भीतरी दीवालमें लगा है। इसमें सरदूके तिलकरसके मन्त्री देवण्णके पुत्र अमृतैयके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२६-२७ क्र० ई ९१ पृ० ८]

३४७

अमरापुरम् (अनन्तपुर, आन्ध्र)

शक १२०० = सन् १२७८, कन्नड

[यह लेख निहुगल्लुके महामण्डलेश्वर इरुगोण चोल महाराजके समय आपाठ शु० ५ सोमवार शक १२००, ईश्वर सवत्सरका है। इसमें मूलसघ-देशियगणके त्रिभुवनकीर्ति राउलके शिष्य बालेन्दु मलघा-रिदेवके उपदेशसे संगयन वोम्मिसेट्टि तथा मेलब्बेके पुत्र मल्लिसेट्टि-द्वारा

तैलगेरेके प्रसन्नपार्षददेवके लिए २००० वृक्षोके उद्यानके दानका वर्णन है । इस मन्दिरका उपाध्याय जैन ब्राह्मण चल्लपिल्ले था जो पाण्ड्यप्रदेशके भुवलोकनाथनल्लूरका निवासी था ।]

[रि० सा० ए० १९१६-१७ क्र० ४० पृ० ७४]

३४८

इन्दौर म्युजियम (मध्यप्रदेश)

संस्कृत-नागरी, सं० १३३४ = सन् १२०८

[इस लेखमें पण्डिताचार्य रत्नकीर्ति-द्वारा एक मूर्ति सं० १३३४ में स्थापित किये जानेका उल्लेख है ।

[रि० इ० ए० १९५०-५१ क्र० १२३]

३४९

पट्टा (उत्तरप्रदेश)

संघत् १३३५ = सन् १२७८, संस्कृत-नागरी

[मूलसंघके गोललतक कुलके कुछ साधुओं-द्वारा सवत् १३३५ में तीन मूर्तियाँ स्थापित की गयी थीं ऐसा इस लेखमें वर्णन है ।]

[रि० आ० स० १९२३-२४ पृ० ९२]

३५०

कडकोल (धारवाड, मैसूर)

शक १२०१ = सन् १०८०, कन्नड

[इस लेखमें मूलसंघके पदासेन भट्टारकके शिष्य सावन्त सिरियम गौडकी पत्नी चण्डिगौडिके समाधिमरणका तथा कई गौडों-द्वारा एक बसदिको दान दिये जानेका उल्लेख है । तिथि भाद्रपद शु० ६, सोमवार, शक १२०१, प्रमाथि सवत्सर ऐसी है ।]

[रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई ५१ पृ० १२३]

३५१

सण्णमल्लीपुर (मैसूर)

शक १२०७ = सन् १२८५, कन्नड

- | | |
|-------------------------------|-------------------------------|
| १ स्वस्ति श्रीप्रतापचक्रवर्ति | २ होइसल वीर नरसिं- |
| ३ हदेवरसरु पृथिवि- | ४ राज्य गेयुतिरल्लु |
| ५ शक वरिष १२०७ नेय | ६ सुमक्रित्तुसंवत्सरद पाण्यु- |
| ७ ण ' हे- | ८ गगडे |
| ९ ...गरबेइल्लु | १० ' लवुं |
| ११ ...मतरु... | १२ '...हि आतन तम्म ' आल- |
| १३ '...कोडगे ...आल | १४ ' 'ल्लु होलवेरड्डु अन्नु |
| १५ तिदने 'सा- | १६ थिर मत्तरु 'बिह |
| १७ 'सिद सासन ॥ | १८ 'दक्षिण तगडूरलि |
| १९ | २० (ता) थूर गुलियपुर |
| २१ ...यण अल | २२ ' ' नागगावुड ॥ वीतराग |

[यह लेख होयसल राजा नरसिंह ३ के समय शक १२०७ के फाल्गुनमे लिखा गया था । किसी हेगडे-द्वारा नागगावुडको तगडूर, तायूर तथा गुलियपुर ग्रामकी कुछ भूमि करमुक्त दी जानेका इसमें वर्णन है । अन्तमें वीतराग यह मुद्रा है इससे दानदाता जैन प्रतीत होते हैं ।]

३५२-३५३

ताडकोड (धारवाड, मैसूर)

राज्यवर्ष १९ = सन् १७८५, कन्नड

[यह लेख यादव राजा रामचन्द्रके राज्यवर्ष १४, चित्रभानु मंत्रालयका है। इन ममय कन्नरदेवकी रानीकी आज्ञामें सर्वाधिकारी मायदेवने एक जिनमन्दिर बनवाया था। यही कि अन्य लेखमें चन्द्रनायको नमस्कार कर वालचन्द्रके गिण्य श्रीत्रामुपूज्यका उल्लेख किया है।]

[रि० मा० ए० १९२५-२६ क्र० ४४४-४४५ पृ० ७६]

३५४

कलकैरी (मैसूर)

राज्यवर्ष १८ = सन् १२८९, कन्नड

[यह लेख यादव राजा रामदेवके राज्यवर्ष १८ में पीप शु० ८, वड्डुवार, (मर्च)धारि संवत्सरके दिन लिखा गया था। इसमें नागेशिसंष्टि और मादल्लेके पुत्र मादल्लेके समाधिभरणका उल्लेख है। इनके गुरु ममन्त-भद्रदेव थे।]

[रि० सा० ए० १०३५-३६ क्र० ई० ७२ पृ० १६७]

३५५

डम्बल (जि० धारवाड, मैसूर)

शक १२११ = सन् १२९०, कन्नड

[यह लेख रामदेव (यादव) के ममयका है। धर्मबोललके महानाडुके १६ प्रतिनिधि तथा नाडुके ८ प्रतिनिधि एव नाल्ववीर चबुण्डके छोटे बन्धु सप्तरम्-द्वारा नगर जिनालयके लिए कुछ करोंका उत्पन्न दान देनेका इसमें उल्लेख है। इसी मन्दिरको अय्यत्तौक्कलु तथा तगुरु ३००-द्वारा कुछ तेल वगैरङ्का दान भी दिया गया था। तिथि पीप शु० २, रविवार, शक १२११, मर्चवारी संवत्सर ऐसी ही है।]

[रि० मा० ए० १९४४-४५ क्र० एफ् ६३]

३५६

पोन्नूर (८० अर्काट, मद्रास)

राज्यवर्ष ७ = सन् १२९०, तमिल

[यह लेख स्थानीय जैन मन्दिरमें है । भारवर्मन् विक्रमपाण्डयके राज्यवर्ष ७ में विडालपट्टके नाट्टवर् (ग्रामप्रमुखों)-द्वारा आदिनाथके पत्निकविलासमूर्त्त रहुनेवाले लोगोसे प्राप्त करीका उत्पन्न इस जिनमन्दिरमें पूजा आदिके लिए अर्पण किए जानेका इसमें उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ४१५ पृ० ४०]

३५७

हुमन्न (मंसूर)

शक १२१७ = सन् १२९५, कन्नड

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादादाभोषलाञ्छ-
- २ नं जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशास-
- ३ नं स्वस्ति श्रीमत्तु सकवर्ष १२१७ नेय मजु-
- ४ मथसंवत्सरद चैत्र सु पाडिव वृहस्प-
- ५ तिवारदहु श्रीमत्सिद्धान्तयोगी-
- ६ त्रपादपकजभ्रमर वम्मगवुड म-
- ७ हापुरुषो...गतो सिद्धि समाधिना ।
- ८ नमनाण्णं...गुणसेनमुनिश्वरं
- ९ ...द्राविडान्वध
- १० मौलिना

[इस निसिधिलेखमें श्रीमत् सिद्धान्त योगीन्द्रके शिष्य वम्मगवुडके समाधिभरणका उल्लेख है जो चैत्र शु० १, वृहस्पतिवार, शक १२१७ मन्मथसंवत्सरके दिन हुआ था । लेखके अन्तमें द्राविड अन्वयके गुणसेन मुनीश्वरका नाम भी आता है ।]

[ए० रि० मै० १९३४ पृ० १७७]

३५८

लक्ष्मेश्वर (मैसूर)

शक १२१७ = सन् १२१५, संस्कृत-कन्नड

[इस लेखमें पुरिकरके शान्तिनाथ मन्दिरके लिए सोमय-द्वारा कुछ भूमि दान दिये जानेका उल्लेख है । तिथि भाद्रपद शु० ५, सोमवार, शक १२१७ ऐसी दी है ।]

[रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई २८ पृ० १६३]

३५९

मन्नर मसलवाड (वेल्लारी, मैसूर)

शक १२१९ = सन् १२१७, कन्नड

[यह लेख यादव राजा रामचन्द्रदेवके समय मार्गशिर शु० ५ गुक्वार शक १२१९ हेमलम्बि सवत्सरका है । इसमें महामण्डलेश्वर भैरवदेवरस-द्वारा मूलसघ-देसिगणके नेमिचन्द्रराउलके शिष्य विनयचन्द्रदेवको भूमि दान दिये जानेका उल्लेख है । यह दान मोसलेवाडके जिनमन्दिरके लिए था जिसका जीर्णोद्धार महामण्डलेश्वर सालेवेय तिकमदेव राणेयके मन्त्री साबन्त पण्डितके पुत्र केशव पण्डित-द्वारा किया गया था ।]

[रि० सा० ए० १९१८-१९ क्र० २५६ पृ० २२]

३६०

कोगलि (वेल्लारी, मैसूर)

१३वीं सदी, कन्नड

[इस लेखमें होयसल राजा प्रतापचक्रवर्ति रामनाथदेव-द्वारा युव मंवल्लरमें कोगलिके चैन्नपाश्वरजिनमन्दिरके लिए सुवर्णदान देनेका उल्लेख है ।]

[इ० म० वेल्लारी १९२]

३६१-३६७

चिप्पगिरि (जि० वेल्लागी, मैसूर)

१३वीं सदी, कन्नड

[ये छह लेख हैं । मूलसघ-देशीयगण-कोण्डकुन्दान्वय-पोस्तकगच्छके केशणदि भटारके शिष्योके समाधिमरणका इनमें उल्लेख है । इन शिष्योंके नाम हैं—गोपरस, तथा उसकी पत्नी हालौवे, मादलदेवी, तिप्पयकी पत्नी जाकवे, नागलदेवी, मूलिग तिप्पय, वैतलेय बोम्मिसेट्टि तथा उसकी पत्नी बीमवे । लिपिके अनुसार ये लेख १३वीं सदीके प्रतीत होते हैं । इसी समयके एक और लेखमें माधवचन्द्र भट्टारकदेवके शिष्य परिसयके समाधिमरणका उल्लेख है ।]

(रि० सा० ए० १९४४-४५ ई ६३-७२)

३६८

अदरगुं चि (जि० धारवाड, मैसूर)

१३वीं सदी, कन्नड

[यह लेख लिपिपर-से १३वीं सदीका प्रतीत होता है । यापनीय सघ-कादूरगणकी एक बसदिके लिए दी हुई जमीनकी सीमा बतलानेवाला यह पत्थर है । यह बसदि उच्छगि नगरमें थी । यह दान अदिर्गुण्टेके गोण्ड और स्थानिको-द्वारा दिया गया था ।]

(रि० सा० ए० १९४१-४२ ई० क्र० ३ पृ० २५५)

३६९

वससघपट्टण (हासन, मैसूर)

१३वीं सदी कन्नड

१ श्रीमूलसघ देशीयगण पोस्तकगच्छ

२ कौडकुंदान्वयद इंगलेश्वरद व-

- ३ लिय श्रीश्रुतकीर्तिदेवर गुड्डुगलु
- ४ कोग नाड श्रीकरणड कावणगल मक्क-
- ५ लु नाकण्ण होनणगलु माडिसिद श्री-
- ६ नेमिनाथस्वामिगल प्रतिमे मग-
- ७ ल महा श्री श्री श्री

[इस लेखमें श्रीकरणद कावण्णके पुत्र नाकण्ण तथा होनण्ण-द्वारा, जो कोगु प्रदेशके निवासी थे, नेमिनाथकी इस मूर्तिके स्थापित किये जानेका उल्लेख है। ये दोनो मूलसष-देसियगण-पुस्तकगच्छकी इगलेश्वरबलिके आचार्य श्रुतकीर्तिके शिष्य थे। लेखकी लिपि १२वी या १३वी सदीकी प्रतीत होती है।]

(ए० रि० मै० १९४४ पृ० ४२)

३७०

रत्नापुरि (मैसूर)

१२वीं-१३वीं सदी, कन्नड

[यह दो पंक्तियोंका लेख एक मूर्तिके पाद-पीठपर है जिसमे किसी-भट्टारकदेव-द्वारा इस मूर्तिको स्थापनाका निर्देश है। लिपि १२वी या १३-वी सदीकी प्रतीत होती है।]

[मूल कन्नड लिपिमें मुद्रित] [ए० रि० मै० १९४४ पृ० ७०]

३७१

वेत्तगोल (माड्या, मैसूर)

१२वा-१३वीं सदी, कन्नड

[इस छोटे-से मूर्ति-लेखमें द्रविल सष-नन्दिसष-अरुगल अन्वयके कुछ व्यक्तियों-द्वारा इस पार्श्वनाथ मूर्तिकी स्थापनाका निर्देश है। लिपि १२वी या १३वी सदीकी प्रतीत होती है।]

[मूल कन्नड लिपिमें मुद्रित] [ए० रि० मै० १९४४ पृ० ५७]

३७२

विदिरूर (शिमोगा, मैसूर)

१३वीं सदी, कन्नड

- १ श्री मैणदान्वयद देसियगणठ नागर एक्कगूडिय सु-
- २ भच्चद्र देवरु माडिसिद बसदिगे ॥ श्रीजिनपठ-
- ३ पकजविराजितमधुकरन् एनिप्प मडिल कोट्ट
- ४ पूजितवेने तीर्थकरव्वाजित प्रतिकृतिय-
- ५ नुचित कडितले गोत्र ॥

[इस लेखमें विदिरूर ग्रामके बसदिमे मल्लि नामक व्यक्ति-द्वारा इस चौबीसी मूर्तिके अर्पण किये जानेका वर्णन है । यह बसदि देसियगण-मैण-दान्वय-कडितले गोत्रके सुभचन्द्रदेव-द्वारा बनवायी गयी थी । लेखकी लिपि १३वीं सदीकी है ।]

[ए० रि० मै० १९४३ पृ० ११४]

३७३

होंगनूर (मैसूर)

१३वीं सदी, कन्नड

- १ स्वस्ति श्रीमूलसंघ श्रीक्राण्वद श्रीसकलचंद्रमहा-
- २ रकदेव शिष्यरु माधवचन्द्रदेवर गुड्डुगल्लु
- ३ उभयनानादेसिगल्लु माडिसिद होंगनूर शा-
- ४ न्तिनाथदेवर जोगवड्डिगेथ बसदि मगल महा

[यह लेख एक शान्तिनाथ मूर्तिके पादपीठपर है जो वर्तमानमें लक्ष्मी-देवी मन्दिरके एक चतूतरेमें लगी है । इसमें होंगनूरकी बसदिका निर्माण सकलचन्द्रके शिष्य माधवचन्द्रके शिष्यो-द्वारा किये जानेका उल्लेख है । ये मूलसंघ-क्राण्व (क्राणूर गण) के अन्तर्गत थे । लिपि १३वीं सदी-की है ।]

[ए० रि० मै० १९४२ पृ० १२६]

३७४

तचनन्दी (मैसूर)

१३वीं सदी, फसद

- १ स्वस्ति श्रीमूलसत्र सूर- २ स्तगण चित्रकूटान्वयद
३ प्रतिबद्ध

[यह छोटा-सा लेख एक खण्डित जिनमूर्तिके पादपीठपर है । मूल-मध-मूर्गस्तगण-चित्रकूटान्वयके किमी व्यक्ति-द्वारा यह मूर्ति स्थापित की गयी थी । लिपि १३वीं सदीकी है ।]

[ए० रि० मै० १९४२ पृ० १८५]

३७५

वरुण (मैसूर)

१३वीं सदी, सस्कृत-कसद

- | | |
|-------------------------|--------------------------|
| १ श्रीमद् द्रविल- | २ संगस्य नन्दिंस |
| ३ घे ह्यरुगले घ- | ४ न्वयेऽक्षेपशास्त्र- |
| ५ ज्ञ श्रीपाल | ६ मुनिराश्रिय |
| ७ तच्चिउप्यो विदुषां | ८ श्रेष्ठ पद्मप्रम- |
| ९ मुनीश्वर. तस्य | १० पुत्र तपोत्ती- |
| ११ धर्मसेनमहा | १२ मुनि ॥ सोयं |
| १३ शुद्ध() स्वभावस्तो- | १४ वाटां (न)रपतिग्रहा- |
| १५ त्व्यक्तो जिनपदामे | १६ त्रिदिव गत्रवान् बुध- |
- १७ .

[इस लेखमें द्रविलसघ-नन्दिसघ-अरुंगल अन्वयके आचार्य श्रीपालके प्रशिष्य तथा पद्मप्रभके शिष्य धर्मसेनके समाधिमरणका उल्लेख है । लेखकी लिपि १३वीं सदीकी प्रतीत होती है ।]

[ए० रि० मै० १९४० पृ० १७२]

३७६

केलगेरे (माड्या, मैसूर)

१३वीं सदी-उत्तरार्ध, कन्नड

पश्चिमकी ओर

- १ श्रीमत्परमगनीरस्याद्वादा-
- २ मोघलाउन (१) जीयात् त्रैलोक्य-
- ३ नाथस्य शासनं जिनशासनं ।
- ४ भद्रं भूयाज्जिनेन्द्राणां
- ५ शासनायाघनाशिने । कुनीर्थ-
- ६ ध्वान्तसघातप्रमिन्नघनमान-
- ७ वे । स्वस्ति समधिगतपंचमहाश-
- ८ व्द महामडलेश्वरं द्वारावतीपु-
- ९ रवराधाइवरं यादवकुलांबर-
- १० शुभाणि सम्यक् वचूहामणि मलपरो-
- ११ लुगण्ट नामादिसमालकृतरप्प
- १२ श्रीचिनयाद्वित्यपोऽमलनू परेय-
- १३ ग विष्टिदेव नारसिंह बल्लाल नारसि-

दक्षिणकी ओर

- १४ घ- टव तस्य पुत्रं नारसि-
- १५ हरमरु दोरसमुद्रदोलु पृथ्वीराज्यं गेयु-
- १६ त्तमिरल्लु इति श्रीमूलसघ वलात्कारं
- १७ ' यदोलु भनेकाच यंरु न-
- १८ ' प्रवर्तिसल्लु भवरोल्लु वर्धमानभटा-
- १९ रकर श्रीधराचार्यंरु देवनन्दित्रैवि-

- २० धरु वासुपूज्यसिद्धान्तदेवरु शुभचन्द्र-
 २१ मट्टारकरु अभयनन्दिमट्टारकरु अहंनं-
 २२ दिसिद्धांतिगल्लु देवच(द्र) सिद्धांतिगल्लु अष्टोप-
 २३ वासि कनकचन्द्रदेवरु नयकीर्ति चान्द्रा-
 २४ यणदेवरु माम्पोपवास रविचन्द्रसिद्धा-
 २० न्तिगल्लु हरियनन्दिसिद्धान्तिगल्लु शुभ-
 २६ कीर्तित्रैविद्यदेवरु वीरणदिसिद्धान्तदे-
 २७ चरु गण्डविमुक्त नेमिचन्द्रमट्टारकदेव
 पूर्वकी आर
- २८ (चर्ध) मानमुनीन्द्ररु श्रीधराचार्यरु वा-
 २९ सुपूज्यत्रैविद्यदेवरु उदयचन्द्रसिद्धां-
 ३० तदेवरु कृमुत्रचन्द्रमट्टारकदेवर मा "
 ३१ माघनन्दिसिद्धान्तचक्रवर्तिगल्लु श्रीपादप-
 ३२ अगालगे होयसल्लमुत्तवल श्रीवीरनारसिंहदेवरस-
 ३३ रु दोरसमुद्रद त्रिकूटरत्नत्रयद श्रीशांतिनाथ
 ३४ देवर अं(ग)भोग रंगभोग आहारदान मुन्ताद
 ३५ समस्तधर्मकार्यका
 ३६ चिककनेयनहलि
 ३७ व येनुल्लया अष्टमो-
 ३८ व तेजस्वाम्यसहितवागि माघनं-
 ३९ दिसिद्धान्तचक्रवर्तिगल्लु श्रीपाद-
 ४० पद्मंगल्लिगे धारापूर्वकं माडि
 ४१ कोट्टरु स्वदत्तां परदत्तां वा यो हरेत
 ४२ वसुधरा "

[इस लेखके प्रारम्भमें होयसल वंशके राजाओंकी परम्परा नरसिंह (तृतीय) तक दी है । नरसिंहने राजधानी स्थित शान्तिनाथ जिनालयके लिए चिककन्नेयनहल्लि ग्राम दान दिया । यह दान मूलसघ-बलात्कारगणके कुमुदचन्द्र भट्टारकके शिष्य माघनन्दि सिद्धान्तचक्रवर्तीको दिया गया था । लेखमें कुमुदचन्द्रके पूर्ववर्ती १९ आचार्योंके नाम भी उल्लिखित हैं ।]

[ए० रि० मै० १९४० पृ० १६४]

३७७-३७८

मूगूर (मैसूर)

१३वीं सदी, कन्नड

(अ) १ श्रं मूलसंघ देसियगण पुस्त २ कगच्छ कौंडकुदान्वयक

‘हगेरे-

३ यतीर्थद प्रतिवद्ध भरतपण्डितरिगे ४ जविकयब्देय मगलु”

(ब) १ मूलसघ देगसिण पुस्तकगच्छ कौंडकुदान्वय हंगणेश्वर सं(घ)द श्रीभानुकीर्तिपं-

२ दितदेवर शिष्यरूप कान नंदिदेवर गुडुगलुप मूगूर समस्त

३ गावुण्डुगलु कोडेयर वसदिय जीर्णोद्धारणवमा

४ डि सिदरु मगलमहाश्री

[ये दो लेख मूगूरकी आदिनाथवसदि तथा गार्ध्वनाथवसदिके मूर्तियोंके पादपीठोंपर हैं । पहलेमें मूलसघ-देसियगणक क-हगेरे तीर्थसे सम्बद्ध भरत पण्डितके लिए जविकयब्देकी क-या (नाम लुप्त)-द्वारा कुछ दान दिए जानेका उल्लेख है । लेख अधूरा होनेसे विवरण स्पष्ट नहीं हो सकता । दूसरेमें मूल सघ-देसियगण-इगणेश्वर सघके भानुकीर्ति पण्डितके शिष्य - नन्दिके शिष्य गावुण्डो द्वारा मूगूरकी कोडेयरवसदिके जीर्णोद्धारका उल्लेख है । लेखोंकी लिपि १३वीं सदीकी है ।]

[ए० रि० मै० १९३८ पृ० १८२-८३]

३७६

हलेवीड (मैसूर)

१३वीं सदी, कन्नड

- १ जिननात्मीयेष्टदन्धं निजगुरु नयकीर्तिव्रतीश कसद्भूवि-
 २ नुतं तानुक्किसेट्टिप्रभु पितृ तनगेकब्बे तायेन्दोडिन्तीवन-
 ३ धिव्यावृतधात्रीतलदोल् अर्दे पुण्योद्भवव्रातदोल् कूडि नितान्-
 ४ तं नामिसेट्टि स्फुटविशदयशोलक्ष्मिय ताने पेत्त ॥
 ५ अन्तात व्यवहारदि मत्र विक्रमाक्रान्त
 ६ लडेव मान्वात दो
 ७ कोण्डु स्वान्त विश्रुत ना-
 ८ मिसंट्टि दिवदोल् कैवल्यमं ताल्दिदं

[इस लेखमें उक्किसेट्टि और एकब्बेके पुत्र नामिसेट्टिके समाधिमरण-
 का उल्लेख है । नामिसेट्टिके गुरु नयकीर्ति व्रतीश थे । लेखकी लिपि १३वीं
 सदीकी प्रतीत होती है । पत्रित ५ के अस्पष्ट भागमें सम्भवत वीरवल्लाल
 (द्वितीय) के राज्यका और तिथिका उल्लेख था ।]

[ए० रि० मै० १९२९ पृ० ७८]

३८०

तिरुनिडकोण्डै (मद्रास)

१३वीं सदी, तमिल

[इस लेखमें कहा गया है कि कुलोत्तु ग चोल राजा-द्वारा कनकच्चि-
 न्नगिरि अप्पर् देवकी अपित नल्लूर यह एक धार्मिक स्थान है । यह लेख
 चन्द्रनाथ मन्दिरके बराण्डेमें लगा है तथा १३वीं सदीकी लिपिमें है ।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० २९९ पृ० ६५]

३८१

तिरुनिडंकोण्डै (मद्रास)

१३वीं सदी, तमिल

[यह लेख चन्द्रनाथ मूर्तिके पादपीठपर खुदा है । इस मूर्तिकी-जिसे कच्चिनायककर कहा है -- स्थापना आलप्पिरन्दान् मोगन् कच्चियरायर-द्वारा की गयी ऐसा लेखमें कहा है । लिपि १३वीं सदीकी है ।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३१९ पृ० ६७]

३८२

कोट्टुगोरे (मैसूर)

१३वीं सदी, कन्नड

[इस लेखमें देसियगण-इगलेव्वर वलिके हेरगु निवामी आचार्य हरिचन्द्रके शिष्य माघनन्दि-द्वारा एक शान्तिनाथ मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है । लिपि १३वीं सदीकी है ।]

[ए० रि० मै० १९१९ पृ० ३३]

३८३

तिरुनिडंकोण्डै (मद्रास)

१३वीं सदी, तमिल

[यह लेख यहाँकी पहाड़ीपर चढनेके लिए बनी सीढियोंके पास है । इन सीढियोंका निर्माण गुणबीरदेवन् पण्डितदेवन्ने किया ऐसा लेखमें कहा है । लिपि १३वीं सदीकी है ।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३१६ पृ० ६७]

३८४

हुकेरी (जि० वेल्गांव, मैसूर)

१३वीं सदी, कन्नड

[यह लेख टूटा है । यापनीय सभके किसी गणके श्रैकीर्ति आचार्यका इममें उल्लेख है । लिपि १३वीं सदीकी है ।]

[रि० सा० ए० १९४२-४३ ई ६ पृ० २६१]

३८५-३८६

हले हुब्बलि (जि० धारवाड, मैसूर)

१२वीं-१३वीं सदी, कन्नड

[यहाँके अनन्तनाथ बसदिमें दो लेख हैं । एक ब्रह्मादेवकी मूर्तिपर है । इसकी लिपि १२वीं सदीकी है । सेटि महादेवी-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापना-का इममें निर्देश है । दूसरा एक जिनमूर्तिपर है । इसकी लिपि १३वीं सदीकी है । इसमें यापनीय सभके (क)दूर गणका उल्लेख है ।

[रि० सा० ए० १९४१-४२ ई० ३३-३४]

३८७

मोटे वेन्नूर (धारवाड, मैसूर)

१३वीं सदी, कन्नड

[यह लेख १३वीं सदीकी लिपिमें है । तिथि चैत्र शु० १०, गुरुवार, सोम्य सवत्सर ऐसी दी है । इसमें जिनचन्द्रदेवके शिष्य बोम्मिसेट्टिके पुत्र वाचिसेट्टिके समाधिमरणका उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ई १०८ पृ० १२९]

३८८-३८९

वनवासि (उत्तर कनडा, मैसूर)

१२वीं-१३वीं सदी, कन्नड

[यहाँ दो मूर्तिलेख हैं जो १२वीं-१३वीं सदीकी लिपिमें हैं किन्तु अस्पष्ट हैं। एकमें मूलसधके किसी आचार्यका उल्लेख है।]

[रि० ६० ए० १९४७-४८ क्र० २४३-४४ पृ० २८]

३९०

विजापुर (मैसूर)

शक १२३२ = सन् १३१०, कन्नड

[इस मूर्तिलेखमें मूलसध-निगमान्वयके कृष्णदेव-द्वारा शक १२३२, साधारण मवत्सरमें इस मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९३३-३४ क्र० ६० १६४ पृ० १३४]

३९१

वेल्लुगामे (मैसूर)

सन् १३१९, कन्नड

- १ दशरि श्रीमत्तु थादवचक्रवर्ति भुजबलवी "बहाक" "
- २ पत्र ९ नेय सिद्धार्थिमवत्सरद भापाठ शु
- ३ वार व्यतीपात संक्रान्ति शुमन्दिनद
- ४ (श्री)मद् राजधानिपट्टण वल्लिप्रामेय हिरियव-
- ५ सद्यि मल्लिकामोदशान्तिनाथदंवर अष्ट-
- ६ विधार्च(न)गे श्रीमत्तु महाप्रधानं सेनाधिपति मल्लि-

- ७ यणद्रण्डनायकद नागरखण्ड जिड्डुलिगेयन्तेर-
- ८ डेप्पत्तुमं द्रुष्टनिग्र(ह) शिष्टप्रतिपालन माडुत्तं
- ९ सु(सम)क्याविनोड्रिं राज्यं गेस्युत्तमिरं पट्टण्ड अधि-
- १० कारि हेगडे मिरियण्णं तन्नंरालिकेय मूलेवर्तसु-
- ११ स्यवागि हेजुंक्कडधिकारि चावुण्डरायजुं नोमस्य-
- १२ जुं नञ्जेयडे कोप(?)विसडधिकारि मालवेगडे इन्तिनि-
- १३ वरं तंतम्म सुक्कमं येत्तिप्यत्तक्कं मर्ववाधा-
- १४ परिहारवागि मिरियण्ण ' आचार्य'
- १५ पद्यनन्दिरेवर कालं कच्चि धारापूत्रकं माडि कोट्टर ई धर्म-
- १६ मं प्रतिपालिमिडंगे वारणामिकुरुओत्रदलि माधिर
- १७ कविलेयि वेडपालरप्य ब्राह्मणगे कोट्ट फल-
- १८ मक्कु

[यह लेख होयमल राजा वीरवल्लालके राज्यवर्ष ९ सिद्धार्थिनवत्सर-
में आगड शुक्लपक्षमें मंत्रान्तिके दिन लिवा गया था । राजवानि वल्लि-
ग्रामेके मल्लिकामोदगान्तिनायदेवकी पूजाके लिए पद्यनन्दि आचार्यको
बृह्ण करोका उत्पन्न दान दिये जानेका इसमें निर्देश है । यह दान हेगडे
मिरियण्ण, चावुण्डराय, नोमस्य और मालवेगडे इन चार अधिकारियोने
दिना था । इस समय नागरखण्ड और जिड्डुलिगे प्रदेशपर महाप्रवान
नेनापति मल्लियणका शासन चल रहा था । वल्लाल द्वितीय अथवा
वल्लाल तृतीय इन दोनोंके ९वें वर्षमें सिद्धार्थि मवत्सर नहीं था । अतः
अनुमान किया गया है कि यह वल्लाल (तृतीय) के २९वें वर्षके सिद्धार्थि
मवत्सरका उल्लेख होगा । तदनुसार सन् १३१९ यह इस लेखका वर्ष
होगा ।]

[ए० रि० मै० १९२९ पृ० १२८]

३६२

कुमठ (उत्तर कनडा, मैसूर)

शक १२६६ = सन् १३४४, कन्नड

[इस लेखमें मूलसध, देसियगणके विशालकीर्ति राजलके अग्रशिष्य नागचन्द्रदेवके समाधिमरणका उल्लेख है । तिथि श्रावण व० ११, रविवार, शक १२६६, सुभानु सवत्सर ऐसी दी है ।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २३९ पृ० २७]

३६३

रायद्रुग (बेल्लारी, मैसूर)

शक १२७७ = सन् १३५५, कन्नड-संस्कृत

तालुक ऑफिसमें रखी हुई मूर्तिके पादपीठ पर

[विजयनगरके राजा हरिहरके समय शक १२७७, मन्मथ सवत्सरमें यह लेख लिखा गया । कुन्दकुन्दान्वय, सरस्वतीगञ्ज, बलात्कारगण, मूलसधके अमरकीर्ति आचार्यके शिष्य माघनन्दि व्रतीके शिष्य भोगराज-द्वारा शान्तिनाथकी मूर्तिकी स्थापनाका इसमें निर्देश है ।]

[इ० म० बेल्लारी ४५८]

[रि० सा० ए० १९१३-१४ क्र० १११ पृ० १२]

३६४

होत्साल (द० कनडा, मैसूर)

शक १२७६ = सन् १३५७, कन्नड

[यह लेख स्थानीय भग्न जिनमन्दिरमें है । इसमें विजयनगरके राजा बुक्कण महारायके जैन सेनापति वैचय दण्डनायकका उल्लेख है । तिथि शक १२७९ जिलम्बि सवत्सर ऐसी दी है ।]

[रि० सा० ए० १९३१-३२ क्र० २८४ पृ० ३१]

३९५

तिरुनिडकोण्डे (मन्नाम)

शक १२८३ = मन् १३६१, तमिल

[इम लेखकी त्रियि धनु शुक्ल १३ बुधवार, शक १२८३ शुभकृत् मवत्सर ऐमो दी है । इममें दोम्बादि विन्लवडरैयन्के पृथ (नाम लुप्त)- द्वारा अप्पाण्डार् मन्दिरमें दीपके लिए भूमि दान दी जानेका उल्लेख है । यह दान गोप्पण्ण उदैयार्की प्रेरणामे दिया गया था । लेख अप्पाण्डार् चन्द्रनाथमन्दिरके मण्डपकी दीवानमें लगा है ।]

[रि० ना० ए० १९३९-४० क्र० ३०३ पृ० ६५]

३६६

साचिकेरि (वाग्वाड, मैमूर)

शक १(२)६८ = मन् १३७६, कन्नड

[इम लेखमें मार्गशिर व० १(३), बुधवार, शक १(२)९८ नल संवत्सरके दिन बालेग्रहल्लिके बेलप्पके समाधिमरणका उल्लेख है । सम समय विजयनगरके वीरबुक्करायका शासन चल रहा था ।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २३३ पृ० २७]

३६७

गेरसोप्ये (मैमूर)

शक १३०० = सन् १३७८, कन्नड

- १ श्रीमन्पद्मगंभीरम्याद्वाढामोघलाञ्जनं जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य
शामनं जिनशामनं (१) श्रीमद्देव-
- २ जिनेन्द्राय तस्मानंतमहात्मने सर्ववांबत्रिशिष्टाय मन्थालि-
कुमुदेन्द्वे (२) तं वंदे देवदेवं सुरचि-

- ३ रमनघं चारुकैवह्यनेत्र नित्य निर्वाणरामाकुचविकिखितकाशमीर-
राग वराग तुंगं देवेन्द्रानम्रपा-
- ४ द गुणविकलसदनन्तं स्वबोधोधात्मतत्त्व मांगल्यं मन्व्यसार्थं निहत-
मनसिज नव्यधर्मस्वरूपं । (३) इदु
- ५ जम्बूद्वीपमंता भरतविषयदोल् पद्भुव मेरुसिद्धं 'पदपिन्दा मेरुर्वि
दक्षिणदे तुलु कौंगिन्दवी शुद्ध-
- ६ दीप मुददिं 'तंगु 'बलि पनस नदीतीरदोल् कौंगु जम्बूसदनं
चेल्वागि तोकु'
- ७ ' विदार इस्तिस्मूहं । (४) आ तुलुवाधीशरमणि ' वदनमागि
तोपुंदु नयदिं नीतियुत गेरसोप्पे सोकि-
- ८ सुतिपुंदु विमवदिढायमरावतिय । (५) अन्ता नगिरिय राज्य-
कधीश्वरनेनिसिद्ध मरुलयरसरन्वयसप्रदायदा-
- ९ यदि वन्द कीर्तिगे जयस्तंभनेनिसिद्धं हैवेभूपालन प्रतापवेन्तेने
सान्द्र त्रेमकुन्दोद्गमकुमुदन-
- १० मलमल्लिकाफुल्लमुख्यवृन्दं गंगातरगतसरलहरहास तारनीहारहारं
सन्दिर्दी चारकीर्ति' .
- ११ प्रमवदलुनयवेदिन' 'माल्पुदु श्रीहैवेभूपालन निजयशम
वणिगसल् बल्लना-
- १२ व दक्षिणमण्डलिक निजनिवास' सलक्षण राजराजकटकगल
सूरेयना-
- १३ यत्रे तोण्डमण्डलभूपर मन्दि रक्षिसु हैवेराज वेजुतिपुंदु-
- १४ नलियदे नोल्पड मावनियंककाररत्तिचक्रद हस्तपराक्रमाकनी
हैवनृपाल चित्रय-
- १५ शो' 'निशय दुन्दुमितादनंगलिं जावलिशब्ददिं परिदु दूरदि
सचरिसुत्तमिपुंदा'

- १६ येसेव राजहृदयंगलु भिन्नगलाड वद्भुत । श्रीमद्देव
गुल्युणाद्भुतमहानागेन्द्रपंचा-
- १७ स्य "सन्दिद् हामद वैहालि महाडाकिनीनामोपद्रवं प्लव
श्रीपाश्वतीर्येश्वरा-
- १८ वासमं श्रीमदनन्तपालगीगे नित्यं दीर्घायुमं श्रीयुम अन्ता
नगिरियपुरवराधीश्वरं माम्ना
- १९ वनियककार मावगेमलेव रायरगण्ड शिवमिहामनचक्रवर्ति
परमालुवददृविमाड कलिगल सुगद "
- २० मय्यक्तचूडामणि वमन्तराज्यचातुर्वर्ण्यक्के हलुव रायरगण्ड
हैवेभूपालं सुखमकथाविनो-
- २१ ददि राज्यं गेयुत्तिरलु आ गेरसोपेय महाजनगल गुण-
गलेन्तेन्द्रोडे ॥ वृ ॥ अद्रोल नानाजा-
- २२ निपरदरप्रणी मय्यक्तरात्री जैनर् पडेवर् जैनमार्गाश्रयजलनिधि-
मंवरितपूर्णचन्द्रर् मुदमं क्रोधादि-
- २३ म् मादुद्वपेकुलनिवर् विट्टु राडर् मुख्यमादधिपनखिल-
कलावल्लमर् कोनिवेत्तरताता-
- २४ मादण्डाधिगलु महजात कुलक्षत्रियराटरसुगलन्वयमेन्तेन्द्रोडे
म्बस्ति ममविगतपचमहा-
- २५ महिमप्रमिद्धमाद वनवामिपुरवराधीश्वरर् वैजयन्ती-भयुक्वेश्वर-
लक्ष्मणप्रमाद भृगमदामोद् गोकर्णं...
- २६ महावलेश्वरादिभ्यश्रीपादपद्माराधकर परवलमाधकरं हरसिवरवर-
शूल निगलंकमल्ल चलदकराम राय-
- २७ रगण्ड माहसमल्ल गण्डरडावणि मत्यराधेय माहसोत्तु ग
शरणागतवज्रपजर पश्चिमसमुद्राधिपतियप्य हैवे-
- २८ क्षत्रियकुलकमलवनमार्तण्ड परनृपतामरस पूर्णचन्द्रनेनिमिद
वमवदेवरसर देवरसर-

- २९ राज्यकक्षिमयेनिसिद् चन्द्रपुरवेम्ब पट्टणदोल्लु राज्यं गेय्युव
कालदोल्लु आ अरसुगल्लिगे पट्टवर्धनवाहत्तरनियो-
- ३० गिगल्लु जिनसेण्यच्चुं त्रिशक्तिवल्लयुत्तुं षड्गुणसमर्थं राजक्षत्रिय-
चतुर्दन्त सोमेश्वरदण्डनायक-
- ३१ न अन्वयद् कीर्तियेन्तेन्दोडे श्रीसोमदण्डपुत्रजु भासुर कामण्ण-
दण्डनायकनेनिपं सासनचक्र-
- ३२ वर्ति धर्मधारक सामन्तं कीर्तिवैत्तनमल्लचरित्रं श्रीमत्सोमदण्ड-
नायकंगे कामार्थं तावु पुट्टिदरु श्रीमद्रामणनेम्ब हेग्गडेय-
- ३३ सुवेम्बीपुत्रससेव्यक रामं पुट्टिदरु दशरथसामर्थ्यदि यपराजिता-
रमणिग साहित्यरत्नाकरमन्ता-
- ३४ रामणनेम्ब हेग्गडे रामकंगे तां पुट्टिद शान्तं योजननम्बिपुत्र-
नेनिसल्ल कुन्तीदेवि समन्तु
- ३५ श्रापाण्डुराजगे तां शान्त धर्मजनेन्तु पुट्टिद चोला सम्यक्त्त-
रत्नाकरमन्ता योजणसेट्टिय जननि रामकनन्वयसेन्तेन्दोडे-
- ३६ वसुधेयोल्लु नेगल्लते अस्मैश्वर्यसम्पन्नरु दानगुणसम्पन्नरुम्प
नम्बिसेट्टियर तम्मसेट्टिसहोदररेनिसिद् म-
- ३७ लिसेट्टि होन्नपसेट्टि गुणाढ्यरुं जैनजनवान्धवरुं आ सेट्टरोळगे
महाधननेनिसिद् आ होन्नपसेट्टि-

३८

३६ शककाल साविरद मुन्नूर

(अवशिष्ट ६ पक्तियाँ पढी नहीं जा सकती ।)

[यह लेख शक १३०० में लिखा गया था । गेरसोप्येके राजा ह्वेय
भूपालके शासनकालमें चन्द्रपुरमें वसवदेवरस शासन कर रहे थे । उनके
दो मन्त्री सोमण्ण दण्डनायक और कामण्ण दण्डनायक थे । सोमण्णका पुत्र
रामण्ण था जिसकी पत्नी रामक थी । उनके पुत्रका नाम योजणसेट्टि

था । इनके कुलके होत्रपसेट्टि तथा नम्बिनेट्टि इन बन्धुओंने दिये हुए दानका विवरण इन लेखमें दिया था ।]

[ए० रि० मै० १९२८ पृ० ९५]

३६८

हडजन (मंमूर)

शक १३०(६) = सन् , १३८४, कन्नड

- १ स्वस्ति श्रीमतु शकवरिष १३० संवत्सरद
- २ ज्येष्ठ व १ आ । श्रीमतु मैसुनाढ ह-
- ३ ददनद तडेयर कुलद बम्मरयनवर सुपुत्र हिरि-
- ४ य मादण्णनवरु देवरिगे । श्रीमद् रायराजगुरु मडलाचार्य
- ५ सकलविद्वज्जनचक्रवर्तिगल्लुमप्प सैद्धातिदेवर प्रियगुड्डि केशवदे-
- ६ (वि)यरु आ केशवदेवियर अक्क मारदेवियरु स्वर्गंग-
- ७ तरादरु । अवर निसिदियं माडिसि आ निसिदिय अचनेगे वि-
- ८ टं तह क्षेत्र बमदिगे पूर्वदल्लुगडेयिं तेंकण व
- ९ त्तिन असरिसदल्लु हत्तु खडुग गडेयजु धाराप्-
- १० वकवागि नडव हांगे आ हिरिय मादण्णनवरु विद्वदत्ति-

[यह लेख मण्डलाचार्य सैद्धान्तिकदेवकी शिष्या केशवदेवीकी बडी बहन मारदेवीके समाधिमरणका स्मारक है । इस निसिदिकी पूजाके लिए हिरिय मादण्णने स्थानीय बसदिको कुछ भूमि दान दी थी । लेखकी तिथि ज्येष्ठ व० १, रविवार शक १३० (चौथा अक लुप्त है) दी है । तिथि और वारके योगसे यह शकवर्ष १३०६ निश्चित होता है ।]

[ए० रि० मै० १९३८ पृ० १६४]

३६६

इन्दौर म्युजियम (मध्यप्रदेश)

संवत् १४४२ = सन् १३८६, सस्कृत-नागरी

[यह लेख शान्तिनाथमूर्तिके पादपीठपर है । इसमें संवत् १४४२ में प्रौढाचार्य श्री महाकोतिका उल्लेख है ।]

[रि० इ० ए० १९५०-५१ क्र० १५९]

४००

गेरसोप्ये (मैसूर)

शक १३१४ = सन् १३९२, कन्नड

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादादामोघकांछन जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य
शासन जिनशासन । जिनगिरियदेशवेम्ब लळनामु-
- २ खक्के वेमेदिर्पो गेरसोप्येगे वर सेज्जेकार सले दण्डिगेय
छन्नसुचामराकिर्णि बगेबुगे तोर्प हैवेनृप रामक 'वम्मपु-
- ३ श्रनोद्वण नेगले सन्नुतनाद जिनचैत्यजिनालय-मन्दिरवर
कलियुगदोल् महापुरुष योजण तन्न मगल
- ४ मण समवेन्दु भाविसि नितान्त " स्थानम जिनालयगलं सले
माडि गोपुरसुमनोहर विचित्र बलय अनन्तनाथन पति-
- ५ थ' दे कृतार्थनो । अन्ता योजणसेट्टिय प्राणवल्लभेयाठ रामकन्न
गुणगलेन्तन्डोडे श्रीमतु सन्
- ६ तनाथन पदाम्बुशृगनु यो-
- ७ जणसेट्टि प्र ' निनिवरु
- ८ काग "रम्य" गोत्रर्चि-
- ९ तामणि पार्थिव त्तपमेने

- १० दोल् सत्यधीरोदात्त .
- ११ सेव रामकनोपिदली धरित्रियोळु
- १२ पतिमक्के शीलवति भूजुतचारुचरि-
- १३ त्रे सकलजीवदयापरे सन्ततचतुर्वि-
- १४ धदानदोल् अतिनिपुणतेयिन्डेसेदली
- १५ रामक्कं । जिनमतवाक्यदोळु
- १६ " सळे जिनराजपदाब्जभृगे तां जनजुत चारु-
- १७ सीले गुण सुव्रत दान पूजेयि
- १८ मुखि कामिनीजनशिरोमणि थो-
- १९ याग्र निजनामदिं निजकुलोन्नति रामकनोप्पुतिदंळु ।
श्रीजिनराजपूजेयोळु श्रीमुनिराजपदाब्जसेवे-
- २० योळु नैजगुणंगलि विनयदिं भयदिं निजभावतुष्टिर्यि पूजिसि
मक्कियिदेरगि तां स्तुतिमाडियुं कीर्वि-
- २१ योलिन्तु वणिण "कोण्डी निजनामदि रामकनी धरित्रियोळु
कमलदलायताक्षि कमलानने कमलसुगन्धि कोमल
- २२ " विमललतांगि " रसयुतरी जिनराजपूजेयोळु समरसभावदोळु
सळे माणिकसेष्टिपुत्रि राम-
- २३ कं क्रमगुणहस्तिक्कपकतेयं नेरे योप्पुवलो धरित्रियोळु कमला-
करदोळु कमलिनि कमलदोळं
- २४ कमळे पुट्टुवन्तिरे नागमनमलान्त्रयदोळु रामक विमलगुणामरणे
पुट्टिदळु कलियुगदोळु
- २५ रामक्कन अन्वयमेन्तेन्दोडे । हुलिगेरेय पचवस्त्रिय मुन्टण
हिरिय भगडिगे मुख्य-
- २६ वाद किरिय रामसेष्टि भा मट्टुवलिगे गगाथि अवर मळुळु
वैचेसेष्टियरु आतन तगि सोमन्वे

- २७ आ सोमन्वेयनु आ हुलिंगेरय माणिकमेष्टियो विवाहभादी ' अवर मगलु नागव्ने
- २८ आकेय तन्दे माणिकसेष्टि ममस्तरु आ यैचिमेष्टि हुलिंगेरंगेष्टि इन्द्रगुलदलि प्र-
- २९ ""आ नागव्येयनु मलहि हिरिय इन्द्रगुलद चन्द्रनाथ-स्वामिगल चैत्यालयडोलु पूजे
- ३० आदिके श्रांकार्य नडेवन्तागि वृत्तियनु विट्टु शामनव हाकिमिदर आ यैचरसियु तम्-
- ३१ म नामे नागवेयनु गेरसोप्येय मेष्टि गुप्तत्रायि भोजेय मग माणिकसेष्टियनु तानु विवा-
- ३२ हव माडि आ माणिकमेष्टियनन्वयमेन्तेन्दोडे गुच्छिक्य नागिसेष्टिय मगलु रामव्ने आकेय पु-
- ३३ अ माणिकमेष्टि माणिकमेष्टिगू नागवेयवरिगू जनिमिद मरुलु हरिसेष्टि कामण-
- ३४ नेमणमेष्टि सरणमेष्टि भगप थिन्तैवरोलगे रामकननू गेरसोप्येय रामण हेगडेय भगराज-
- ३५ णन भोजणगे विवाहव माडि आ वोजणसेष्टियू रामकनू सुखसकथाविनोददि-
- ३६ दिहङ्गिगे गेरसोप्येय अनन्ततीर्थकरचैत्यालयनारब्धिसि महा-प्रतिष्टेयनु माडिसि
- ३७ दिरुत्त थिरलु सक वरुस सासिरद मूनूर इद्रिनाल्कनेय प्रजापतिसवस्तर-
- ३८ द कार्तिक शुद्ध पचमि आदित्यवार मन्यसनसमन्वितवागि स्वर्गस्तरादरु मद्रुल्लिगे
- ३९ रामकनवर तन्दे मोद्रुगोण्डु चरित्रदि नेगळे विक्रमसवस्तरद आपाद-

- ४० सुध पंचमि सुक्रवार रोहिणीनक्षत्रदल्लु तुगममाधि ..
 ४१ ...आचन्द्रार्कमागि
 ४२ मूडे मत्तवन् वोजण-
 ४३ सेट्टि .. रामक्क ..
 ४४ निपधिय कल्लिगे मगल महा श्री

[इम निपिधिलेखमे कार्तिक शु० ५, रविवार, शक १३१४, प्रजापति सवत्सरके दिन योजणसेट्टिकी पत्नी रामक्कके ममाधिमरणका उल्लेख क्रिया है। रामक्कने गेरमोप्पेमें अनन्ततीर्थकरका मन्दिर बनवाया था। उसका वशवर्णन भी लेखमें दिया है। रामक्कके पिता माणिकमेट्टिकी मृत्यु आपाढ शु० ५, शुक्रवार, विक्रममवत्सरके दिन हुई थी।]

[ए० रि० मै० १९२८ पृ० ९७]

४०१

लक्ष्मणपुरकोट (विजगापटम्, आन्ध्र)

संवत् १४४८ = सन् १३९२, मंस्कृत-नागरी

[इम मूर्तिलेखमें संवत् १४४८ में जिनचन्द्र भट्टारक-द्वारा इस मूर्ति-की स्थापनाका उल्लेख है। इस समय यह मूर्ति वीरभद्र मन्दिरमें है।]

[रि० सा० ए० १९११-१२ क्र० ४७ पृ० ५०]

४०२

संगूर (धारवाड, मैसूर)

शक १३१७ = सन् १३६५, कन्नड

[इस लेखमें जैन मल्लप्पके पौत्र तथा मगमदेवके पुत्र नेमण्ण-द्वारा संगूरके पाद्वनाथ मन्दिरको भूमि दान देनेका उल्लेख है। विजयनगरके सम्राट् हरिहरके समय गोवाके शासक माधवका यह सेनापति था। नेमण्ण-

के पिताका समाधिमरण पुण्य शु० ११, गुरुवार, युव सवत्सर, शक १३१७ में तथा पितामहका समाधिमरण फाल्गुन व० १४, सोमवार, नल संवत्सर-में हुआ था ।]

[रि० मा० ए० १९३२-३३ क्र० ई १६७ पृ० १०७]

४०३

गुटी (अनन्तपुर, आन्ध्र)

१४वीं सदी, संस्कृत-कन्नड

[हम लेखमें विजयनगरके राजा हरिहरके समय इरुग दण्डनायक-द्वारा एक जिनमन्दिरके निर्माणका उल्लेख है । कोण्डकुन्दान्वयकी धरम्परामें वक्रशीव, एलाचार्य, अमरकीर्ति, सिंहनन्दि तथा वधमानदेविकका उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९२०-२१ क्र० ३२६ पृ० १८]

४०४

हम्पी (बेल्लारी, मैसूर)

शक १३१७ = सन् १३९५, संस्कृत-तेलुगु

[यह लेख एक जिनमूर्तिके खण्डित पादपीठपर है । तिथि फाल्गुन व० १, सोमवार, भावसवत्सर ऐसी दी है । शक वर्षके अक सुप्त हुए हैं । लमघ-बलात्कारगण-सरस्वतीगच्छके धर्मभूषण भट्टारकके उपदेशसे इम्म-द्विचक्र मन्त्रीद्वार-द्वारा कुन्दनप्रोलु नगरमें कुच्युतीर्थकरका चैत्यालय बनवाये जानेका इसमें उल्लेख है । यह मन्त्री वैचय दण्डनायके पुत्र थे । संवत्सरनामानुसार यह शक १३१७ का लेख प्रतीत होता है ।]

[रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ३३६ पृ० ४१]

४०५

करन्दै (उत्तर अर्काट, मद्रास)

१४वीं सदी, तमिल

[यह लेख विजयगण्डगोपालदेवके २०वें वर्षमें लिखा गया था । पोन्नूरके निवासी अरुवन्दै आण्डाल् तिरुञ्चोरुत्तुरै उडैयार्-द्वारा इस जिन-मन्दिरमें सन्व्यासमय छह दीप प्रज्वलित रखनेके लिए तीन पलवन्नमाडै तथा कुछ चावलके दानका इममें उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १३८]

४०६

हिरैचौट्टि (मैसूर)

१४वीं सदी, कन्नड

- १ नमो वीतरागाय । श्रीमत्परमशमीरस्याद्वाट्टामोवलां-
- २ छनं जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनं । सागरवारि-
वेष्टितसमस्त-
- ३ धरारमणीवनस्तनामोगविदंभिनं विदितविस्तुतसारतराप्रहारदिं
- ४ नागरखण्डपत्रपरिवेष्टनदिं जननेत्रपुत्रिकारागमनित्तु माण्डुदे
मनस्तु-
- ५ क्षत्रं बनवासिमण्डल । नागरखण्डं बनवासंगागिर्कुं भूषण-त्रोलु
- ६ ""गिरैवागि मेरेगुं नागलतापूगवनदिनेसेव तवे सौं
- ७ ""नागरखण्ड ""सागरमागे तोरुं
- ८ सुखकिम्बागि गे मेरेवुटी"" ननुजना संणिसेष्टि
- ९ ""वसत्रिय मादिसिदरु-इन्तण्णतम्मंदिरिद्वरु शान्तिजिनेश्वर-
- १० वसत्रिय मादिसि सन्तोपदिं 'सन्तसदिं पडेद्वट्टं धराचन्द्र
- ११ ""गुणवार्धिय "" पडेदु बालुत्तिरं पलकालं पुरुषनिधि नाग-

- १२ सेट्टि तन्नय पेम्पि टेसेवह्वरसियक्कनुमत मत
 १३ पडेठु सुखदिं बाल्दुदु स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वर अरिराय-
 १४ विमाह अगलि ' भापेगे तप्पुवरायरगण्ड चतुस्समु-
 १५ द्राधिपति श्रीवीरबुकरायमहारायरु राज्यं गेय्युत्तुमि 'वि-
 १६ रोधिसंवत्सर कातिकशुद्धतट्टिगे वर देवर नि-
 १७ चन्द्रगुड्डुगल्लुमप्प सान्तिना-
 १८ नाथदेवर अमृतपट्टि नन्दादीप
 १९ केरेय केलगे गहे ख ४ '
 २० "' यी धर्मम प्रतिपालिसु "'
 २१ वारणासि कुरुक्षेत्र
 २२ कविलेय-
 २३ पातकनक्कु श्रीशान्तिनाथ,

[यह लेख कार्तिक शु० ३, विरोधिसवत्सरके दिन वीरबुनकरायके राज्यकालमें लिखा गया था । वनवासि प्रदेशके नागसेट्टि तथा सेण्णिसेट्टि-द्वारा शान्तिनाथमन्दिरके निर्माणका तथा उसमें दीपादि पूजाके लिए ४ खण्डुग भूमि अर्पण किये जानेका इममें उल्लेख है ।]

[ए० क्रि० मं० १९२८ पृ० ८३]

४०७

हले सोरव (मैसूर)

१४वीं सदी उत्तरार्ध, कन्नड

- १ श्रीमत्परमरांभीरस्याद्वाढामोघलाच्छनं जीयात् त्रै-
 २-लोक्थनाथस्य शासनं जिनशासनं । अमरावतियळकावति स-
 ३ ममेनिसुव सोरव तवनिधियुमेवेरुं समनागि वि-
 ४ पालिसिद् सुमनसतरु सद्दस तवनिधिय ब्रह्माख्यं ॥

५ तिगलवेन्तिदंडे नाक . .

६ युविल

७ वार्धि

[यह निमिषिलेख बहुत सण्डित है। सोरव और तवनिविके ग्रासक ब्रह्मके ममय किमी व्यक्तिके समाधिमरणका यह स्मारक है। भूत व्यक्ति कोई महिला थी क्योंकि लेखके पापाणपर एक स्त्रीमूर्ति-सत्कीर्ण है।]

[ए० रि० मै० १९४२ पृ० १४९]

४०८

तवनन्दी (मैमूर)

१४वीं सदी, कन्नड

१ जिनसं जिनमुनिगलु मच्चनु-

२ पम प्राणीश हरियन-

३ वन नेनडु वनजाक्षि महा-

४ लक्ष्मयु वनतर गौर्य-

५ त्रोलुमप्रियोल् स-

६ ले पायिदलू

७ महालक्षिमय सद्गुण-

८ समुद्रोपमान ॥ सं-

९ गलमहा श्री श्री

[इम लेखमे महालक्ष्मी नामक किसी महिलाके अग्निप्रवेश-द्वारा मरणका उल्लेख है। जिन, मुनि और अपने पति हरियनदनका स्मरण करते हुए उसने धैर्यपूर्वक प्राणत्याग किया था। लिपि १४वीं सदीकी है।]

[ए० रि० मै० १९४२ पृ० १८५]

४०९

तलकाड (मैमूर)

१४वीं सदी, कन्नड

[यह लेख द्रविल सध-नन्दिगणके कमलदेवके शिष्य लोकाचार्यके समाधिमरणका स्मारक है। लिपि १४वीं सदीकी है। यह लेख वैकुण्ठ-नारायणमन्दिरकी दीवालमे लगा है।]

[ए० रि० मै० १९१२ पृ० ६३]

४१०

मत्तावार (मैसूर)

१४वीं सदी, कन्नड

- १ मरुलजिन जकवेहट्टि चटवे-
- २ गन्ति मत्तवूर वसदि तपसु
- ३ माडि सिद्धि भादलु अवेय मा-
- ४ चरन मग मार कल्ल निलिसि-
- ५ ट

[यह निपिधिलेख मरुलजिन-जकवेहट्टि नामक ग्रामकी निवासी चट-वेगन्तिके समाधिमरणका स्मारक है । उसका मृत्यु मत्तवूरकी बसदिमें हुआ था । अवेय माचरके पुत्र मारने यह स्मारक स्थापित किया था । लेखकी लिपि १४वीं सदीकी प्रतीत होती है ।]

[ए० रि० नै० १९३२ पृ० १७१]

४११

हुलेकल (उत्तर कनडा, मैसूर)

१४वीं सदी, कन्नड

[यह लेख १४वीं सदीकी लिपिमें है और बहुत घिसा है । इसके प्रारम्भमें जिनशासनकी प्रशंसा है तथा बादमें किसी मठमें आहारदान आदिके लिए कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० ई० क्र० २१ पृ० २२९]

४१२-४१३

कोनकोण्डल (अनन्तपुर, आन्ध्र)

१४वीं सदी, कन्नड

[ये दो लेख १४वीं सदीकी लिपिमें रसामिदुल्लुगुट्ट नामक पहाडीपर पायागोपर लुदे हैं । इनमें चिप्पगिरिके श्रीविद्यानन्दस्वामी तथा बोलय नागका उल्लेख हुआ है । अक्षर कुछ अस्पष्ट हुए हैं ।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ४५२-५३]

४१४

उद्दरि (मैसूर)

१४वीं सदी, कन्नड

- १ श्रीसन्परमगभीरस्याद्वादा-
- २ मोषलाञ्छनं । जीयात् त्रैलोक्यना-
- ३ यस्य शासनं जिनशामनं ॥ स्वस्ति श्रीमतु
- ४ . . विजयकीर्तिमदारर***

[यह लेख खण्डित है इसलिए विजयकीर्तिमदार्^र इम नामके अतिरिक्त अन्य विवरण इससे प्राप्त नहीं होता । लिपि १४वीं सदीकी है ।]

[ए० रि० मै० १९२९ पृ० १४२]

४१५

सक्करेपट्टण (मैसूर)

संस्कृत-कन्नड, १४वीं सदी

१

- २ तस्मिन् सेनगणान्तरिक्षतरणि श्रीवीरसेनो मुवि ससाराम्बु-
धितारणैकतरणिः श्रेयोवनीसारणी । तच्छिष्य प्रचुर-

- ३ प्रबन्धरचनाचातुर्यपद्मासन पायाद् वो जिनसेन इत्यभिधया
ख्यातो मुनिग्रामणी । (१) श्रीमत्पुस्तक-
- ४ गच्छसूरसदृशो विश्वप्रकाशात्मकस्त्रैविद्यो गुणमद्रदेवयतिप
श्रीसूरसेनस्तत (१) शिष्य श्रीरुमलादिमद्भगणभृद् दे-
- ५ वेन्द्रसेनस्तत । तेनाकारि कुमारमेनमुनिपो चादीन्द्र-चूडामणिः
(२) तच्छिष्याः हरिसंनदेवाद्य । मा-
- ६ धुर्यं चाच्च कारुण्य हृदि तीव्र तपस्तत । श्रीप्रमाकरसेनाख्य-
गुरुश्रेयो विराजते । (१३) तत्पद्मोदय-
- ७ शैलतिग्मकिरणस्त्रैविद्यपारगतो भूपालार्चितपादप-रुद्रयुग
श्रीलक्ष्मिसेनो मुनि (१) लोके सत्त-
- ८ पमा निधानमनघ कारुण्यचारानिधि- दाने कल्पकुजोपमो
विजयते कामेभकण्ठीरव । (४)
- ९ श्रीमदनसेपमुनिपो सञ्ज्ञानामृतपयोधिपूर्णन्दु. (१) सुदृढतपोगुण-
युक्तो माति श्रीमत्प्रमा-
- १० करार्यसुत । (५) द्वीपितटाकनामनगरीपति शखजिनेन्द्रचन्द्र-
मश्रीपादपकजालिरमलाम-
- ११ रकीर्तिमुनीन्द्रपादसेवापरिपक्वबुद्धि चलगारसमाह्वयवशपद्म-
तारापति रजिप स्वजनक-
- १२ जनमोमणि वैश्य मायणं । (६) गुणतुंगं हौल्लराजं पितृ गुणवति
देवमाभ्वेतन्नभ्वेयु-
- १३ छद्गुणरत्न नागराजं परिक्रिपोडे पितृव्य गुणैकाश्रय माकण्ड
आत्मोयानुज तानेनिपरायित-
- १४ सौभाग्यदि माग्यदि धारिणियोक्त् विद्यातिवेत्तं जिनसमय-
सरस्सारस मायणार्थं । (७) मत्त लोकै-
- १५ कमिन्त्र, प्रचुरत्तरकलावसलम वन्दिद्वन्दोत्करपुण्यत्-कल्पभूजं
बुधनुतचरितं वाक्परं

- १६ काव्यगोष्टि-भरस विद्विष्टशैलाशनि सुरपुरमोदलान्तगल मीन-
केतूदर रूप मद्गुणोदग्र-
- १७ हमयन पनल् भाञ्चयंमं मायणायं । (८) इन्नु होयमल-
भूविभुलक्ष्मीलपनसुं
- १८ श्रीवीरब्रुकराजमाम्राज्यरमारमणीयविलामदपणोपमं षुनिसि
मोगयिसुव ह्योमपट्टणटोलु प्रमिद्विवडेंड वै-
- १९ इय मायणण माक्कप्पगलु न "दवागि माडिड श्रीलक्ष्मीमेन-
मटारकर निषिविय प्रतिष्टे शामन मगल महा श्री श्री श्री श्री

[यह निषिविलेव मेनगणके लक्ष्मीमेनमटारककी मून्युका म्मारक है ।
इनकी गुत्परम्परा डम प्रकार थी - वीरमेन - जिनमेन - गुणभद्र त्रैविद्य-
देव - मूरमेन - कमलभद्र - देवेन्द्रमेन - कुमारमेन - हरिमेन - प्रभा-
करमेन - लक्ष्मीसेन । लक्ष्मीमेनके गुम्बन्नु मदनमेन थे । यह निषिवि
दलगार वधके मायण तथा माक्कण नामक दो वंशो-द्वारा स्थापित की
गयी थी । ये होनपट्टणके निवासी थे । यह नगर होयमल प्रदेशमें था
तथा वीरब्रुकराजके राज्यके अन्तर्गत था ।]

[ए० रि० मै० १९२७ पृ० ६१]

४१६

तेरकणांवि (मैमूर)

१४वीं मढी, कन्नड

- १ स्वस्ति श्रीमूलसंघ त्रेशियगण पुस्तक-
२ गच्छ कौडकुंशान्वय इनमोगेय बलि-
३ य राजगुरु (मड) लाचार्यरुमप्प (मम)-
४ यामगण ललितकीर्तिमटारकरु माडिमिड
५ (प्रतिमे) मगल महा श्री श्री श्री

[यह लेख पार्श्वनाथमूर्तिके पादपीठपर है । इस मूर्तिकी स्थापना मूलसद्य-हनसोगे बलिके ललितकीर्ति भट्टारकने की थी । लिपि १४वीं सदी की है ।]

[ए० रि० मै० १९३४ पृ० १६९]

४१७

तगहूर (मैसूर)

१४वीं सदी, कन्नड

- | | |
|--------------------------|------------------------|
| १ (कों) हकुन्दान्वय | २ (सू) लसंघ नागनन्दि |
| ३ (अन) न्तभट्टारकशिष्य | ४ नन्दिभट्टारकरशि- |
| ५ 'यन्तगहूर | ६ ' यिल्लेकन्तिके (२) |
| ७ (स) न्यसनगेष्टु सुर- | ८ (लोकवके) सन्दर् |

[इस निसिधिलेखमें मूलसद्य-कोण्डकुन्दान्वयके नागनन्दि भट्टारकके शिष्य नन्दिभट्टारककी शिष्या ' यिल्लेकन्तिके समाधिमरणका उल्लेख है । पापाण टूटा होनेसे कुछ अक्षर नष्ट हुए हैं । लिपि १४वीं सदीकी है ।]

[ए० रि० मै० १९३८ पृ० १७३]

४१८

चामराजनगर (मैसूर)

१४वीं सदी, कन्नड

- | | |
|-----------------------|-----------------|
| १ श्रीमूलद सगद का- | २ धूरगणद अन- |
| ३ न्तकीर्तिदेवर गुड्ड | ४ वोप्पय सन्ध- |
| ५ सनविधियि | ६ (स्व) गंस्त |

[इस लेखमें मूलसद्य-काणूर गणके अनन्तकीर्तिदेवके शिष्य वोप्पयके समाधिमरणका उल्लेख है । लिपि १४वीं सदीकी है ।]

[ए० रि० मै० १९३१ पृ० ११२]

४१६

भाविनकेरे (कडूर, मैसूर)

१४वीं सदी, कन्नड

- १ स्वस्ति श्रीमत्तु मन्मथसंवत्सर प्रथम श्रावण शु । गुरुवार पुष्य-
नक्षत्रदत्त श्रीचंद्रनायन चैत्यालयदत्त
- २ तोलहरवलिय अनतकसेट्टितिय मग आदिमेट्टिय येरगिसिद
चतुर्विंशतितीर्थकरप्रभुमेयनु यिरिसि क्रु-
- ३ तार्थ नाडेनु मद्र शुभं मगलं सूयात् पुनद्वानं शुभ मगल महा
श्री श्री श्री

[इस लेखमें चतुर्विंशति तीर्थकर मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है । अनतकसेट्टितिके पुत्र आदिसेट्टिने यह मूर्ति स्थापित की थी । तिथि प्रथम श्रावण शु० (?) मन्मथ मवत्सर ऐसी दी है । लिपि १४वीं सदीकी है ।]
[ए० रि० मै० १९४६ पृ० ३७]

४२०

नोरसोप्पे (मैसूर)

शक १३२३ = सन् १४०१, कन्नड

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादादामोषलांछन जां-
- २ यात् त्रैलोक्यनायस्य शासनं जिनशासनं
- ३ नगिरिय कुलचक्रवर्ति राजनिर्जित
- ४ ला सामन्तर बलियं धिन्ता होन्नभूपनलिय आ साम-
- ५ न्तन पुन्नर्थिकार्मं कोमल " मरसं अरिनुपालनातन "
- ६ दे " धर चारुकीर्तिपण्डित " सद्गुरुभु आ कामनृपालन मान
- ७ योजि राज्यमे नगिरियुमनितुं तनगागे वैचणभूपति म
- ८ नेगल्टं रियुसैन्य नवर न पदसरसि जिनमुनिपाठांजुजाठ
नृपाल

- १ वैचणसेट्टि परिणनान्तस्करणमन्तप्य हैवेरायन प्रतापवेन्-
- १० नेन्द्रोडे स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वर नियमीसरगण्ड
प्रताप
- ११ सूरकार मिवसिंहासनचक्रवर्ति निर्लिपपुरवरा-
- १२ धाश्वरनेनिप वैचिराज राज्य गयिवलि शकवरुष
- १३, १३२३ नेय विक्रमसवत्सर माग शु १ मन्दवारद
- १४ रात्रियाल्लु हैवेराजन अलिय मंगराजनु स्वर्गस्थनाद श्रीजि-
- १५ नराजराजिनपदाम्युजभृग कीर्तिथिन्दी जगदोलो-
- १६ वलमोपुव टानियु हैवेभूपन राजिय पट्टदानेय...
- १७ गोविजनरह विक्रमस नगिर मगनृपं सुरलोक-
- १८ केयन्दिद "विसुद्धरुप्य मत्त राजं जिनमत्तावुधिहिमकि-
- १९ रण नगिरपुरार्धीक्ष मगरसग राजसञ्जुत
- २० रतिपचवाणनस....श्रीमगभूपालक हिमरुक्
- २१ श्री विक्रमसवत्सरद माघमासद'
- २२ लु "सुरागनारमण
- २३ जीयंभिन
- २४ समिमिते श्रीविक्रमा
- २५ काल्यस्थे देवप्य सूमे पक्षे वल-
- २६ क्षे मन्दवार
- २७ सुरपदमं...

[यह लेख गेरमोप्येके राजा हैवेरायके जामात नगिरपुरके प्रमुख मगरसकी मृत्युकी स्मृतिमें लिखा गया था। इसकी तिथि माघ शु० १, सनिवार, शक १३२३ विक्रम सवत्सर यह थी। लेखका बहुत-सा भाग धिस गया है। इसके पूर्वभागमें होन्न राजा तथा वैचणसेट्टिका उल्लेख है। उनका मगरससे क्या सम्बन्ध था यह स्पष्ट नहीं है।]

[ए० रि० मै० १९२८ पृ० १००]

४२१

सक्करेपट्टण (मैत्र)

शक १३२८—मन् १४०५, कन्नड

- १ श्रीमन् परमगर्भारम्याद्वादाभोवत्तं (I) जीयान् त्रैलोक्यनाथस्य
शाम्भवं जितशाम्भवं (II)
- २ श्रीमद् गयगजगुर मण्डलाचार्यं पुरत्रिकमाद्रित्य मन्व्याह-
- ३ कल्पवृक्ष मेनगगाप्रगण्यरुमप्य श्रीमहर्त्तामिनेमहारकरवर
श्रीमन् श्रीमान्मेनदेवर निपिवि शक्व-
- ४ ए... १३०८ नेत्र पार्थिव मवत्पर १० लु
- ५ श्रीमुत्तद होमऊर वैचसेट्टिय नक्कलु नायमेट्टि वोगिमेट्टि
नागणमेट्टि अत्र नोम्मक्कलु वैत्र-
- ६ शेट्टिय तम्ममेट्टि कोवरिमेट्टि त्रिक्कवैचयोष्ट नाटिसेट्टियर मक्कलु
कोवरिमेट्टियन्

[अहं लेख सेनगणके महारक लट्तामेनेने शिष्य मानमेनेदेवकी ममावि-
ना म्माक है । यह निपिवि मुत्तदहोमऊरके वैचसेट्टिके पुत्र मायसेट्टि,
वोगिमेट्टि आदिने शक १३०३ मे स्थापित की थी ।]

[ए० रि० मै० १९०० पृ० ६२]

४२२

कोरग (६०-कनडा, मैत्र)

शक १३३१—मन् १२१०, कन्नड

[अहं लेख केरवसेके राजा माल्तर वंगीय वीरभैरवके पुत्र पाण्ड्य-
भूपालके मन्त्र पुत्र शू० १०. गुन्वान, शक १३३१, मर्चवारि संवत्सर-
का है । इसमें बल्लाळारगके बन्तकीतिगडलकी प्रार्थनापर वारकून्की
वमदिके लिए राजा-द्वारा कुछ भूमिके दानका उल्लेख है ।]

[रि० ज्ञा० ए० १९२८-२९ क्र० ५३० पृ० ४९]

४२३-४२४

भटकल (उत्तर कनडा, मैसूर)

शक १३३२ = सन् १४१०, कन्नड

[ये दो लेख हैं । कार्तिक शु० १०, सोमवार, शक १३३२ मर्वघागी सबत्सर, यह इनकी तिथि है । एकमें मगिराव ओट्टेय-द्वारा उनके किसी सम्बन्धित मल्लिराय नामक व्यक्तिके ममाधिमरणपर निमिधिकी स्थापनाका उल्लेख है । दूसरेमें किमी राजकन्याके ममाधिमरणपर निसिधिस्थापनाका उल्लेख है । इसमें हंबभूप, भैगदेवी तथा मगिरायका भी नामोल्लेख है ।]

[रि० ६० ए० १९४५-४६ क्र० ३३९-४०]

४२५

लक्ष्मेश्वर (मैसूर)

शक १३३४ = सन् १४१२, कन्नड

[यह लेख विजयनगरक देवराय भन्नारायके समय मार्गशिर शु० २, रविवार, नन्दन सबत्सर, शक १३३४ को लिखा गया था । जल्लवसतिके आचार्य हेमदेव तथा भीम्यदेव (शिवमन्दिर) के शिवरामरय-द्वारा दोनो मन्दिरोंकी भूमिकी सीमाके वारेमें कुछ विवादका समझौता किये जानेका इसमें उल्लेख है । यह कार्य नागण्ण दण्डनायक-द्वारा सम्पन्न हुआ था ।]

[रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ६० ३३ पृ० १६३]

४२६-४३०

टोंक (राजस्थान)

संवत् १४७० = सन् १४१३, सस्कृत-नागरी

[ये ५ मूर्तिलेख हैं । मूलमघके आचार्य प्रभाचन्द्रके गिष्य पयनन्दिके उपदेशसे खण्डरलवाल कुलके कुछ व्यक्तियो-द्वारा ज्येष्ठ शु० ११, गुस्वार, संवत् १४७० को ये मूर्तियाँ स्थापित की गयी थी ।]

[रि० ६० ए० १९५४-५५ क्र० ४६६-७० पृ० ६९]

४३१

मुलगुन्द (धारवाह, मैसूर)

शक १३४२ = सन् १४२०, कन्नड

[यह लेख वैशाख शु० १४, रविवार, शक १३४२, शार्वरी संवत्सर-का है। इस समय रायराजगुरु हेमसेनके शिष्य वुलिसेट्टिका समाधिभरण हुआ था।]

[रि० सा० ए० १९२६-२७ क्र० ई० ९५ पृ० ८]

४३२

मुलगुन्द (धारवाह, मैसूर)

शक १३४३ = सन् १४२१, संस्कृत-कन्नड

[यह लेख चन्द्रनाथवसदिने है। इसकी तिथि भाद्रपद शु० ९, शुक्रवार शक १३४३ प्लव सबत्सर है। इस समय स्वरटौरके तिलकरसके मन्त्री हेगडे मदुवरसके पुत्र नागरसकी मृत्यु हुई थी।]

[रि० सा० ए० १९२६-२७ क्र० ई० ९४ पृ० ८]

४३३

गेरसोप्ये (मैसूर)

शक १३४३ = सन् १४२१, संस्कृत-कन्नड

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वाटामोघलाछनं । जीयात् त्रैलोक्य-
नाथस्य शासन जिनशासनं ॥ श्रीजम्बूद्वी-
- २ पमध्यस्थितजनसरं रमणरवाभ्यंकृतश्रौथर्त्तद्धर 'जिनपद-
पञ्चभृंग स्तमित जायात् पत्तन स्थक्तपक

- ३ " त्रेविद्यवल्ली मुक सुलभरारम्य ' स्थिनजिनेन्द्रपादयुगपद्य-
भृंगा ससा-
- ४ र ' माधि तेसेद द्रुद्रुभूदरे-
- ५ ऋः तदीयवशोद्भवमगभूपो साहित्यलक्ष्मी ' भामाति लक्ष्मी
जिनमदिरेपु काम कामितद्रायक कन- ।
- ६ द्द कन्टपंसर्वप्रिय कल्याणकलनानन्त "श्रीमगभूपत्य जिनेन्द्र-
पादद्वयपद्मगन्धमिलद्भृगोमवत् सन्तर्त
- ७ तदीयवशसभूत. केशवाख्य क्षितीश्वर वशीकरोति सहसा
वन्दिगोहेपु सम्पद सुपासितुं भवतु ते गात्रं हि-
- ८ माद्रीकृत । श्रीमत्केशवभूमिपालचरितं श्रुत्वा स्तुवन् विन्नेरः
तोपाकम्पितशंभुमौलिविलसद्गगातरगास्पद आश्रयाशो दह-
त्याशु स्वाश्रय स्वतनाथ सा (? स्वीयतंजसा)
- ९ केशवेन्द्रप्रतापगिन नाश्रय तापयत्यहो । केशवेन्द्रगुणान् वक्तु
को वा शक्नोति पण्डित. आकाशस्थितनक्षत्रगणना केन मुच्यते ॥
वर्धमानान्वचयोद्भवे निर्वृताश्रित-
- १० दरिद्रे निजपतिनियमांतधियुते होन्नधरसि विशुद्धात्मिके शाने-
चलिते निलकमेनिक्कुं १ आ होन्नधरमियरसं श्रांहिवृष
जिनक्रमाद्भुजभृग पाहुवलनिजितरि-
- ११ पुभूप साहससमुद्रनभिनवकाम । तयोरभून्नमलजङ्घरसा
नुता मुर्गीला जिनभक्तिभुक्ता तं चापयेमं धरमगभूपो जामातृवर्या
भुवि है-
- १२ वराज. अनिन्द्रादपि निर्गन्तु भोरव खलु योपित भगभूपाल-
कौर्तिस्तु कामिनीवानिलधिनी तयोरभूता जिननाथनर्त्री मात्रा
पुनीतापिलर्जनल

- १३ धात्रीव ह्रैवणश्री मायलरमो मन्त्रिताहानयुता सुशोला
श्रीमन्ननिलिन्ध - मालिबिन्मन्म्राणिक्य त्स्पर्णुतिपादपद्म -
नखर श्रीपादर्शना-
- १४ धेन तु काम मगरमात्मजो गुरुगुणश्रीह्रैवणाग्योभवत्
जैनयोगिनिकरु माहित्यरत्नाकरु श्रीमद्धानृनिनम्बिर्नात्र
निनग नृपालकृता भू-
- १५ मां भूरिगुणोजमास्करलमतप्रत्यप्रभामान्विता काम मगनृपा
गुन्द्रया देवी श्रीमात्रलाया सुधामृतिद्युति प्रन्यह १ क ।
- १६ आ मापलरमियरम भूमोशविनभ्रपाद त्रेशवभूप कामारिममित-
मन्नरुमोमद्युतिकोर्ति को सुरलोकरु मुरतरविन गुदफ-
- १७ लमं मेद्दु नृप्तिथिरलद्रे सुरर वरेयोल् भूमुररादरु वरकेशवभू-
कन्प्रभूजदृष्टहेयि भाति कीन्या श्रीत्रेशवःमापतिरप-
- १८ राद्युधितारगा जिनपतिश्रीपादपद्मानता भूमौ भाविजिनेन्द्रचन्द्र-
धिलमच्चारिग्रनु रागोदया संसारमारोदया ।
- १९ ध्यव्ययन्यैक्यमन्त्रिते शककृते श्रागार्शरीवन्धरे माधे मानित-
पंचमोर्तिथियुने श्रीसौम्यचारं मिने पक्षे भाद्रिराजवनिता
वर्माभिधाने पुरे काम कारयति स्म
- २० जक्यथरमो पाद्वंप्रतिष्ठा मुदा । अनन्तरं । नगिरद राज
हान्नरमनन्त्रयवाधिगे चन्द्र सले ना मोगयिप ह्रैवभूपनलिय
कालिकालद
- २१ कर्णेभ्यरी जगदल्लु मगभूवरन यान्धवे तगलेदेविनन्दन
नगेमोगद्रा कश्यभूज केशवरायनु कीतिवल्हम । क । जन्ता
नगिरद राज-
- २२ र मन्तानादिधयोल् लःमीमाणिकरेवीकान्त्रन् एनिपद्यारायगे
कन्तुविनन्नुदयिमिर्द मगनृपाल मगत्रिदूर क्षेमपुरतीर्थजनेन्द्र
पाद-

- २३ पद्मक शगणजीयनालजनु भग्ममहीशन पुत्र संगमं****तन्न मनमोल्वन्तीधर्मव माडि पूर्वदोल् पिंगिद धर्मवेल्-
 २४ वनु पालिसिद रविचन्द्ररुल्लिनं । अन्ताधर्मप्रतिपालकनेनिप श्रीसगभूपाल सुखदि राज्य गेयुत्तिरल्ल यिलेयोळ कुन्तलनाड करं रजि-
 २५ से पश्चिमनाडु देशदोल् कलवे चापी कूप नदी मामरनि पनसीले बालेयि बालेयि बलसिकोण्डु कोकमिथुनमोदकागिर-
 कल्लियारवेगल नडवोप्पु
 २६ वी पुरवनाळुवन् अजनृपालनेम्बव । यिरुन्दूरधिपति तां करमोप्पुव अडियरबलियि करमेसेवनु तम्मरस ** यलियं कीर्ति-
 २७ वेत्तना तम्मरस । आ तम्मरसनग्रजेय तन्नूजं धरेयोळ इन्दूर भूसुरनुत कल्लरसननुजे तंगदेविगे वरनेनिप हैवेयरसन वरपुत्र प-
 २८ झणरस जैनपदमक्त । आ पञ्चणरसन् आतनग्रजे जक्कल-
 देविय****तन्दे हैवणरसरु पाश्चर्तीर्थेश्वर*** माडिद नित्यपूजे-
 २९ आहारदानमोदकाद (वु) मेल्कव पुरो****दिगे सलिसि मुन्निन धर्मवेल्कवं नेरेमाडि वल्लिक्क तन्नोळु सन्नुत्तवुद्धि पुट्टे जिनेन्द्र-
 नमिणेकनु नित्यपू-
 ३० जन मुन्नेसेवन्नदानमोदकादवजुं पिरिदागि माडि****तृप्तिचिन्दो-
 ल्लिदु पञ्चरसं मिगे कोट्ट वृत्तिय । श्रीपाश्चर्तीर्थेश्वरद ओकार्य-
 ३१ वकैयू अंगमोगचैत्यालयद जीर्णोद्धारक्के धारापूर्वकागि कोहन्ता वृत्तिय विवर हैवणरसरु ताडु मूलवागि आकृतिदं कोणुवणिय-
 ३२ लि कंगन कुक्किय हन्नेरहु मूदे सुनिगे सीमे मूडळु अभिन-
 सेट्टिपं हित्तल गदे तेंकळु हरिदु कोडि गाडि पडुवल्लु तम्मरसर होसगहेयल्लु यिक्किद कल्लुगडि
 ३३ वडगल्लु हीलेयमागे गडिचिन्ती चतुस्सीमेयिदोळगुल्ल कलवेय समस्तवृत्ति पञ्चरसरु ताडु मूलवागि आळुत्तैद होन्नमन करेय

- ३४ "मेले येत्ति ह्योन्नावरु नाळुवरे ह्योन्नन् तम्म भम्म तंगल-
देवियरिगे पुण्णायं परिहाग्गाने त्रिट्टुट्टु हैवण्णरम्म त-
- ३५ म्म मन.पूर्वकवागि कोट्टु सर्वमान्यवागि मूलस्यलवागि तावु
धालुत्तं यिट्टु यडेय मज्जन वृत्तिगे गडि मूडलु होले तँकलु
होले गडि पडुवलु
- ३६
- ३७ "ममस्सवृत्तिन् आहारदानकक्कवागि याचन्नारुक्कवागि
- ३८ धारापूर्वकं नाडि कोट्टरु मत्तु आहारदानकके या चित्वालयड
गृह

[इस लेखमें पद्मण्णरम-द्वारा पार्वतीर्यकरमन्दिरके लिए ४ ह्योन्नन् क्रोमत्तकी भूमि दान दिये जानेका निर्देश है। पद्मण्णरमकी माता तंगलदेवी तथा पिता हैवण्णरस ये। उसकी बड़ी बहिन जक्कलदेवी थी। तंगलदेवीका बन्धु कल्लरस था जो इत्तुन्दूरके शासक तम्मरसका भानजा था। यह कुन्तलनाडुके राजा मज्जका जामाना था। मज्जका समकालीन राजा संग था जो अम्बराजान्ना पुत्र था। अम्बका पिता सग था जो अम्बीराय और माणिकदेवीका पुत्र था तथा राजा केशवका वंशज था। केशवकी पत्नी मानलरमि मग राजाकी कन्या थी। मगकी पत्नी जक्कन्नरमि हैवण और ह्योन्नवरमिकी कन्या थी। इस दानकी तिथि माघ शु० ५ बुधवार, शक १३४३, शार्वरी संवत्सर ऐसी ही है।]

[ए० रि० म० १९२८ पृ० ९३]

४३४

उडिपि (६० फनडा, मैसूर)

शक १३४६ = सन् १४२४, संस्कृत-कन्नड

[यह लेख (तात्रगत्र) विजयनगरके देवराजमहाराजके राज्यकालमें पुष्य शु० ६, बुधवार, शक १३४६ क्रोवि संवत्सरके दिनका है। इममें

मूलसध-बलात्कारगण-सरस्वतीगच्छके वर्धमान भट्टारककी प्रार्थनापर राजा-द्वारा बराग नामक ग्राम नेमिनाथमन्दिरको अर्पित किये जानेका उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ए १२ पृ० ५]

[इस साम्रपत्रकी प्रतिलिपि बराग ग्रामस्थित नेमिनाथवसदिमें एक पापाणपर उत्कीर्ण है ।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ५२५ पृ० ४९]

४३५

माण्डू (धार, मध्यप्रदेश)

(संवत्) १४८३ = मन् १४२६, सस्कृत-नागरी

[इस लेखमें सम्भवनाथकी मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है । तिथि (संवत्) १४८३, वैशाख (चैत्र) शु० ५, गुरुवार ऐसी दी है ।]

[रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० १८२ पृ० ४४]

४३६

बिसरूर (दक्षिण कनडा, मैसूर)

शक १३५३ = सन् १४३१

[यह लेख देवराय २ के राज्यमें शक १३५३ में लिखा गया था । इसमें जैन मन्दिरके लिए बिसरूरके चेट्टियो-द्वारा वहाँके बाजारमें आनेवाली चावलकी हर गाडीपर एक 'कोलग' दान दिये जानेका उल्लेख है ।]

[इ० म० दक्षिण कनडा २७]

४३७

कुण्णत्तूर (उत्तर अर्काट, मद्रास)

शक १३६३ = सन् १४४१, तमिल

[यह लेख ऋषभनाथवसदिके पूर्वी दीवारपर खुदा है। कुण्णर (कुण्णत्तूर) के अर्हत-मन्दिरका निर्माण शक १३६३ में होनेका इसमें वर्णन है।]

[रि० सा० ए० १९४१-४२ क्र० १०३ पृ० १४०]

४३८

वदनोर (भीलवाडा, राजस्थान)

संवत् १(४)६७ = सन् १४४२, संस्कृत-नागरी

[इस लेखमें संवत् १(४)९७ में शान्तिनाथका उल्लेख किया गया है।]

[रि० ड० ए० १९५४-५५ क्र० ४५० पृ० ६७]

४३९

कुण्डघाट (जि० मोंघीर, बिहार)

संवत् १५०५ = सन् १४४६, संस्कृत-नागरी

भग्न मन्दिरमें एक महावीरमूर्तिके पाठपीठपर

[इस लेखमें संवत् १५०५ फाल्गुन शु० ९ को महावीरमूर्तिकी स्थापनाका निर्देश है।]

[रि० इ० ए० क्र० ८ (१९५०-५१)]

४४०-४४१

वैन्दुरु (८० कनडा, मैसूर)

शक १३(७)१ = सन् १४२०, कन्नड

[यह लेख विजयनगरके मल्लिकार्जुन महारायके समय चैत्र शु० १०, गुरुवार, शक १३(७)१ शुक्ल संवत्सरका है। इस समय वैदूरके पार्श्वनाथ वसदिके लिए कुछ लोगो-द्वारा दिये हुए दानोका विवरण इसमें दिया है। देवप्प दण्डनायकका भी उल्लेख है। इसी समयका दूसरा लेख यही है। इसमें हाडुवलिय राज्यके शासक सगिराय ओट्टेयके पुत्र डगरस ओट्टेयके समय पार्श्वनाथवसदिको प्राप्त दानोका विवरण है।]

[रि० सा० ए० १२२९-३० क्र० ५३६-३७ पृ० ५३]

४४२

चित्तलद्रग (मैसूर)

शक १३८५ = सन् १४६३, कन्नड

- १ सखवरुस १३८५ सोमकृति स-
- २ चछरद कतिकसुध १५ आकिय मं-
- ३ गिसेट्टिय मग गुम्मिसेट्टियर नि-
- ४ स्तिगे श्रीवीतराग

[यह एक निसिविलेख है। आकिय मंगिसेट्टिके पुत्र गुम्मिसेट्टिके समाधिमरणका यह स्मारक है। तिथि कार्तिक शु० १५, शक १३८५, घोभकृत् सवत्सर इस प्रकार दी है।

[ए० रि० मै० १९३९ पृ० १०४]

४४३-४४४

चित्तलद्रुग (मैसूर)

१५वीं सदी (सन् १४७२), कन्नड

१ नन्दन सं २ वाचणगल ३ निस्तिगे

[यह निसिधिलेख वाचणके समाधिमरणका स्मारक है। १५वीं सदीकी लिपिमें नन्दन सवत्सरका उल्लेख है अतः सन् १४७२ का यह लेख होगा। यहीका एक अन्य लेख इसी समयकी लिपिमें है जिसमें गुम्मतदेवकी निसिधिका उल्लेख है। यथा-

१ सखवरु - २ आसाडमु ३ (गु) मटदेव
इसमें तिथिके अक लुप्त हो चुके हैं।]

[ए० रि० मै० १९३९ पृ० १०४-५]

४४५

गुरुचयनकेरे (द० कनडा, मैसूर)

शक १४०६ = सन् १४८४, कन्नड

[इस लेखमें शक १४०६ में नरसिंह बग-द्वारा कन्नडिवसदि नामक जिनमन्दिरको कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ४८१ पृ० ४५]

४४६

विदिकूर (शिमोगा, मैसूर)

शक १४१० = सन् १४८८, कन्नड

१ स्वस्ति स (क) वरिप १४१० नेय प्लवग संचरठ जेष्ट सुद

पंचमि भादिवारदलु भदियर् यकिय गण्डलिकेय उटेकोंड राम-
नाय्कलु विदिररुलि तनगे स्तर्गापवर्गसुररघके का-

२ (र)णवागि चैत्यालयव कट्टिसि आर्दाइवरन प्रतिष्टेयन माडिसि-
दलु श्री

[इस लेखमें रामनायक-द्वारा विदिररु ग्राममें चैत्यालय बनवानेका
तथा आदिनाथकी इस मूर्तिको स्थापना करवानेका वर्णन है। यह कार्य
ज्येष्ठ शु० ५, शक १४१० के दिन सम्पन्न हुआ था।]

[ए० रि० मी० १९४३ पृ० ११३]

४४७

जवलपुर (मध्यप्रदेश)

संवत् १५४६ = सन् १४६३, संस्कृत-नागरी

[यह लेख पार्श्वनाथको भग्न मूर्तिके पादपीठपर है। तिथि वैशाख
शु० ३, संवत् १५४९ ऐसी दी है।]

[रि० इ० ए० १९५१-५२ क्र० १२३ पृ० २१]

४४८

शिवङ्गार (राजस्थान)

सं० १५५६ = सन् १५००, संस्कृत-नागरी

[यह लेख मूलसंध-बलात्कारगण - सरस्वतीगच्छके आचार्य रत्न-
कीर्तिके समय सं० १५५६ में लिखा गया था। इनकी गुरुपरम्परा
पद्मनन्दि-शुभचन्द्र-जिनचन्द्र-रत्नकीर्ति इस प्रकार बतलायी है।]

[रि० आ० सं० १९०९-१० पृ० १३२]

४४६

हुमच (मैसूर)

१५वीं सदी, कन्नड

- | | |
|-----------------------------------|-------------------------------|
| १ श्रीमत्परमगंभीर्या- | २ द्वादासोघलांछनं |
| ३ जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शा- | ४ मनं जिनशामन |
| ५ विरोधिकृन् मवत्सरद आर्क्षी- | ६ ज यदुल दममि सोमवा- |
| ७ रदलु । श्री मदरायराज- | ८ गुद मंडलाचार्यत् |
| ९ महावाटवार्दीश्वर रा- | १० यथात्रिपितामह मकल- |
| ११ विद्वज्जनचक्रवर्तिगलुं श्रीम- | १२ द्वात्रीत्रविशालकीर्तिम- |
| १३ -स्वरकुलकमलमार्तदरं | १४ श्रीमदमरकातिर्यनीश्वरप्रि- |
| १५ याप्रशिष्यरं मूलसंघ व- | १६ लान्कारगणाग्रगण्यरुमप्य |
| १७ श्रीधर्मभूपणमट्टारकटे- | १८ वर प्रियगुदु श्रीमदम- |
| १९ रेद्रवंदितजिनैट्टपाठार- | २० चिदमधुकरजुं चतुर्विधदा- |
| २१ नचित्तामणियु सडस्फुटि- | २२ तजीर्णजिनालयोद्धारकनुम |
| २३ प्य चिटिमेद्विय मग चोकिमेद्वि- | २४ य निमिधि ॥ |

[इम लेखमे चिटिसेट्टिके पुत्र चोकिमेद्विके ममाधिमरणका उल्लेख है जो आदिवन व० १० मोमवार, विरोधकृन् मवत्सरके दिन हुआ था । चोकिमेद्विके गुट धर्मभूपण भट्टारक थे जो मूलसंघ-बलात्कारगणके अमर-कीर्ति यतीश्वरके शिष्य थे । लिपि १५वीं सदीकी है ।]

[ए० रि० मै० १९०४ पृ० १७५]

४५०-४५१

आदवनी (बेल्लारी, मैसूर)

१५वीं सदी, तेलुगु

[ये लेख पहाडीपर एक पापाणपर खुदे हुए तीर्थकरमूर्तिके पास और चरणपादुकाओंके पास है । ये बहुत घिसे हुए है । मूर्तिके पास एक शकवर्षकी सख्या खुदी है तथा पादुकाओंके पास किसी आचार्यका नाम है । दोनो अच्छी तरह पढना सम्भव नहीं है । लिपि १५वी सदीकी है ।]

[रि० सा० ए० १९४१-४२ क्र० ७४-७५ पृ० १३७]

४५२-४५३

नरसिंहराजपुर (मैसूर)

१५वीं सदी, कन्नड

[यहांके दो मूर्तिलेख १५वी सदीके लिपिके है । इनपर देविसेट्टिके पुत्र दोडणसेट्टि तथा नेमिसेट्टिके पुत्र गुम्मणसेट्टिके नाम उत्कीर्ण है ।]

[ए० रि० मै० १९१६ पृ० ८४]

४५४

हनसोगे (मैसूर)

१५वीं सदी, कन्नड

- १ हनसोगेय द्विरियवसदिय
- २ कोण्डिय कल्ल भोरसेय बोम्मि-
- ३ सेट्टियरु इक्किंसिदरु

[यह लेख स्थानीय आदीश्वरवसदिके सभामण्डपके छतके पापाणपर खुदा है । यह पापाण (कोण्डियकल्लु) बोम्मिसेट्टि-द्वारा स्थापित किया गया था ऐसा लेखमें कहा है । लिपि १५वी सदीकी है ।]

[ए० रि० मै० १९३९ पृ० १९४]

४५५

मूढविदुरे (मसूर)

शक १४२६ = सन् १५०४, कन्नड

[इस ताम्रपत्रमें उल्लेख है कि कदव कुल्के घामक लदमप्परम अपरनाम भैररमने जैनोके ७२ सस्यानोके प्रधान आचार्य चारुकीर्ति पठिताचार्यके एक शिष्यको अपने राज्यके एक हिस्सेके घामिक अधिकार प्रदान किये । तिथि-आन्विन क्र० ५, शक १४२६, क्रोधि संवत्सर ।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ पृ० २४ क्र० ए ५)

४५६

करन्दै (उत्तर अर्काट, मद्रास)

शक १४३१ = सन् १५०९, तमिल

[यह लेख मकर शु० १०, गुरुवार, शक १४३१ को लिखा गया था । विजयनगरके शासक नरसिंहरायके समय रामप्प नायकने मन्दिरोकी भूमिपर जोड़ि सशक कर लगाया था जिमसे मन्दिरोकी हानि हुई थी । कृष्णदेवराय मिहासनारुढ हुए तब उन्होंने मन्दिरोकी भूमिको करमुक्त घोषित किया । इस घोषणाका लाभ पडैवीट्टु तथा चन्द्रगिरि प्रदेशके जैन और बौद्ध मन्दिरोको भी हुआ । करन्दै स्थित जिनमन्दिर भी इससे लाभान्वित हुआ ऐसा लेखमें कहा गया है ।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १४४]

४५७

गुरुध्वजकेरे (६० कनडा, मैसूर)

शक १४३१ = सन् १५१०, कन्नड

[यह लेख स्थानीय शान्तीश्वरवमदिके मण्डपमें है । इसमें माघ व० १०, सोमवार शक १४३१ को वेलतगडीके कुछ लोगो-द्वारा कुछ भूमिके दानका उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ४८० पृ० ४५]

४५८

चरांग (६० कनडा, मैसूर)

शक १४३७ = सन् १५१५, कन्नड

[यह लेख विजयनगरके कृष्णदेवमहारायके समय माघ शु० ५, शुक्रवार, शक १४३७ भावसवत्सरका है । इसमें तुलुराज्यके शासक रत्न-प्पोडेयका उल्लेख किया है । देवेन्द्रकीर्तिकी प्रार्थनापर इस वसदिके लिए देवराय-द्वारा पहले दी हुई भूमिके पुन खेतीयोग्य बनानेका इसमें उल्लेख है । यह कार्य अक्कम्म हेगिडिति तथा उनके सहयोगियो-द्वारा सम्पन्न हुआ था]

[रि० मा० ए० १९२८-२९ पृ० ४९ क्र० ५२८]

४५९

चामराजनगर (मैसूर)

सन् १५१८, कन्नड

[इस लेखमें अरिकुठारके महाप्रभु कामैय नायकके पुत्र वीरैय नायक-द्वारा विजय (पार्श्व) नाथ मन्दिरके लिए सन् १५१८ में कुछ दानका उल्लेख है ।]

[ए० रि० मै० १९१२ पृ० ५१]

४६०

कोह नगोरी (जयपुर, राजस्थान)

संवत् १५७७ = सन् १५२१, संस्कृत-नागरी

[इस लेखकी तिथि भाष शु० ५, संवत् १५७७ यह है । इसमें मूल-संघ-बलात्कारणके आचार्योंकी परम्परा दी है तथा खण्डुलवाल अन्वयके राय रामचन्द्रके शासनका उल्लेख है ।]

[रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ४१६ पृ० ६९]

४६१

चरांग (द० कनडा, मैसूर)

शक १४४४ = सन् १५२२, कन्नड

[यह लेख पोबुच्चके राजा इम्मडि भैरवरसके समय चैत्र व० १२, सोमवार शक १४४४ चित्रभानु सवत्सरका है । इसमें राजा-द्वारा वराणके नेमिनाथ वसदिके लिए भैरवपुर नामक ग्रामके दानका उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ५२९ पृ० ४९]

४६२

सोदे (उ० कनडा, मैसूर)

शक १४४५ = सन् १५२२, संस्कृत-कन्नड

[यह ताम्रपत्र आषाढ पूर्णिमा शक १४४५ चित्रभानु सवत्सरका है । तौलव प्रदेशके क्षेमपुर (गेरसोप्ये) नगरसे इम्मडि देवराज ओडे-रुने वण्डुवाल ग्रामकी कुछ भूमि लक्ष्मणेश्वरके शखजिनवसतिके लिए दान दी थी । यह दान देशीगणके चन्द्रप्रभदेवके लिए था ।]

[ए० रि० मै० १९१६ पृ० ६९]

४६६

नेल्लिकर (६० कनडा, मैसूर)

शक १४४७ = मन् १-१०५, कन्नड

[यह लेख म्यानीय अनन्तनाथस्वमदिके प्राकारमें है । देवणरस उपनाम कोन्नकी वहन गकरदेवी-द्वारा कीयरचुरकी बसदिके लिए धनु १५, रविवान, शक १४४७, तारण नवत्सरके दिन कुछ भूमिके उत्पन्नके दानका इममें उल्लेख है ।]

[रि० ना० ए० १९०८-२९ क्र० ५२२ पृ० ४९]

४६७

पल्लिच्छन्दल् (६० अर्काट, मद्रास)

शक १४१० = मन् १५३०, तमिल

[यह लेख एक भग्न जैनमन्दिरके स्थानपर है जिमें धीनियम्मण्, कोयिल् कहा जाता है । विजयनगरके राजा अच्युतदेवमहारायने वैष्णव नायकके निवेदनपर शर्षके नागनार् विजयनायकर् नामक जिनमूर्तिकी पूजाके लिए जोडि और शालुवरि करीका उत्पन्न अर्पण किया था । यह राजाजा बेलूर बोम्मुनायकके समय उत्कीर्ण की गयी ऐसा लेखमें कहा है । तियि मियुन शु० १०, बुधवार, शक १४५२, नन्दन सवत्सर ऐमी वी है ।]

[रि० ना० ए० १९३७-३८ क्र० ४४९ पृ० ५१]

४६८

पटना म्युजियम (बिहार)

संवत् १७९३ = मन् १५३१, सस्कृत-नागरी

[यह लेख एक पीतलकी जिनमूर्तिके पादपीठपर है । इसकी स्थापना मूलसंघ-कुन्दकुन्दाचार्यान्वयके मण्डलाचार्य बर्मचन्द्रके उपदेशमे छटेलवाल

अन्वयके कुछ राजजाने की थी । प्रतिष्ठा तिथि ज्येष्ठ शु० ३, मोमवार, मवत् १५९३ ऐसी दी है ।]

[रि० ८० ए० १९५३-५४ क्र० १६२ पृ० ३३]

४६६

हनुमंतगुडि (रामनाड, मद्रास)

शक ११०० = म० १०३३, तमिल

मलबनाथ जैन मन्दिरके आगे पड़ी हुई शिलाशोपर

[इसमें शक १४५५ के लेखके गण्ट है । एकमें जिनेन्द्रमगलम् अथवा कुरुवडिमिदिका निर्देश है जो मुत्तोफ़ क़ूरम् विभागमें था ।]

(८० म० रामनाड २७९)

४७०

नीलचनहस्ति (मैसूर)

सन् १०३४, फ़रवद

[इस लेखमें सन् १५३४ में मदवणमेट्टिके पुत्र पद्ममणसेट्टि-द्वारा अनन्तनाथचैत्यालयमें किमी शतके पालनका उल्लेख है ।]

[ए० रि० नै० १९१५ पृ० ६८]

४७१

लक्ष्मेश्वर (मैसूर)

शक १४(६१) = सन् १२३९, फ़रवद

[इस लेखमें जैन और शैवोंके एक विवादके समझौतेका उल्लेख है । यह विवाद जिनमूर्तियोंके सम्मानके सम्बन्धमें था । जैनोकी ओरमें शय-वसतिके शम्भुणाचार्य तथा हेमणाचार्यने और शैवोंकी ओरमें दक्षिणशोभेश्वर

मन्दिरके कालहस्ति और गिवरामने यह समझीता क्रिया था। तिथि ज्येष्ठ शु० १ सोमवार, शक १४(६१), विल्वि सवत्सर ऐसी दी है। (शकवर्षकी सख्याके अन्तिम अंक लुप्त हैं जो सवत्सरनामानुसार दिये गये हैं)।]

[रि० सा० ए० १९३५-३६ क्र० ई १८ पृ० १६२]

४७२

कारकल (द० कनडा, मैसूर)

शक १४६५ = सन् १५४३, कन्नड

[यह लेख (ताम्रपत्र) चैत्र शु० ४ शक १४६५ शोभकृत् सवत्सरका है। इसमें चन्दलदेवीके पुत्र पाण्ड्यप्परम तथा तिरुमलरस चौट्टर इनमें अनाक्रमण सन्धिका उल्लेख किया है। इसके साक्षीके रूपमें जैन आचार्य ललितकीर्ति भट्टारका उल्लेख हुआ है।]

[रि० सा० ए० १९२१-२२ पृ० ९ क्र० ए ५]

४७३

कुखगोड्ड (बेल्लारी, मैसूर)

शक १४६७ = सन् १५४५, कन्नड

एक मठन मन्दिरके ढक्षिणी दीवालपर

[विजयनगरके राजा वीरप्रताप सदागिव महारायके समय शक १४६७, विश्वावमु संवत्सरमें यह लेख लिखा गया। रामराज्य-द्वारा जिनमन्दिरके लिए कुछ भूमिदान देनेका इसमें निर्दश है।]

(इ० म० बेल्लारी ११३)

४७४

कारकल (मंसूर)

शक १४६६ = सन् १५४५, कन्नड

[यह लेख भाष शु० ३, गुरुवार, शक १४६६, क्रौधि सवत्सरवा है । चन्दलदेवीके पुत्र चन्द्रधर्मीय पाण्ड्यप्प बोटेयके राज्यकालमें कारिजे निवामी सिदवसयदेवरम-ट्टाग कारकलके गुम्मटनाथ स्वामीको कुछ भूमि अर्पण किये जानेका इसमें उल्लेख है ।]

[रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० ३३९ पृ० ५२]

४७५

मूडविदुरे (मंसूर)

शक १४६८ = सन् १५४६, संस्कृत-कन्नड

[इस ताम्रपत्रमें विलिगिके शासक वीरप्पोडेयकी वगावली छह पीढियों तक दी है । विदुरे नगरकी त्रिभुवनचूडामणि वसतिके लिए इस शासकने चिक्कमालिगेनाडु विभागके कुडुगिनवयलु ग्रामकी कुछ जमीनका उत्पन्न दान दिया था । इसी मन्दिरके चन्द्रनाथदेवको नैवेद्य अर्पण करनेके लिए एक चाँदीका प्याला और कुछ धन भी दान दिया था । यह दान वीरप्प-के चाचा तिमरसकी पत्नी वीरम्मके नामसे था । इसी तरह घण्टोडेयके पुत्र तिमरप्पके नामसे चन्द्रनाथदेवके दुग्धाभिषेकके लिए कुछ दान दिया गया था । कार्तिक शु० ७, शक १४६८, विश्वावसु सवत्सर, यह इस दानकी तिथि थी । प्रथम आपाढ शु० १०, पराभव सवत्सर यह दूसरी तिथि दी है ।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ए २ पृ० २३]

४७६

काप ताम्रपत्र (जि० दक्षिण कनडा, मैसूर)

शक १४७९ = सन् १०५६, संस्कृत-कन्नड

- १ श्री धर्मनाथ (ने) शरणु ॥ श्रीमत्परमगर्भारस्याद्वाढामाघलाछन ।
जाया-
- २ स्त्रेलोक्यनाथस्य शाननं जिनशासनं ॥ स्वस्तिश्रीमकलज्ञान-
साम्राज्यपट्टराजितः । व-
- ३ धर्मानजिनार्धाश स्याद्वाढमठमासुर. ॥ तिमिन्निर्णागच्छवाराशे -
सुधांशुर्जानदी-
- ४ धिति । मद्मंसरसीहंस. प्रवादिगजकंसरी ॥ काणूरुगण-
नमोभागे मामाति मुनि-
- ५ कुं (ज) र. । अज्ञानतिमिरोद्धतिः श्रीमान् मानुमुनी(श्च)र ॥
पत्राचारशरध्वस्तपत्र-
- ६ बाणशरव्रज । अलण्डश्रोतपोलङ्गमीनायको मानुसंयमी ॥
श्रीमद्मानुसु-
- ७ नीश्व(रो) विजयते स्याद्वाढधर्माश्वरे श्रीमद्ज्ञानविनूलनदीधिति
(श)तध्वस्तान्धका-
- ८ राजज । श्रीमूलामलमंघनीरजमहाषण्डेवलण्डश्रियं ध्यात (न्व)
न् मुनि-
- ९ कौकचारुनिकर मौल्याणंवे मग्नयन् ॥ तुलुडेशवेम्बभूपन पोलेत्र
महाप-
- १० दकडंठे येसर्ग (ने) गु निच्छं । धरंयोळगे कापिन नगरठ नेलन-
नाल्व भूप महहेगडेयंम्ब ॥
- ११ पंगुलत्रलि अधिपतियनु पोंगलसठे नेलके तानु नृपकुलतिलकं ।
संगतसमेथोलु

- १२ पो (गल्गु) भगजजयजिनपदाब्जमधुकरनेवं ॥ भूदेविय मुखकनडि
वाडें हेल्व-
- १३ गे कापुवेनिसिठ नगर । आदरद्विन्नदरो (ल्गा) मेदिनिमतधर्म-
नाथनेन (से) गु जिनपं ॥ आ नगर-
- १४ वकधिपतियु श्रीपति तिरु (म) रस नृप (अ)वनीतिलक ।
वोमनदलि आतानुं वोतुकर मुक्तिल-
- १५ क्षिर्गिस्त मनम ॥ येनेम्बे महहेगगडे ठानचतुर्विधक्के ताने
चित्तरत्न । सन्नुतगुणगण-
- १६ निलेय उन्नतशीलवजु तालद (नृ) परिपुसंहारं ॥ धर्मदोलं (दद)
चित्तनु निर्मल-
- १७ गुरुमक्तियक्कि तिरुमरसनृप । धर्मजिनजैनशासनम वोम्मन्दिं ठानु
माडि क्किति (य)
- १८ नित्तं ॥ स्वस्ति श्री जयाभ्युदय क्षालिवाहनशाकवर्ष १४७६ नेय
संदं नलसवत्सर-
- १९ द कार्तिक शुद्ध १ आदित्यवारदल्लु श्रीमन्महाराजाधिराजराजपर-
मेश्वर सत्यरत्नाकर
- २० शरणागतवज्रपंजर चतु समुद्राधीश्वर कलियुगचक्रवर्ति श्रीधोर-
प्रताप सदाशिव-
- २१ राय राजराजेंद्र दक्षिणभागभाग्यदेवतासंनिभरुमप्य रामराजव्य-
नवरुये-
- २२ क (च्छ) अदिं राज्यवजु प्रजिपालिसुतिदं कालदल्लु वारकूर
मगल्लूरु सदा(शि)वनायकरु
- २३ राज्यव गे(यि)तिदं कालदल्लु तुल्लु(व)देशकामिनीमुखकमलविल-
कायमानानादिसि-
- २४ द्दप्रसिद्धकापिसिंहासनोदयाचलालंकरणतरुणतरणीप्रकाशरु-
अनन्यराजन्यसौ(ज)-

- २० न्य (श्री)शायंवीथंवेयं(मा)युयंगार्मीयंनयत्रिनयसस्यश्रींवाद्यन-
तगुण-
- २१ गणनृत्तरत्नाभरणगणफिरणोद्योतिनभरताद्रिमकल (पु)राणपुरप-
न्मप्य
- २२ तिरमलरमराट महहेगडेयर अवर नालिनवरु गणपणमावनरु
कापिन राज्यव-
- २३ नु प्रतिपालिसुतिट्टे कालटलु ॥ स्वस्ति श्रीमद्रायराजगुरु मडला-
चार्य महा-
- २४ वादवाडीश्वर राज्यवादिपितामह सकलधिद्व(ज)नचक्रवर्तिगुलुं
इत्याद्यनेकत्रि-
- २५ रडावलीविराजमानर काणृर्गणाग्रण्यरुगलुमप्य श्रीमदभिनव-
- २६ देवकीतिदेवरुगलु शिष्यरु मुनिचद्रदेवरुगलु (अ)वरुगलु शिष्यरु
देवचद्रदे-
- २७ वरुगलु तम्म गुरु मुनिचद्रदेवरुगलुगे स्वर्गापवर्गाकके कारणवागि
कापिन-
- २८ लु धर्मवनु माटवेकेत्र चित्तदिट्टे तिरमलरमराट महहेगडेयरु
कृ (रु)-
- २९ डेयु अवर नालिनवरु गण(प)णमामतर कूडेयु कापिन हलर
महायद्रि-
- ३० ट धर्मणे वोट्टे क्षेत्रवनु कोडयेकृ येदु चित्तमलागि भवरुगलु धर्म-
- ३१ परिणामस्वरूपवने बुल्लवराट कारण गुरुमक्तिगिट्टे तम्म सीमेय-
- ३२ लुम(ल्ला)रंम (यू)रोलगे पट्टु(व)ण दिक्किनलु कलतोपतिना
शारुकेयलु अगलि-
- ३३ ट वोलगे येट्टिन गहेल्ल वीज वल्ल मृवत्तर लेक्कद वत्त मूडे २
मत्तम-

- ३६ गालिंद होरगे पापिनाटियेव गहेत्कं वीज बल्ल मूवत्तर लेह्क
बीज
४० मूडे ४ मत्त वागिल गहेत्कं वीज बल्ल मूवत्तर लेह्क मूडे ४
गहे मू-

पिल्ला भाग

- ४१ रक्कं वीज मूडे १० ई भूमिगल्लिगे बुल्ल करे सुरे मने वावि
हल्लसु भावु सु-
४२ वे निक्किल्लिक्कट्टे कट्टिक्क जल पापाण सह मुक्कधारेणु
पुरदु को-
४३ हु यिमिकॉट दोहुवराहग ८० अक्षरदल्लु येमट्टे वराह थी हों-
४४ जिगे येरहु बेलेयल्लु सह वर्षल्लं वह अक्कि अगहिय होरिगेय
४५ बल्ल पेवत्तर लेक्कट्ट अक्कि मूडे २४ ई अक्किगे नडव धर्मद
विवर कापिन वस्ति-
४६ य कंलगण नेलेयल्लु धर्मतीर्थकरसज्जिधियल्लु मध्याह्नकालदल्लु
नित्यद -
४७ लु दिन वोंदक्के वोंदुवल्ल अक्कि नैवेद्यवल्लु (सु) निचंद्रदेवरगल्ल
हंस-
४८ रिनल्लु नड(व) हालधारेणु सह अक्कि मूडे १० तिगल्लु तिगल्लु
तप्पट्टे तिं-
४९ गल्लिल्लि १७ होहाग नडव वार १ मत्त इप्पत्तैदु २५ होहाग
नडव
५० वार १ अंतु तिगल्लिल्लि येरहु वार समदाय नडवुत्तक्के अक्कि
मूडेवु
५१ १२ई वारगल्लिल्लि मगल्लत्रयोदर्शा यहाग आ मगल्लत्रयोदर्शा
नडव-

- ५२ (दंडु) विशेषवागि यिरिसिद भक्कि मूडे २ अंतु भक्कि मूडे
यिप्पत्तनाळ्कु
- ५३ यी धर्मद स्थलदक्कि वल्लारिगे अनाय सनाय सल्लदु इल्ल आ
स्य(ल)गदल्लु इह
- ५४ वोळ्ळिगे बिट्टि विट्टार सल्लदु काणिके देसे अप्पणे पददल्लि येत्तु
सल्लदु येदु
- ५५ सर्वमान्यवागि तिरुमल्लरसराट्ट महहेगडेयेरु अवर नाक्किनवरु ग-
- ५६ णपणसामतरु सह तम्म धर्मपरिणामनिमित्तवागि तम्म स्वरुचि-
- ५७ यिंद गुरुमक्तिरिंद चोडवट्टु बरसि कोट्टे तांनशासन इंत-
- ५८ प्पुदक्के साक्षिगल्लु अधिकारि कातसेट्टि चट्टे विक्रसेट्टि सामणि
संकर-
- ५९ सेट्टि राजसेट्टि वग्गे(से)ट्टिय अल्लिय केसण मूळ्ळु बेळ्ळि
बिरुमाल
- ६० दुग्ग वंडारि बिरुसामणि यित्तिनवरु वुमयान्म(त)दिं मं-
- ६१ गल्लुरु सकै सेनवोवन वरह । यिती धर्मशास(न)क्के मगल-
- ६२ महा श्री श्री श्री ॥ स्वदत्ताद् द्विगुण पुण्य परदत्तानुपालन ।
- ६३ परदत्तापहारेण स्वदत्तं निष्फलं भवेत् ॥ दानपालनयोर्मध्ये
- ६४ दानाच्छ्रेयोनुपालन । दानात्स्वर्गमवाप्नोति पालनादच्युतं
- ६५ पट्ट ॥ यी धर्मशासनक्के आवनानोव्व जैननादव तप्पिडरे बेल्लुगु-
- ६६ लद गुरुमटनाथ कोपणद चन्ननाथ ऊज्जतगिरिय नेमीश्वर-
- ६७ मोदकाद् जिनविंबगलनोडद पापक्के होहरु शैवनादरे प-
- ६८ वंतगोकर्णमोदकाद्वरल्लि कोट्टिळिगवनोडद पापक्के होहरु
- ६९ वैष्णवनादरे तिरुमलेमोदकाद्वरल्लि कोट्टिविष्णुमूर्तियनोड-
- ७० द पापक्के होहरु ॥ मद्र भूयाजिनशासनस्य ॥ श्री

[यह ताम्रपत्र शक १४७९ में लिखा गया था । उस समय विजय-नगरसाम्राज्यके अधिपति सदाशिवराय थे तथा रामराज उनके प्रधान सेनापति थे । इस साम्राज्यके वारकूर तथा मगलूर प्रदेशपर केलडि सदाशिव नायककी नियुक्ति की गयी थी । इस प्रदेशमें काप नगरका अधिकारी मह हेगडे था । इसने धर्मनाथ तीर्थंकरकी पूजा आदिके लिए मल्लाह गाँवमें कुछ जमीन दान दी जिसकी आय ८० बराह थी (बराह उस समयकी रौप्यमुद्राकी मज्ञा थी) । यह दान अमिनव देवकीर्तिके प्रशिष्य तथा मुनिचन्द्रके गिण्य देवचन्द्रके उपदेशसे दिया गया था । इसके पहले मूलमघ-काणूरगण-तिन्त्रिणोगच्छके भानुमुनीश्वरकी प्रशसा की गयी है । देवचन्द्र भी काणूरगणके ही थे । अन्तमें दानकी रक्षाके लिए जो धाप दिये हैं उनमें श्रवणवेलगोलके गोम्मटेश्वर, कोपणके चन्द्रनाथ तथा गिरनारके नेमिनाथकी मूर्तियाका उल्लेख किया है]

[ए० इ० २० पृ० ८९]

४७७

चिप्पगिरि (जि० वेल्लारी, मैसूर)

शक १४८२ = सन् १५६०, कन्नड

[इस लेखमें आदवानीके विशालकीर्तिगरु तथा चिप्पगिरिके श्रावको-द्वारा चतुर्थमुनीश्वरकी वन्दनाका उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९४४-४५ ई ७४]

४७८

मूडचित्तुरे (जि० दक्षिण क र्शा, मैसूर)

शक १४८५ = सन् १५६३, कन्नड

[इस ताम्रपत्रमें विदुरे नगरकी चण्डोग्य पारिद्वतीर्थंकर वसतिके लिए शकरसेट्टि ऊर्फ विरणन्तर-द्वारा उसकी बहन शकरदेवीके आग्रहसे कुछ

घन दान दिये जानेका उल्लेख है। यह दान अभिनव चारुकीर्ति पण्डितके आज्ञावर्ती सेट्टिकारोको सौपा गया था। १२५० वराह मुद्राओंके एक और दानका भी इसमें उल्लेख है। तिथि मेघ (त्रयोदशी), शुक्रवार, शक १४८५, रुचिरोद्गारी संवत्सर ऐसी दी है।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ पृ० २३ क्र० १ ए]

४७६

ग्रिन्स आफ वेल्स म्युजियम, बम्बई

शक १४८५ = सन् १५६३, शिलालेख क्र० B B. ३०७, कन्नड

[यह लेख चैत्र शुक्ल १२, सोमवार, शक १४८५, दुन्दुभि संवत्सर, के दिन लिखा गया था। विदुष्य नायक तथा हेम्मरसि नायिकितिके पुत्र सालुव नायक-द्वारा गेरसोप्पेमें शान्तिनाथका मन्दिर बनवाये जानेका तथा इस मन्दिरको कुछ जमीन दान देनेका इसमें निर्देश है। इसमें नगिरे, हँवे, तुलु तथा कोंकण इन पश्चिम समुद्रतटके प्रदेशोपर रानी चैन्न भैरा-देवीके शासनका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० (१९५०-५१) क्र० २४]

४८०

मूढविदुरे (मैसूर)

शक १४९३ = सन् १५७१, कन्नड

[इस ताम्रपत्रमें भीचारमागाणे विभागके मरकत ग्रामकी कुछ जमीन विदुरेकी वसतिमें आहारदानके लिए अर्पित करनेका उल्लेख है। यह दान चौट कुलकी अब्बकदेवीने उसकी बहन पट्टमलदेवीकी पुण्यवृद्धिके लिए दिया था। पुत्तिगेके शासक इस दानका भग न करें ऐसी सूचना अन्तमें दी है। तिथि पौष शु० ८, रविवार, शक १४९३ प्रजोत्पत्ति संवत्सर, इस प्रकार दी है।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ पृ० २३ क्र० ए ३]

४८१

महेश्वर (मध्यप्रदेश)

सं० १६२७ = सन् १५७१, संस्कृत-नागरी

[यह लेख सम्राट् अकबरके राज्यकालमें सवत् १६२७ में लिखा गया था । मालवामें उस समय ख्वाजा अजीझ बेग प्रान्तीय शासक नियुक्त था । इस समय मण्डलोई सुजानरायने महेश्वरस्थित आदिनाथ-मन्दिरका जीर्णोद्धार किया ।

अकबरके शासनकालके अन्य दो लेख यही प्राप्त हुए हैं । इनमें मण्डलोई देवदास (सुजानरायके बन्धु) द्वारा सवत् १६२२ में महेश्वर मन्दिरका तथा सवत् १६२६ में कालेश्वर मन्दिरका जीर्णोद्धार किये जानेका उल्लेख है । इस तरह जैन सज्जनो-द्वारा जनेतर मन्दिरोंकी सहायताका यह उदाहरण है ।]

[६० हि० का० १९४७ पृ० ३९२]

४८२

कुच्चांगि (तुकूर, मैसूर)

सन् १५७३, कन्नड

[इस मूर्तिलेखमें कहा है कि नाल्कुवांगिलु निवासी वोम्मिसेट्टिके पुत्र दानप्पने यह मूर्ति तथा प्रभावलि सन् १५७३में स्थापित की ।]

[ए० रि० मै० १९१६ पृ० ८४]

४८३

चित्तामूर (द० अर्काट मद्रास)

शक १५०० = सन् १५७८, कन्नड-तमिल-संस्कृत

[यह लेख स्थानीय जिनमन्दिरके मानस्तम्भपर है । इस स्तम्भकी

स्थापना जगतापिगुप्ति निवामी वायिनेट्टिके पुत्र वुञ्जेट्टिने शक १५००, बहुवान्य नवत्तरमे की ऐमा इसमें उल्लेख है । न्तम्भके दूसरी ओर मस्कृत भाषा और कन्नड लिपिमें इमी वर्णनका लेख है । इसमें वुञ्जेट्टिको महा-नागकुलका कहा गया है ।]

[रि० मा० ए १९३७-३८ क्र० ५१७-१८ पृ० ५७-५८]

४८४

कारकल (द० कनडा, मैसूर)

शक १(५)०१ = सन् १५८०, कन्नड

[इस लेखकी तिथि कार्तिक शु० १, शक १(५)०१ है । प्रारम्भ श्रीमत्परमगम्भीर ' आदि श्लोकसे है । अन्य विवरण लुप्त हुआ है ।]

[रि० ड० ए० १९५३-५४ क्र० ३३७ पृ० ५२]

४८५

सेतु (गिमोगा, मैसूर)

शक १५०५ = सन् १५७३, कन्नड

१ स्वस्ति श्रीजयाम्युदय शालिवाहनशक वरप १५०५ चित्रमानु-
सांवात्तर भाद्रपद सुद्ध १० शुक्रवारवंदु करुरु नाड चैपल्लिय
तिम्म गौडरु यिवल्लिय नायकक गौडरु जट्टिगौडरु मग सेट्टि-
गौडरु आ ममस्त श्रावकरु मह मुंतागि मनुविन वमट्टि श्री
आट्टिर्त्तार्थेश्वररिंगे माडिस्त लोहद

२ प्रभावलिगे आ ममस्त जनगलिगे मंगल महा श्री श्री श्री
विरपयनु माडिदुदु

[यह लेख आदिनायमूर्तिके पादपीठपर है । इस मूर्तिकी स्थापना
भाद्रपद शु० १० शक १५०५ के दिन हुई थी । न्यायक चैपल्लि ग्रामके
तिम्मगौड तथा यिवल्लि ग्रामके सेट्टिगौड थे ।]

[ए० रि० मै० १९४४ पृ० १६७]

५८६

येडेहल्लि (मैसूर)

शक १५०६ = सन् १९८४, कन्नड

- १ शुभमस्तु नमस्तुगणेश्वरस्तुबिचंद्रचामर (चार)वे
- २ त्रैलोक्यनगरारंभमू(ल) स्तंभाय शमवे ॥ स्वस्ति श्री-
- ३ विजयाभ्युदय सासिवाहसकन्नरुष १५०६ नेय सद वर्तमान ।
- ४ तारण सं । आश्विजा शु १० मि आश्विवारदल्लु श्रीमतु ।
दानिवा-
- ५ सद चेश्वरायचवेर । मळलु चिक्कवीरप्पवाडेरु मळलु चेश्वरि-
- ६ रवाडेरु गेरसोप्ये समंतमद्रदेवर सिष्यरु गुणमद्रदेवरु सिष्य-
- ७ रु । वीरसेनदेवरिगे । कोट भूमि क्रयपत्रद क्रमवेन्तेन्द्रे
भाळेपा(ल)
- ८ बन्दप्पन मग लिगण्णनु । नष्टसन्तनवा(गि)होद सम्मद ।
आतन भू-
- ९ मि नागकपुरद ग्रामद वळगे तेंगिनहितळगहे ख ६ कंडुग
वम-
- १० तु वीजवरि । आ भूमि नम्म आरमनिगे हरवरियागि वन्द
- ११ सम्मद । थी वीरसेनदेवरिगे क्रैयावागि कोट्टेवागि आ भूमि-
- १२ गे सलुव क्रय द्रव्य । लक्षणलक्षित तत्कालोचित मध्यस्तपरि-
कक्षित उ-
- १३ भयवाडिसप्रतिपन्न कालपरिवर्तनक्के सलुव पिथसाहेनिजग-
- १४ हि वरह ग ३२ अक्षरदल्लु सूवत्तु येरुडु वरहनु । तरविस उलि-
- १५ थद । सळे-साकळ्यवागि सल्लिखि कोण्डेवागि । आ भूमिगे
सलुव चत्तु-
- १६ सीमेय विवर । मूडलु । ई गडेय नीरपरकळ आगळिंद पडलु

- १७ तेंकलु केरैपरिचिटं व(द)गलु ॥ पडुवलु गुरुवपर हेचरुवन तो-
 १८ टटिटं मूडलु । वडगलु हानम्वियिट तेंकलु । यिंती चतुस्सि-
 १९ मेवलुगुल्ल । निधि । निक्षेपजल । पामण अक्षोणि । भागमि ।
 मिदमा-
 २० ध्यगलेंब । अष्टासोग तेजमाम्यवन्तु नीठ निम्म शिप्यरु पा-
 २१ र्मपर्यवागि सुग्गट्टिं वोगिसि बहिरि यन्टं वरसि कोट क्रय शा-
 २२ मन पटे यिट्ठके अविलासे विटवरु देवलोक्क मर्त्यलोक्कके चिर-
 २३ द्वितरु । श्रीहत्थ । गोहत्थक्क वजिनरहरु । चिरपव-
 २४ डेर श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री

[यह लेख आश्विन शु० १०, रविवार, शक १५०६, तारण मवत्सरके दिन लिखा है । इसमें दानिवानके शासक चेल्लरायके पौत्र तथा चिक्क-
 श्रीगण्णके पुत्र चेल्लवोरप्प वडेर-द्वारा गेरसोप्पेके वीरसेनदेवकी कुछ भूमि दी
 जानेका उल्लेख है । वीरसेनके गुरु गुणभद्र तथा प्रगुरु समंतभद्र थे ।
 उन्होंने ३२ वराह मूल्य देकर यह भूमि खरीदी थी जो पहले भालेपाल
 बन्दप्पके पुत्र सिगण्णकी थी और उसके सन्तानरहित स्थितिमें मृत्यु होनेसे
 राजावीन हुई थी । यह भूमि नागलापुर गांवके क्षेत्रमें थी ।]

[ए० रि० मै० १९३१ पृ० १०४]

४८७

येडेहल्लि (मंसूर)

शक १५०७ = सन् १५८५, कन्नड

- १ सुममस्तु । नमस्तुगशिरदन्तु विचंद्रचामरचा-
 २ रवे त्रैलोक्यनगरारंममूलस्त भाय क्षमवे (१) स्व-
 ३ स्ति श्रीजयाभ्युदय शालिवाहनशकवरुप १५०७
 ४ मंत्र वर्तमान पार्थिवसवत्सरद चयित्र व ७ मि आदि-

- ५ चारदल्लु श्रीमत्तु । दानिवासद चैन्नरायचोडेयर म-
 ६ कल्लु । चिक्कवीरप्पचोडेयर मकल्लु । चैन्नवीरप्पोडेयरु । गेरसो-
 ७ प्पे समंतमद्देवर सिप्परु । गुणमद्देवर सिप्परु-
 ८ वीरसेनदेवरिगे । कोट भूमि क्रयपत्रद क्रमवैते-
 ९ दरे । बालेपाल तम्मथन मग नरसप्पनु नष्टसं-
 १० तानवागि होट सम्मद भातन भूमि धीचलढाल ग्रामदकि ।
 ११ पण्टु खण्डुग विजवरि भूमि जम्म भरमनिगे हरवरियागि
 १२ बन्द सम्मंद आ भूमिन् दानिवासद चैन्नरायचोडेय-
 १३ र मकल्लु । चिक्कवीरचोडेयर मकल्लु चैन्नवीरचोडेयरु ।
 १४ गेरसोप्पेय समंतमद्देवर सिप्परु गुणमद्देवर सिप्परु
 १५ वीरसेनदेवरिगे । क्रयवागि कोटवागि । आ भूमिगे । सल्लुव । क्र-
 १६ यद्दय्य । लक्षणलक्षित तरकालोचित मध्यस्तपरिकल्पित उभे-
 १७ यवादिप्रतिपन्न कालपरिवर्तनके सल्लुव प्रिय-
 १८ स्राहे । निजगति वरह गद्याण ग ३० अक्षरदल्लु भू-
 १९ वत्तु वरहंनु तारविस वलियदे सल्लिसि कोण्डेवागि । आ पण्टु
 २० खण्डुग भूमिगे सल्लुव चतुसीमेय विवर मूडल्लु नन्दिगाव ।
 २१ तिम्मरसैयन धरेयिंदल्लु पडुवल्लु । पडुवल्लु नरसोपुरद-
 २२ हल्लुदि वल्लु(?) मूडल्लु । वडगल्लु धरेयिंदल्लु । तेंकल्लु । तें-
 २३ वल्लु अरमनेगदेयिंदल्लु वडगल्लु । चित्ति चतुसीमेथोल्लुगु-
 २४ ल निधि निक्षेप जल पाषाण अक्षीयि आगमि सिध साप्पगल्लेव
 २५ अष्टभोग तेजसाम्यवनु आगुमाविकोण्डु निळु निम्म सिप्परु-
 २६ रु पारम्परेयागि आचंद्राकैस्ताथियागि सुखदि भोगिसि
 २७ वहिरि थेंदुवरसि कोट क्रयस्यासनपटे थिटके अमिल-
 २८ से बटवरु टेवल्लोक मत्त्यल्लोकके विरहितरु । आहल्य
 २९ गोहल्यके वजनरहरु चैन्नवीरचोडेरु श्री
 ३० श्री श्री श्री

[यह लेख चैत्र व० ७, रविवार, शक १५०७, पार्थिव सबत्सरके दिन लिखा है। इसमें दानिवासके धामक चैन्नवीरप्प वीडेयर-द्वारा गेर-सोप्पेके वीरसेनदेवको कुछ भूमि दी जानेका उल्लेख है। इस भूमिके लिए ३० वराह कीमत दी गयी थी। यह पहले वालेपाल तम्मयके पुत्र नरसप्प-की थी जो पुत्ररहित स्थितिमें मृत्यु होनेसे राजाघोन हुई थी। भूमि योचल-दाल ग्रामके क्षेत्रमें थी।]

[ए० रि० मै० १९३१ पृ० १०८]

४८८

चिक्कहनसोगे (मैसूर)

सन् १५८५, कन्नड

[यह लेख आदिनाथवसदिके गोमुखपर है। चारुकीर्ति पण्डितदेवके पिता तथा ब्राह्मणप्रमुख चिक्कणय्यके पुत्र पण्डितय्य द्वारा आदीश्वर, चन्द्र-नाथ तथा शान्तीश्वरकी मूर्तियोंकी स्थापनाका इसमें उल्लेख है। समय मन् १५८५ है।]

[ए० रि० मै० १९१३ पृ० ५१]

४८९

येडेहल्लि (मैसूर)

शक १५०९ = सन् १५८७, कन्नड

- १ सुममस्तु । नमस्तुगणिरञ्जुविचंद्रचामर-
- २ चारवे त्रैलोक्यनगरारमम्(ल)स्तमाय शमवे ।
- ३ स्वस्ति श्रींजयाभ्युदय शालिवाहन शक वरुप १५०९
- ४ नेय सठ वतमान । सर्वजित्तु स । वयिशाक शु ५ मि
- ५ यु आदिवारदल्लु श्रीमत्तु । दानिवासद चैननरा-

- ६ यवडेरे मकल्लु । चिक्कवीरप्पवाडेरे मक्कल्लु चेन्नविरवा-
 ७ डेरु । गेरसोप्पे समंतमद्ददेवर जिप्परु । गुणमद्ददेव-
 ८ र सिप्परु । वीरसेनदेवरिगे । कोट भूमि क्रयपत्तद क्रम-
 ९ वेंतेंदरे नालपुरद ग्रामदोलगे सकण्णन मग मल-
 १० यन डॉक्किन कोड्डिगे बिज्जवरि ख १० हत्तु खण्डुग भूमि
 ११ यु । सल्लविट्टु नम्म आरमनिगे हरवरियागि मट स-
 १२ मट । यी वीरसेनदेवरिगे त्रेय्यक्के कोटेवागि । आ भूमिगं सल्लु-
 १३ व क्रय द्रव्य । लक्षणलक्षित । तत्कालोचितमध्यस्तपरिकल्पित
 १४ उभयवादिसंप्रतिपन्न कालपरिवर्तनक्के सल्लुव प्रियसू-
 १५ हे । निजगटि वरह ग ४० अक्षरदल्लु नाक्खत्तु वरहनु । तर
 १६ विस उल्लियदे साक्खयवागि । सल्लिसि कोण्डेवागि आ भूमिगे
 सल्लु-
 १७ व चतुसिमेय विवर । मुडल्लु यिगाट्टेय नीरेरकल्लगल्लि-
 १८ द पड्डवल्लु । वडगल्लु कंरेयेरियिद तेंकल्लु तेंकल्लू नं-
 १९ म गट्टेयिद वडगल्लु । यिती चतुरसीमेयोल्लुगुल्ल नि-
 २० धि निक्षेप जल पासण अक्षाणि आगमि सिध साध्यग-
 २१ लंब आष्टमोग तेजसाम्यवनु निउनिम्म शि-
 २२ प्परु पारम्परियवागि सुखदि वागिसि बहिरि
 २३ यंदु वरसि कोट क्रयग्राम्नपटे । यिट्ठक्के अविळा(पे) वटवर डं-
 २४ चर्राक मर्य्यल्लोकक्के विरहितरु श्रीहय गोहत्थक्कं वजनरह-
 २० रु । चेन्नवीरवडेरु श्री श्री श्री श्री श्री

[यह लेख वैशाख शु० ५, रविवार, शक १५०९ सर्वजित सवत्सर्ग
 ३म तिथिका है । दानिवासके शासक चेन्नवीरप्प वडेरेद्वारा गेरसोप्पेके
 वीरसेनदेवको कुछ भूमि दी जानेका इसमें उल्लेख है । नालपुर ग्रामकी
 यह भूमि ४० वराह कीमत देकर खरीदी गयी थी ।]

[ए० रि० मै० १९३१ पृ० ११०]

४६०

रत्नत्रयवसदि वीलिंगि, (उत्तर कनडा, मैसूर)

१६वीं सदी (सन् १५८७)

[इम लेखमे मूलमंत्र-देसिगण-पुस्तकगच्छके श्रवणवेलगुल मठके चारु-कीर्ति पण्डितका उल्लेख किया है। इन्हें रायराजगुरु, मण्डलाचार्य, बल्लाल-रायजीवरक्षापालक आदि उपाधियाँ प्राप्त थी। इनकी परम्परामें श्रुतकीर्ति पण्डित हुए। इनकी गिण्यपरम्परा इम प्रकार थी—श्रुतकीर्ति—विजयकीर्ति—श्रुतकीर्ति (द्वितीय)—विजयकीर्ति (द्वितीय) अकलक—विजयकीर्ति (तृतीय)—अकलक (द्वितीय)—भट्टाकलक। भट्टाकलकदेवका समय शक १५१०=सन् १५८७ दिया है। मगीतपुरका लोकप्रयुक्त नाम हाडुवल्लि है। यहाँके राजा इन्द्रभूपालको विजयकीर्ति (प्रथम) की कृपासे मिहामन प्राप्त हुआ ऐसा कहा गया है। विजयकीर्ति (द्वितीय) की प्रेरणासे पश्चिम समुद्र तटपर भट्टकल नगरको स्थापना हुई थी।]

[ए० ड० २८ पृ० २९२]

४६१

जि० दक्षिण कनडा (स्थान नाम अज्ञात)

शक १५१३=सन् १५६१, कच्छड

[यह ताम्रपत्र शक १५१३ खर मवत्सरमे किन्निग भूपालने दिया था। इममें एक जैन मन्दिरके लिए कुछ भूमिदानका उल्लेख है।]

(ड० म० दक्षिण कनडा २)

४६२-४६३

रायवाग (मैसूर)

शक १५१९ = सन् १५९७, सस्कृत-कन्नड

[ये दो लेख स्थानीय आदिनाथमन्दिरके दो स्तम्भोपर हैं - एक कन्नडमें है तथा दूसरा उसीका सस्कृत रूपान्तर है । इसमें ज्येष्ठ व० १४, शक १५१९ के दिन मूलसप्त-सेनगणके सोमसेन भट्टारक-द्वारा इस मन्दिरके जीर्णोद्धारका तथा पार्श्वनाथमूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है ।]

[रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० १५२-५३ पृ० ३३]

४६४-४६५

मारूरु (दक्षिण कनडा, मैसूर)

शक १५२० = सन् १५६८, कन्नड

[ये दो लेख हैं । मारूरुके पार्श्वनाथवसतिमें स्थित तीर्थकरमूर्तियोंकी पूजाके लिए पार्श्वदेवो विन्नाणि-द्वारा कुछ भूमि दान दिये जानेका इनमें उल्लेख है । पहला लेख चंत्र शु० ३, सोमवार, शक १५२० का है तथा दूसरा लेख पौष शु० २ शुक्रवः शक १५२० का है ।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ७४-७५]

४९६-४९७

करन्दै (उत्तर अकाटि, मद्रास)

सस्कृत-ग्रन्थ, १६वीं सदी

[यह लेख १६वीं सदीकी लिपिमें है । पुष्पसेन योगीन्द्रके गुरु समन्त-भद्रकी अक्षय कीर्तिका इसमें वर्णन है ।

यहीके एक अन्य लेखमें मुनिभद्रस्वामीका नामोल्लेख किया है ।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १३४, १४५]

४६८

हुमच (मैसूर)

१६वीं सदी, कन्नड

१ श्रीबोम्मरसनू रूपवतिद्रिद्रनू

[यह लेख पार्वनाथत्रमदिमे स्थित क्षेत्रपालमूर्तिके पादपीठपर १६वीं सदीकी लिपिमें है । इसमें मूर्तिके निर्माताका नाम बोम्मरम दिया है ।]

[ए० रि० मै० १९३४ पृ० १७७]

४६९

सेतु (शिमोगा, मैसूर)

१६वीं सदी, कन्नड

१ स्वमित्ति श्रीगुम्मय सेट्टियर वस्तिनय श्रीवर्धमानस्वामिय सनि-
धानदल्लि गणपणमेट्टियर मग सघय्यसेट्टियरु तमगे पुण्यात-
वागि प्रतिष्ठे माडिमिद्र अभिनन्दनतीर्थेश्वरनिगे म-

० गल महा श्री श्री श्री श्री श्री

[इस लेखमें मघय्य सेट्टि-द्वारा अभिनन्दन तीर्थकरकी इस प्रतिमा की स्थापनाका निर्देश है । इस समय गुम्मयसेट्टिकी वसतिके वर्धमान-
स्वामी उपस्थित थे । लिपि १६वीं सदीकी प्रतीत होती है ।]

[ए० रि० मै० १९४४ पृ० १६६]

५००-५०१

तिरुनिडंकोण्डै (मद्रास)

१६वीं सदी. तमिल

[इस लेखमें एक पद्यमें कोण्डैमलै निवासी गुणवद्विरमुनिवन् (गुण-
भद्रमुनि) की प्रशंसा की गयी है जो दक्षिणप्रदेशमें तमिल और सस्कृतके

सुप्रसिद्ध विद्वान् थे । लेख १६वीं सदीकी लिपिमें है तथा चन्द्रनाथमन्दिरके मुख्य द्वारके पास खुदा है । मन्दिरके मण्डपकी दीवालपर खुदे एक अन्य लेखमें इन्ही आचार्यको वीरमघप्रतिष्ठाचार्य यह विशेषण दिया है ।

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र०, ३०२ पृ० ६५]

५०२

सौदा (उत्तर कनडा, मैसूर)

शक १५३० = सन् १६०७, कन्नड

पहली ओर

- १ श्रा (१) स्वस्ति (१) श्रीजयाभ्युदय शालिवाह-
- २ नशकवरुप १५३० नेय प्लवंगसवत्सर-
- ३ ट कार्तिक शु १० तुधनारदलि श्रीमद् राय-

दूमरी ओर

- ४ (राजगुल्म) डलाचार्य महाबाद-
- ५ (वार्दाश्वर रा) यवादिपितामह मकळविद्वज्ज-
- ६ (नचक्रवर्ति व) छालरायजीघरक्षापा-

तीसरी ओर

- ७ लक दंशिगणाग्रगण्य सगीतपुरमिहा (सन)-
- ८ पट्टाचार्य श्रीमद-मल्लदेवरुगल्लु
- ९ श्रीपचगुरुचरणस्मरणार्थिद् स्वर्गस्थरा-

चौथी ओर

- १० (दरु) (१) अवर निषिद्धिमंटपळे मंगल महाश्री (१)
- ११ अष्टाकलकदेवेन स्याद्वादन्यायवादिना(१)

निधि-

- १२ धीमंटपो हळव स्येयादाचंद्रमा (स्क) र (॥)

[इस लेखमें देशिगणके प्रमुख सगीतपुरके पट्टाचार्य अकलकदेवके स्वर्गवासका निर्देश है जो कार्तिक गृ० १० शक १५३० के दिन हुआ था । उनकी यह निपिधि उनके शिष्य भट्टाकलकदेव-द्वारा स्थापित की गयी थी ।]

[ए० इ० २८ पृ० २९२]

५०३

करन्दै (उत्तर अर्काट, मद्रास)

शक १५४१ = सन् १६१९

[यह लेख विजयनगरके महामण्डलेश्वर रामदेव महारायके समय शक १५४१, कालयुक्ति, चंद्र ३ के दिन लिखा गया था । बाल नागम नायक और तलत्तार् लोगो-द्वारा कयिलायप्पुलवर् (नामक जैन विद्वान्) को कुछ भूमि दान दिये जानेका इममें उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० १३७]

५०४

मूडबिदुरे (मैसूर)

शक १५४४ = सन् १६२२, कन्नड

[इस ताम्रपत्रमें निर्देश है कि सेनगणके समन्तभद्रदेवने इक्केरिमें केलडि वेंकटप्प नायकसे मिलकर तथा उसके अधीन अधिकारी चिन्नभडार देवप्पसे साहाय्य पाकर बिदुरे नगरकी त्रिभुवनतिलक वसतिका जोर्णोद्वार कराया । तिथि-वैशाख, शक १५४४, रुधिरौद्गारी सवत्सर ।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ पृ० २४ क्र० ए ४]

५०५

कलकत्ता (नाहर म्युजियम)

शक १५४८ = सन् १६२६, कन्नड

- १ सक १५४८ श्रीमूलसध भट्टारक
- २ श्रीधर्मचन्द्रोपदेशात् प्रणम
- ३ श्रीमतिवीर

[यह लेख पीतलकी चौबोसतीर्थकरमूर्तिके पादपीठ पर है । मूलसधके धर्मचन्द्र भट्टारकके उपदेशसे श्रीमतिवीर-द्वारा इस प्रतिमाकी स्थापना शक १५४८ में की गयी थी । लिपिसे पता चलता है कि यह मूर्ति कर्नाटकमें निर्मित है ।]

[ए० रि० मै० १९४१ पृ० २४९]

५०६

कोलारस (शिवपुरी, मध्यप्रदेश)

संवत् १६८४ = सन् १६२८, हिन्दी-नागरी

[इस लेखमें शाहजहाँके अधीन शासक अमरसिंहके समयमें एक जैन चैत्यालयके जीर्णोद्धारका उल्लेख है । तिथि आषाढ शु० ९, गुरुवार, संवत् १६०॥८४ इस प्रकार दी है ।]

[रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० २४१ पृ० ४८]

५०७

मूडविदुरे (मैसूर)

शक १५५४ = सन् १६३२, कन्नड

[इस ताम्रपत्रमें उल्लेख है कि विदुरेके दो विभाग वेदुकेरी तथा मारुलपडिकेरीमें रहनेवाले धावक पहले दीवालीका त्यौहार मनाते वक्त

एक दूमरोसे पत्थर, लाठी आदिमे लडते थे । सेनगणके समन्तभद्रदेवने उन्हें इस कार्यसे रोककर दीपाराधना और अन्य पूजाओमे यह त्यौहार मनानेका आदेश दिया । तदनुसार देवण तथा अन्य शिष्योंके प्रभावसे उमका पालन भी कराया । तिथि-दीपावली, आगिरस सबत्सर, शक १५५४ ।]

[रि० मा० ए० १९४०-४१ ऋ० ए० ४ पृ० २३]

५०८

मूडविदुरे (मैसूर)

शक १५६२ = सन् १६४१, कन्नड

[इस ताम्रपत्र-लेखकी तिथि शक १५६२ विक्रम, मार्गशिर कृ० २ शुक्रवार, ऐसी है । मगलूर तथा वारकूरके शासक कैलडि वीरभद्र नायकके ममयका यह लेख है । पुत्तिगे निवामी चौटवगके चिक्कराय ओडेय-द्वारा अभिनव चारुकीर्ति पण्डितदेव तथा मूडविदुरेके अन्य श्रेष्ठियोंको सरक्षणका आन्वासन दिये जानेका इसमें निर्देश है । इसके पूर्व अधिकारियों-द्वारा धार्मिक तथा वैयक्तिक सम्पत्तिका अपहरण किया गया था अत यह आश्वामन जरूरी हुआ था ।]

[रि० मा० ए० १९४०-४१ क्र० ए ८]

५०९-५१०

शिवपुरी (मध्यप्रदेश)

संवत् १७०३ = सन् १६४७, हिन्दी-नागरी

[इस लेखमें महाराज संग्रामके पोतदार जैन मोहनदाम-द्वारा कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है । यहीके एक अन्य लेखमें गगादास और गिरधर-

दास-गण मालवदेशस्थित दिवपुगी गाममें एक जिनमूर्तिषी स्थापनाका उद्देश्य है। प्रथम स्तंभकी तिथि वैशाख शु० ३, शक १५६८, सवत् १:०३ तैमां दी है।]

[नि० ६० ए० १९५४-५५ क्र० २५०-५२ पृ० ४८-४९]

५११

सौदा (उत्तर कनडा, मैसूर)

शक १५७० = सन् १६५५, कन्नड

- १ अस्ति (१) श्रीजयाभ्यु(ड)य शालिवाहनसकय(पं)
- २ १५७० जय म(वस्मर)ड कार्तिक सुध्व दशमि
- ३ म्(यो)डयगाड यरडने घल्लिगेय-
- ४ लिउ देमि श्रीमद् रायराजगुरु मड-
- ५ लाचार्यर मागावाटयादीश्वर रा-
- ६ गवाट्टिपिगामह सकलविद्वज्जनघ-
- ७ (क) वनिग(लु) गल्लारायजीवरक्षापा-
- ८ गल्लमप्य श्रीमद् मट्टाकलंकजीच्य(डं)-
- ९ चर
- १० (श्री)प . चरणस्मर(णैयिट)
- ११ चणुस्मर(समक्ष) टल्लि स्व-
- १२ गौवर्देण्डिर (१) उ-
- १३ गौ श्री श्री श्री (११)

[एतत् स्तंभं स्थापयित्वा श्रीमद् मट्टाकलंकदेवके जन्मशतकका निर्माण हेतु स्थापित शक १० शक १५७० के दिन हुआ था। उनकी समाधि पर यह शिलालेख है।]

[पृ० ६० २८ पृ० २९२]

५१२

टोडा रायसिंह (जयपुर, राजस्थान)

सवत् १७१८ = सन् १६६२, संस्कृत-नागरी

[इस लेखमें अम्बावतीके कछवाह वंशके राजा जयसिंहके मन्त्री मोहनदास-द्वारा विमलनाथ मन्दिरके निर्माणका वर्णन है। तिथि फाल्गुन व० १०, बुधवार, सवत् १७१८ ऐसी दी है। उस समय मुगल बादशाह शाहजहाँका राज्य चल रहा था।]

[रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ४१४ पृ० ६९]

५१३

श्रीरंगपट्टम् (मैसूर)

सन् १६६६, कन्नड

[यहाँके आदीश्वरमन्दिरमें सन् १६६६ का एक लेख है। इसमें चारुकीर्ति पण्डिताचार्यके शिष्य पायण्ण-द्वारा अष्टाह्निकामहोत्सवके लिए कुछ दान दिये जानेका उल्लेख है।]

[ए० रि० मै० १९१२ पृ० ५६]

५१४

मुल्लगुन्द (धारवाड, मैसूर)

शक १५९७ = सन् १६७५, कन्नड

[यह लेख भाद्रपद व० ५, रविवार, शक १५९७ राक्षस सवत्सर-का है। इसमें नागभूपकी पत्नी बनदाम्बिके द्वारा अर्हत् आदिनाथकी मूर्तिकी पुनः स्थापनाका वर्णन है। यह मूर्ति मुसलमानों-द्वारा भ्रष्ट की गयी थी।]

[रि० सा० ए० १९२६-२७ क्र० ई ९३ पृ० ८]

५१५

चेल्दूर (मीसूर)

शक १६०२ = सन् १६८०, कन्नड

- १ ॥ शुभमस्तु ॥ नमस्तुगणेश्वरसुम्बिचंद्रचामर-
 २ चारवे । त्रैलोक्यनगरारम्भमूलस्त माय शम्भ-
 ३ वे ॥ स्वस्ति श्रीजयाभ्युदय शालिवाहनशकवरुषंग-
 ४ लु १६०२ ने खुद्रि स । भाद्रपद व १० लु दिव्लिकोव्ला-
 पुरजि-
 ५ नकचिपेनुगोंबेसिंहासनद समंतमद्रस्वामिगळ शि-
 ६ प्यराद वीरसेनमट्टारकरवर प्रियशिष्यराद लक्ष्मीसेनम-
 ७ ट्टारकरवरिगे आत्रेयगात्रद आपस्तंभसूत्रद य-'
 ८ जु शारवाद्याथिगळाद श्रीमन्महाराजश्रीहरति सम्मेटरंग-
 ९ प्यराजरवर पौत्रराद कृष्णप्यराजरवर पुत्रराद राय
 १० प्यराजरवर रत्नगिरिवस्ति देवस्थानदल्लि यी जिनेश्वर-
 स्वामिप्रतिष्ठा-
 ११ कालदट्टि दारागृहीतवागि कोट्ट भूदानद दर्भशासनदान-
 १२ पट्टे क्रम वेंतेंदरे
 (पक्ति ३ मे १२ तकका पाठ पंक्ति २६ तक दो चार
 दांहराया हं ।)
 २७ क्रम वेंतेंदरे यी रत्नगिरि स्वकदल्लि अनादियागियिहंथाय-
 २८ स्ति देवस्थानदल्लि जिनेश्वरस्वामिगे आराधने नडेयटे यिहं-

पिछला भाग

- २६ धादरल्लि नीडु मत संरक्षण्यकर्तराणि बुद्मविसिदंथा यो—
 ३० गनिष्ठरादरिंद यी देवस्थानवनू पुनः जीर्णोद्धारव माडि
 ३१ संप्रोक्षणे प्रतिष्ठेयनू माडि देवता नित्य वैभववु सार्व-
 ३२ कालवु नडदु आ सुकृत नमगु वुंतागुव रीतिगे नडसिधिराणि
 ३३ अडु निमित्त्य आ महोत्सवाकालदछि निगमे नम्म सिरेहद सीमे-
 ३४ योलगण संते टोड्डेरि होबलि गूडिद वडुवन हछिस्य-
 ३५ लदोलगण आपिनहल्लियनू सहिरण्योदकदानधारा-
 ३६ गृहीतवाणि त्रिवाचवु त्रिकरणयुक्तवाणि धारेयने-
 ३७ रदु कोट्टेवाणि आ ग्रामळे सलुवंता यरेनेल कॅनेलका-
 ३८ डारम्म नीरारम्म अणे अचुकुट्टु यात कपिले गूडेगू-
 ३९ थिलु केरे कुटे कालुवे मोदलागि आ ग्रामक्के सलुवता परिस्तरण-
 ४० टोलगागि बुत्पत्ति आदता सकल सुवर्णादाय्य सकलमत्ता-
 ४१ दायवनू निम्म सिष्यपारम्पर्यंभु अनुभविसि कौडुसु-
 ४२ खदल्लि थिहुदेडु वरसि कोड दानपट्टे । स्वदत्ताद्वि-
 ४३ गुणं पुण्य परदत्तानुपालन । परदत्तापहारेण
 ४४ स्वदत्तं निष्फलं भवेत् ॥ श्रीरामा

[इस दानपत्रकी तिथि भाद्रपद कृ० १०, शक १६०२ रौद्रि मवत्सर, ऐसी है . इसमें रगप्पराजके पौत्र तथा कृष्णप्पराजके पुत्र रायप्पराज-द्वारा लक्ष्मीसेन भट्टारकको रत्नगिरिवस्तिके लिए आपिनहल्लि नामक ग्राम दान दिये जानेका उल्लेख है । लक्ष्मीसेनको दिल्ली, कोल्लापुर, जिनकचि तथा पेनुगोडे के सिंहासनाधीश कहा है । वे समंतभद्र स्वामीके प्रशिष्य तथा वीरसेन भट्टारकके शिष्य थे । दानदाता रायप्प राजा हरति नगरके प्रमुख थे । उन्हें मात्रेय गोत्रके आपस्तंबसूत्रानुयायी कहा है ।

[ए. रि मै १९३९ पृ १८७]

५१६

वेल्लूर (मंमूर)

कन्नड (सन् १६८०)

[यह लेख विमलनाथमूर्तिके पादपीठपर है। पद्मकुलके शंकर-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापना हुई थी। यह हूलिकल निवासी था तथा ममन्तमद्रा-चार्य के शिष्य लक्ष्मीसेनाचार्यका शिष्य था। समय लगभग सन् १६८० का है।]

[ए० रि० मै० १९१५ पृ० ६८]

५१७-५१८

पोन्नूर (उ० अर्काट, मद्रास)

शक १६५५ = सन् १७३३, तमिल

[स्थानीय जिनमन्दिरके छतमें लगे स्तम्भपर यह लेख है। तिथि वैशाख २७, प्रमादी संवत्सर, शक १६५५, कलिवर्ष ४८३४ यह है। इसमें कहा है कि स्वर्णपुर-कनकगिरिके जैन हेलाचार्यकी साप्ताहिक पूजाके लिए प्रति रविवारको पार्श्वनाथ तथा ज्वालामालिनीकी मूर्तियाँ नीलगिरिपर्वतपर ले जाते हैं। यहीके अन्य लेखमें पार्श्वनाथकी स्तुतिमें कुछ मन्त्र लिखे हैं।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ४१६-१८ पृ० ४०]

मूललेख

- १ स्वस्ति श्री शालिवाहनशकावट १६५५ कलयट्ट. ४८३४ वक्रु मेळ् चेल्ला निणरा प्रमवाटि ग (श) कावट वरुप ४६ वक्रु प्रमाट्टिच वरुपं वैगाशिमाट १७ (उ) एल्लुदिय शामनमावटु (१) स्वस्ति श्रीस्व (णं) पु (र) कनकगिरि आदीश्वरस्वामिचैत्यालय सम्बन्दमान वायुम्लैयिलि-

२ रक्कुं नीलगिरि हेलाचार्यपादपूजै आदिवारत्न् तोरुम् मेर्पाडि
आलयत्तिन् श्रीगार्धनाथम्बामियु ज्वालामा (लि) निश्चम्मणैयु
मेर्पाडि स्वर्गपुरजैनगाल् एडुत्तुकोण्डु पोय् पूजिप्पट्टु (I) इन्द
शामनमनन्मेनदेव (नाले) लुत्पट्टु (II)

[ए० ड० २९ पृ० २०२]

५१६

करन्दे (उत्तर अर्काट, मद्रास)

शक १६६९ = सन् १७४८, तमिल

[यह लेख ज्येष्ठ शु० ५, शुकुवार, शक १६६९ को लिखा गया था ।
मुनिगिरि स्थित कुन्धुनाथम्बामीके मन्दिरके गोगुरका जीर्णोद्धार अगस्तियण्ण
नायिनार्ने किरा एना इसमे कहा गया है ।]

[रि० ना० ए० १९३९-४० क्र० १३६]

५२०

मूडविदुरे (मैसूर)

शक १६७६ = सन् १७५७, कन्नड

[विद्यानगर (विजयनगर) के राजा विजय सदागिन्न महाराजके
अधीन नोदे प्रदेशके शासक अरमप्पोडेयके पुत्र इम्मडि अरमप्पोडेयने
वेण्णगावे ग्रामकी कुछ जमीन अपने गुरु चारुकीति पण्डितदेवको अर्पित की
ऐना इन ताम्रपत्रमें उल्लेख है । तिथि-मार्गगिरि शु १ शक १६७९, राक्षस
संवत्सर ।]

[रि मा ए १९४०-४१ पृ २४ क्र ए ६]

५२१

बालूर (धारवाड, मैसूर)

शक १(६) ८५ = सन् १७६३, कन्नड

[जैन मन्दिरके सन्मुख दीपमाला स्तम्भपर यह लेख है । देवण और उसके पुत्रोंका इसमें उल्लेख है । तिथि कार्तिक शु. १०, सोमवार, विक्रम, शक १६८५ ऐसी दी है ।]

[रि इ ए १९४५-४६ क्र २१३]

५२२

तिल्लिवल्लि (धारवाड, मैसूर)

१८वीं सदी, कन्नड

[इस निसिधि लेखमें वैशाख शु ५ सोमवार, स्वर्भानु मवत्सरके दिन पुजारी पेट्टयके समाधिमरणका उल्लेख है ।]

[रि इ. ए. १९४५-४६ क्र. २५३]

५२३

काकन (जि० मोघोर, विहार)

संवत् १८२२ = सन् १७६६, संस्कृत - नागरी

जैन मन्दिरमें शरणपादुकाओंके चारों ओर

[इस लेखमें काकन्दीके जैन सघ-द्वारा संवत् १८२२ वैशाख शु० ६ को जैन मन्दिरके जीर्णोद्धारका तथा सुविधिनाथके चरणोंकी स्थापनाका उल्लेख है ।]

[रि० इ० ए० १९५०-५१ क्र० ३]

५२४

मैसूर

कन्नड

शान्तीश्वर बसतिमें दीपस्तम्भोंपर

[इस लेखमें चामराजकी रानी देवीरम्मणि-द्वारा उक्त दीपस्तम्भ शान्तीश्वर बसतिको अर्पित किये जानेका उल्लेख है । ये चामराज मैसूरके राजा चामराज वोडेयर (नवम) (सन् १७७६-९६) होंगे ।]

[मूल लेख कन्नड लिपिमें मुद्रित]

[ए० रि० मै० १९३६ पृ० १०२]

५२५

मैसूर

कन्नड

उपर्युक्त बसतिमें चार कलशोंपर

[इस लेखमें उपर्युक्त रानी देवीरम्मणि-द्वारा शान्तिनाथके अभिषेकके लिए इन चार कलशोंके दानका निर्देश है ।]

[मूल लेख कन्नड लिपिमें मुद्रित]

[ए० रि० मै० १९३६ पृ० १०२]

५२६-५२७

नरसिंहराजपुर (मैसूर)

सन् १७७८-७९, कन्नड

[यहाँके दो लेख सन् १७७८ तथा १७७९ के हैं । पहलेमें वियग वरमैयके पुत्र नागप्प-जो काम्बोदि वैश्य था तथा निर्घडेवृक्षसघका था -

द्वारा एक मण्डपकी स्थापनाका उल्लेख है। दूसरेमें इसी व्यक्ति-द्वारा मूर्तिका पादपीठ अर्पित करनेका उल्लेख है। रविवारअतकी ममाप्तिपर यह दान दिये गये थे।]

[ए० रि० मै० १९१६ पृ० ८४]

५२८

मैसूर

शक १७३६ = सन् १८१४, कन्नड

शान्तीश्वर वसति-गर्मगृहकं द्वारके पीतलके आवरणपर

[इस लेखमें धनिकार पर्ययके पुत्र नागीय-द्वारा ३९३ (सेर) वजनके इस पीतलके गन्धकुटी (द्वार) के आवरण दान दिये जानेका उल्लेख है। यह दान आश्विन शु० १, शक १७३६, भाव संवत्सरके दिन दिया गया था।]

[मूल लेख कन्नड लिपिमें मुद्रित]

[ए० रि० मै० १९३६ पृ० १०२]

५२९

मैसूर

(शक १७३६ = सन् १८१४) सस्कृत-कन्नड

शान्तीश्वर वसति-सुरनासि द्वारके आवरणपर

श्रीमच्छातिजिनेन्द्रस्य पञ्चरुल्याणसपद ।

श्रिया मेक्षिनागारं हसतश्चैक्यवेद्मन ॥१॥

परार्थरचनोपेत कघाटमिदमद्भुत ।

कारधामास सद्भक्त्या श्रावणे जैनमार्गतः ॥२॥

नागनामा पितु स्वस्य भरिनागाह्वयस्य च ।

धनिकारपदाढ्यस्य स्वर्भोक्षमुखलब्धये ॥३॥

[इस लेखमें निर्देश किया है कि प्रस्तुत द्वारका निर्माण घनिकार मरिनागके पुत्र नाग-द्वारा किया गया । इस लेखमें समयनिर्देश नहीं है किन्तु पिछले लेखका ही समय इसका भी होगा ऐसा अनुमान होता है ।]

[ए० रि० मै० १९३६ पृ० १०३]

५३०

मैसूर

शक १७५४ = मन् १८३२, संस्कृत-कन्नड

अनन्ततीर्थकरकी मूर्ति - शान्तीश्वर वसति

१ श्रीमत्कश्यपगोत्रजो जिनपद्मामोजे लमं षट्पद क्षात्रीयोत्तम-
देवराजनृपति. सदर्भ-

२ पत्न्या सह (१) केषम्मण्यमिधानया म्रनयुजा स्वर्गापवर्गप्रदं
कृश्वानतन्नतं तदा-

३ रचित्तवान् त्रिव मुदुंतच्छुम ॥ अबुधोत्रियशैलेंद्रु-प्रमितेस्मिन्
शाकावटकं ।

४ नन्दने वस्सरे भाद्रमासे शुक्लाष्टमीतिथौ । अनन्तनाथविद्यस्य
प्रतिष्ठां जग-

५ दुत्तरां (१) कारयामास पूर्वोक्तदेवराजनृपोत्तमः ॥

[इस लेखमें कश्यप गोत्रके उत्तम क्षत्रिय राजा देवराज तथा उनकी धर्मपत्नी केषम्मणि-द्वारा अनन्तन्नतकी पूर्णताका उल्लेख है । उक्त दम्पतिने इस अवसरपर भाद्र शुक्ल अष्टमी, शक १७५४, नन्दन सबत्सर,के दिन अनन्तनाथकी यह मूर्ति स्थापित की । इस समय मैसूरमें कृष्णराज वडेयर (तृतीय) का राज्य चल रहा था । अत लेखोक्त देवराज नृपति मैसूरकी अरसु जातिके प्रमुखोंमें-से एक थे ऐसा अनुमान होता है ।]

(ए० रि० मै० १९३६ पृ० १०१)

५३१

हले हुच्चलि (जि० धारवाड, मैसूर)

शक १७८४ = सन् १८६२, कन्नड

[यह लेख शक १७८४ का है। कहा गया है कि इस वर्ष एक नया जगट बनवाया गया। यह उस पुराने जगटमें बनवाया था जो यहाँके अनन्तनाथवसतिमें पिछले ११०० वर्षोंमें था।]

[रि० मा० ए० १९४१-४२ ई० ३५ पृ० २५७]

५३२

चित्तामूर (८० अकटि, मद्रास)

शक १७८७ = सन् १८६५, सस्कृत-ग्रन्थ

[यह लेख स्थानीय जिनमन्दिरके गोपुरकी दीवालपर है। इस गोपुरका निर्माण अभिनव आदिसेन भट्टारकने सार्वजनिक सहायतासे किया ऐसा उल्लेख है। तिथि ज्येष्ठ पूर्णिमा, शुक्रवार, शक १७८७ क्रोधन सवत्सर ऐसी दी है। इसी दीवालपर एक अन्य लेखमें जिनालयनिर्माणसे प्राप्त पुण्यकी प्राप्त पुण्यकी उसके कुछ श्लोक हैं।]

[रि० सा० ए० १९३७-३८ क्र० ५१९-२० पृ० ५८]

५३३

मैसूर

१६वीं सदी, कन्नड

शान्तीश्वर वसतिमें सर्वाण्ह यक्षकी मूर्तिके पादपीठपर

इस लेखमें मरिनागैय नामक व्यक्तिद्वारा महिसूरके शान्तीश्वर वसतिमें सर्वाण्हयक्षकी मूर्तिके पादपीठपर पीतलका आवरण लगानेका

उल्लेख किया है । मरिनागैय दनिकार पद्मैयका पुत्र था । लिपि १९वीं सदीकी है ।

[मूल लेख कन्नड लिपिमें मुद्रित]

[ए० रि० मै० १९३६ पृ० १००]

५३४

मैसूर

१९वीं सदी, कन्नड

उपर्युक्त बसतिमें घण्टापर

[इस लेखमें शिरसैयके छोटे भाई पृष्टैय-द्वारा इस घण्टेके दानका उल्लेख है । लिपि १९वीं सदीकी है ।

(मूल लेख कन्नड लिपिमें मुद्रित)

[उपर्युक्त पृ० १००]

५३५

मत्तव्वार (मैसूर)

१९ वीं सदी, कन्नड

मत्तव्वूर बस्ति पार्श्वनाथस्वामिचैत्यालयके

ऐवर अबणनुव

[यह लेख एक घण्टेपर खुदा है । ऐवर अबण-द्वारा यह घण्टा मत्तव्वूरके पार्श्वनाथस्वामी चैत्यालयमें अर्पण किया गया था । लिपि १९वीं सदीकी है ।]

[ए० रि० मै० १९३२ पृ० १७५]

५३६

कञ्जुपतिपाडु (नेलोर, आन्ध्र)

तमिल

[इस लेखमें करिकालचोल जिनमन्दिरके लिए मतिमागरदेवके उपदेशसे प्रमलदेवी-द्वारा सीढियाँ बनवानेका निर्देश है। यह लेख सम्राट् राजराजदेवके ३७वें वर्षका है।

नोट—चोल राजराज नामक किमी भी राजाका राज्य ३७ वर्षकी दीर्घ सीमा तक नहीं पाया जाता। अत इम लेखकी तिथि गलत प्रतीत होती है।]

(इ० म० नेलोर ५०२)

५३७

तिरुनिडंकोण्डै (मद्रास)

तमिल

[यह लेख पल्लव राजा सकल भुवनचक्रवर्ति पेरुजिगदेवके तीसरे राज्यवर्षका है। इसमें इस देव-मन्दिरकी प्रदक्षिणामालिकाका निर्माण पालैयूर निवासी शिगन्-द्वारा किये जानेका उल्लेख है। लेख चन्द्रनाथ-मन्दिरके प्राकारके पश्चिमी दीवारपर खुदा है।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३१४ पृ० ६६]

५३८

गेरसोप्ये (मैसूर)

संस्कृत-कन्नड

१ धनशोकवलीमञ्जुलदेवीगणककितकीर्तिमुनिसूतो (१) श्रीदेव-
चन्द्रसूररूपदेशासेमिजिनथिम्बं ॥

० उल्लेखः ॥ ओजणश्रेष्ठिपुत्रोमो कल्लपश्रेष्ठिपुगव (१) अकारयत्
मुतो यन्न माथाम्ब्रागमंजोजण् ॥

[यह नेमिनाथ मूर्ति ओजणश्रेष्ठिके प्रपौत्र तथा कल्लपश्रेष्ठि एव
मावाम्बाके पुत्र अजणश्रेष्ठिने देशीगण-धनगोकवनीके आचार्य ललितकीर्तिके
दिग्य देवचन्द्रमूरिके उपदेशमे स्थापित की ।]

[ए० रि० मै० १९२८ पृ० ९५]

५३६

गेरसोपे (मैसूर)

कन्नड

- १ श्रीमन्परमगंभीरस्याद्वादामोषलालनं (१) जीयात् त्रैलोक्यनाथ-
स्य शासन त्रिनशासन (॥)
- २ श्रीजिनराजराजिनपद्माम्बुजराजमराल नगिरिय राजगिरो-
- ३ नणि प्रचुरकीर्तिदिशावल्यप्रकाशानु तेजभुजप्रतापरिपुराजमुखा-
- ४ बुजं इस्तवीरनुं भूजनवन्ध होन्ननृपनर्थिजनावन कल्पवृक्षानु
होन्-
- ५ नमह्रीक्षानाम्जेषु मालियन्वरमिगे कामराजगं सन्नतमूर्ति होन्न-
नृपनाम्मथान्-
- ६ धव मगराजनु सन्मथरूप हरिहरनृपालकनातन पुत्र हैवणरसंगं
मन प्रियान्-
- ७ गनेयु मान्तलडंवि ममाधिनाच्छोलु भाकेय गुरगलु लोकरयाति-
यनान्तिद् अनन्-
- ८ तवीर्यरु रतिसंकाशसोन्नगेनिमि सन्दिर्दा कान्तंगे हैवणरस
बल्लमनाडं । स्मररूपं
- ९ सुद्धकगी पुरदोलु कीर्तिवैत्त बोम्मणसंष्टिय वरचनिते बोम्मकग
वरसुगु-

- १० णि सान्तलरसि पुट्टिटलागल् । अरसप्पोडेयर तनूजे वरगुणि
बोम्मकनाकेयारमजे सान्तकरमि-
- ११ यु परमन पढम स्मरियिसि सुरलोकवेय्दि सुत्तदिन्दिदंलु
अहंन्तन पाढाम्बुजमं
- १२ स्मरयिसुत नन्वि(?) पढम नालगोयोलु उच्चरिसुत्त सान्तकरमि
शरीरम पत्तेण्दुदिन-
- १३ टोलु सन्दलु वरवत्तर तारणदोलु सुक्खिचर-फाल्ण्ड बुद्ध
पाडिबतियिथोलु हरिदइ-
- १४ दिनदि सान्तकरसियु स्वर्गस्थलाटल् भाकेनिमित्त माडिसिद
निपिधिय कल्लिगे मंगल महाश्री-

[यह निपिधि-लेख रानी सान्तलदेवीके समाधिमरणका स्मारक है । इसकी तिथि फाल्गुन शु० १, रविवार, तारण सवत्सर ऐसी थी । यह देवी बोम्मणसेट्टिकी कन्या तथा हैवणरसकी पत्नी थी । हैवणरसका पिता मगराज था जो कामराज और मालियव्वरसिका पुत्र था । मालियव्वरसिके पिता गेरसोप्पेके राजा होत्र थे । उसका एक और पुत्र हरिहर नृपाल था । सान्तलदेवीकी माता बोम्मवका अरसोप्पोडेयकी कन्या थी ।]

[ए० रि० मै० १९२८ पृ० ९९]

५४०

सालूर (मैसूर)

कन्नड

- १ श्रीमत्परमगभीरस्याद्वादा-
२ मोघलाछन ।
३ "शासन जिनशा
४ सन श्री" चन्द्रनाथदेव-

- ५ र गुह्नि नादोन्वेय **
 ६ ** नागव्यंगलु निलि-
 ७ सिद् कल्लु **सालियूर
 ८ महाजन

[इस निपिधिलेखमें चन्द्रनाथदेवकी शिष्या नादोन्वेके समाधिमरण तथा नागव्य-द्वारा इस निपिधिकी स्थापनाका उल्लेख किया है ।]

[ए० रि० मै० १९२७ पृ० १२९]

५४१

सक्करेपट्टण (मैसूर)

कन्नड

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्जनं । जीया-
 २ त् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासन । श्रीमद् राजगुरु
 ३ . मौनपाचार्य श्री होसूर शिष्य नूलवागि-
 ४ सेट्टिय मग नूलवन्दिसेट्टिय निषिधि
 ५ शार्वरि संबत्सर ६ आषाढ सुध १४ आदि

[यह निपिधिलेख होसूरके राजगुरु मौनपाचार्यके शिष्य नूलवागि-सेट्टिके पुत्र नूलवन्दिसेट्टिका स्मारक है । तिथि आषाढ शु० १४, रविवार, शार्वरी संबत्सर, इस प्रकार बतलायी है ।]

[ए० रि० मै० १९२७-पृ० ६३]

५४२

तिरुनिडंकोण्डै (मद्रास)

तमिल

[इस लेखमें अप्पाण्डार (चन्द्रप्रभ) मन्दिरके इस गोपुरका निर्माण परमजिनदेवजीयर्-द्वारा किये जानेका उल्लेख है । लेखकी तिथि पगुणि

द्वितीया, रेवती नक्षत्र, रविवार, युव सवत्सर इस प्रकार दी है। लिपि आधुनिक है।

[रि० सा० ए० १९३९-४० क्र० ३१५ पृ० ६७]

५४३

मुत्तगदहोसूर (मैसूर)

कन्नड

- १ सिद्धजिनालय
- २ सान्तेऔवेय बसदि
- ३ बगे माडिसिदनु

[इस छोटे-से लेखमें सान्तेऔवे नामक महिला-द्वारा एक जिनमन्दिरके निर्माणका उल्लेख है।]

[ए० रि० मै० १९२४ पृ० २३]

५४४

उम्मचूर (मैसूर)

- | | |
|----------------------|----------------------------|
| १ स्वस्ति श्री "राज- | २ भटारक"नोन्तु |
| ३ सन्यसन गेट्टु सुति | ४ पिदर कल्ल निलिसिंद ज्ञा- |
| ५ न"पण्डितं " | |

[इस लेखमें "राज भट्टारकके समाधिमरण तथा ज्ञान"पण्डित-द्वारा इस निपिधिकी स्थापनाका उल्लेख है।]

[ए० रि० मै० १९२८ पृ० ४७]

५४५

कम्मनहल्लि (मैसूर)

कन्नड

- १ श्रीमत्परमगभीरस्याद्वादाभोघलाछनं जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य
शासन जि .
- २ श्रीमति मूलसघ सघोद्भवे शुभे देशीगणे
- ३ स्याद्वादारिणाशानि . कैवल्यजन्मावनिः
- ४ भयचन्द्रकरुणा . कलियुगे
- ५ बुल्लप शोभते
- ६ जिनपदसेवेयोलुचितदानदोलु यिन्तु सुख
- ७ जिनेश्वरनाम मनडोल् . बुल्लपं
- ८ प्रभवसवत्सर . देवाल
- ९ माडिसि (I) हारदानक

[यह लेख बहुत घिस गया है । प्रभवसवत्सरमें बुल्लप-द्वारा किसी मन्दिर-निर्माणका तथा उसमें आहारदानके लिए कुछ व्यवस्थाका इसमें उल्लेख है । मूलसघ-देशीगणके अभयचन्द्र आचार्यका भी उल्लेख हुआ है ।]

[ए० रि० मै० १९२८ पृ० ८७]

५४६

गोणिवीड (मैसूर)

कन्नड

- | | |
|-----------------|----------|
| १ स्वस्ति श्री- | २ मतु अ- |
| ३ नन्तन उ- | ४ धापनेय |

- ५ चतुर्वीस तीर्थक ६ र प्रति-
७ मे मंगल

[यह चौबीसतीर्थकरमूर्ति अनन्तव्रतके उद्यापनके समय स्थापित की गयी थी। इस समय वन्नि महाकाली मन्दिरमें सुनारो-द्वारा इसकी पूजा की जाती है।]

[ए० रि० मै० १९२७ पृ० ७४]

५४७

कल्लहल्लित्त (मैसूर)

कन्नड

१ स्वस्ति श्रीमूलसंग देसिगण पुस्तकगरस कुण्डकुन्दान्ववायं
श्रीजयदेवम-

२ द्वारकदेवर प्रियसिस्थरु श्रीअनन्तवीर्यदेवर प्रियगुडुगल्लु जीय-

३ गौड मल्लिगौडन मग मुद्दिगौडन मग राय-

४ गौड माडिसिड आदिपरमेश्वरप्रतिमेश्वररु मगल म-

५ हाश्री श्री श्री रूवारि वृषोजन मग रूवारि नागोल माडिड

[इस लेखमें देसिगणके जयदेवमद्वारकके धिएर अनन्तवीर्यदेवके शिष्य रायगौड-द्वारा आदितीर्थकरकी मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। यह मूर्ति रूवारि वृषोजके पुत्र रूवारि नागोलने उत्कीर्ण की थी।]

[ए० रि० मै० १९२५ पृ० ९३]

५४८-५५६

तंगले (मैसूर)

कन्नड

[यहाँ एक शिलाखण्डपर कुछ मुनियोंकी मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं तथा उनके नीचे इस प्रकार नाम दिये हैं - १ नमोर्हते अजितकीर्तिगल्लु २

देवनन्द्रतिगलु ३ गुणसागरभटारकर ४ कीर्तिसागरभटारकर ५ अजितसेन-
भटारकर ६ प्रभाचन्द्रदेवर ७ विमलगुणन्नतिगलु ८ अजितसेनभटारकर ९
शुभचन्द्र ।]

[ए० रि० मै० १९२५ पृ० ५१]

५५७

कनकरायनगुड्ड (मैसूर)

कन्नड

- १ श्रीकोण्डव्यसेट्टियर् २ मूलस्थानत्रसट्टिय स्या-
- ३ नक्के कन्तियर मगल् ४ विजयक्कं कोट्ट मण्णु
- ५ मू-

[इस लेखमें कोण्डव्य सेट्टि-द्वारा निर्मित मूलस्थान जिनालपके लिए
विजयक्का-द्वारा कुछ भूमि दान दी जानेका उल्लेख है ।]

[ए० रि० मै० १९२५ पृ० ३८]

५५८

हुलदेनहल्लि (मैसूर)

कन्नड

- १ परमेश्वर पृथ्वीराज्य-
- २ रम्मारपुर वूरवेल्लिय-
- ३ थोल्कट्टि किलगणकरे-
- ४ नन्दियडिगल् पडेउराताड-
- ५ रु साक्षि सिडिलवड्डु तोरेडे-
- ६ पाल्लु अहगोल करेय केलग-
- ७ ण देसे एल्लु मने तार इड्कं सा-

८ वत्तरु तेकल्लाड एलपत्तारु ट--

[इस लेखका ऊपरका और दाहिना भाग टूटा है। नन्दियडिगल्
वाचार्यकी कुछ भूमि दान दिये जानेका इसमें उल्लेख है।]

[ए० रि० मै० १९२६ पृ० ८३]

५५६

तोल्लु (मैसूर)

कन्नड

- १ श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादा-
- २ मोघलाछन जीयात् त्रैलोक्यना-
- ३ यस्य शासनं जिनशासन । स्वस्ति यमनि-
- ४ यमस्वाध्यायगुणसम्पन्नरप्प अमयच-
- ५ न्द्रदेवरु सर्गगामिगलाड परोक्ष-
- ६ यममागल् पद्मावतियक्क माडिसिद सास-
- ७ न ॥ अरेवेसनागिरह वसदिय माडि-
- ८ सिदरु देवर मनेय परिसूत्रह गट्टु कट्टि-
- ९ यिसिदरु मनेथ माडि नडुम्मरनुमं नट-
- १० रु इनिसनरु यिकिक पूजिसिद गद्याणप-
- ११ तु । इन्तपुदक्के साक्षि मुद्दगवुण्डतु सास-
- १२ गद्युण्डतु तम्मडिय ररु । विट्टियणतुं ने-
- १३ मणनु ईस्तानकोडेयरु ।

[इस लेखमें कहा है कि आचार्य अभयचन्द्रकी मृत्यु होमेपर उनकी
शिष्या पद्मावतियक्काने एक अधूरे जिनमन्दिरको पूर्ण किया। इस कार्यमें
७० गद्याण खर्च हुए। इस मन्दिरके व्यवस्थापक विट्टियण तथा नेमण थे।
मुद्दगवुण्ड तथा भासगवुण्ड इसके साक्षी थे।]

[ए० रि० मै० १९२६ पृ० ४२]

५६०-५६१

यलवट्टि (जि० धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[यहाँ दो लेख हैं । एकमें मूलमघ-देगीयगणके सकलचन्द्रदेवके गृहस्थ शिष्य सेनवोव केतय्यकी मृत्युका उल्लेख है । इसकी तिथि मार्ग-शिर शु० ८ शुकृवार, आनन्द नवत्तर ऐसी दी है ।

दूसरे लेखमें मूलमघ-देगीगण-पोस्तक गच्छ - कोण्डकुन्दान्वयके देव-कीर्ति भट्टारकके एक शिष्यकी मृत्युका उल्लेख है । इसकी तिथि धावण कृ० ९ रविवार, माघारण नवत्तर ऐसी है ।]

(रि० मा० ए० १९४४-४५ एफ् ६०-६१)

५६२

शावल (जि० धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें देगीयगणके वालचन्द्र त्रैविद्यदेवके एक गृहस्थ शिष्यकी मृत्युका उल्लेख है । मार्गशिर कृ० ३, व्रज सबत्तर ऐसी तिथि दी है ।]

(रि० सा० ए० १९४४-४५ एफ् ५४)

५६३

दानबुलपाडु (जि० कडप्पा, आन्ध्र)

कन्नड

[इस लेखमें कनककीर्तिदेवके शिष्यकी - जो पेनुगोण्डका एक व्यापारी था - निश्चिका उल्लेख है ।]

(इ० म० कडप्पा १४९)

५६४

मुल्कि (दक्षिण कनडा, मैसूर)

कन्नड

[जैन धसदिके आगे मानस्तम्भकी दक्षिण बाजूपर । इसमें तीर्थंकरों-की प्रशसामें पाँच श्लोक लिखे गये हैं ।]

(६० म० दक्षिण कनडा ९३)

५६५

मद्रास (म्यूनियम)

कन्नड

[यह लेख शान्तिनाथकी मूर्तिके पादपीठपर है । महाप्रधान ब्रह्मदेवण-द्वारा स्थापित किये हुए येरग जिनालयमें । यह मूर्ति थी । मूलसप्त, कुण्ड-कुन्दान्वय, काणूरगण, तिन्त्रिणि गच्छके महामण्डलाचार्य सकलमद्र भट्टारक ब्रह्मदेवणके गुरु थे ।]

(६० म० मद्रास ३२४)

५६६

मद्रास (म्यूनियम)

कन्नड व संस्कृत

[इस लेखमें साहित्यप्रिय साल्व-राजा द्वारा शास्त्रोक्त रीतिसे शान्ति-नाथकी मूर्तिके निर्माणका तथा स्थापनाका निर्देश है ।]

(६० म० मद्रास ३२५)

५६७

कोगलि (वेल्लारी, मैसूर)

कन्नड

जैन मन्डिरमें एक मूर्तिके पादपीठपर

[चित्र शु० १८, रविवार, परिवारि मवत्सरमें अनन्तवीर्यदेवके शिष्य
ओवेयमसेट्टि-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापनाका इस लेखमें निर्देश है ।]

(३० म० वेल्लारी १९०)

५६८

कीलक्कुडि (मडुरा, मद्राम)

तमिल

[गुहामे जैन मूर्तिके पादपीठपर ।

गुणसेनदेवके शिष्य वर्धमानव पण्डितके शिष्य गुणसेनपेरियडिगल-द्वारा
यह मूर्ति खुदवायी गयी ऐमा इस लेखमें निर्देश है । यहाँकी अन्य दो
मूर्तियोंके लेखोंमें भी गुणसेनदेवका उल्लेख है ।]

[३० म० मडुरा ३९]

५६९

कुण्डघाट (जि० मोघीर, बिहार)

संस्कृत-गौडीय

जैन मन्डिरमें महावीरमूर्तिके पादपीठपर

[इस लेखमें वीरेन्द्रक-द्वारा इस मूर्तिके दिये जानेका निर्देश है ।]

[रि० ३० ए० १९५०-५१ क्र० ९]

५७०

पेजुकोण्ड (जि० श्यन्तपुर, आन्ध्र)

कन्नड

पाद्वर्धनाथमन्दिरके समीप एक कुँएके पास शिलापर

[यह जिनभूषणभट्टारकदेवके शिष्य नागव्यका समाधि लेख है ।]

[इ० म० श्यन्तपुर १६७]

५७१

कायाम्पट्टि (मद्रास)

तमिल

[यह लेख शमणर् तिडल् नामक भग्न जिनमन्दिरके पास है । जयवीर पेरिलमैयान्-द्वारा तिरुवेण्णायिल् स्थित ऐन्नुखवपेरुम्पल्लि (जिन-मन्दिर) के आगे फर्श बनवानेका इसमें उल्लेख है ।]

[इ० पू० क्र० १०८३ पू० १५१]

५७२-५७३

मल्लैयकोचिल् (मद्रास)

तमिल

[इस लेखमें जैन आचार्य गुणसेनका नाम दिया है । साथमें परवादिमिदा यह उपाधि है । स्थानीय गुहामन्दिरके पास पाषाणपर यह लेख उत्कीर्ण है । ऐसा ही लेख तिरुमन्धम्के सत्यगिरीश्वरमन्दिरके एक पाषाणपर भी है ।]

[इ० पू० क्र० ४-५ पू० १]

५७४

तेणिमलै (नद्रान)

तमिल

[यह लेख एक पायागर लन्को जिनमूर्तिके नीचे है। यह मूर्ति (तिरुमेणि) शिवल्ल उदग नेश्वोट्टि-द्वारा उत्कीर्ण थी ऐना लेखने कहा है।]

[इ० पु० क्र० १० पृ० १]

५७५

पुण्डि (जि० उत्तर अर्काटि, नद्रास)

तमिल

पोकिनाय जैन मन्दिरके पश्चिमी द्वीवालपर

[इन लेखमें शम्भुवरायका उल्लेख है। वीरवीरजिनालय नामक मन्दिरकी स्थापनाका तथा उसे एक गाँव दान देनेका उल्लेख इस लेखमें है।]

[इ० म० उत्तर अर्काटि २१०]

५७६

मूडविदुरे (मैसूर)

कन्नड

[इस ताम्रपत्रके तीन भाग हैं। पहला भाग वृषभ २२, गुरुवार, तारप संवत्सरके दिनका है। इसमें चन्द्रकीर्तिदेव-द्वारा २४ तीर्थकरोको पूजाके लिए २०० होन्नु अर्पण किये जानेका उल्लेख है। यह रजम विष्णु कलुम्बरको इर्ज दी गयी थी। उसने अपनी कुछ जमीन गिरवी रखकर इन रजमके राजके रूपमें १६ मन चावल देना स्वीकार किया था। दूसरा भाग कर्क ९, बुधवार, स्वर्भानु संवत्सरके दिनका है। इसमें श्रीधर पडि-

कोदि-द्वारा जमीन गिरवी रखकर २१०० बीररायफण कर्ज प्राप्त करनेका उल्लेख है। इसके व्याजके रूपमें २८ मुठे चावल देना स्वीकार किया था। इसका उपयोग गेरुसोपेकी ललितादेवी-द्वारा 'स्थापित वसदिमें पूजाके लिए होना था। तीसरा भाग मेप १, रविवार, नन्दन संवत्सरके दिनका है। इसमें तीन वन्धुओ-द्वारा पार्श्वनाथवस्तिसे कुछ कर्ज लेनेका तथा उस-पर कुछ निश्चित रकम व्याज देनेका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ए ९]

५७७

मूडविदुरे (मैसूर)

कन्नड

[इस ताम्रपत्र-लेखमें चारुकीर्ति पण्डितदेव-द्वारा निर्मित चण्डोप पार्श्वनाथवसदिके लिए कर्वरवलिके वर्मनन्द तथा उनके वन्धु कुमिय वर्मिसेट्टि-द्वारा ७०१ गद्याण दान दिये जानेका निर्देश है। लेखकी तिथि वृषभ १५, रविवार, दुर्मुखि संवत्सर ऐसी दी है।]

[रि० सा० ए० १९४०-४१ क्र० ए ७]

५७८

निट्टूर (मैसूर)

कन्नड

१ चित्रमानु	२ संवत्सर	३ द फाल्गुण
४ द शुद्ध ८	५ शु सोम	६ वार बोम्मण्ण
७ गल्लु स्वर्गस्त	८ राद निधिधि	

[इस निधिधिलेखमें फाल्गुन शु० ८, चित्रमानु संवत्सरके दिन बोम्मण्णके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[ए० रि० मै० १९३० पृ० २५७]

५७६

तल्लूर (मैसूर)

कन्नड

- | | |
|-----------------------|-----------------------|
| १ भावसंवत्सरद श्राव- | २ ण शुद्ध त्रयोदसि आ- |
| ३ द्विवारदंडु स्वस्ति | ४ श्रीमद् अजितेश्व- |
| ५ रदेवर महाजनं .. | ६ .. वागि .. |
| ७ .. केशवदेवर वम्म- | ८ च्चे तोटदिं |
| ९ ""वागि कम्म२" .. | १० कोण्डु |
| ११ . येनुल्ल | |

[यह लेख काफी अस्पष्ट हुआ है। श्रावण शु० १३, रविवार, भावमवत्सरके दिन किसी ग्रामके महाजनो द्वारा अजितेश्वर देवके मन्दिरके लिए कुछ भूमि दान दी गयी ऐसा इसमें उल्लेख है। केशवदेवकी कन्या वम्मव्वेके उद्यानके समीपकी २ कम्म जमीन भी इस दानमें सम्मिलित थी।]

[ए० रि० में १९३० पृ० ११३]

५८०

अंवल्ले (मैसूर)

कन्नड

- | | |
|-----------------|-----------------|
| १ जिनचंद्रदेवरु | २ . मुडि(पि) .. |
|-----------------|-----------------|

[इस छोटे-से लेखमें जिनचन्द्रदेवके समाधिमरणका उल्लेख है।]

[ए० रि० में १९३० पृ० १३३]

५८१-५८४

हैदराबाद (म्युजियम) (आन्ध्र)

संस्कृत-कन्नड

[ये चार मूर्तिलेख हैं जो घिसनेसे अस्पष्ट हुए हैं। एकमें मूलसघके किसी व्यक्तिका उल्लेख है। दूसरेमें एक मूर्तिकी स्थापना फाल्गुन शु० १५, बुधवार, शिवरी सबत्सरके दिन किये जानेका उल्लेख है। तीसरेमें पण्डित मल्लिसेनका उल्लेख है। चौथेमें नेमिचन्द्रदेवके शिष्य कुमार मायिदेव महामण्डलेश्वर-द्वारा पार्श्वनाथ मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है। इन लेखोंका समय निश्चित नहीं है।]

[रि० इ० ए० १९४६-४७ क्र० १४९, १५०, १५२, १५४]

५८५

भोसे (सातारा, महाराष्ट्र)

कन्नड

[इस लेखमें मूलसघ-काणूरगणके वामनन्दि त्रतीश्वरका उल्लेख है। लेख बहुत घिस गया है। समय निश्चित नहीं है।]

[रि० इ० ए० १९४६-४७ क्र० २४३]

५८६

बेलगामे (मैसूर)

संस्कृत-कन्नड

१ गणप्राच्यमहामूर्तिकः श्री-

२ भव्यादिघवर्षिपुत्रशाकमूर्तिः

[यह लेख एक जिनमूर्तिके पादपीठपर है और इसका आधा भाग अस्पष्ट हो जानेसे अबूरा हुआ है। इसमें किसी गणके एक आचार्यका उल्लेख रहा है।]

[ए० रि० मै० १९२९ पृ० १२६]

५८७

कारकल (मैसूर)

संस्कृत

[यह लेख गोम्मट मूर्तिके सम्मुख ब्रह्मास्तम्भके समीप उत्कीर्ण पादुकाओंके पास है। लिपि आवुनिक है -
(मूल-) श्रीगणधरपादम् ।]

[रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० ३३८ पृ० ५२]

५८८

कोप्पल (रायचूर, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें चावय्य-द्वारा जटार्सिगनन्दि आचार्यकी पादुकाओंकी स्थापनाका उल्लेख है।]

[रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० १६१ पृ० ४१]

५८९

वादंगट्टि (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[यह लेख बोम्मिसेट्टिके समाधिभरणका स्मारक है।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० १६९ पृ० २२]

५६०

वाल्लेहल्लि (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें मार्गशिर व० १०, शुक्रवार, शुभकृत् सवत्सरके दिन माधवचन्द्रदेवके शिष्य नागगौडकी पत्नी सायिगवुडिके समाधिमरणका उल्लेख है ।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० १९१ पृ० २३]

५६१

गुडुगुडि (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[यह लेख सरस्त (सूरस्त) गणके किसी आचार्यकी शिष्या नागवेके समाधिमरणका स्मारक है ।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २०० पृ० २४]

५६२

मन्तगि (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[यह लेख टूटा है । हरिकेसरिदेव, हरिकान्तदेव तथा तोयिमरुष द्वारा विभिन्न वसदियोको दिये गये भूमिदानोका इसमें उल्लेख है । इनमें वकापुरकी उम्पटाठवण वसदि तथा कोन्तिमहादेविय वसदिका भी समावेश है ।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २०८ पृ० २५]

५६३

मन्तगि (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें फाल्गुन - ? - बड़वार, मर्ववारि मवत्सरके दिन मूरस्तगणके सहनकीतिदेवके शिष्य तथा मल्लिगुडके महाप्रभु विठगीडके समाधिमरणका उल्लेख है ।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २१० पृ० २५]

५९४

येलवर्गि (रायचूर, मैसूर)

कन्नड

[यह लेख एक भग्न मूर्तिके पादपीठपर है । इसमें मूलसंघ, मूरस्तगण तथा कन्निसेट्टिका उल्लेख है ।]

[रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० २२५ पृ० ३९]

५९५

तिरुप्परंकुण्डम् (मदुरै, मद्रास)

तमिल (?) - ब्राह्मी

[यहाँ पहाडीपर दो गुत्राओमे निम्न पक्तियाँ खुदी हैं । ये गुहाएँ जैन धर्मणोंके लिए उत्कीर्ण की गयी थी -

(१) न य (२) मा ता ये व

(३) अ न तु वा ण को ट्ट पि ता वा ण]

[रि० इ० ए० १९५१-५२ क्र० १४०-४२ पृ० २२]

५६६

देवचूर (महुरा, मद्रास)

वट्टेछत्तु

[यह लेख बहुत अस्पष्ट है । इसमें किसी पल्लि (जैन वसति) तथा तुग पल्लवरैयन्का उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९३१-३२ क्र० ५९ पृ० १२]

५६७

अक्कूर (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[यह लेख वीरभद्र मन्दिरकी एक भग्न मूर्तिके पादपीठपर है । इसमें शान्तिनाथ, सोमदेव तथा वसुधाकरदेवकी स्तुति की है । सातोज-रामोज-द्वारा इस वसतिके निर्माणका उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९३२-३३ क्र० ६० ७ पृ० ९२]

५६८

हावेरी (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें मादरस-द्वारा जिनमन्दिरका सीढियाँ बनवाये जानेका उल्लेख है । इस समय यह लेख वीरभद्र मन्दिरमें लगा है ।]

[रि० सा० ए० १९३२-३३ क्र० ६० ९६ पृ० १०१]

५६६-६०२

इगलेश्वर (विजापूर, मैसूर)

कन्नड

[ये चार समाधिलेख हैं । पहलेकी तिथि तारण, अमावास्या, शुक्रवार यह है । यह सत्यण्णकी समाधि है । दूसरा लेख अगलसेट्टिके पुत्र शान्ति-

सेट्टिकी समाधिपर है । तियि आगिर मंवत्सर, चैत्र १, सोमवार यह है । तीमरी नमाधि शान्तिदेव मुनिकी है । तियि प्रमादि मंवत्सर, मान व ६, शुक्रवार यह है । चौथी नमाधि माघनन्दि मुनिपकी है । तियि श्रावण शु० ११, शुक्रवार, युव मंवत्सर है ।]

[रि० सा० ए० १९३०-३१ क्र० ई १५-१८ पृ० ८५]

६०३

कागिनोल्लि (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[यह लेख एक स्तम्भपर है । इसमें दानविनोद वैरिनारायण लंका-ममण आदिन्यवर्माकी स्तुति की है तथा उसके द्वारा काणूरगण, मेघपापाण-गच्छकी बसदिमें एक स्तम्भकी स्थापनाका उल्लेख है ।]

[रि० ना० ए० १९३३-३४ क्र० ई० २८ पृ० १२१]

६०४

माकनूर (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[इन लेखमें सर मवत्सर, कार्तिक शु० (?), शुक्रवारके दिन मूल मंत्र-भूरस्यगणके नन्दिभट्टारके गिष्य दोष्यगौटके समाधिमरणका उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९३४-३५ क्र० ई ५० पृ० १५१]

६०५

लक्कुण्डि (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[यह लेख एक भग्न जिनमूर्तिके पादपाठपर है । इसकी स्थापना त्रैविद्य नरेन्द्रसेनके गिष्य वैद्य जेमिसेट्टिकी बन्धा राजन्ने की थी ।]

[रि० सा० इ० १९३४-३५ क्र० ई ८५ पृ० १५४]

६०६

देवूर (बिजापूर, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें मूलसध-देसिगण-इंगलेश्वर बलिके नेमिदेव आचार्यके शिष्य सिंगिसेट्टि, देविसेट्टि, पदुमन्वे तथा सिंगेयके समाधिभरणका उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९३६-३७ क्र० ई २२ पृ० १८३]

६०७

शिरूर (जमखंडी, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें यापनीय सध-वृक्षमूलगणके कुसुमजिनालयमें कालिसेट्टि-द्वारा पार्श्वनाथमूर्तिकी स्थापनाका वर्णन है ।]

[रि० सा० ए० १९३८-३९ क्र० ई ९८ पृ० २१९]

६०८

इडैयालम् (द० अर्काट, मद्रास)

तमिल

[यहाँ जैन मन्दिरके समीप पापाणोपर चरणपादुकाएँ उत्कीर्ण हैं तथा निम्न नाम खुदे हैं -

- (१) मल्लिपेणमुनीश्वर (२) विमलजिनदेव
(३) अप्पाण्डार् नायिनाट् (४) इडैयालम्के जिनदेवर]

[रि० सा० ए० १९३८-३९ क्र० ३११-१४ पृ० ४२]

६०६

तोरनगल्लु (वेल्लारी, मैसूर)

कन्नड

[यह लेख अकलकदेवके शिष्य वयिचिसेट्टिके समाधिमरणका स्मारक है ।]

[रि० सा० ए० १९२२-२३ क्र० ७२९ पृ० ५१]

६१०

। लोकिकेरे (वेल्लारी, मैसूर)

कन्नड

[यह लेख श्री रत्नभूषण भट्टारकके प्रिय शिष्य लोकेयकेरे निवासी मरगोण्डके समाधिमरणका स्मारक है ।]

[रि० सा० ए० १९२४-२५ क्र० २९९ पृ० ४९]

६११-६१२

गरगा (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[यह लेख यापनीय सध-कुमुदिगणके शान्तिवीरदेवके समाधिमरणका स्मारक है । तिथि श्रावण व० ४, गुरुवार, विकृति सवत्सर ऐसी दी है । यहीके एक अन्य लेखमें भी यापनीय मंघ-कुमुदिगणका उल्लेख है । अन्य विवरण लुप्त हुआ है ।]

[रि० सा० ए० १९२५-२६ क्र० ४४१-४४२ पृ० ७६]

६१३

कुमठ (उत्तर कनडा, मैसूर)

कन्नड

[स्थानीय जैन वसदिमें पार्श्वनाथमूर्तिके पादपीठपर यह लेख है । मूलसध, सूरस्तगण, चित्रकूट गच्छके मुकुन्ददेव-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापना की गयी थी ।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २३७ पृ० २७]

६१४

कुमठ (उत्तर कनडा, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें पुष्य शु० (?) क्रोधन सवत्सरके दिन क्राणूरगणके गणिय मलघारिदेवकी शिष्या कचलदेवीके समाधिमरणका ज्ञलेख है । इसके पतिका नाम त्रिभुवनवीर था तथा कदम्ब राजाओकी उपाधियां उसे दी गयी है ।]

[रि० इ० ए० १९४७-४८ क्र० २४२ पृ० २८]

६१५

रायद्रुग (वेल्लारी, मैसूर)

कन्नड

[यहाँके निसिधि लेखोंमें निम्न व्यक्तियोंके नाम हैं - मूलसघके चन्द्रभूति, आपनीय सघके चन्द्रेन्द्र, वादय्य तथा तम्मण्ण । एक लेखपर माघ शु० १ सोमवार, प्रमाथि सवत्सर यह तिथि दी है ।]

[रि० सा० ए० १९१३-१४ क्र० १०९ पृ० १२]

६१६-६१७

कोगलि (वेल्लारी, मैसूर)

कन्नड

[इस मूर्तिलेखमें अनन्तवीर्यदेवके शिष्य ओडेयमसेट्टि-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है । यहाँके एक स्तम्भपर जिनमूर्तियोंके अभि-
पेकके लिए कई व्यक्ति-द्वारा दिये गये दानोका उल्लेख है । प्रथम लेख-
की तिथि चैत्र शु० १४ रविवार, परिषावि सबत्सर ऐसी दी है ।]

[रि० सा० ए० १९१४-१५ क्र० ५२०-२१ पृ० ५३]

६१८

मुलगुन्द (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें देसिगण-हनसोगे अन्वयके ललितकीर्ति भट्टारकके शिष्य
सहस्रकीर्तिकी मृत्युका उल्लेख है । मुस्लिमो-द्वारा पार्श्वनाथवसदिपर
आक्रमणके समय उनकी मृत्यु हुई थी ।]

[रि० सा० ए० १९२६-२७ क्र० ई ९२ पृ० ८]

६१९

कल्लकेरि (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें मूलसंघ-काणूरगण-तित्रिणी गच्छके भानुकीर्ति सिद्धान्त-
देवके शिष्य हलिगावुण्ड-द्वारा कल्लकेरि-के अकलंकचन्द्रभट्टारकके लिए एक
वसदिके निर्माण तथा पार्श्वनाथमूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९२७-२८ क्र० ई ५१ पृ० २४]

६२०

कम्मरचोड्डु (वैल्लारी, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें पद्मप्रभमलघारिदेवके प्रियशिष्य महावहुव्यवहारि रायर-सेट्टिकी पत्नी चन्दब्बे-द्वारा इस जिनमूर्तिके जीर्णोद्धारका वर्णन है। इस समय यह मूर्ति हिन्दू देवताके रूपमें पूजी जाती है।]

[रि० सा० ए० १९१५-१६ क्र० ५६० पृ० ५५]

६२१-६२२

कोट्टशीवरम् (अनन्तपुर, आन्ध्र)

कन्नड

[यह लेख एक स्तम्भपर है। काणूर गणके पुष्पनन्दि मलघारिदेवके शिष्य दावणन्दि आचार्य-द्वारा एक बसदिके निर्माणका इसमें उल्लेख है। यहाँके एक अन्य लेखमें काणूरगणके (?) आचार्यकी शिष्या हरुगोल राजाकी रानी आलपदेवी-द्वारा इस बसदिकी रक्षाका उल्लेख है।]

[रि० सा० ए० १९१६-१७ क्र० २०-२१ पृ० ७२]

६२३-६२६

अमरापुरम् (अनन्तपुर, आन्ध्र)

कन्नड

[यहाँके निसिबिलेखोंमें निम्न व्यक्तियोंके नाम हैं—(१) प्रभाचन्द्र-देवके शिष्य कोम्मसेट्टि (२) पीतोज तथा उमका पुत्र सयवि मारय (३) मूलसघ-देशियगणके बालेन्दु मलघारिदेवके शिष्य विटपय तथा मारय (४) मूलसघ-सेनगणके प्रसिद्ध वादि भावसेन त्रैविद्यचक्रवर्ति (५) इगलेश्वरके प्रभाचन्द्र भट्टारकके शिष्य बोम्मिसेट्टियर वाचय्य (६) त्रैरिसेट्टिके पुत्र सम्बिसेट्टि। यहाँके एक अन्य लेखमें इगलेश्वरके त्रिभुवनकीर्ति राउलके शिष्य देशियगणके बालेन्दु मलघारिदेव-द्वारा एक बसदिके निर्माणका उल्लेख है।] [रि० सा० ए० १९१६-१७ क्र० ४१-४७ पृ० ७४]

६३०

तम्मदहसि (अनन्तपुर, आन्ध्र)

कन्नड

[इस लेखमें मूलसघ-देसियगणके चारुकीर्ति भट्टारकके शिष्य चन्द्राक भट्टारकके समाधिमरणका उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९१६-१७ क्र० ४८ पृ० ७४]

६३१

रामपुरम् (अनन्तपुर, आन्ध्र)

कन्नड

[इस लेखमें मूलसघ-देसियगणके देवचन्द्रदेवके शिष्य वेद्विसेट्टिके पुत्र कृष्णसेट्टिके समाधिमरणका उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९१७-१८ क्र० ७१४ पृ० ७४]

६३२

रामतीर्थम् (विजगापटम्, आन्ध्र)

तेलुगु

[यह लेख एक भग्नजिनमूर्तिके पादपीठपर है । ओगेरुमार्गस्थित चनुद (ब्रौ) लु निवासी प्र (मि) सेट्टि-द्वारा इस मूर्तिकी स्थापना हुई थी ।]

[रि० सा० ए० १९१७-१८ क्र० ८३२ पृ० ८५]

६३३

वेलूर (द० अर्काट, मद्रास)

तमिल

[इस लेखमें जयसेन-द्वारा इस जिनमन्दिरके जीर्णोद्धारका उल्लेख है । लिपि उत्तरकालीन है ।]

[रि० सा० ए० १९१८-१९ क्र० १२४ पृ० ५९]

६३४

निडुगल (मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें वेरलुम्बट्टेके भव्या-द्वारा-जो मूलसप्तदशसिगणके नेमिचन्द्र भट्टारकके शिष्य थे-पादर्वनाथ मूर्तिकी स्थापनाका उरलेख है ।]

[ए० रि० मै० १९१८ पृ० ४५]

६३५-६३६

नेल्लिकर (६० फनटा, मैसूर)

संस्कृत-कन्नड

[यह लेख स्थानीय अनन्तनाथवमदिमें है । इसके मण्डपका निर्माण भजन कोप्रभूप-द्वारा किया गया ऐसा कहा है । यहीँके दूसरे लेखमें इम मन्दिरका निर्माण ललितकीर्ति भट्टारकदेवके शिष्य कल्याणकीर्तिदेवकी सम्पत्तिसे देवचन्द्र-द्वारा किये जानेका उरलेख है ।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ५२०-५२१ पृ० ४८-४९]

६३७

मुत्तुगोडु (गुण्टूर, आन्ध्र)

तेलुगु

[इस लेखमें विल्लम नायक-द्वारा पृथिवीतिलकवसत्रिके लिए कुछ भूमि दान दिये जानेका उरलेख है ।]

[रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० १९ पृ० ६]

६३८-६३९

लक्ष्मण्डि (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[ये दो लेख हैं । एकमें मूलसंघ-देवगणके धारदेव-द्वारा एक जिन-

मूर्तिकी स्थापनाका उल्लेख है । दूसरेमें वसुवैकवान्धवजिनालके त्रिभुवन-
तिलक शान्तिनायदेवके लिए एक दानघालाके समर्पणका उल्लेख है ।]

[रि० मा० ए० १९२६-२७ क्र० ई ३१, ३४ पृ० ३]

६४०

जाबूर (धारवाट, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें वीचितेष्टि-द्वारा सकलचन्द्र भट्टारकको जाबूर ग्रामके
पुन दानका उल्लेख है । नविलगुन्दमें जयकीर्तिदेव-द्वारा निमित्त ज्वाला-
मालिनोवमद्रिके लिए मल्लिदेवने पहले यह गाँव अर्पण किया था ।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ई २२८ पृ० ५५]

६४१

कोमरगोप (धारवाड, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें त्रिभुनतिलक जिनालमें आहारदानादिके लिए बालचन्द्र
मिद्धान्तदेवके शिष्य पेगडे वासियण्णकी पत्नी चामिकब्बे-द्वारा सुवर्णदानका
उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९२८-२९ क्र० ई २३० पृ० ५५]

६४२-६५०

गुण्डकेर्जिगि (विजापूर मैसूर)

कन्नड

[यहाँ भग्न मूर्ति-पापाणां पर निम्न नाम खुदे हैं । (१) देधियगण-
इंगलेश्वर (बलि) के चन्द्रकीर्तिदेव तथा जयकीर्तिदेव (२) अपराजिता
देवी (३) वृषभयक्ष (४) पातालयक्ष (५) कुबेरयक्ष (६) महानमीयक्षी
(७) अनन्तमती (८) चक्रेश्वरी (९) श्या न्तनायस्वामी]

[रि० मा० ए० १९२९-३० क्र० ई १६-१७ पृ० ६६]

६५१

हुलूर (बिजापूर)

कन्नड

[इस लेखमें कण्डूर गणकी एक बसदिके लिए पुलुवरणिके महाजनो-
द्वारा भूमिदानका उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९२९-३० पृ० ६७ क्र० ई २९]

६५२

तम्मदहहि (बिजापूर, मैसूर)

कन्नड

[इस निसिधि लेखमें इगलेश्वरतीर्थकी बसदिके आचार्य देवचन्द्र
भट्टारकके शिष्य वोगगावुण्डके समाधिभरणका उल्लेख है ।

[रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० ई ७० पृ० ६९]

६५३

तुम्बिगि (बिजापूर, मैसूर)

कन्नड

[यह लेख पुष्य शु० १०, सोमवार, ईश्वरसवत्सर, राज्यवर्ष ८ का
है । राजाका नाम लुप्त हुआ है । इस समय वोचुवनायककी निसिधिकी
स्थापना की गयी थी तथा तदर्थ पाश्र्वदेवको कुछ भूमि अर्पित की गयी थी ।]

[रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० ई० ७४ पृ० ६९]

६५४

द्वचिल हिप्पगि (बिजापूर, मैसूर)

कन्नड

[इस लेखमें हवु रेमरस तथा रेचरस द्वारा ऋषियोंके आहारदानके
लिए देवचन्द्र भट्टारकको कुछ भूमि दान देनेका उल्लेख है । इगलेश्वरके
देवकीर्ति भट्टारकका भी उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९२९-३० क्र० ई ९१ पृ० ७१]

परिशिष्ट १

श्वेताम्बर लेखोंकी सूचना

[पहले संग्रहकी पद्धतिके अनुसार हम यहाँ श्वेताम्बर सम्प्रदायसे सम्बद्ध लेखोंकी सूचना दे रहे हैं। इस सूचीमें सरकारी प्रकाशनोंमें प्रकाशित लेखोंका अन्तर्भाव है। श्री० पूरणचन्द नाहरका प्राचीन जैनलेखसंग्रह, श्री० अजरचन्द नाहटाका वीकानेर जैन-लेखमंग्रह, आदि ग्रन्थोंमें प्रायः श्वेताम्बर सम्प्रदायके ही लेख हैं। इन लेखोंकी सन्ना ३५००से ऊपर है। इनका प्रस्तुत सूचीमें उल्लेख आवश्यक नहीं समझा गया।]

- १ अक्रोटा (वडोदा, गुजरात) - ८वीं सदी
रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० १६-१९
- २ अक्रोटा - १०वीं-१०वीं सदी
रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० २०-३५ तथा ३९-४८
- ३ वडोदा (गुजरात) -सं० १०६३ = सन् १०३७
रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० १६९-७१
- ४ भरतपुर (राजस्थान) -सं० ११०६ = सन् १०५३
रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ३८८, ३९४
- ५ आबू (राजस्थान) -सं० १११९ = सन् १०६३
ए० इ० ९ पृ० १४८
- ६ सिरोही (राजस्थान) सं० ११३५ = सन् १०७६
रि० आ० स० १९२१-२२ पृ० ११९
- ७ लाडोल (गुजरात) -सं० ११४० = सन् १०८४
रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ए २

- ८ लाडोल-सं० ३१२६ = सन् ११००
रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ए ३
- ९ उदयपुर (राजस्थान)-सं० ११०६ = सन् ११२०
रि० आ० स० १९३०-३४ पृ० २३७
- १० नाडोल (राजस्थान)-सं० १२१३ = सन् ११५७
इ० ए० ४१ पृ० २०२
- ११ कलनक (उत्तरप्रदेश)-सं० १२१६ = सन् ११६०
रि० आ० स० १९१३-१४ पृ० २९
- १२ जालोर (राजस्थान)-सं० १२२१ = सन् ११६५
ए० इ० ११ पृ० ५४
- १३ मथुरा (उत्तरप्रदेश) सं० १२३४ = सन् ११७८
रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ५२६
- १४ मद्रेशर (गुजरात)-सं० १३१५ = सन् १२५९
रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० १६९
- १५ मद्रेशर-सं० १३२३ = सन् १२६७
रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० १७०
- १६ जालोर (राजस्थान)-सं० १३३१ = सन् १२७५
ए० इ० ३३ पृ० ४६
- १७ आमरण (राजस्थान)-सं० १३३३ = सन् १२७७
पूना ओरिएण्टलिस्ट ३ पृ० २५
- १८ चित्तौड़ (राजस्थान)-सं० १३३४ = सन् १२७८
रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० २३२-२३३
- १९ उदयपुर (राजस्थान)-सं० १३३५ = सन् १२७९
रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ४८५
- २० वम्यहई-सं० १३५६ = सन् १३००
रि० इ० ए० १९५३-५४ क्र० २०१-३

२१ उदयपुर—१३वीं सदी

रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ५०७

२२ खंभात (गुजरात)—सं० १४२०से सं० १४६८=सन् १३८४से
मन् १४१२

रि० इ० ए० १९५५-५६ क्र० १५९-१९५

२३ आंतरी (राजस्थान) सं० १४६८=सन् १४१२

रि० आ० सं० १९२९-३० पृ० १८७

२४ मेढवा (राजस्थान)—सं० १५०७से १६८७

=सन् १४५१से १६३१

रि० आ० सं० १९०९-१० पृ० १३३

२५ ब्रिटिश म्यूजियम—सं० १५१५से १५८३

=सन् १४५६से सन् १५२७

रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ५३०-५३८

२६ सिरौही (राजस्थान)—सं० १५२४=सन् १४६८

रि० आ० सं० १९२१-२२ पृ० ११९

२७ दन्डई—सं० १५२५=सन् १४६९

रि० आ० सं० १९३०-३४ पृ० २४९

२८ उदयपुर—सं० १५५६=सन् १५००

रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० ४८६

२९ मौगामा (राजस्थान)—सं० १५७१=सन् १५१५

रि० आ० सं० १९२९-३० पृ० १८८

३० अलवर (राजस्थान)—सं० १५७३=सन् १५१७

रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ३८६

३१ अलवर—सं० १६०६=सन् १५७०

रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ३७८

- ३२ वैराट (राजस्थान)—शक १५०६ = सन् १५८०
रि० आ० सं० १९०९-१० पृ० १३२
- ३३ अलवर—सं० १६४५ = सन् १५८९
रि० इ० ए० १९५२-५३ क्र० ३७६
- ३४ लखनऊ—सं० १६५२ = सन् १५९६
रि० आ० सं० १९१३-१४ पृ० २९
- ३५ मन्देशर (गुजरात)—सं० १६५९ = सन् १६०३
रि० इ० ए० १९५४-५५ क्र० १७०
- ३६ वनप्रपुर—सं० १६६२ = सन् १६०६
रि० आ० सं० १९३०-३४ पृ० २३७
- ३७ मन्देशर—सं० १९०५-१९३४ = सन् १८४६-१८७८
रि० इ० ए० १९५४-५५ पृ० ४२

परिशिष्ट २

जनेतर लेखोमे जैन व्यक्ति आदिके उल्लेख ।

(१) बेलगामे

कन्नड

सन् १०९४

[इस लेखमें यादव राजा रामचन्द्रके समय बल्लिगावके भेत्तण्डस्वामी-मन्दिरका उल्लेख है । इस मन्दिरके हेग्गडे पदपर बैद्य दासण्णकी स्थापना कर उसे कुछ भूमि अर्पित की गयी थी । इस भूमिमें प्रथमसेनवसदि (जिनमन्दिर) की कुछ भूमि भी शामिल कर दी गयी थी ।]

[ए० रि० मै० १९२९ पृ० १२४]

(२-६) देवगेरी तथा कोलूर (जि० धारवाड, मैसूर)

(११वीं-१३वीं सर्दी)—कन्नड

पहला लेख चालुक्य सम्राट् श्रैलोक्यमल्ल (सोमेश्वर प्रथम) के राज्यकालका है । इनके अधीन बामवूर १४० प्रदेशमें जीमूतवाहन अन्वयमें उत्पन्न हुआ कलियम्मरम शासन कर रहा था । इसे सम्यक्त्व-चूडामणि तथा पद्मावतीलब्धवरप्रसाद ये विशेषण दिये हैं । इतने कोलूरके कलिदेवेश्वरके मन्दिरमें दीपदानके लिए कुछ दान दिया था । इस दानकी तिथि पौष शु० ५, शक ९६७, उत्तरायण सक्रान्ति थी ।

दूसरे लेखकी तिथि शक ९९७, पौष शु० १४, उत्तरायण सक्रान्ति थी । इस समय चालुक्य सम्राट् भुवनैकमल्ल सोमेश्वर द्वितीयका राज्य चल रहा था । इसमें भी कलियम्मरमके शासनका उल्लेख है तथा देवगेरी-के कांकलेश्वर मन्दिरके लिए दण्डनायक वण्णमय्य द्वारा कुछ दान दिये

जानेका निर्देश है। इसी लेखके दूसरे भागमें उसी कुलके एक दूसरे कलियम्मरसका उल्लेख है जो चालुक्य सम्राट् भूलोकमल्ल सोमेश्वर तृतीयका सामन्त था। इसने सम्राट्के राज्यके ९वें वर्ष अर्थात् शक १०५६ में उक्त मन्दिरको कुछ दान दिया था। इस कलियम्मरसने माहेश्वर दीक्षा ग्रहण की थी।

तीसरे लेखमें उक्त कलियम्मरस (द्वितीय) का उल्लेख सम्राट् विक्रमादित्य (पष्ठ) के राज्यके दसवें वर्ष (सन् १०८५) में किया है जब उसने कोल्लूरमें कुछ धार्मिक दान दिया था।

चौथा लेख सम्राट् विक्रमादित्य (पष्ठ) के राज्यके ४६वें वर्ष (सन् ११२१) का है। इसका सामन्त हेर्माडियरस था जो उक्त कलियम्मरस (द्वितीय) का पुत्र था। इसने कोल्लूरमें त्रिभुवनेश्वर तथा भैरवके मन्दिरोंको कुछ दान दिया था। तथा माहेश्वर दीक्षा ग्रहण की थी।

पाँचवाँ लेख यादव राजा सिंघण (तेरहवीं सदीका पूर्वार्ध) के राज्यकालका है। इसका सामन्त मल्लिदेवरस था जो उक्त जीमूतवाहन अन्वयमें उत्पन्न हुआ था। इसने कोल्लूरके क्षेत्रपाल मन्दिरको कुछ दान दिया था।

यहाँ द्रष्टव्य है कि कलियम्मरस (द्वितीय), हेर्माडियरस तथा मल्लिदेवरस शैव थे फिर भी उन्हें पद्मावतीलब्धधरप्रसाद यह पुराना विशेषण दिया है।

छठा लेख विक्रमादित्य (पष्ठ) के राज्यके ४थे वर्ष (सन् १०७९) का है। इसके अधीन नोलम्बवाडि तथा सान्तलिगे प्रदेशपर त्रैलावयमल्ल (जयसिंह तृतीय) शासन कर रहा था तथा वनवासि प्रदेशपर बलदेवय्यफा शासन था। बलदेवय्यको जिनचरणकमलभृग यह विशेषण दिया है। इसके अधीन कुछ करोंका उत्पन्न कोल्लूरके श्रावेश्वर मन्दिरके लिए किसी कनडाचार्यको दान दिया था।]

(७) शिवमन्दिर, नीडूर (जि० तजोर, मद्रास)

तमिल - सन् १११६

[यह लेख कुलोत्तुग चोलके राज्यके ४६वे वर्षमें लिखा गया था । इसमें कण्डन् माधवन्-द्वारा शोण्णवाररिवार (गणपति) देवका मन्दिर बनवानेका निर्देश है । यह माधवन् कुलत्तूर स्थानका शामक था जहाँ अमिदसागर (अमृतसागर) मुनिने कारिगै (याप्परुगलक्कारिगै) नामक छन्द शास्त्र तमिल भाषामें लिखा था । इस रचनाके लिए जिनने प्रेरणा की वे सज्जन माधवन्के चाचा (अयवा ससुर) थे ।

इस छन्दशास्त्रमें ४४ कारिकाएँ हैं तथा सरुप्पियल्, गेय्युलियल् एव ओळिवियल् ये तीन प्रकरण हैं । इसपर गुणसागरने टीका लिखी है ।]

[ए० इ० १८ पृ० ६४]

(८) कमलापुर और हंपीके बीच

कृष्णमन्दिरके समीप एक मण्डपमें

शक १३३२ = सन् १४१०, कन्नड

[यह लेख मधुर नामक जैन कविने लिखा है जो वाजि कुलमें उत्पन्न हुआ था । लेखमें देवरायके मन्त्री लक्ष्मीधर-द्वारा महागणनाथ (शिव) की स्थापनाका वर्णन है । मधुरने धर्मनाथपुराण तथा गुम्मटाष्टक लिखा है । यह हरिहररायके मन्त्री मुट्टवण्डेश्वरका आश्रित था । इस लेखमें लक्ष्मीधर-द्वारा मधुरको हाथी, घोड़े, रत्न, ज़मीन आदि दान देनेका उल्लेख है ।]

[इ० ए० ५५, १९२६ पृ० ७७]

(९) गोकर्ण (उत्तर कनडा)

१५वीं सदी, कन्नड

[इस लेखमें महावलेश्वर मन्दिरमें अन्नसत्र तथा अन्यपूजाके लिए कुछ

दान दिये जानेका उल्लेख है । दानकी रक्षाके लिए कहे गये शापालक वर्णनमे गेरसोप्येकी हिरियवस्तिके चण्डोग्य पार्श्वनाथका भी उल्लेख है ।]

[रि० सा० ए० १९३९-४० ई० क्र० १०८ पृ० २३७]

(१०) वीराम्बुधि ताम्रपत्र (मैसूर)

शक १४८६ = सन् १५६७, कन्नड

[जिनशासनकी प्रथमसासे इस ताम्रपत्रका प्रारम्भ होता है । कुलोत्तुंग विक्रमरायके पुत्र चगालराय-द्वारा भारद्वाजगोत्रके ब्राह्मण नरसीमट्टको वीराम्बुधि नामक ग्राम दान दिये जानेका इसमे उल्लेख है । दानकी तिथि माघ शु० १०, शक १४८९, सर्वजित् सवत्सर ऐसी दी है ।]

[ए० रि० मै० १९२५ पृ० ९३]

परिशिष्ट ३ नागपुर-प्रतिमा लेखसंग्रह

इस परिशिष्टमें हम नागपुरके समस्त प्रतिमालेखोंका सकलन दे रहे हैं। इन लेखोंका संग्रह श्री शान्तिकुमारजी ठवली (वर्तमान निवास—देवल्गाँव राजा, जि० वुलडाणा, महाराष्ट्र) ने कोई २७ वर्ष पहले सन् १९३५ में किया था। आपने यह संग्रह नागपुरके लोकप्रिय जैन श्रीमान् स्व० मवाई सिंगई श्री० नेमलालजी पासूसावजीकी स्मृतिमें अर्पित किया था। इस संग्रहके लिए स्व० पूज्य ब्र० शीतलप्रसादजीने भूमिका लिखी थी जा इस प्रकार थी—“जैनधर्मके इतिहासके निर्माणके लिए इस बातकी परम आवश्यकता है कि सर्व जैन स्मारकोंके लेख संग्रहीत किये जावें—इन स्मारकोंमें प्रतिमाओंके लेख, यन्त्रोंके लेख, अन्य शिलालेख तथा शास्त्रोंकी प्रशस्तियाँ आवश्यक हैं—श्री शान्तिकुमार ठवली नागपुरने नागपुरके सर्व दिगम्बर जैन मन्दिर व चैत्यालयोंके लेखोंको लिखकर पुस्तकाकार सम्पादन करनेमें जो परिश्रम उठाया है वह सराहनीय है। अच्छा हो यदि इन मूर्तियोंके लेखोंके साथ यन्त्रोंके लेख और शास्त्रकी प्रशस्तियोंका विवरण प्रकट किया जावे। एक संक्षिप्त तालिका ऐसी दी जावे कि लेखरहित प्रतिमाएँ इतनी व अमुक सवत्की इतनी—जिससे पाठकोंको प्राचीनता व अर्वाचीनताका पता तुरत लग जावे। ऐसी पुस्तकोंसे भविष्यमें बहुत काम निकलेगा—आशा है ठवली महोदय मध्यप्रान्त व वरारके सर्व स्थानोंके लेखोंके संग्रहका प्रयत्न करेंगे। अन्य उत्साही युवकोंको अपने-अपने प्रान्तोंके लेखोंको प्रकट करना चाहिए जिससे किसी समय भारतीय दि० जैन लेख संग्रह पुस्तक निर्माण हो सके।

ब्र० शीतल

९-३-१९३६ नागपुर'

इस पुस्तिकाका प्रकाशन अन्यान्य कारणोंसे अवतक नहीं हो सका था। अतः हमने इस परिशिष्टमें इसका पुनः संपादन किया है। संग्राहकने मूल लेख मन्दिरोंके क्रमसे अलग-अलग संग्रहीत किये थे तथा यन्त्रोंके लेखोंके परिशिष्ट अन्तमें दिये थे। हमने मन्दिरों तथा मूर्तियोंका विवरण अलग दिया है तथा लेख समयक्रमसे अलग दिये हैं। इन लेखोंके विशेष नामोंका समावेश सूचीमें कर दिया है तथा वहाँ लेखकोंके साथ (ना०) यह संकेत दिया है।

नागपुर नगरका अस्तित्व यद्यपि राष्ट्रकूट साम्राज्यके समयसे ज्ञात होता है तथापि इसे भोमला राजा रघुजी१ के समयसे — सन् १७३४ से प्रधान स्थान प्राप्त हुआ है। तबसे १९५६ तक यह मध्यप्रदेशकी राजधानी रही है। नागपुरके सभी मन्दिर प्रायः भोसला राजाओंके राज्यमें ही बने हैं किन्तु इनमें कई प्रतिमाएँ अन्य स्थानोंसे भी लायी गयी हैं। इस नगरमें कुल ९ मन्दिर हैं। विदर्भकी रीतिके अनुसार यहाँके प्रमुख जैन व्यक्तियोंके घरोंमें भी छोटे छोटे चैत्यालय हैं। ऐसे गृहचैत्यालयोंकी संख्या ३७ है। इन सब स्थानोंमें कुल मिलाकर ६४६ मूर्तियाँ आदि हैं जिनमें धातुकी ४४० तथा पाषाणकी २०६ हैं। इन मूर्तियों आदिके ४१ प्रकार हैं जिनकी संख्या इस प्रकार है — (१) आदिनाथ ४३ (२) अजितनाथ १३ (३) सम्भवनाथ १ (४) सुमतिनाथ २ (५) पद्मप्रभ ७ (६) सुपावर्चनाथ १२ (७) चन्द्रप्रभ ४३ (८) पुष्पदन्त ३ (९) वसुदेवनाथ ५ (१०) श्रेयास ३ (११) वासुपुज्य ६ (१२) अनन्तनाथ २ (१३) धर्मनाथ ३ (१४) शान्तिनाथ १० (१५) अरनाथ ६ (१६) मुनिसुव्रत १३ (१७) नेमिनाथ १४ (१८) पावर्चनाथ १३३ (१९) महावीर १० (२०) चौबीसी ३४ (२१) पचमेरु ९ (२२) नन्दीस्वर ७ (२३) सिद्ध ४ (२४) बाहुवली ६ (२५) रत्नत्रयमूर्ति ३ (२६) पचपरमेष्ठि १ (२७) यक्षिणी २७ (२८) सरस्वती ३ (२९) क्षेत्रपाल १ (३०) सप्त ऋषि १ (३१) चौसठ ऋषि १ (३२) गुल्पाडुका २ (३३) रत्नत्रय यन्त्र ५ (३४) सम्यग्दर्शन यन्त्र ४ (३५) सम्यक्चारित्र्य

यन्त्र ६ (३६) दशलक्षण यन्त्र ६ (३७) षोडशकारण यन्त्र २ (३८) कलि-
कुण्ड यन्त्र १ (३९) सिद्ध यन्त्र १ (४०) नवग्रह यन्त्र १ (४१) जलयात्रा
यन्त्र १ । इन मूर्तियों आदिमें ५२९ के पादपीठों अथवा किनारोंपर लेख
हैं । ऐसे लेखोंकी संख्या ३२४ है (जहाँ दो अथवा अधिक मूर्तियोंपर एक
ही लेख है वहाँ हमने उम लेखको एक लेखके रूपमें ही गिना है ।)

समयकी दृष्टिसे ये लेख आठ नदियोंमें इस प्रकार विभक्त हैं — विक्रम
तेरहवीं सदी ४, पन्द्रहवीं सदी ३, सोलहवीं सदी २२, सत्रहवीं सदी
५१, अठारहवीं सदी ७२, उन्नीसवीं सदी ६९ तथा बीसवीं सदी १०० ।

इन सब लेखोंका भाषा अशुद्ध संस्कृत है । कुछ लेखोंमें नागपुरकी
स्थानीय भाषाओं—हिन्दी तथा मराठीका अंशतः प्रयोग हुआ है (लेख क्र०
२०६, २६३, २६७, २६९, २७८, २८५) किन्तु शुद्ध हिन्दी या मराठीमें
कोई लेख नहीं है । एक लेख (क्र० ७३) कन्नडमें तथा एक (क्र० ३१९)
उर्दूमें है किन्तु इनका वाचन प्राप्त नहीं हो सका ।

मूर्तिप्रतिष्ठाके स्थानके सोलह नाम उल्लिखित हैं — नागपुर (क्र०
१५२, १९०-२, २१२ २१५, २१६, २२०-१, २२७, २२९ २३१, २३३, २३५,
२४२, २४७, २४९, २५०, २५५-७, २५९, २६१, २७९, २८२, २९५) कारजा
(क्र० ८१, १२५, १५७-८, २१०), सिरनग्राम (क्र० २०२, २०४),
रामटेक (क्र० ७३, २५३) भीसी (क्र० १४३), तजेगाव (क्र० १०६)
उमरावती (क्र० १९९), इंगोली (क्र० २३२), सजालपुर (क्र० ७०)
बहादुरपुर (क्र० ६५), अन्नडनगर (क्र० १३०) सिवनी (क्र० २८०)
छपारा (क्र० २८४), कामठी (क्र० १५४), सावरगाँव (क्र० २९३),
सवाई जयनगर (क्र० १९३) ।

प्रतिष्ठाकर्ता व्यक्तियोंकी पन्द्रह जातियोंका उल्लेख मिलता है —
राइकवाल (क्र० ९), अगरवाल (क्र० ५३), गंगराहा (क्र० १०),
गोल्मिंधारा (क्र० ७३), पल्लीवाल (क्र० ५१), गुजरपल्लीवाल
(क्र० २१), पन्नावती पल्लीवाल (क्र० ११४), उज्जैनीपल्लीवाल

(क्र० १०८, १२०, १४३), श्रीश्रीमाल (क्र० ४९-५०) हुवड (क्र० ८, २०, ३०, ३९, ८६), गोलापूव (क्र० ६८, २९१), परिवार (क्र० ६९, १८८, १९१-९२, २५०, २५४, २६३, २७२, २८५), खडलवाल (क्र० १०७, २८२) सैतवाल (क्र० ९५, २७९, २८६, २८७), वघेरवाल (क्र० १४, २९, ३८, ४४, ४६, ५५-६, ६६, ८०-८२, ८८-९०, ९२, ९४, ९६, १२२, १२५, १३०-१, १३५, १५७, १८२, १९८, २०१, २०२, २०४, २२७) ।

प्रतिष्ठापक आचार्य अधिकांश मूलसूत्रके सेनगण तथा वलात्कारगणके थे, काष्ठासूत्रके नन्दीतटगच्छके कुछ आचार्योंके उल्लेख भी है । इन उल्लेखोका उपयोग हमारे अन्य 'भट्टारक सम्प्रदाय' में किया गया है । उससे इन भट्टारकोके बारेमें अन्य जानकारी प्राप्त की जा सकती है ।

संवत् १५४८ के दो लेख (क्र० १८, १९) विशेष रूपसे उल्लेखनीय हैं । इनमें पहला लेख कोई ७७ मूर्तियोंपर है । ये मूर्तियाँ मुडासा शहरमें शिवसिंहके राज्यकालमें सेठ जीवराज पापडोवालने प्रतिष्ठित करवायी थी । इस समारोहके प्रमुख भट्टारक जिनचन्द्र थे । इस समारोहमें प्रतिष्ठित मूर्तियाँ प्रायः प्रत्येक दिग्म्बर जैन मन्दिरमें पायी जाती हैं ।

मूल लेख

- १ संमत १२०१ वैसाख वदी तीन । (विवरण क्र० १४०)
- २ सं० १२३४ म तु हा ले (१) (विवरण क्र० १६६)
- ३ समत १२६२ माल । (विवरण क्र० ११५)
- ४ समत १२६९ वर्ष आषाढ सुदी ३ । (विवरण क्र० ११४)
- ५ समत १४५७ वर्ष वैसाख सुदी ६ श्रीमूलसव म० आजिन-
देव साह माणिकचट । (विवरण क्र० २३१, २३२)
- ६ मूलसंव म० धर्मभूषणोपदेशात् समत १४६५ वर्षे ।
(विवरण क्र० ३०२)
- ७ सवत १४८५ (विवरण क्र० ४०)
- ८ संवत् १५१० वर्षे माहमासे शुक्लपक्षे ५ रवौ श्रीमूलसवे
सरस्वतीगच्छे बलात्कारणे कुंदकुटाचार्यान्वये म० पद्मनदि
तत्पट्टे म० श्रीसकलकीर्ति तत्शिष्य ब० जिनदाम हुबडज्ञानिय
सा० तेजु ना० मलाई सुत हरिचंद्र मा० नागाई सुत गोविंद
मा० बजाई । (विवरण क्र० १६७)
- ९ सं० १५०१ वर्षे वैसाख वदि २ श्रीमूलसवे सरस्वतीगच्छे
बलात्कारणे श्रीविद्यानंदिगुरूपदेशात् श्रीराडकवालज्ञातिय
भार्या अहिवट्टे सुत वेणा भार्या वनादे कारितं आचद्रप्रमचतुर्वि-
शति नित्यं प्रणमांत ॥ श्रीशुभं ॥ (विवरण क्र० १५७)
- १० समत १५२४ मूलसग सेनगणो माणिकसेनगुरु गगराढा माल-
सेटा भार्या तानाई । (विवरण क्र० ८०)
- ११ समत १५३१ फागुण वदी ५ मू० । (विवरण क्र० १८८)
- १२ संमत १५३५ श्रीमू० म० भूवनकीर्तिस्तत्पट्टे म० ज्ञानभूषणस्त-
दुपदेशात् स० दि० समाज । (विवरण क्र० ११३)

- १३ स० १५३५ वर्षे पौस वदी ३ श्रीमूलसधे म० सकलकीर्तिस्त०
म० श्रीभुवनकीर्तिस्त० म० श्रीज्ञानभूषणगुरूपदेशात् चांगा
भार्या भूसनढे वढासा भा० ताना जी वासपूज्य ।
(विवरण क्र० १६०)
- १४ [सक] १४०२ व० श्रीक ' श ज्ञात बघेरवाल ' गोत्र सं०
पामधन स० जेनराज मातापुत्र प्रणमंति (विवरण क्र० ४१३)
- १५ स० १५४३ श्रीमूलसंग म० श्रीभुवनकीर्तिस्तत्पट्टे श्रीज्ञान-
भूषणगुरूपदेशात् "दिवसी भा० गुणा सुत "भा० नामलाई ।
(विवरण क्र० ३८०)
- १६ स. १५४३ ' पदममी " टन " (विवरण क्र० ४३३)
- १७ समत १५४५ का ज्येष्ठ । (विवरण क्र० ३४३)
- १८ सवत १५४८ वर्षे वैसाख सुदी ३ श्रीमूलसधे मट्टारक श्रीजिन-
चन्द्रव माह जीवराज पापढीवाल नित्य प्रणमंति शहर मुढासा
राजा स्थोमिष । (विवरण क्र० १-३, १०-२६, ४६-४८, ८७, ९१-
१०२, १४६-१५६, २३८-२६४, ३६७-६९)
- १९ समत १५४८ वर्षे वैशाखसुदी ३ श्रीमूलसधे मट्टारकजी
श्रामानुचन्द्रव माह जीवराज पापढीवाल नित्य प्रणमंति
सहर मुढासा श्रीराजा सोमिष । (विवरण क्र० २१८, २१९)
- २० ॐ नम स० १५५२ वर्षे ज्येष्ठ वाद ७ शुके श्रीमूलसधे म०
भुवनकातिस्त० म० श्रीज्ञानभूषणगुरूपदेशात् हु० श्रे० पर्वत
भा० देव सु० राजा भा० शल्ल सुत कर्ममी प्रणमंति श्रीभुम-
तिनाथ प्रणमति । (विवरण क्र० १६५)
- २१ मरे १४२४ मूलसधे सेनगणे म० माणिकसेन उपदेशात् गुज-
पत्तिलालजानि संघर्षी नेमा " (विवरण क्र० १३७)
- २२ म० १५६१ वर्षे वैशाख सुदि १० बुधो श्रीमूलसधे म० श्री-
ज्ञानभूषण त० म० श्रीविजयकीर्तिगुरूपदेशात् व० छाहण स०

- क० राजा मा० माणिकी सु० कान्हा मा० रूपी भ्रा० गोईया
मा० मरगदिभ्रा० श्रीरत्नत्रय नमति । (विवरण क्र० १६८)
- २३ संमत १५६१ वर्षे फागुण सुदी ११ । (विवरण क्र० ११७)
- २४ सं० १५७८ मू० म० धर्मभूषण । (विवरण क्र० ३८३)
- २५ संमत १५८२ । (विवरण क्र० ४८२)
- २६ सं० १५८३ । (विवरण क्र० १२१)
- २७ सं० १५८३ ती १३ । (विवरण क्र० ४५३)
- २८ संमत १५८४ श्री मू. स भ विजयकीर्ति सत्पट्टे भ.
शुभचन्द्रदेवांपदेशात् ब्रह्म श्रीशांता वेलीबाई-ति प्रणमति ।
(विवरण क्र २०५)
- २९ संमत ६०० वर्षे फागुण वती ५ शुक्रे श्रीमूलसगे भट्टारक
श्रीरामकीर्ति प्रतिष्ठित सेनगणे यधेरवाल ज्ञातिय चवरियागौत्रे
सा. धारुजी भार्या चोपाई सुत सा माणिक भार्या पदमाई
आता रतन भार्या पसाई पुत्र धारुजी एते आसुपावर्जनार्थ
नित्यं प्रणमति । (विवरण क्र ३०९)
- ३० संवत् १६०७ वर्षे वैशाख वती ३ गुरु श्रीमूलसंवे म श्रीशुभ-
चन्द्रगुरूपदेशात् हूँ ससेस्वरा गोत्रे सा जीना मा भाळी सु
नाका भा नाकदे आ जगा भा ललितादे आ -गर एते सर्व
नित्यं प्रणमति । (विवरण क्र ४ ६)
- ३१ [सं.] १६०८ उपा- । (विवरण क्र. ४८४)
- ३२ समत १६०६ फालगुण २ दिन- । (विवरण क्र १३९)
- ३३ संवत् १६११ ते रागविदे (?) प्रणमति । (विवरण क्र ४६०)
- ३४ समत १६१४ सेनगण धरमाई बापाई चांगाया ।
(विवरण क्र २००, ३६६)
- ३५ सं० १६१५ मा० १३ । (विवरण क्र ४६०)
- ३६ सं० १६१६ । (विवरण क्र ४६१)

- ३७ सके १४८५ मू० स- । (विवरण क्र २२५)
- ३८ मक १४/७ प्रजापतसवत्सरे श्रीमू. सरस्वती वलात्कार म. धर्मचक्राणाम् उपदेशात् ज्ञाति वधेरवाल भुरा गोत्रे सा रत्न स भार्या पुतली लसमाई-प्रणमंति । (विवरण क्र ४३४)
- ३९ स. १६२५ भाषाढ शुद्धि ५ श्रीमूलसधे ब्रह्म श्रीहस ब्रह्म श्रीराज-पाळोपदेशात् हुबड ज्ञातौ सा. समराज भा. लोकोई स. आसजा मा बाकाई । (विवरण क्र २६८)
- ४० श्रीमूलसंध संमत १६३१ वर्षे फाग सुदी १० सोमे म श्रीगुणकीर्तिगुरूपदेशात् स कर भार्या सहागदेई स वीरदास मा ताकमई श्रीभजितनाथ जिन प्रणमंति । (विवरण क्र. ३०७)
- ४१ समत १६३६ मरानोजी पु (?) । (विवरण क्र ३०६)
- ४२ सवत् १६३६ श्रीकाष्ठान्धे भ० विद्याभूषण प्रतिष्ठितं छुबड सा. जयवनभार्या तसमादे सु-जीवराजसा धनराजसा प्रणपालसा नित्य प्रणमंति । (विवरण क्र ४०८)
- ४३ शक १५०१ मा तिसी ८ काष्टासधे म. श्रीश्रीभूषणमदुपदेशात् प० जयवंत (विवरण क्र ४३६)
- ४४ सक १५०३ वृषा नाम सवत्सरे फागुण सुदि ७ श्रीमूलसंध व. म धर्मभूषणोपदेशात् वधेरवालज्ञाति ठवलागोत्रे स पासुना भार्या म० रुपाई तयो पुत्रौ आपुसा भार्या ल्वाई रामासा भार्या वीपाई पृते प्रणमंति । (विवरण क्र ४२१)
- ४५ सके १५०६ भाघ वदी १ गोत्र चवतिया गुणासा । (विवरण क्र ३९१)
- ४६ समत १६४५ वैसाख सुदी ७ सोमवार श्रीकाष्ठान्धे लाढवाग-डगणे पुष्करगच्छे भट्टारकश्रीप्रतापकीर्ति तस्य आम्नाये वधेर-

वालज्जातिये बोरखंडियागोत्रे संगई पुजासा स० घवाई प्रणमति ।
(विवरण क्र० ४५०)

४७ संमत १६४६ वर्षे श्रीमूलसग मट्टारक श्री***वीर तस्पट्टे म.
श्री सेन तस्य शिष्य पंडित श्रीगजा उपदेशात् साह बावजी
भार्या दामाई तयो पुत्र गङ्गुरमाह तस्य भार्या पेमाई तयो सुत
तुवाजीसाह भार्या लखमाई तेषां नित्यं प्रणमति साध फागुण
शुदी १० गुरुवासरे श्रीचित्तामणी पाश्वनाथचैत्यालये प्रतिष्ठित ॥
शुभं भवतु ॥ कल्याणमस्तु ॥ जे पूजता ते भवतु ॥ जयस्तु ॥
(विवरण क्र० ३११)

४८ स. १६४९ फा शु १३ मू बलात्कार. म पद्मकीर्ति उप-
देशात् । (विवरण क्र० ४३०)

४९ [सं०] १६५२ वैसाख सुद १४ श्रीमूलसधे बलात्कारगणे
पद्मकीर्ति विद्याभूषण हेमकीर्ति सदुपदेशात् श्रीश्रीमाल " "
(विवरण क्र० २६६, २६९)

५० समत १६५३ वैसाख शुद्ध १४ श्रीमूलसधे बलात्कारगणे मट्टा-
रक हेमकीर्ति उपदेशात् श्री श्रीमालज्ञातौ महासा नित्य प्रणमतु
(विवरण क्र० ४७५)

५१ शके १५१९ मन्मथनामसंवत्सरे वैसाख सुदि त्रयोदशीदिने
घटापित श्रीमूलसधे सरस्वतिगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुदाचा-
र्यान्वये म० श्रीधर्मभूषणोपदेशात् पल्लीवालज्जातीय स. वायासा
तस्य भार्या गगाई तयो पुत्र स लखमसी तस्य भार्या द्वी
गोमाई लालाई तेषा पुत्र द्वौ प्रथमपुत्र स मोतासा द्वितीय
नेमा प्रणमति । (विवरण क्र० १२४)

५२ श्रीमूलसधे सेनगणे वृषभसेनगणधरान्वये श्रीसम्मंतमद्र लक्ष्मी-
सेनमट्टारकउपदेशात् सके १५२१ फागुण सुद पा रवौ सधवी
सोमसेठी श्रीमंगल । (विवरण क्र० १३०)

- ५३ संवत् १६५८ वर्षे आषाढ वदी अगारवालज्ञा० । (विवरण क्र० ४८३) ।
- ५४ शके १५२५ वर्षे शुभकृत् नाम संवत्सरे ज्येष्ठशुक्लपक्षे १३ तिथौ प्रतिष्ठिता । (विवरण क्र० २७१)
- ५५ समत १६६० वर्षे फालगुण शुद्धि १० श्रीकाष्टासधे लाहबाग-डगच्छे म० श्रीप्रतापकीर्ति नन्दिसंघे वधेरवालज्ञातिय-सा मारया वीरूना परिनवाई तयो पुत्र सा० नोगु मा परिहाई श्रीपद्मा-वति प्रणमति श्रीकाष्टासधे नदितटगच्छे मट्टारक श्री श्री श्रीभूपण प्रतिष्ठितं । (विवरण क्र० ४१४)
- ५६ शक १५२५ वर्षे श्रीमूलसधे सेनगणे श्रीमनवृपमसेनगणान्वये म० श्रीलोमसेन तत्पट्टे म० श्रीमाणिकसेन तत्पट्टे म० श्रीगुण-मद्र तत्पट्टे म० श्रीगुणसेन उपदेशात् वधेरवालज्ञातीय खटवड-गात्रे स० श्रीहरकसा मार्या गोलाई तयो सुत स० गणासा मार्या कढताई येते श्रीरत्नत्रयचतुर्विंशति प्रणमति । (विवरण क्र० १९०)
- ५७ समत १६६० वर्षे फाग सुद ॥ गु० श्री एतत्-वा- मुद्गावाई श्रीशीतलनाथदिवका म०-१ । (विवरण क्र० २७८)
- ५८ सक १५२६ माहो सुद १३ मट्टारक हेमकीर्ति उपदेशात् प्रति-ष्ठित सितलसिं-धी-तार्जा सवाल तुरासु (?) रूपा नित्यं प्रण-मति । (विवरण क्र० ४३९)
- ५९ संवत् १६६३ वर्षे "श्रीमूलसधे म० जगतकीर्ति सद्रुपदेशात्-म्बेरान्वये-प्रतिष्ठित (विवरण क्र० ४८६)
- ६० समत १६६४ "महाराजाधिराज श्रीचन्द्रकीर्ति-तत्पट्टे मट्टारक देवेन्द्रकीर्तिजी आम्नाय सरस्वतीगच्छे बलात्कारणे कुदकु टाचा-र्यान्वय प्रतिष्ठितं । (विवरण क्र० २७)
- ६१ समत १६६९ चैत्रसुद १५ रवौ मूलसधे कुं० म० यशोकीर्ति

तत्पट्टे म० ललितकीर्ति तत्पट्टे म० धर्मकीर्ति उपदेशात्-पट्टे-
(विवरण क्र० २१३)

६२ ॐ नमः समत १६७१ वर्षे वैशाख सुद ५ मूलसधे बलात्कार-
गगे सरस्वतीगच्छे कुट्टकुंडाचार्यान्वये म० यशकीर्ति तत्पट्टे म०
धर्मकीर्ति तदुपदेशात् पौरपट्टे सा उदयचंद्र भार्या-अचित्रारा मूले
गोहिलगोत्रे-उदयगौरेंद्र प्रतिष्ठा प्रसिद्धं सोनी ढासोदर निर्मापित
संभवानि म्माहिन प्रतिष्ठामध्ये प्रतिष्ठिन नदिश्वरजिनविंभ ।
(विवरण क्र० २१५)

६३ सवत् १६७२ वर्षे फागुण मित २ निर्था मेहतानगरं लोढागोत्रे
म० वारपान भार्या सकतादेवीभ्या श्रीधर्मनाथविंभ कारितं
प्रतिष्ठिनं श्रीजिनचंद्रसूरिमि । (विवरण क्र० १५८)

६४ म० १५३७ । (विवरण क्र० ४४१)

६५ संमत १६७६ वर्षे माघवदी ८ श्रीकाष्ठामधे लाडवागडगच्छे
मट्टारक श्रीप्रतापकीर्ति आम्नाये वधेरवालज्ञातौ बोरसब्ध्यागोत्रे
धर्मतीसा भार्या अवाई तयो पुत्र लखमणसा प्रमुख पचपुत्र
सभार्या मपुत्र श्रीचन्द्रप्रभु प्रणमति । श्रीकाष्ठामधे नदितट-
गच्छे म० श्रीभूषण प्रतिष्ठित बहादुरपुर । (विवरण क्र० २९८)

६६ ममत १६७६ वर्षे माघवदी काष्ठामगे लाडवागडगच्छे श्रीप्रता-
पकीर्ति उपदेशान् वधेरवाल ज्ञातिय गोवालगोत्रे म० बापु
भार्या लमुना (विवरण क्र० १४३)

६७ [म०] १६८१ पाठवंनाथ मानिक । (विवरण क्र० ४३८)

६८ मवत १६८१ वर्षे चैत्र सुदी ५ रवळ श्रीमूलसधे मट्टारकश्री-
ललितकीर्तिदेवास्तत्पट्टे मडलाचार्यश्रीरत्नकीर्तिदेवास्तत्पट्टे
भाचार्यश्रीचंद्रकीर्तिस्तदुपदेशात् गोलापूर्वान्वये खान नाम गोत्रे
सेठि मानु भार्या चदनसिरी तत्पुत्र सेठि कतुर भार्या किसवा
तस्य पुत्री जादो नित्यं प्रणमति (विवरण क्र० २६५)

- ६९ संमत १६८१ वर्षे माघ सुदी १५ गुरौ म० धर्मकीर्ति उपदेशात्
परवारज्ञातो । (विवरण क्र० २२३)
- ७० संमत १६८१ वै० सु० १ दिने सजालपुरवास्तव्य स० चद्रा
श्रीपाद्वर्चनाथर्विव कारित प्रतिष्ठित श्रीविजयदेवसू [रिमि] ।
(विवरण क्र० २०१)
- ७१ सवत् १६८१ माघ सुदी १ दिन । (विवरणक्र० १०८)
- ७२ भवरगोत्र पानासा समत १६८६ । (विवरण क्र० १४४)
- ७३ सवत् १६८६ श्रीमूलसधे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुदकुदा-
चार्यान्वये म० आधर्मचंद्र तठाम्नीय आ(चार्य)पासकीर्ति
तदुपदेशात् संघवि बरहरसाह गोलसिंधारा रामटेक सातिनाथ
प्रसादेनू ज्येष्ठ वद्य ५ शमि तिलक मंगल शुभ भवतु ॥ छ ॥
(विवरण क्र० २७४)
- ७४ स० १६९१ मा० रत्नकीर्ति । (विवरण क्र० ३८२)
- ७५ समत १६९२ मिति वैसाख वदी ११ सोमवासरे म० धर्मचंद्र-
जी । (विवरण क्र० १२०)
- ७६ शके १५६१ प्रभवनामसवत्सरे फालगुण सुदी द्वितीया मूलसधे
पुष्करगच्छे सेनगणे मट्टारक असोमसेनउपदेशात् प्रतिष्ठित ।
(विवरण क्र० १११)
- ७७ शके १५६१ फालगुण सुदी २ गुरु श्रीमूलसधे पुष्करगच्छे
सेनगणे हुवड । (विवरण क्र० १३४)
- ७८ शक १५६१ फालगुण श्रीमूलसधे सेनगण म० श्रीसोमसेन
तुक्साव गुणासाव बोपासा नित्य प्रणमति । (विवरण
क्र० २११)
- ७९ शके १५६१ फाग वदी १० शनैश्वरे काष्टासधे लाडवागड वन्हा
डगच्छे पुष्करगणे लोहाचार्यान्वये श्रीनरेद्रकीर्ति तत्पट्टे तमो०****

- उ० मा० पामात्रि पु० देवासा नि० प्रतिष्ठितं श्रीलक्ष्मीसेन
प्रतिष्ठितं । (विवरण क्र० २३५)
- ८० शके १५६१ पार्थावनामर्मवत्सरं श्रीमू० व० स० म० धर्म-
चद्रोपदेशात् बघेरवालजातीय सडाखियागोत्रे श्रावण मा० गगाई
तयोपुत्र भाणिक्रमा भार्या गोपाई प्रतिष्ठितं । (विवरण
क्र० ३८९)
- ८१ ममत १७०३ वर्षे ज्येष्ठ वती १० शके श्रीकाण्टामघे लाडवागड-
गच्छे लोहाचार्यान्वये वराहप्रदेगे कारजीनगरे प्रतापकोर्तिभा-
गनाथ बघेरवाल जातीय कावला गोत्र सा श्रीपामसा भार्या
पद्माई तयो सुत सा वण भार्या मणकाई तयो पुत्र द्वौ प्रथमपुत्र
स० श्रीरामा भार्या अवाई द्वितीय पुत्र सा पतसा एते समस्त
श्रीकाण्टामघे नदितटगच्छे म० श्रीरामसेनान्वये तदनुक्रमेण म०
श्रीविश्वमेन तत्पट्टे श्रीविद्याभूषण तत्पट्टे म० श्रीश्रीभूषण तत्पट्टे
श्रीचंद्रकीर्ति तत्पट्टे म० श्रीराजकीर्ति तत्पट्टे म० श्रीलक्ष्मी
सेनजी प्रतिष्ठित । (विवरण क्र० १३५)
- ८२ मूल्यगे बलात्कारगणे म० धर्मभूषणगुरूपदेशात् बघेरवाल
पुत्र सा (मिन्न अक्षरमे) ममत १७०६ वर्षे मी . माह सु०
५ मो पुजामा । (विवरण क्र० ३१०)
- ८३ शके १५७२ ' । (विवरण क्र० ११८)
- ८४ मंमन १७११ म० सकलकीर्ति सा० लाले पुत्रवते प्रणमंति ।
(विवरण क्र० ३३६)
- ८५ अन्नमः सिद्धेभ्य सा म० संवत् १७११ श्रीमहारक ।
(विवरण क्र० ४७६)
- ८६ संवत् १७१३ वर्षे माघ सुदि ११ गुरौ श्रीमूलसघे ब्रह्म श्रीशाति-
दाम तत्पट्टे ब्रह्मश्रीवात्रिराज गुरूपदेशात् कु वड जातीय वाई

- लावाई इति सिद्धयत्रं नित्य प्रणमन्ति । शुभं भूयात् ।
(विवरण क्र० २७५)
- ८७ शक १५७८—सुखनाम मू० स० म० श्रीधर्मभूषण उपदेशात्
तिमासा भार्या वखाई तयो पुत्र भूतसा त० देवाई ।
(विवरण क्र० १८४)
- ८८ शके १५८० माघ सुदी ५ सोमे वारंजानगरे काष्ठासधे नदित्त-
गच्छे म० इन्द्रभूषण प्रतिष्ठित बघेरवालज्ञाति गोवलगोत्रे "मा०
दुलणयाई" प्रणमति । (विवरण क्र० १४१)
- ८९ संवत् १७१५ वर्षे माघ सुदी ५ काष्ठासधे नदित्तगच्छे विद्या-
गणे "बघेरवाल ज्ञातीय बोरखंडियागोत्रे स० खांभा भार्या
पुतलाई तयो पुत्र स० धनजी भार्या पदाई येन सुपाशनाय
प्रणमति । (विवरण क्र० १४२)
- ९० शके १५८० माघ सुदी ५ सोमवार काष्ठासधे नदित्तगच्छे
मट्टारक श्री इन्द्रभूषण प्रतिष्ठित बघेरवालज्ञाती बोरखंडियागोत्रे
तेऊजीसा भार्या जसाई तयो पुत्र पौत्र नाथुसा सा० चिंतामणसा
पुते अशिका नित्य [प्रणमन्ति] (विवरण क्र० ४४७)
- ९१ समत १७१५ माघ सुदी ५ सोमवार काष्ठासधे नदित्तगच्छे
विद्यागणे मट्टारकमसेनान्वये शालकीर्ति तत्पट्टे मट्टारक कर्मी-
सेन तत्पट्टे २० इन्द्रभूषण प्रतिष्ठित सधवी खांभा भार्या पुतलाई
तयो पुत्र म० धनजी भार्या पदाई अशिका प्रणमति काष्ठासधे
लोहाचार्यानवये प्रतापकीर्ति सधवी खांभा भार्या पुतलाई स०
धनजी । (विवरण क्र० ४४८)
- ९२ संवत् १७१५ माघ सुदी ५ सोमे काष्ठासधे लाडवागटगच्छे म०
प्रतापकीर्ति तटाभनाये बघेरवालज्ञाती कावरी "।
(विवरण क्र० ५)

- ९३ शके १५८१ मौ० फा० व० ३ मू० स० म० पञ्चकीर्ति सा० ज्ञा०
बुनसेट भाग्या भ्राता । (विवरण क्र० २०२)
- ९४ श० १५८१ क० व० पञ्च० म० जे० का० ज्ञा० वधेरवाल
लुगाईं डा पु ता सा मा वा मा त (?) ग गु ।
(विवरण क्र० ४०६, ४०६)
- ९५ सक १५८२ स्यावरी नाम मवत्सरं तीथ फालगुण सुद दममी
१०॥ श्रीशार्तीनाथचैत्यालय श्रीबलात्कार गणे सरस्वतीगच्छे
श्रीकुंडकुटाचार्यान् मट्टारक श्रीपद्मकीर्ति उपदेशात् रामटेक नग्न
जार्ती मद्दतवाल रायानी जाईं । (विवरण क्र० २७३)
- ९६ मके १५८२ फालगुण शुद्ध ७ तिलक सेन मट्टारक श्रीजिनसेन
वधेरवालजार्ती चवरियागोत्रे सा० भार्या नित्य प्रणमति ।
(विवरण क्र० ४४५)
- ९७ ममत १७१८ । (विवरण क्र० १२३)
- ९८ शके १५८३ प्रमदनाममचत्परं ज्येष्ठवटी प्रथम य० कु०
म० । (विवरण क्र० २२९)
- ९९ शके १५८६ वर्षे क्रोधनाममवत्सरं तिथी फागुण शुद्ध ५ श्रीमूल-
मंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे म० धर्मचंद्र तरपट्टे म० धर्म-
भूषण महाराज प० नेमाजी भार्या राजाई पुत्र सोयराजी ता
प्रतिष्ठित । (विवरण क्र० २०८)
- १०० शक १५८६ । (विवरण क्र० ३८८)
- १०१ शके १५८९ । (विवरण क्र० ७)
- १०२ शके १५९० वैशाख मूलसद्य सरस्वतीगच्छ बलात्कारगणे
कुंडकुटाचार्यान्वयं मट्टारक कुमुदचंद्र तत्पट्टे म० अजितकीर्ति
त० म० विभ्रालकीर्ति उपदेशात् सोनोपदित रोडे ।
(विवरण क्र० १८०)
- १०३ ममत १७३१ । (विवरण क्र० १२२)

- १०४ सके १५९६ फा० शु ॥ ३ म० ॥ कीर्ति तत्पट्टे दयाभूषण श्रीमू०
स० व० । (विवरण क्र० २२१)
- १०५ शके १५९७ मुलसघ बलात्कारगण म० धर्मभूषण ॐ हरीसाव
पुत्र फकीचद प्रणमति । (विवरण क्र० २२८)
- १०६ श० १५९७ मू० सेनगणे म० जि० तजेगामग्रामे गु० गनसेठ
भा० सिशवाई पु० कृस्ताजी भा० मेगाई पु० जोगाजी प्रणमति ।
(विवरण क्र० ४५७)
- १०७ संमत १७३२ वर्षे ज्येष्ठ सुदी २ श्रीमूलसघे मट्टारक श्रीसुरेंद्र-
कीर्तिस्तदाम्नाये खडेरवालाम्बये गृध्रवालगोत्रे सा देवसी पुत्र
सगहान प्रतिष्ठा कारिता । (विवरण क्र० ३७७)
- १०८ शके १५९७ मू ॥ व ॥ म० श्रीधर्मचंद्रोपदेशात् ऊजानीपट्टी-
वालज्ञातीय माणिकसा तत्पुत्र नारसा सुत शतसा प्रणमति ।
(विवरण क्र० १५९)
- १०९ [श०] १५६७ सु० जीनसेन उ० कखसेठ माहोरकर प्रण-
मति । (विवरण क्र० १६२)
- ११० शके १५६६ पिं० श्रीमू० । (विवरण क्र० ४९७)
- १११ सक १६०१ समत १७३६ । (विवरण क्र० ३५९)
- ११२ सक १६०१ गगशिर्ष । (विवरण क्र० २२०)
- ११३ १६०१ ० श्रीमू० । (विवरण क्र० ४९१)
- ११४ सके १६०१ फालगुण सुदि ११ श्रीमूलसघे बलात्कारगणे
मट्टारकश्रीपद्मकीर्तिलक्ष्मणपदेशात् श्रीपद्मावतीपल्लीवालज्ञाती अडनाव
कृस्तानी पानसी भार्या मगनाई तयोपुत्र बाबुजी प्रणमति ।
(विवरण क्र० २७२)
- ११५ सात्तिनाथ सके १६०४ श्री । (विवरण क्र० ३७५)
- ११६ रा० अरजुनसा सके १६०७ क्रोधनामसवत्सरे मार्गशिर्ष सुदी ५
श्रीमूलसघे खडारियागोत्रे स. पी० । (विवरण क्र० १२९)

- ११७ सातनाथ सके १६०७ ४ माघेरे । (विवरण क्र० ४६२)
- ११८ सके १६०७ "। (विवरण क्र० ४७४)
- ११९ सके १७०७ समत १७४२ । (विवरण क्र० ४५२)
- १२० शके १६०७ प्रमवनाममं वत्सरे फालगुण वदी १० म० धर्मचन्द्र उपदेशात् मु० नगरे ज्ञाते उज्जैनीपल्लीवार गोदसा मार्या मेमाई व० साह मार्या नागाई प्रणमति । (विवरण क्र० १८७)
- १२१ सके १६०८ फागण वदि १० श्रीमूलमधे सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे कुट्टकुटाचार्यान्वये मट्टारक श्रीविशालकोर्तिस्तत्पट्टे म० श्रीपद्मकीर्तिस्तत्पट्टे म० श्रीविद्याभूषण स्वकर्मक्षयार्थं । (विवरण क्र० २६७)
- १२२ संवत् १७४४ मके १६०९ फालगुण सुद १३ श्रीमत्काष्टासधे लाडवागडगच्छे म० प्रतापकीर्ति भाग्नाये वधेरवालज्ञाती गोवाल-गोत्रे सधवी पदाजी मार्या तानाई तयो पुत्र संववी जमनाजी मार्या हासुबाई तयो पुत्रा तुर्य स० पुतलाबा मार्या गंगाई म० पुजावा मा० देवकु म० शीतलावा मा० सकाई इ० पदाजी पते सह नित्य प्रणमति श्रीकाष्टामधे नदितटगच्छे म० इन्द्रभूषण म० सुरेंद्रकीर्ति । (विवरण क्र० १७२, १७४, ४४६)
- १२३ सके १६०६ फा० सु० १३ काष्टासंधे लाडवागडगच्छे प्रतापकीर्त्या-म्नाय म० सुरेंद्रकीर्ति स० पदाजी मा० तानाई पु० राजवा मा० सोनाई पु० अनतोबा मा० पामाई जी प्रतिष्ठितं (विवरण क्र० १७५)
- १२४ सके १६०९ वलात्कार । (विवरण क्र० ४७८)
- १२५ संवत् १७४५ ज्येष्ठ सुदी २ सोमवार श्रीकारजानगरे काष्टासधे प्रतापकीर्तिभाग्नाये वधेरवालज्ञाती वीरखडियागोत्रे सा० मनासा मार्या शकाई तयो पुत्रा श्रव सा अर्जुन मा० रगाई शितलसा मार्या साथरा लक्ष्मणसा मा० जीवाई येसोबा पुतलोबा नित्यं प्रणमति । (विवरण क्र० ४४९)

- १२६ मिती वैसाख सुदी ३ संमत १७४५' १। (विवरण क्र० ६६)
- १२७ समत १७४६ । (विवरण क्र० ३२६)
- १२८ शके १६११ श्री ००। (विवरण क्र० ३६१)
- १२९ स० १७४६ । (विवरण क्र० ३८४)
- १३० समत १७४७ सके १६१२ ज्येष्ठ वदी ७ म० श्रीहृद्रभूषण त० म० सुरेंद्रकीर्ति प्रतिष्ठित श्रीकाष्टासधे लाडवागढगच्छे पुष्करगणे लांहाचार्यान्वये म० श्रीनरेंद्रकीर्ति प० म० श्रीप्रतापकीर्ति आम्नाये वधेरवालज्ञाति गोवालगोत्रे स० बापु पुत्र स० मोज सधवी पदाजी भार्या तानाई पुत्र स० बापु स० जमनाजी स० राजवा अथ सधवी जमनाजी भार्या हसाई समस्त कुटुम्बपरिवार नित्य प्रणमंति दर्शनयत्र श्रीअबदनगर प्रतिष्ठितं । (विवरण क्र० १७६)
- १३१ शके १६१२ ज्येष्ठ वदि ७ श्रीमूलसधे सरस्वतीगच्छ बकाटकारगणे म० श्रीकुदकुदाचार्यान्वय म० धर्मभूषण त० म० विशालकीर्ति त० म० धर्मचन्द्रोपदेशात् वधेरवालज्ञाति खडासो गोत्रे सा० राष्ट्रसा सुत कपुसा भविका नित्य प्रणमंति । (विवरण क्र० ४३२)
- १३२ समत १७५० सवधारी नाम सवत्सरे आषाढ कृष्ण तिय भार्या श्री ०० । (विवरण क्र० ७३)
- १३३ शके १६१७ फा० ५ । (विवरण क्र० ३७८)
- १३४ स० १७५२ भाव वदी ८ श्रीमूलसध म० श्रीहेमकीर्ति गु० त० न न जा सधजी (?) । विवरण क्र० ४११)
- १३५ संवत १७५३ वर्षे वैसाख सुदि ६ सर्ना श्रीकाष्टासधे लाडवागढगच्छे लांहाचार्यान्वये तदनुक्रमे मट्टारक श्रीप्रतापकीर्ति तदाम्नाये वधेरवालज्ञातौ गोवालगोत्रे सधवी मोज भार्या पदमाई तयोपुत्र अरजुन भार्या सकाई तासो पुत्र स० तवना भार्या

- सिता पुत्र सं० मामा भार्या देगई संववी धर्मा भार्या फालाई
तयो पुत्र सं० सितल भार्या देनकु भार्या हिराई तयो पुत्र मोज
द्वितीयभार्या इत्यादि सपरिवारे नित्य प्रणमति । श्रांकाष्टासधे
नदीतटगच्छे म० रामसेनान्वये तदनुक्रमेण म० इन्द्रभूषण तत्पट्टे
म० सु (रेंद्रकीति) । (विवरण क्र० १६९)
- १३६ समत १७५३ वरपे मिठी वैसाख सुदी ३ **पापडीवाल प्रति-
ष्ठित । (विवरण क्र० ५८, ६३, ६४, ८८)
- १३७ शके १६१६ वै० सु० ३ श्रीमूलसध सेनगण । (विवरण क्र०
१६४, २१६)
- १३८ सवत १७५४ मूलसधे सेनगणे पुष्करगच्छे म० छत्रसेनोपदे-
शात्** । (विवरण क्र० ८)
- १३९ [सं०] १७५६ श्रोमु० वा० सं० श्रीदेवेंद्रकीर्ति म० प्रतिष्ठित
मिठी माघ सुद ५ । (विवरण क्र० २०४, ४६९)
- १४० सके १६२२** म० श्री चद्रगुरूपदेशात् । (विवरण क्र०
३३०)
- १४१ शके १६२४ विभवनामसंवत्सरं माघ ।
- १४२ सं० १६२६ म० हेमकीर्ति उपदेशात् प्रतिष्ठित सी० सं० ।
(विवरण क्र० ४१२)
- १४३ शक १६२६ तारणनामसंवत्सरे माहो सुद १३ शुके मूलसंध
वलात्कारगण कुडकुटाचार्यान्वये म० पद्मकीर्ति तत्पट्टे म० विद्या-
भूषण त० म० हेमकीर्ति उपदेशात् उज्जैनापल्लीवालज्ञातीय
सिंगवी लखमप्रसादजी भार्या गोमाई तस्य पुत्र नेमासिंगवी
सितलसिंगवी सितलसिंगवीप्रतिष्ठित मौसीनगरे चंद्रनाथ-
चैत्यालये गुमासा चितामणिसा नित्य प्रणमत्तु (विवरण क्र०
२१०)
- १४४ शक १६२६ तारण संवत्सरं माह सुद १३ मूलसध व० म०

- हेमक्रीर्ति उपदेशात् सितलसंगई प्रतिष्ठितं शुभं भूयात् । (विवरण क्र० १८६)
- १४५ शके १६२८ विमवनामसवत्सरे माघ ० । (विवरण क्र० ३०५, ३३८, ४०१)
- १४६ सक १६३६ जय० फा० दताजी । (विवरण क्र० ४३५)
- १४७ समत १७७२ श्रीमूलसधे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंद (कुटाचार्यान्वये) । (विवरण क्र० ५७)
- १४८ संमत १७७८ चैत्र सुदी ६ श्रीमू० स० । (विवरण क्र० २९)
- १४९ स० १७८३ । (विवरण क्र० ४६३)
- १५० समत १७९१ मूलसध । (विवरण क्र० ११९)
- १५१ समत १७९३ प्र० श्रीमू० स० व० म० श्रीधर्मचंद्रना उपदेशात् ज्ञान वा० भोजसा मा नावाई त० पु० फदआ (?) नित्य प्रणमति । (विवरण क्र० ४०५)
- १५२ सवत १८०० वैसाख शु॥ ३ मौमवासरे श्रीमूलसधे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुदकुदाचार्यान्वये नागपुरमे प्रतिष्ठित । (विवरण क्र० ५१, ५६)
- १५३ समत १८०० वैसाख सुदी ३ । (विवरण क्र० ५६)
- १५४ समत १८१० माघ सुठ २ श्रीमूलसंधे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुदकुदाचार्यान्वये गोपाचलपट्टे मट्टारक श्रीचारुचद्रभूषण तदोपदेशात् नगरे प्रतिष्ठा करारिंता कामठी सदर । (विवरण क्र० २०९)
- १५५ शके १६७६ । (विवरण क्र० ३३५)
- १५६ श्रीमूलसगे सके १६७६ । (विवरण क्र० ४४३)
- १५७ शके १६७७ क्रोधनामसंवत्सरे मार्गशिर्ष सुदी १० बुधे मुलसंध पुष्करगच्छे सेनगणेभ्नाये मट्टारकजी सोमसेनदेवा तत्पट्टे मट्टारक श्रीजिनसेनगुरुपदेशात् कारंजाग्रामवास्तव्य दधेरवालजात

- सावलागोत्रे वीरासाह भार्या द्विराई तयोपुत्र जिनामाह भार्या
गोपाई तयो पुत्र द्वा प्रथम पुत्र तवनासा भार्या अंबाई द्वितीयपुत्र
जितलमाह भार्या पदाई नित्यं प्रणमति । (विवरण क्र० १७७)
- १५८ शक १६७८ माघ सुठ १४ मूलसंघ म० शातिपेनोपदेशात्
प्रतिष्ठितं कारजाग्रामवास्त्रव्येन नेवाज्ञाति कु० गोत्र पु०
चित्तामणसा नित्यं प्रणमन्ति । (विवरण क्र० २१२)
- १५९ ममन १८१४ शके १६७९ । (विवरण क्र० ४४४)
- १६० शक १६८१ फा० व ॥ ६ मू० स० व० कु० म० घर्मचंद्रे
पाठवनाथविंश । (विवरण क्र० १३८)
- १६१ शक १६८६ म० म० व० म० घर्मचंद्र । (विवरण क्र० २०३)
- १६२ शके १६८७ फा० ५ अ० । (विवरण क्र० ४३१)
- १६३ सके १६८७ मन्मथ अजितकीर्तिपदेशान् स० छ रे म टा कं (?)
फा० सु० २ । (विवरण क्र० ४७०)
- १६४ संवत् १८२३ चैत्र वती ८ । (विवरण क्र० ३१६)
- १६५ ममत् १८३७ सके १६९२ वैशाख सुदी १२ उपदेशान् ।
(विवरण क्र० २९९)
- १६६ सके १६९२ मिती चम्पार वत् ११ श्रीमूलसंघे स० व० म०
घर्मचंद्र प्रतिष्ठितं । (विवरण क्र० ६)
- १६७ शके १६९५ । (विवरण क्र० ४६७)
- १६८ सके १६९५ मन्मथनामसंवत्सरं । (विवरण क्र० २३६)
- १६९ सके १६९७ फा ॥ ५ अ० वावजि । (विवरण क्र० ४५६)
- १७० सके १६९७ म० म० म० म० अजितकीर्ति । (विवरण
क्र० ४६५)
- १७१ सके १६९७ म० फा० सु० ५ म० अ० मना । (विवरण क्र०
४७३)
- १७२ सके १६९७ फा० ५ अ० अय ति० । विवरण क्र० ४७७)

- १७३ (सके) १६६७ फा० ५ अ० ज० ल० । (विवरण क्र० ४७६)
- १७४ शके १६९७ मन्मथनामसंवत्सरे अजितकीर्ति उपदेशात् परवार हिरामन फाल० शु० द्वितीया २ । (विवरण क्र० ४८०)
- १७५ सके १६६७ मनाजी सेठ म० अ० । (विवरण क्र० ४२३)
- १७६ शके १६९७ मि० फा० २ " नथु । (विवरण क्र० ३१५)
- १७७ समत १८३२ मन्मथनामसंवत्सरे मू० व० स० कु० म० पद्मकीर्ति म० विद्याभूषण म० हेमकीर्ति तत्पट्टे अजितकीर्ति फालगुण मासे शुद्ध २ पंचपरमेष्ठी । (विवरण क्र० २२७)
- १७८ शक १६६७ नाम सवत्सरे म० अजितकीर्ति उपदेशात् फा० सु० २ । (विवरण क्र० २०६)
- १७९ शके १६९८ मु० (विवरण क्र० ३२४)
- १८० श्रामुलसर्षी सके १७०५ । (विवरण क्र० ४४०)
- १८१ सक १७०७ चैत्र वद १३ श्रा मूलसधे सरस्वतीगच्छ वलाकार-गण । (विवरण क्र० ७६)
- १८२ समत १८२५ सके १७१० श्रीमत्काष्टासधे लाडवागड नदितट-गच्छे म० सुरेंद्रकीर्ति तत्पट्टे म० सकलकीर्ति तत्पट्टे म० लक्ष्मी सेनजी श्रीबघेलवालजाति जुगिया गोत्रे...काष्टासधगार्ढी । (विवरण क्र० १३३)
- १८३ सके १७१० शै कीलनामसंवत्सरे मित्ती श्रावण सुद १२ श्री-मूलसध चिमनाजी सरावणे तथ पुत्र भुरारजी । (विवरण क्र० १२८)
- १८४ सा० १७१० काष्टासधी वर्सासा जोगी । (विवरण क्र० १७३)
- १८५ समत १८४६ कार्तिक सुदी ४ काष्टासधे नदितटगच्छे श्रीलक्ष्मासेनजी प्रतिष्ठित... । (विवरण क्र० १३२)
- १८६ समत १८५२ महारक...उपदेशात् रामलालेन प्रतिष्ठित । (विवरण क्र० ४६८)

- १८७ सके १७१८ संवत् १८५३ मार्गेश्वर । (विवरण क्र० ४६२, ४६६)
- १८८ ॐ नम. सिद्धेभ्य समत १८५७ शके १७२२ मादवा सुदी १० सोमवासरे कु दकुंदाचार्याग्नाय सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे म० श्री श्री श्री भजितकीर्ति तस्य उपदेशात् गोहिल परवार ज्ञाते - सगल भूयात् । (विवरण क्र० ३१)
- १८९ माल १७०३ मवत् १८५८ फागवती २ । (विवरण क्र० ४०५)
- १९० संमन १८५९ शके १७२४ ला नागपूरमध्ये म० रत्नकीर्ति उपदेशात् । (विवरण क्र० ३०, ४४, ४५)
- १९१ समत १८५६ दुद्रुमिनामसंवत्सरे नागपूरनगरे रघुवरराज्ये म० श्रीरत्नकीर्तिउपदेशात् श्रीपरवार वशे । (विवरण क्र० ३२)
- १९२ समन १८५६ शके १७२४ श्री मूलसंघ बलात्कारगणे सरस्वती-गच्छे म० रत्नकीर्ति उपदेशात् नागपूरनगरे रघुवरराज्ये परवारा-न्वये सेतगागर गोहिल्लगोत्र भायां प्रतिष्ठा करार्पित । (विवरण क्र० ३३, ४३)
- १९३ समत १८६१ वैसाख सुदी ५ सोमवासरे सवाईजयनगरे श्री-सुरेंद्रकीर्तिउपदेशात् हिरा प्रतिष्ठा कारिता । (विवरण क्र० ३४६)
- १९४ सवत् १८६६ फाल्गुण कृष्ण ५ शुक्रवारे श्रीमूलसधे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये प्रतिष्ठित । (विवरण क्र० ३७०, ३७२)
- १९५ संमत् १८६८ फागुण सुदी ७ बुध श्रीमूलसधे बलात्कारगण सरस्वतीगच्छ प्रतिष्ठित । (विवरण क्र० ११०)
- १९६ शके १७४३ श्रीमूल । (विवरण क्र० ४८१)
- १९७ शके १७४४ श्रीमूलसंघ । (विवरण क्र० ९०, १७१)
- १९८ संवत् १८८१ वर्षे माघ मासे शुद्ध ५ सोम श्रीकाष्टासधे म०

- सुरेंद्रकीर्ति सन्निध्य म० देवेंद्रकीर्ति राजोमान जाति यद्येववाक ।
(विवरण क्र० १७०)
- १६१ समन १८८१ म० म० य० आचार्य श्रीरामकीर्ति उपदेवान्...
प्रतिष्ठित श्रीरामराजनीनगरं । (विवरण क्र० १६२)
- २०० मधत १८८५ श्रीमन्मद्य मरस्वनीगच्छे अन्तःकारणणे कृदकृदा-
चार्यान्वय सद्धारक श्रीदेवेंद्रकीर्ति उपदेवान्...प्रतिष्ठितं ।
(विवरण क्र० ५२)
- २०१ मंथन १८८७ मार्गशिर्ष घट १० गुरुदिने श्रीमनःश्रीमद्ये लाल-
बागदगच्छे म० प्रतापकीर्ति श्रीमन्नाथ नटिनटगच्छे म० सुरेंद्रकीर्ति
तस्य म० देवेंद्रकीर्ति राजमान जाति यद्येववाक गौत्र श्रीमन्का
मा० गेमाया पु० पुनाया यंत्र प्रणाम्यानि । (विवरण क्र० ३९२)
- २०२ मंथन १८८७ श्रीमन्मद्ये मरस्वनीगच्छे अन्तःकारणणे कृदकृदा-
चार्यान्वय श्रीमनःश्रीमद्ये धर्मचन्द्रदेवान् गणपट्टे सद्धारक देवेंद्र-
कीर्तिदेवान् गणपट्टे म० पञ्चनदिदेवान् गणपट्टे म० देवेंद्रकीर्ति-
देवान् उपदेवान् यद्येववाक पामया मरया मरमग्राममध्ये प्रतिष्ठा
कराणि । (विवरण क्र० ४२८)
- २०३ समन १८८७ शके १७५२ श्रावणमासे शुक्लपक्षे जी० ४
श्रावणमासे अन्तःकारणणे शंखापुरपट्टाधिकारी श्रीमन् म०
देवेंद्रकीर्तिराजीनी शीर्षे शिथ प्रतिष्ठितं ।
(विवरण क्र० ५७१)
- २०४ श० १९०० समन १८८७ गेमाया सुदी ७ गुरुवार स्वस्ति श्री-
मन्मद्ये अन्तःकारणणे मरस्वनी गच्छे कृदकृदाचार्यान्वय म०
धर्मचन्द्रदेवान् गणपट्टे म० देवेंद्रकीर्तिदेवान् म० म० पञ्चनदि-
देवान् कायेंद्रपुरपट्टाधिकारी श्रीमन् देवेंद्रकीर्तिउपदेवान्
शैरामशंभे मिरमग्रामे माणिक्या यद्येववाक गणपुत्र पामा गौत्र
चरं प्रतिष्ठा कराणि । (विवरण क्र० १९१)

- २०५ समत १८८७ का ज्येष्ठ सुदी ९ विंशतिनामसवत्सरे श्रीमू० स० व० कु० म० पद्मनदिदेवात् तत्पट्टे म० देवेंद्रकीर्तिं० प्रतिष्ठा करान्वितं । (विवरण क्र० २८)
- २०६ संवत् १८८८ वैशाख कृष्ण ५ रविवासरे श्रीमूलसधे व० स० श्रीकु० इद प्रतिमा कारयेत् श्रीसकलपचकमेतिके स्वकर्मक्षयार्थं प्रतिमा प्रतिष्ठिनिये । (विवरण क्र० ५५)
- २०७ संमत १८८८ । (विवरण क्र० १०६)
- २०८ समत १८८६ वैशाख शुक्ल ११ गुरुवासर मूलसध व० स० कुटकुटाचार्यान्वय । (विवरण क्र० ८५)
- २०९ समत १८८९ वृषभायणे० । (विवरण क्र० १०३)
- २१० संमत १८९१ शके १७५६ जयनामसवत्सरे श्रावणमासे कृष्ण-पक्षे पराग्नी मूलसंधे स० व० कारंजानगरे इद पद्मादेवि श्री-महेवेंद्रकीर्तिंस्वामिना प्रतिष्ठितम् । (विवरण क्र० २३७)
- २११ समत १८९३ वर्षे माघ सुद १० बुधदिनी मूलसध कुटकुटा-चार्याभ्याय व० स० मट्टारकपद्मनदिदेवात् तत्शिष्य म० देवेंद्र-कीर्तिदेवात् तत् उपदेशात् भार्या हिता पुत्र नेसुराम आता दामजी भार्या लाडव प्रतिष्ठितं प्रणमंति । (विवरण क्र० १८६)
- २१२ स० १८९३ श्रीमू० नागपुर शंभाशू च० । (विवरण क्र० ३९६)
- २१३ श्रीमूलसध सक १७५९ । (विवरण क्र० ४५४, ४५८)
- २१४ श्रीसंवत् १८६४ साल आपाढ व॥ ६ श्रीमहावीर स्वामीजीका सुख । (विवरण क्र० ४६, ५०)
- २१५ समत १८९७ शके १७६७ भगवतिनामसवत्सरे वैशाख सुदी ३ बुधवासरे इद श्रीपाद्वर्नाथस्वामी श्रीमूलसधे सरस्वतोगच्छे बलात्कारगणे कुटकुटाचार्यान्वये मट्टारक श्रीमद्देवेंद्रकीर्तिस्वामी

- नागपुरे प्रतिष्ठित । (विवरण क्र० २१४)
- २१६ सवत १८९८ मिति आषण सुदि ८ सोमदिने नागपुरे श्रीपार्श्व-
नाथचैत्यालये इदं बल्लाघात्रायत्र प्रतिष्ठित (विवरण क्र० २७०)
- २१७ समत १८६६ फागुण सुदी ७ बुधवासरे श्रीमूलसग बाल्लाकार
गण सरस्वतीगच्छ कुदकुदाग्नाये तेन प्रतिज्ञानुसारेण प्रतिमा
प्रतिष्ठितं गोपीसाह । (विवरण क्र० ३३२)
- २१८ श्रीमूलसघे शके १७६४ । (विवरण क्र० ११२)
- २१९ श्रीपारसनाथजी सक १७६५ २^{०००}नाम संवत्सरे । (विवरण
क्र० ७७)
- २२० समत १९०० सके १७६५ सोयल नाम संवत्सरे चैत्र सुदी ३
सोमवासरे श्रीमूलसघे सरस्वतीगच्छे बल्लाकारगणे नागपुरे
पार्श्वनाथचैत्यालये भय मेरु देवेन्द्रकीर्तिस्वामीना प्रतिष्ठित ।
(विवरण क्र० १८१)
- २२१ सवत १९०० शके १७६५ सोमवक नाम सत्वसरे चैत्र सुद
३ सोमवार मूलसघे सरस्वतीगच्छे बल्लाकारगणे श्रीनागपुरे
श्रीमत् चिंतामणिपार्श्वनाथचैत्यालये श्रीशान्तिनाथस्वामी देवेन्द्र-
कीर्तिस्वामीना प्रतिष्ठितं । (विवरण क्र० १७८, १७९)
- २२२ समत १९०२ माघ शु॥ १३ (विवरण क्र० २८३, २००)
- २२३ समत १९०२ माघ सुदी तेरसां भ० देवेन्द्रकीर्ति हस्तेन सुखा-
लाल प्यारलाल प्रतिष्ठा करार्यिता । (विवरण क्र० ३४२)
- २२४ शके १७६७ । (विवरण क्र० ३६५)
- २२५ समत १९०२ शके १७६७ तेरयोदिवसे प्रतिष्ठितं । (विवरण
क्र० ३६)
- २२६ सवत १९०४ शके १७६६ मिति वैसाख सुदी १३ बुधवासरे
इदं श्रीचन्द्रनाथस्वामी प्रतिष्ठा श्रीमत्देवेन्द्रकीर्तिस्वामी तेन
प्रतिष्ठितं । (विवरण क्र० ६०, ६१)

२२७ संमत १६०४ शके १७६६ प्लवगनामसवत्सरे मिति वैशाख सुदी १३ बुधवामरे इद सुनिसुवत् स्वामी श्रीमूलसघ बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुडकुडाचार्यान्वये म० श्रीमद् देवेन्द्रकीर्ति उपदेशात् बघेरवालवश चचरियागोत्रे रत्नगवाब्जा श्रीनागपुरे प्रतिष्ठित । (विवरण क्र० २२४)

२२८ संमत १६०४ मिति वैशाख सुदी १३ । (विवरण क्र० २८०)

२२९ सवत् १९०७ शके १७७७ मिति श्रावणसुदी ५ सोमवार नागपुरनगर श्रीमूलसघ सरस्वतीगच्छ बलात्कारगण श्रीपाद्भर्वा नाथस्वामिचैत्यालये इद पञ्चावतिदेवि प्रतिष्ठित ।

(विवरण क्र० २३४)

२३० सवत् १९०७ शके १७७२ मिति श्रावण सुदी ५ सोमवामरे नागपुरनगर मुलमघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीपाद्भर्वा नाथस्वामीचैत्यालये अथ पाद्भर्वा नाथप्रतिमा म० देवेन्द्रकीर्तिस्वामिना प्रतिष्ठित । (विवरण क्र० १९६)

२३१ संमत १६०७ मिति श्रावण सुद ५ म० स० व० नागपुरं पाद्भर्वा नाथदेवालये प्रतिष्ठित । (विवरण क्र० १८५, ३८५)

२३२ अथ मेरु डगोलीग्रामे शातीनाथस्वामीचैत्यालये स्थापित सवत् १६०८ शक १७७३ वर्षे विरोबकृतनामसंवत्सरं श्रावणमासे शुक्लपक्षे १० बुधवामरे मुलसघ सरस्वतीगच्छ बलात्कारगणे कुडकुडाचार्यान्वये नागपुरनगरं पाद्भर्वा नाथस्वामीचैत्यालये अथ मेरु जिनान् श्रीदेवेन्द्रकीर्तिस्वामीना प्रतिष्ठाप्य डगोलीग्रामे स्थापित (विवरण क्र० १६५)

२३३ संमत १९०८ शक १७७३ श्रावण सुद १० बुधवार मुलसघ सरस्वतीगच्छ बलात्कारगण कुडकुडाचार्यान्वये नागपुरनगरं श्रीपाद्भर्वा नाथस्वामीचैत्यालये अथ श्रीनेमिजिन देवेन्द्रकीर्ति प्रतिष्ठित ।

(विवरण क्र० २१७, २३०)

- २३४ शके १७७५ पार्थिवनामसंवरसरे ज्येष्ठ सुदी ११ तिलक श्री-
मूलसंघे सैनगणे पुष्करगच्छे गुणमद्भदेवात् तत्पट्टे श्रुतवीरदेवात्
तत्पट्टे म० माणिकसेनदेवात् त० नेमसेनउपदेशात् बधनोरा
ज्ञाति माणिकसेटी भार्या सोनाई तस्य पुत्र धायसेटी भार्या
गुणाई तस्य पुत्र धायसेटी भार्या रत्नाई लखमणसेटी भार्या
धरवाई रगसेटी भार्या भाकाई इदं प्रतिष्ठा केली द्वितीय साखा
म० गुणमद्भदेवा तत्पट्टे म० लक्ष्मीसेनश्री प्रतिष्ठितं थी आयाजी
लखमजी रगो (विवरण क्र० २२६)
- २३५ समत १६१३ शके १७७८ मिती फाग सुदी २ मुळसय
सरस्वतीगच्छ बलात्कारगण कुंदकुंदान्वय अनतनाथस्वामी
नागपूरे प्रतिष्ठित (विवरण क्र० १८३)
- २३६ समत १९१५ शके १७८० माघ सुदी ३ म० स० व० कु०
प्रतिष्ठित । (विवरण क्र० १६८)
- २३७ मा थं धा म न (?) संवत् १९१५ । (विवरण क्र० ४१६)
- २३८ संमत १९१६ मि० फाग सुद ११ श्री म० स० व० कु०
द्विरालालसा ठाकूर । (विवरण क्र० ३४, ५३)
- २३९ समत १६१६ मि० फाग सुद ११ श्री म० स० व० कु०
छुखुसा साव । (विवरण क्र० ३५, ३६, ३२८, ३२६)
- २४० समत १६१६ फागुण सुद ११ समतांवृतं (?) कुंदकुंदान्वाय
गणहु गगाराम । (विवरण क्र० ३७)
- २४१ संवत् १९१६ मि० फागुण सुदी ११ श० श्रीम० स० व० कु०
अय श्रीअजितनाथस्वामी सुखीसाव परवार तेन प्रतिष्ठित ।
(विवरण क्र० ४१, २८६, २८८-२९०, २६३, ३०३, ३०८, ३३१)
- २४२ समत १६१६ मिती माघ सुदी १० श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे
बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये अय श्रीमहावीरस्वामीजी
भट्टारक श्रीदेवेंद्रकीर्ति स्वामीजी उपदेशात् संवुरामजी तस्य

- पुत्र भागचंदजी अजमेरा त्वडेरवाल श्रावकेन प्रतिष्ठित गुरु-
चामरे नागपुर शुम्भारोपेठ थोजिनचैत्यालय । (विवरण क्र०
६५, ६६, ७०, ७५, ७६)
- २४३ संमत १६१६ मिती माघ सुदी १० गुस्वार । (विवरण क्र०
६७, ६८, ८२)
- २४४ समत १९१६ मिती माघ सुदी १० मरुपचड अजमेरा तेन
प्रतिष्ठित । (विवरण क्र० ७१)
- २४५ संमत १६१६ माघ सुदी १० मूलसवे प्रतिष्ठित ।
(विवरण क्र० ७८)
- २४६ समत १९१६ माघ सुदी १० गुस्वारं श्रीमू० स० व० कुं०
नेमिनाथस्वामीजिन । (विवरण क्र० ८१, १६९)
- २४७ समत १६१६ मिती माघ सुदी १० गुस्वारं श्रीमू० स० व०
भट्टारकचंद्रकीर्तिस्वामीजी हस्तेन प्रतिष्ठित नागपुरमध्ये ।
(विवरण क्र० ८६)
- २४८ समत १९१६ मि० फा० सुदी ११ शनिवार श्रीमू० स० व०
कुं० अथ श्रीभाद्रिनाथ श्रीचंद्रकीर्ति स्वामीना प्रतिष्ठित ।
(विवरण क्र० २८७)
- २४९ समत १९१६ मिती फागुण सुदी ११ शनिवारं नागपुरनगरं
श्रीमहावीरस्वामीचैत्यालये श्रीमूलसवे स० व० कुं० अथ
श्रीपाद्वर्धनाथस्वामीजी श्रीचंद्रकीर्ति स्वामीजी स्वहस्तेन
प्रतिष्ठित । (विवरण क्र० २९१)
- २५० समत १६१६ मिती फागुण सुदी ११ शनिवारं श्रीमू० स० व०
कुं० नागपुरनगरं श्रीजिनचैत्यालये अथ श्रीभाद्रिनाथस्वामी
मूलनाथक म० श्रीचंद्रकीर्तिस्वामी उपदेशात् गङ्गुरदास
तत्पुत्र मनीलाल परवार बोल्ल मुर कोळल गोत्र ते प्रतिष्ठित ।
(विवरण क्र० ३६६)

- २५१ संवत् १६१६ मिथी माघ . । (विवरण क्र० ८६, ४२७)
- २५२ संवत् १६२५ मार्गशिर्ष सुदी ५ गुरु श्रीमू० म० हेमकीर्ति
तत्पट्टे म० करा । (विवरण क्र० २८०)
- २५३ संवत् १९२५ का माघ सुदी ५ सोमवारे श्रीमूलसंघे बलात्कार-
गणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये नागौरपट्टे म० हेम-
कीर्ति उपदेशात् रामटेकमध्ये संघवी मनालालेन प्रतिष्ठित ।
(विवरण क्र० २८४)
- २५४ संवत् १९२५ श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये
नागौरपट्टे म० श्रीविद्याभूषणजी तत्पट्टे भट्टारक र्याहम-
कीर्तिजी तदाम्नाय परवालान्वये कोछलगोत्रे संघवी भुरसीदास
तत्पुत्र मनालालेन प्रतिष्ठा करान्वितं । (विवरण क्र० ४)
- २५५ संवत् १९२५ शके १७६० विभवनाम संवत्सरे शुक्लपक्षे तीर्था
७ बुधवासरे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदा-
चार्याम्नाये हृदं प्रतिमा टेवेंद्रकीर्ति स्वामान हस्ते नागपुरमध्ये
चोमालाल तस्य भार्या वीराबाई ने प्रतिष्ठा करान्वित ।
- २५६ श्राजिनो जयन्ति ॥ श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्रेभ्यो नमः । संवत्
१९२५ का शक १७६० का विभवनामसंवत्सरे सिमरकता
मासात्मासोत्तममासं मार्गशिर्षमासं शुभे शुक्लपक्षे तिथा ५
पंचमी गुरुपुत्र उत्तरापाठ नक्षत्रे राजनामयागे श्रीनागपुरवा-
स्तव्यमे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे नंदाम्नाय
कुंदकुंदाचार्यान्वये श्रीनागौरपट्टे भट्टारकी श्री हरपकीर्तिजी
तत्पट्टे म० श्रीविद्याभूषणजी तराडणे (?) दक्षत्राकुक्षे धुरामोरी
गोत्रे संघवी कृपारामजा तत्पुत्र कलुपाऊजा भार्या हीराबाई
तत्पुत्र वृथपाल माधजी छोटेलाळ तेन मपरिचारण संघवी
कटुपाऊ श्रीप्रतिष्ठा करापित ॥ श्रीरस्तु ॥ श्रयामस्तु ॥ रक्षित-
मस्तु ॥ (विवरण क्र० २८५)

- २५७ श्रीसमत १६२५ शक १७९० विभवनामसवत्सरं मिती वैसाख-
मामे शुक्लपक्षे तीर्था ७ बुधवासरं श्रीमूलसवे धालात्कारगणे
श्रीमरस्वर्तीगच्छे श्रीकु दकुटाचार्यान्वये श्रीचन्द्रप्रभस्वामीन
प्रतिमाया श्रीमद् देवेन्द्रकीर्तिस्वामीहस्ते श्रीनागपूरमध्ये प्यारे-
सावजी भार्या पुनाघाई परवार तेने प्रतिष्ठा करार्षित ।
(विवरण क्र० २९४)
- २५८ समत १९२५ वै० शु ॥७ सु० कु० दे० नागपूरमध्ये गुमान-
साव तस्य पुत्र सुडामणसा तस्य पुत्र भांजराज परवार तंन
प्रतिष्ठा करान्वित । (विवरण क्र० २९६)
- २५९ समत १९२५ वैसाख शुद्ध ७ बुध० श्रीमू० स० व० कु०
श्रीपाश्र्वनाथस्वामीना देवेन्द्रकीर्तिस्वामीनहस्ते नागपूरमध्ये
प्रतिष्ठितं । (विवरण क्र० ३१०-१४)
- २६० समत १९२५ वैसाख सुदी ७ प्रतिष्ठितं मनबोध जिन मुंगा-
वाई । (विवरण क्र० ३२७)
- २६१ समत १९२५ मिता प्रघण सुदी ५ प्रतिष्ठा नागपूरमध्ये भादि-
नाथजी । (विवरण क्र० ३३६)
- २६२ समत १९२५ शक १७९० आदिनाथम्बार्मी ।
(विवरण क्र० ३४४)
- २६३ समत १६२५ का मिती माघ सुदी ५ सोमवासरं श्री मूलसव
ध० स० बुदकुटाचार्यान्वये नागौरपट्टे भ० श्रीविद्याभूषणजी
तस्पट्टे भ० हेमकोतिना तटाभ्नायवरती पडित सवाईरामोपदेशात्
परवारान्वये कोळलुगोत्रे सघई तुलसीदास तस्पुत्र म० लाल
कुजलाल विहारीलालेन प्रतिष्ठा की । (विवरण क्र० ३५५)
- २६४ समत १६०५ वैसाख सुदी ७ बुधवारं श्रीमूलसवे धालात्कारगणे
सररवर्तीगच्छे कुदकुटाचार्याम्नाये महारकश्रीमहेवेंद्रकीर्ति
प्रतिष्ठितं । (विवरण क्र० ३७१)

- २६५ समत १६०५ माघ सुदी ५ सोमं प्रतिष्ठितं ।
(विवरण क्र० ३७३-४)
- २६६ श्रीमूलसंग्रहे " समत १६०६ प्रभवनाम संवत्सरे श्रावण व ॥५॥
(विवरण क्र० ४५१)
- २६७ समत १९०८ प्रभवनामसंवत्सरेऽऽ माघ शुक्ल द्वादशीतिथी
बुधवारं प्रतिष्ठाचार्य श्रीमत देवेंद्रकीर्तिमठारक प्रतिष्ठा करणार
प्यारंसात्र मनामाय । (विवरण क्र० ३३३)
- २६८ श्रीपारमनाथजी संमत १६२८ । (विवरण क्र० २१०)
- २६९ मघन १९०८ प्रजापतिनामसंवत्सरे माघशुक्ले द्वादशीतिथी बुध-
वारं प्रतिष्ठाचार्यश्रीमन् देवेंद्रकीर्ति मठारक प्रतिष्ठा करविणार
मनालाल मवाहंसघवी । (विवरण क्र० ४२)
- २७० मघत १६२८ (विवरण क्र० ३८)
- २७१ ॐ चंद्रनाथ येन समत १९३३ । (विवरण क्र० ७०)
- २७२ समत १६३६ शके १८०४" प्रतिष्ठाचार्य त्रिगालकिर्ती मठारक
प्रतिष्ठा करविणार सुनीयावाहं परचार्गिन । (विवरण क्र० २७९)
- २७३ श्रीपारमनाथजी सं० १९४८ (विवरण क्र० ३०४)
- २७४ ममा १९५२ वैशाख सुदि १३ सोमवासरे प्रतिष्ठितं ।
(विवरण क्र० ८४)
- २७५ सं० १०५८ व० सु० १२ पनागा जीजासाव ।
(विवरण क्र० ४००)
- २७६ संमत १६५८ वैशाख शुद्ध १५ मूलसंग्रहे कुट्टकुट्टान्माये मठारक
देवेंद्रकीर्ति प्रतिष्ठितं । (विवरण क्र० ३७६)
- २७७ मा० शी० ७ श्री० रा० व० म्व० वा० श्री० अ० प्र० ना०
सं० १९६१ । (विवरण क्र० ४१८)

* यह संस्कार नाम गलत प्रतीत होता है ।

२७८ संमत १९६१ मिती ज्येष्ठ शु ॥ १० श्रीवार्धमने स्वामी उपदेशान् चांगाम्नात्र गंगाम्नावजी चवरे याहानी प्रतिष्ठा करविला ।

(चित्रण क्र० १४५)

२७९ नागपुर शेतवाल मन्दिद प० रवि० समत १९६१ मार्गशिर्य व ॥ मसन्ध्यां पण्डितवर्य रामचन्द्र ब्रह्मचारिणां पञ्च शेतवाल अनुगया प्रतिष्ठित इद प्रतिमा । (चित्रण क्र० १०७)

२८० नमन १९६६ हुंभ्नाय मिचनीनम्र प्रतिष्ठितं ।

(चित्रण क्र० ३२५)

२८१ वीरमंमन २४३६ मि० मा० शु ॥ ५ सु० वा० ग० प्रतिष्ठितं ।

(चित्रण क्र० ४३७)

२८२ समत १९६८ ज्येष्ठ सुद ८ शुक्रवामने मुरुसवे वल्गाकारगणे नरस्वर्तीगच्छे कारजापुने पट्टाधिकारी न० देवेन्द्रकीर्तिन्वामी उपदेशान् शिग्वरजीका पाटुका ग्त्रडलवालज्ञातिय पाटणीगोत्र हजानीलाल गंडालाल येन प्रतिष्ठा कगपितं नागपुरनगने ।

(चित्रण क्र० १६७, २३३)

२८३ नमन १९७६ पण्डित रामभाउना प्रतिष्ठित कन्हेयालालजी गरीशे यांचे आडेचे नन्दिउवर व्रतंचापनायं ।

(चित्रण क्र० २२२)

२८४ स्वस्ति श्री २४५८ श्रीवार्धसंवन्मने १९८८ चिक्रम मावमासे शुक्लपक्षे दशम्यां तिथौ बुववामने श्रीमूलसंचे बळगाकारगणे सरस्वतीगच्छे हुंउकुडाचार्यान्नाये फण्डिपुरनिवामी परवारज्ञातिय जेलामूर गोहृष्टगोत्रोत्पन्न परमानंदप्रजात्मज परवारभूषण फत्तेचंद्रदिपचदाभ्यां छपारानगने प्रतिष्ठित ।

(चित्रण क्र० ३२०-२३)

२८५ श्रीमहावीरनिर्वाणसंमत २४६० चिक्रम संमत १९९० शके १८५५ फालगुण शुद्ध १२ सोमवार श्रीमूलसंच सरस्वतीगच्छ

बलात्कारण श्रीकुंडकुंदाचार्याम्नाथांतोक्त वासक गोत्रांतील परवारजाति नागपूरनिवासी शेट फनईकाल नेमिचंदजी यांनी दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र गजपंथ चैथील श्री ६० जीवराज गौतम-चंद्र सोलापूर याचे प्रतिष्ठामध्ये श्रीमहावीर तीर्थंकराचे विंध प्रतिष्ठित केले असे ॥ (विवरण क्र० ६२)

२८६ श्रीमद्देवाधिदेव १०८ भगवान् शान्तिनाथ तीर्थंकर जिनविंध प्राणप्रतिष्ठा स्मृति श्री १०८ म० विशालकीर्तिस्वामीमहाराज सस्थान तक्त लातूर गात्री नागपूर पट्टाचार्य सद्गुपदेशात् नाग-पूरस्थ दि० जैन सैतवाल समाज चारसंवत् २४६१ मित्ता मार्ग-शिर्ष कृष्ण १२ इयाम् कृतस्ति शम् । (विवरण क्र० १०४-५)

२८७ श्रीमद्देवाधिदेव १०८ भगवान् आदिनाथ तीर्थंकर जिनविंध प्राण-प्रतिष्ठा स्मृति श्री १०८ म० विशालकीर्तिस्वामीमहाराज सस्थान तक्त लातूर गात्री नागपूर पट्टाचार्य सद्गुपदेशात् नाग-पूरस्थ दिगम्बर जैन सैतवाल समाज च श्री० राजाराम दुर्ध-साय ऋतोलकरणप्रतिमा जाणित्ता प्रतिष्ठाचार्य श्री० पंडितवर्य रामभाळ महागणोपाध्याय पंडित श्री० अखिल सैतवाल जैन राजगुरुर्षाठ सस्थान तक्त लातूर गात्री नागपूर घोरसंवत् २४६१ मित्ता मार्गशिर्ष कृष्ण १२ इयाम् कृतस्ति शम् ।

(विवरण क्र० १०६)

२८८ स्मृति श्री १०८ श्रीमहाराजविशालकीर्ति उषदक्षान म० २४६१ मार्गशिर्ष कृष्ण १२ इयाम् पुर्धा प्रतिष्ठितं ।

(विवरण क्र० ३८६-७, ३६६-४, ४१५ ७)

[आनिश्चित समयकं लेख]

२८९ संवत् १५४ - संघ र नी गा पुत्रा न र नी (?)

(विवरण क्र० ४१०)

- २९० सं० १५ सुद १३ सकला पुत्र मनसुख भार्या महना ।
(विवरण क्र० ४२२)
- २९१ सवत १५ - ६ वर्षे वैसाख सुदि ३ अगलदिने अट्टारकजिन-
चढाग्नाये गोलापूर्व संघे इळाम । (विवरण क्र० १६३)
- २९२ समत १-६१ वर्षे वैसाख सुदी को जीवराज ।
(विवरण क्र० ७४)
- २९३ संके १-७६ शुभकृत नाम सवत्सरे कार्तिक शुद्ध प्रतिपदा १
शुभवार सावरगावग्राम श्रीभाटिनाथचैत्यालये श्रीमह्मिचन्द्र
अट्टारकठपदेशात् तस्य श्रावक तिमार्जी पलसापुरे तस्य भार्या
वचाई व गगाई तस्य पुत्र येकुजि कोनेरवा तस्य यत्र ।
(विवरण क्र० २०६-२७७)
- २९४ ७म वैसाख सुदी ३ पुत्र मोती भार्या म ।
(विवरण क्र० ३९७)
- [अज्ञात समयके लेख]
- २९५ सवत वैसाख मासे शुद्ध ३ मौमवासरे श्रीमूलसाधे बलात्कारगणे
सगस्वतीगच्छे कुंदकुटाचार्याग्नाये तेन प्रतिज्ञानुसारेण प्रतिष्ठितं
नागपूरमध्ये । (विवरण क्र० ५४)
- २९६ मीकाजी । (विवरण क्र० ११६)
- २९७ मूलसाध बलात्कारगण पितल्यागोत्रे रामासा भार्या नेमाई पुत्र
रतनसा भार्या पठमाई द्वितीय पुत्र हिरासा भार्या पुजाई तृतीय
पुत्र तवनासा चतुर्थ पुत्र पदाजी श्रीचंद्रप्रभ प्रतिष्ठा
संवत् । (विवरण क्र० १३१)
- २९८ श्रीकाष्टासव नदितटगच्छ म० श्रीरामसेनान्वये म० श्रीलक्ष्मी-
सेनजी प्रतिष्ठित । (विवरण क्र० १३६)
- २९९ श्रीवासुपूज्य जिनवर । (विवरण क्र० १८२)

- ३०० ... महाराजाधिराज... देवेंद्रकीर्ति बलात्कारगण सरस्वती
[गच्छ]' । (विवरण क्र० १९३)
- ३०१ म० हेमकीर्ति उपदेशात् स० प्रतिष्ठितं । (विवरण क्र० २०७)
- ३०२ हेमराज तस्य पुत्र हसराज भार्या तमाबाई प्रतिष्ठा माघ सुदी ...।
(विवरण क्र० २८१)
- ३०३ सातनाथ । (विवरण क्र० ३५३)
- ३०४ श्री आदिसर । (विवरण क्र० ३५८)
- ३०५ श्रीमू० स० म० श्रीधर्मचंद्रोपदेशात् रामसेन ।
(विवरण क्र० ३७९)
- ३०६ श्रीमू० म० जि० का प सेठ प्र (१) (विवरण क्र० ३८१)
- ३०७ श्रीमूलसवे म० श्रीसुवनकीर्ति । (विवरण क्र० ३९०-४३३)
- ३०८ श्रीमूलसग । (विवरण क्र० ३९८, ४०३, ४५६, ४८६)
- ३०९ श्रीमू० स० व० । (विवरण क्र० ४००)
- ३१० श्रीधर्मचंद्रोपदेशात् कषरसेठ । (विवरण क्र० ४०४)
- ३११ ललमनसा रूपा । (विवरण क्र० ४०७)
- ३१२ व्र० प० नेमीचन्द्रजी । (विवरण क्र० ४२०)
- ३१३ सेनगण म० श्रीलक्ष्मीसेन च्यारित्रमति सेवक देवाचे चंद्रा-
इत्ये । (विवरण क्र० १६४)
- ३१४ मू० व० ल० धर्मचंद्र हेमसेठ नित्यं ता ।
(विवरण क्र० ४४२)
- ३१५ मूलसवे म० सुरेन्द्रकीर्ति प्र... । (विवरण क्र० ४५५)
- ३१६ मू० म० जि० पार वा ग३ (१) (विवरण क्र० ४६४)
- ३१७ श्रीआदिनाथ सा० श्रीवंत । (विवरण क्र० ४६६)
- ३१८ मू० संघ तानसेठ वमनौसा । (विवरण क्र० ४७२)
- ३१९ श्रीमूलसंघ ब्रह्म. मल्लिदास सा भार्या सखाई ।
(विवरण क्र० ४८८)

- ३२० श्रीमूलसंघ साकराजी पुजारी ना । (विवरण क्र० १२५-६)
३२१ रखवमा ठवली । (विवरण क्र० १२७)
३२२ बावार्जी वढलकार । (विवरण क्र० ४६४)
३२३ मू० भ० जि० गडमेठ स्वहित । (विवरण क्र० ४६५)
३२४ श्रीमूलमंघे म० श्रीमल्लिभूषण सा० लखा भार्या अजी सुता
सोनाई । (विवरण क्र० १६१)

मन्दिरों व मूर्तियोंका विवरण

[१] अजितनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर, केलीबाग, नागपुर ।

- १ अजितनाथ (सफेद पाषाण १ $\frac{१}{२}$ फुट) लेख क्र० १८
- २ पार्श्वनाथ (सफेद पाषाण १ फु० २ इ०) लेख क्र० १८
- ३ " " " लेख क्र० १८
- ४ पार्श्वनाथ (धातु ६ इ०) लेख क्र० २५४
- ५ चौबीसी (धातु ४ इ०) लेख क्र० ९२
- ६ पार्श्वनाथ (धातु ४ $\frac{१}{२}$ इ०) लेख क्र० १६६
- ७ धर्मनाथ (धातु ४ इ०) लेख क्र० १०१
- ८ पार्श्वनाथ (धातु ५ इ०) लेख क्र० १३८

लेखरहित प्रतिमाएँ — शान्तिनाथ (धातु ७ इ०), चौबीसी
(काला पाषाण १ $\frac{१}{२}$ फुट), पार्श्वनाथ (धातु ३ $\frac{१}{२}$ इ०),
चन्द्रप्रभ (काला पाषाण ९ इ०) पार्श्वनाथ (काला-
पाषाण ६ इ०)

पार्श्वनाथ (काला पाषाण ८ इ०) यक्षिणी (कृष्ण पाषाण
१० इ०) ।

[२] दिगम्बर जैन मन्दिर, मस्कासाथ, नागपुर

- ६ आदिनाथ (सफेद पाषाण २ $\frac{१}{२}$ फु०) लेख क्र० १८
- १० पद्मप्रभ (सफेद पाषाण १ फु०) लेख क्र० १८
- ११ आदिनाथ (सफेद पाषाण १० इ०) लेख क्र० १८
- १२ पार्श्वनाथ (सफेद पाषाण १ फु०) लेख क्र० १८
- १३ अजितनाथ (सफेद पाषाण १० इ०) लेख क्र० १८

- १४ चन्द्रप्रभ (मफेट पापाण १० इ०) लेंग क्र० १८
 १५ आदिनाथ (मफेट पापाण १० इ०) लेंग क्र० १८
 १६ मुपाश्वनाथ (,) लेंग क्र० १८
 १७ पाश्वनाथ (मफेट पापाण १ फु०) लेंग क्र० १८
 १८ त्रामुपुञ्ज (मफेट पापाण ११ इ०) लेंग क्र० १८
 १९ पाश्वनाथ (काला पापाण १ फु० २ इ०) लेंग क्र० १८
 २० पाश्वनाथ (मफेट पापाण १ इ०) लेंग क्र० १८
 २१ चन्द्रप्रभ (मफेट पापाण १० इ०) लेंग क्र० १८
 २२ अजितनाथ (,,) लेंग क्र० १८
 २३ पाश्वनाथ (मफेट पा० १ फु० २ इ०) लेंग क्र० १८
 २४ आदिनाथ (मफेट पा० ३ इ०) लेंग क्र० १८
 २५ नैमिनाथ (मफेट पा० ८ इ०) लेंग क्र० १८
 २६ मुपाश्वनाथ (मफेट पा० १० इ०) लेंग क्र० १८
 २७ पाश्वनाथ (मफेट पा० १ फु० ३ इ०) लेंग क्र० ६०
 २८ पाश्वनाथ (काला पा० ११ इ०) लेंग क्र० २०५
 २९ पाश्वनाथ (काला पा० १० इ०) लेंग क्र० १४८
 ३० पाश्वनाथ (धातु १ फु०) लेंग क्र० १६०
 ३१ पाश्वनाथ (धातु १० इ०) लेंग क्र० १८८
 ३२ पाश्वनाथ (धातु ९ इ०) लेंग क्र० १९१
 ३३ पद्मप्रभ (धातु ११ इ०) लेंग क्र० १०२
 ३४ श्रीश्रीमी (धातु ३ इ०) लेंग क्र० २३८
 ३५ श्रीश्रीमी (धातु ७ इ०) लेंग क्र० २३६
 ३६ श्रीश्रीमी (धातु ७ इ०) लेंग क्र० २३९
 ३७ पाश्वनाथ (धातु ६ इ०) लेंग क्र० २४०
 ३८ आदिनाथ (धातु ३ इ०) लेंग क्र० २७०
 ३९ चन्द्रप्रभ (मफेट पा० ११ इ०) लेंग क्र० २२५

- ४० मुनिसुव्रत (सफेद पा० १० इ०) लेख क्र० ७
 ४१ अजितनाथ (धातु ५ इ०) लेख क्र० २४१
 ४२ धर्मनाथ (धातु ७ इ०) लेख क्र० २६६
 ४३ चौबीसी (धातु १० इ०) लेख क्र० १६२
 ४४ यक्षिणी (धातु ५ इ०) लेख क्र० १९०
 ४५ यक्षिणी (धातु ७ इ०) लेख क्र० १९०। लेखरहित प्रतिमाएँ—
 पाश्र्वनाथ (धातु १ से ४ इ० की दस प्रतिमाएँ)

[३] दिगम्बर जैन मन्दिर, किराणा बाजार, नागपुर

- ४६ पाश्र्वनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १८
 ४७ पाश्र्वनाथ (काला पा० १ फु०) लेख क्र० १८
 ४८ सुपाश्र्वनाथ (सफेद पा० १० इ०) लेख क्र० १८
 ४९ महावीर (काला पा० ४^१/_२ फु०) लेख क्र० २१४
 ५० चन्द्रप्रभ (सफेद पा० १ फु० ३ इ०) लेख क्र० २१४
 ५१ मुनिसुव्रत (सफेद पा० १ फुट) लेख क्र० १५२
 ५२ पाश्र्वनाथ (सफेद पा० १ फुट) लेख क्र० २००
 ५३ चौबीसी (धातु ६ इ०) लेख क्र० २३८
 ५४ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० १^३/_४ फुट) लेख क्र० २९५
 ५५ पाश्र्वनाथ (धातु १० इ०) लेख क्र० २०६
 ५६ पाश्र्वनाथ (सफेद पा० २ फु० २ प्रतिमाएँ) लेख १५२
 ५७ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १४७
 ५८ पाश्र्वनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १३६
 ५९ सुपाश्र्व (पीला पा० ७ इ०) लेख क्र० १५३
 ६० चन्द्रप्रभ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० २२६
 ६१ पाश्र्वनाथ (पीला पा० १ फु०) लेख क्र० २२६
 ६२ महावीर (धातु १ फु० ३ इ०) लेख क्र० २८५

६३ चन्द्रप्रभ (काला पा० १ फु०) लेख क्र० १३६

६४ नेमिनाथ (काला पा० १ फु०) लेख क्र० १३६

लेखरहित प्रतिमाएँ - पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ $\frac{१}{२}$ फु०),
पार्श्वनाथ (धातु २ से ३ इ० ४ प्रतिमाएँ), चन्द्रप्रभ (काला
पा० ११ इ० २ प्रतिमाएँ), अज्ञातचिह्न मूर्ति (स्फटिक,
१ $\frac{१}{२}$ इ०), यक्षिणी (धातु ४ इ०)

[४] दिगम्बर जैन मन्दिर, जुनी शुक्रवारी पेठ, नागपुर

६५ महावीर (धातु ८ इ०) लेख क्र० २४२

६६ आदिनाथ (सफेद पा० १ फु० २ इ०) लेख क्र० १२६

६७ सिद्ध (धातु ५ $\frac{१}{२}$ इ०) लेख क्र० २४३

६८ नन्दीश्वर (धातु ६ $\frac{१}{२}$ इ०) लेख क्र० २४३

६९ पंचमेरु (धातु १ $\frac{१}{२}$ फु०) लेख क्र० २४२ (दो प्रतिमाएँ)

७० चन्द्रप्रभ (सफेद पा० ६ इ०) लेख क्र० २७१

७१ चौबीसी (धातु ३ इ०) लेख क्र० २४४

७२ चौबीसी (धातु १ फु०) लेख क्र० २४२

७३ महावीर (सफेद पा० ६ इ०) लेख क्र० १३२

७४ आदिनाथ (सफेद पा० ११ इ०) लेख क्र० २३२

७५ शातिनाथ (धातु ७ $\frac{१}{२}$ इ०) लेख क्र० २४२

७६ आदिनाथ (धातु १ फुट २ इ०) लेख क्र० २४२

७७ पार्श्वनाथ (धातु २ इ०) लेख क्र० २१६

७८ चन्द्रप्रभ (धातु ४ इ०) लेख क्र० २४५

७९ चौबीसी (धातु ४ इ०) लेख क्र० १८१

८० पार्श्वनाथ (धातु ४ इ०) लेख क्र० १०

८१ नेमिनाथ (धातु ५ इ०) लेख क्र० २४६

८२ आदिनाथ (काला पा० ७ इ०) लेख क्र० २४३

- ८३ पाश्र्वनाथ (लाल पा० ७ इ०) (लेख क्र० २४)
 ८४ पाश्र्वनाथ (धातु ३३ इ०) लेख क्र० २७४
 ८५ चन्द्रप्रभ (धातु २३ इ०) लेख क्र० २०८
 ८६ वामुपूज्य (काला पा० ७ इ०) लेख क्र० २५१
 ८७ पाश्र्वनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १८
 ८८ पाश्र्वनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १३६
 ८९ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० १ फु० १ इ०) लेख क्र० २४७
 ९० यक्षिणी (धातु ६ इ०) लेख क्र० १९७

लेखरहित प्रतिमाएँ - पाश्र्वनाथ (काला पा० १ फु०), आदिनाथ (काला पा० ६ इ०), आदिनाथ (काला पा० ३३ इ०), मिष्ट (धातु ७३ इ०, दो मूर्तियाँ), यक्षिणी (धातु ४ इ० दो मूर्तियाँ)

[५] दिगम्बर जैन सैतवाल मन्दिर, इतवारी बाजार, नागपुर

- ९१ पाश्र्वनाथ (सफेद पा० १ फु० ६ इ०) लेख क्र० १८
 ९२ आदिनाथ (सफेद पा० १ फु० ६ इ०) लेख क्र० १८
 ९३ आदिनाथ (सफेद पा० १ फु० ३ इ०) लेख क्र० १८
 ९४ पाश्र्वनाथ (सफेद पा० १० इ०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
 ९५ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० ११ इ०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
 ९६ पाश्र्वनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १८
 ९७ पाश्र्वनाथ (काला पा० १० इ०) लेख क्र० १८
 ९८ चन्द्रप्रभ (काला पा० ८ इ०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
 ९९ सुपाश्र्वनाथ (सफेद पा० ११ इ०) लेख क्र० १८
 १०० अजितनाथ (लाल पा० ११ इ०) लेख क्र० १८
 १०१ सुनिमुच्चत (सफेद पा० ११ इ०) लेख क्र० १८
 १०२ सुपाश्र्वनाथ (सफेद पा० १० इ०) लेख क्र० १८

- १०३ चन्द्रग्रह (मन्त्र पा० १ पु०) लेख क्र० २०६
 १०४ शान्तिनाथ (धानु ११ इ०) लेख क्र० २८६
 १०५ बाहुवली (धानु १० इ०) लेख क्र० २८६
 १०६ पार्श्वनाथ (काला पा० ८ इ०) लेख क्र० २०७
 १०७ पार्श्वनाथ (धानु ११ इ०) लेख क्र० २०६
 १०८ नन्दीश्वर (धानु २ इ०) लेख क्र० ७१
 १०९ आदिनाथ (धानु ११ इ०) लेख क्र० २८७
 ११० नैमिनाथ (काला पा० १ पु०) लेख क्र० १९५
 १११ पार्श्वनाथ (काला पा० १० इ०) लेख क्र० ७६
 ११२ जीर्वासा (धानु ५ इ०) लेख क्र० २१८
 ११३ शान्तिनाथ (धानु ४ इ०) लेख क्र० १२
 ११४ शान्तिनाथ (धानु ५ इ०) लेख क्र० ४
 ११५ पार्श्वनाथ (धानु ४ इ०) लेख क्र० ३
 ११६ पार्श्वनाथ (धानु ५ इ०) लेख क्र० २९६
 ११७ पार्श्वनाथ (धानु ५ इ०) लेख क्र० २३
 ११८ पार्श्वनाथ (धानु ४ इ०) लेख क्र० ८३
 ११९ पार्श्वनाथ (३ इ० धानु) लेख क्र० १५०
 १२० यक्षिणी (धानु २ इ०) लेख क्र० ७५
 १२१ यक्षिणी (धानु ५ इ०) लेख क्र० २६
 १२२ यक्षिणी (धानु ७ इ०) लेख क्र० १०३
 १२३ यक्षिणी (धानु ८ इ०) लेख क्र० ६७
 १२४ गन्धर्वयंत्र (धानु ९ इ०) लेख क्र० ५१
 १२५ मन्थस्त्रयंत्र (धानु ८ इ०) लेख क्र० ३२०
 १२६ दृगलक्षण यंत्र (धानु ८ इ०) लेख क्र० ३२०
 १२७ मन्थस्त्रयंत्र (धानु ८ इ०) लेख क्र० ३२०
 १२८ पौष्टकारण यंत्र (धानु १२ इ०) लेख क्र० १८३

१०३ कृष्णवर्णन चित्र (घानु ३ इंच) लेंग क्र० ११६
 लेखकहित प्रतिमाएँ - चन्द्रप्रभ (काला पा० ६ इंच शो मूर्तियाँ),
 चण्डनादिका (घानु ३ इंच. शो पादुका) अश्विननाथ (कडा
 पा० ४ इंच), चैतन्या (घानु ५ इंच शो मूर्तियाँ) पार्श्व-
 नाथ (घानु-छोटी छोटी ८ मूर्तियाँ) चण्डनादिका (घानु ३
 इंच. शो पादुका).

[६] डिगन्डर जैन मन्दिर, लाडगुग इन्वारा, नागपुर.

- १३० पार्श्वनाथ (घानु १० इंच) लेंग क्र० ५२
 १३१ चन्द्रप्रभ (मण्डे पा० १० इंच) लेंग क्र० २६३
 १३२ शीतलनाथ (मण्डे पा० १० इंच) लेंग क्र० १८५
 १३३ पार्श्वनाथ (मण्डे पा० १ फु०) लेंग क्र० १२२
 १३४ शान्तिनाथ (मण्डे पा० ११ इंच) लेंग क्र० ३३
 १३५ शङ्करा (घानु ११ इंच) लेंग क्र० २१ (शो मूर्तियाँ)
 १३६ शङ्करा (घानु १० इंच) लेंग क्र० २६८
 १३७ अमृत चिह्न मूर्ति (घानु ९ इंच) लेंग क्र० २१
 १३८ पार्श्वनाथ (घानु २ ३/४ इंच) लेंग क्र० १६०
 १३९ चैतन्या (घानु ३ इंच) लेंग क्र० ३२
 १४० पार्श्वनाथ (घानु ३ इंच) लेंग क्र० १
 १४१ पार्श्वनाथ (काला पा० ९ इंच) लेंग क्र० ८८
 १४२ मुनिपार्श्वनाथ (काला पा० १० इंच) लेंग क्र० ८९
 १४३ पार्श्वनाथ (काला पा० १ फु०) लेंग क्र० ६६
 १४४ पार्श्वनाथ (घानु १ इंच) लेंग क्र० ३२
 १४५ आश्विननाथ (घानु १० इंच) लेंग क्र० २३८
 १४६ चन्द्रप्रभ (मण्डे पा० १० इंच) लेंग क्र० १८
 १४७ पार्श्वनाथ (मण्डे पा० ६ इंच) लेंग क्र० १८

- १४८ भरनाथ (मफेट्ट पा० १० इ०) लेख क्र० १८
 १४९ पद्मप्रभ (मफेट्ट पा० १० इ०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
 १५० मुनिसुव्रत (मफेट्ट पा० ११ इ०) लेख क्र० १८
 १५१ अजितनाथ (मफेट्ट पा० ११ इ०) लेख क्र० १८
 १५२ पार्श्वनाथ (मफेट्ट पा० ११ इ०) लेख क्र० १८
 १५३ पार्श्वनाथ (मफेट्ट पा० १ फु० २ इ०) लेख क्र० १८
 (दो मूर्तियाँ)

- १५४ भरनाथ (मफेट्ट पा० ८ इ०) लेख क्र० १८
 १५५ चन्द्रप्रभ (मफेट्ट पा० ६ इ०) लेख क्र० १८
 १५६ आदिनाथ (४ इ० धातु) लेख क्र० १८
 १५७ चौबीसी (धातु ६ इ०) लेख क्र० ९
 १५८ धर्मनाथ (धातु ६ इ०) लेख क्र० ६३
 १५९ पार्श्वनाथ (धातु ४ इ०) लेख १०८
 १६० वासुपूज्य (धातु ५ इ०) लेख क्र० १३
 १६१ आदिनाथ (धातु ४ इ०) लेख क्र० ३२४
 १६२ चिह्नरहित मूर्ति (धातु ३ इ०) लेख क्र० १०६
 १६३ पार्श्वनाथ (धातु ६ इ०) लेख क्र० २६१
 १६४ श्रेयामनाथ (धातु ३ इ०) लेख क्र० ३१३
 १६५ सुमतिनाथ (धातु ७ इ०) लेख क्र० २०
 १६६ आदिनाथ (धातु ३ इ०) लेख क्र० २
 १६७ पंचपरमेष्ठी (धातु ५ इ०) लेख क्र० ८
 १६८ रत्नत्रय मूर्ति (धातु ६ इ०) लेख क्र० २०
 १६९ चौबीसी (धातु ११ इ०) लेख क्र० १३५
 १७० सरस्वती (धातु ५ इ०) लेख क्र० १९८
 १७१ यक्षिणी (धातु ३ इ०) लेख क्र० १६७
 १७२ रत्नत्रय यंत्र (धातु ३ इ०) लेख क्र० १२२

- १७३ खन्नय यंत्र (धानु ३ इं०) लेग्य क्र० १८२
 १७४ द्वालक्षण यंत्र (धानु ३ इं०) लेग्य क्र० १२०
 १७५ खन्नय यंत्र (धानु ३ इं०) लेग्य क्र० १०३
 १७६ खन्नय यंत्र (धानु ३ इं०) लेग्य क्र० १३०

लेग्यरहित प्रतिमापे - चौबीसी (काला पा० १ फुट), मिठ
 (धानु ६ इं०, षो मूर्तियों), नदीश्वर (धानु ५ इं०),
 पाञ्चनाथ (काला पा० ३ इं० फु० चौबीसी के मध्यस्थित),
 पद्मावती (मफेट पा० २ फु०), पद्मावती (धानु ० इं०),
 पद्मावती (धानु ६ इं०), पद्मावती (धानु १० इं०),

[७] पाद्वंप्रभु दिगम्बर जैन बडा मन्दिर, इनवारी, नागपुर

- १७७ पाञ्चनाथ (धानु १ इं० फु०) लेग्य क्र० १५०
 १७८ शातिनाथ (धानु १ फु० २ इं०) लेग्य क्र० २२१
 १७९ आदिनाथ (धानु १ फु० २ इं०) लेग्य क्र० २०१
 १८० नन्दीश्वर (धानु ५ इं०) लेग्य क्र० १०२
 १८१ पंचमेरु (धानु ११ इं०) लेग्य क्र० २०० (चार मूर्तियों)
 १८२ वामुपूज्य (धानु ७ इं०) लेग्य क्र० २६६
 १८३ अनन्तनाथ (धानु ० इं०) लेग्य क्र० २३५
 १८४ पाञ्चनाथ (धानु ४ इं०) लेग्य क्र० ८०
 १८५ चौबीसी (धानु ३ इं०) लेग्य क्र० २३१
 १८६ चौबीसी (धानु ८ इं०) लेग्य क्र० १४४
 १८७ चौबीसी (धानु ९ इं०) लेग्य क्र० १००
 १८८ खन्नय मूर्ति (धानु ३ इं०) लेग्य क्र० ११
 १८९ महावीर (धानु १० इं०) लेग्य क्र० २११
 १९० चौबीसी (धानु ६ इं०) लेग्य क्र० ५६
 १९१ क्षेत्रपाल (धानु ६ इं०) लेग्य क्र० २०४

- १९२ सरस्वती (धातु ५ इंच) लेख क्र० १६६ (दो मूर्तियाँ)
 १९३ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु० २ इंच) लेख क्र० ३००
 १९४ यक्षिणी (धातु ४ इंच) लेख क्र० १३७
 १९५ पञ्चमेरु (धातु २ फुट ९ इंच) लेख क्र० २३२
 १९६ पार्श्वनाथ (धातु १ इंच फु०) लेख क्र० २३० (दो मूर्तियाँ)
 १९७ आदिनाथ (धातु १० इंच) लेख क्र० २८२
 १९८ बाहुवली (धातु ७ इंच) लेख क्र० २३६ (दो मूर्तियाँ)
 १९९ आदिनाथ (धातु ७ इंच) लेख क्र० २४६
 २०० पार्श्वनाथ (धातु ४ इंच) लेख क्र० ३४
 २०१ पार्श्वनाथ (धातु ३ इंच) लेख क्र० ७०
 २०२ पार्श्वनाथ (धातु ३ इंच) लेख क्र० ६३
 २०३ पार्श्वनाथ (धातु ३ इंच) लेख क्र० १६१
 २०४ चौबीसी (धातु ४ इंच) लेख क्र० १३६
 २०५ चन्द्रप्रभ (धातु ५ इंच) लेख क्र० २८
 २०६ पार्श्वनाथ (धातु ५ इंच) लेख क्र० १७८
 २०७ पार्श्वनाथ (धातु ४ इंच) लेख क्र० ३०१
 २०८ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १० इंच) लेख क्र० ९९
 २०९ पञ्चमेरु (धातु २ फु० ३ इंच) लेख क्र० १५४ (दो मूर्तियाँ)
 २१० चौबीसी (धातु १० इंच) लेख क्र० १४६
 २११ पार्श्वनाथ (धातु ५ इंच) लेख क्र० ७८
 २१२ पार्श्वनाथ (धातु ४ इंच) लेख क्र० १५८
 २१३ चन्द्रप्रभ (धातु ४ इंच) लेख क्र० ६१
 २१४ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु० ३ इंच) लेख क्र० २१५
 २१५ नन्दीश्वर (धातु १ फु०) लेख क्र० ६२
 २१६ चौबीसी (धातु ३ इंच) लेख क्र० १३७
 २१७ नेमिनाथ (काला पा० १ फु० ३ इंच) लेख क्र० २३३

- २१८ आदिनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १६
 २१९ पद्मप्रभ (सफेद पा० १० इ०) लेख क्र० १६
 २२० चर्मिठ ऋद्धि (धातु ५ इ०) लेख क्र० ११२
 २२१ पार्श्वनाथ (धातु ३३ इ०) लेख क्र० १०४
 २२२ चौबीसी (धातु ३३ इ०) लेख क्र० २८३
 २२३ पार्श्वनाथ (धातु ५ इ०) लेख क्र० ६६
 २२४ मुनिमुद्रत (काला पा० १ फु० ३ इ०) लेख क्र० २२७
 २२५ पार्श्वनाथ (धातु ५३ इ०) लेख क्र० ३७
 २२६ चौबीसी (धातु १० इ०) लेख क्र० २३४
 २२७ शांतिनाथ (धातु ६ इ०) लेख क्र० १७७
 २२८ श्रेयांम (काला पा० ७ इ०) लेख क्र० १०५
 २२९ चिन्ह रहित मूर्ति (काला पा० १० इ०) लेख क्र० ६८
 २३० आदिनाथ (सफेद पा० १० इ०) लेख क्र० २३३
 २३१ मुनिसुव्रत (सफेद पा० ३ फु० ३ इ०) लेख क्र० ५
 २३२ पार्श्वनाथ (सफेद पा० ३ फु० ३ इ०) लेख क्र० ५
 २३३ गिरतरजी पादुका (सफेद पा० १३ फु०) लेख क्र० २८२
 २३४ पद्मावती (धातु ११ इ०) लेख क्र० २०९
 २३५ यक्षिणी (धातु ७ इ०) लेख क्र० ७०
 २३६ यक्षिणी (धातु ६ इ०) लेख क्र० १६८
 २३७ पद्मावती (धातु ११ इ०) लेख क्र० २१०
 २३८ आदिनाथ (सफेद पा० १ फु० २ इ०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
 २३९ आदिनाथ (सफेद पा० ९ इ०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
 २४० शीतलनाथ (सफेद पा० ९ इ०) लेख क्र० १८
 २४१ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १० इ०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)
 २४२ पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु० ३ इ०) लेख क्र० १८ (दो मूर्तियाँ)

- २२३ पाञ्चनाथ (सफेद पा० १३ इ०) लेख क्र० १८ (दों मूर्तियाँ)
 २२४ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० १ १ ०) लेख क्र० १८ (दों मूर्तियाँ)
 २२५ पद्मप्रभ (सफेद पा० ६ इ०) लेख क्र० १८
 २२६ मुनिसुव्रत (साँवला पा० ८ इ०) लेख क्र० १८ (दों मूर्तियाँ)
 २२७ चन्द्रप्रभ (साँवला पा० ६ इ०) लेख क्र० १८
 २२८ आदिनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १८ (दों मूर्तियाँ)
 २२९ सुपाञ्चनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १८
 २३० सुपाञ्चनाथ (सफेद पा० ६ इ०) लेख क्र० १८
 २३१ सुमतिनाथ (सफेद पा० ७ इ०) लेख क्र० १८
 २३२ अरनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १८ (दों मूर्तियाँ)
 २३३ नेमिनाथ (सफेद पा० १० इ०) लेख क्र० १८ (दों मूर्तियाँ)
 २३४ सुपाञ्चनाथ (सफेद पा० ९ इ०) लेख क्र० १८
 २३५ अजितनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १८
 २३६ श्रयांसनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० १८
 २३७ मुनिसुव्रत (सफेद पा० ११ इ०) लेख क्र० १८ (दों मूर्तियाँ)
 २३८ पाञ्चनाथ (सफेद पा० २ फु० ४ इ०) लेख क्र० १८
 २३९ अजितनाथ (लाल पा० १० इ) लेख क्र० १८
 २४० चन्द्रप्रभ (सफेद पा० ७ इ०) लेख क्र० १८ (दों मूर्तियाँ)
 २४१ नेमिनाथ (लाल पा० ११ इ०) लेख क्र० १८
 २४२ पार्श्वनाथ (लाल पा० १० इ०) लेख क्र० १८
 २४३ पार्श्वनाथ (धातु २ इ०) लेख क्र० १८ (दों मूर्तियाँ)
 २४४ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० ५ इ०) लेख क्र० १८
 २४५ सम्यक्चारित्र्यंत्र (धातु ८ इ०) लेख क्र० ६८
 २४६ टङ्गलक्षण यंत्र (धातु ५ इ०) लेख क्र० ४६
 २४७ सम्यक्चारित्र्यंत्र (धातु ८ इ०) लेख क्र० १२१
 २४८ सम्यक्दर्शन यंत्र (धातु ५ इ०) लेख क्र० ३६

- २६६ मन्मथकृत्राग्नियंत्र (धानु ५ इंच) लेख क्र० ४९
 २७० ब्रह्मयंत्र (धानु ८ इंच) लेख क्र० २१६
 २७१ मन्मथदशानयंत्र (धानु ५ इंच) लेख क्र० २४
 २७२ मन्मथदशानयंत्र (धानु ७ इंच) लेख क्र० ११४
 २७३ उमालक्षणयंत्र (धानु ६ इंच) लेख क्र० २५
 २७८ कल्पिकृतयंत्र (धानु ७ इंच) लेख क्र० ७३
 २७५ सिद्धयंत्र (धानु ६ इंच) लेख क्र० ८६
 २७६ यौदकाकारगद्यत्र (धानु १४ इंच) लेख क्र० २६३
 २७७ उमालक्षणयंत्र (धानु ११ इंच) लेख क्र० २७३
 लेखरहित मूर्तियाँ - मन्मथपि (धानु ५ से ८ इंच)
 पार्श्वनाथ (काला पा० ३ फु० २ इंच), आदिनाथ (पीला
 बालुकापायाग २ फु० २ इंच)

[८] दिगन्तर जैन परिवार मन्दिर, इनवारी, नागपुर

- २७८ शीतलनाथ (धानु ४ इंच) लेख क्र० ५७
 २७९ जैमिनाथ (धानु ७ इंच) लेख क्र० २७२
 २८० पुष्पदन्त (धानु ५ इंच) लेख क्र० २७२
 २८१ पार्श्वनाथ (मण्ड पा० ११ इंच) लेख क्र० ३०३
 २८२ चन्द्रग्रह (पीला पा० ६ इंच) लेख क्र० २८८
 २८३ पार्श्वनाथ (काला पा० ६ इंच) लेख क्र० २२२
 २८४ शैलेशी (धानु ५ इंच) लेख क्र० २५३
 २८५ पार्श्वनाथ (मण्ड पा० ५ १/२ फु०) लेख क्र० २७६
 २८६ पार्श्वनाथ (धानु ६ १/२ इंच) लेख क्र० २६१ (दो मूर्तियाँ)
 २८७ आदिनाथ (धानु ६ इंच) लेख क्र० २८८
 २८८ बानुद्वय (धानु ६ इंच) लेख क्र० २६१
 २८९ महावीर (धानु ५ इंच) लेख क्र० २४१

- २९० अजितनाथ (धातु ६ इ०) लेख क्र० २४१
 २९१ पार्श्वनाथ (धातु १ $\frac{१}{२}$ फु०) लेख क्र० २४६
 २९२ पार्श्वनाथ (धातु २ इ०) लेख क्र० २६८
 २९३ चोर्वासी (धातु ६ $\frac{३}{४}$ इ०) लेख क्र० २४१
 २९४ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० ५ फु०) लेख क्र० २५७
 २९५ नेमिनाथ (सफेद पा० २ फु० २ इ०) लेख क्र० २५७
 २९६ नेमिनाथ (धातु ८ इ०) लेख क्र० २५८
 २९७ पार्श्वनाथ (धातु ८ $\frac{३}{४}$ इ०) लेख क्र० २५७
 २९८ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० १० इ०) लेख क्र० ६२
 २९९ अजितनाथ (काला पा० ४ इ०) लेख क्र० १६५
 ३०० चिह्नरहितमूर्ति (काला पा० ५ इ०) लेख क्र० २२२
 ३०१ आदिनाथ (धातु ६ इ०) लेख क्र० २५७
 ३०२ चिह्नरहित मूर्ति (सफेद पा० १० इ०) लेख क्र० ६
 ३०३ चोर्वासी (धातु ४ $\frac{३}{४}$ इ०) लेख क्र० २४१
 ३०४ पार्श्वनाथ (धातु २ इ०) लेख क्र० २७३
 ३०५ पार्श्वनाथ (धातु २ इ०) लेख क्र० १४५
 ३०६ पार्श्वनाथ (धातु २ इ०) लेख क्र० ४१
 ३०७ अजितनाथ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० ४०
 ३०८ अनन्तनाथ (धातु ८ इ०) लेख क्र० २४१
 ३०९ सुपार्श्वनाथ (काला पा० ११ इ०) लेख क्र० २६
 ३१० चिह्नरहितमूर्ति (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० ८२
 ३११ मुनिमुवत (काला पा० ११ इ०) लेख क्र० ४७
 ३१२ पार्श्वनाथ (सफेद पा० ९ इ०) लेख क्र० २५६
 ३१३ मुनिमुवत (सफेद पा० ७ इ०) लेख क्र० २५६
 ३१४ आदिनाथ (सफेद पा० ११ इ०) लेख क्र० २५९
 ३१५ पार्श्वनाथ (धातु ३ $\frac{३}{४}$ इ०) लेख क्र० १७६

- ३१६ पार्श्वनाथ (धातु २ इ०) लेख क्र० १६४
 ३१७ पार्श्वनाथ (सफेद पा० २ फु० ३ इ०) लेख क्र० २५७
 ३१८ पार्श्वनाथ (काला पा० २ फु० ४ इ०) लेख क्र० २५७
 ३१९ नन्दीश्वर (धातु ५ इ०) उर्दू लिपिमें लेख०
 ३२० आदिनाथ (धातु ६ इ०) लेख क्र० २८४
 ३२१ शीतलनाथ (लाल पा० १ फु० ४ इ०) लेख क्र० २८४
 ३२२ महावीर (धातु १ फु० ६ इ०) लेख क्र० २८४
 ३२३ पुष्पदत्त (धातु १ फु० ९ इ०) लेख क्र० २८४
 ३२४ पार्श्वनाथ (धातु २ इ०) लेख क्र० १७६
 ३२५ महावीर (धातु ४ इ०) लेख क्र० २८०
 ३२६ चौबीसी (धातु ३ इ०) लेख क्र० १२७
 ३२७ चौबीसो (धातु ५ इ०) लेख क्र० २६०
 ३२८ यक्षिणी (धातु ४ इ०) लेख क्र० २३९
 ३२९ यक्षिणी (धातु ६ इ०) लेख क्र० २३९
 ३३० यक्षिणी (धातु ५ इ०) लेख क्र० १४०
 ३३१ यक्षिणी (धातु ८ इ०) लेख क्र० २४१ (नो मूर्तियों)
 ३३२ चन्द्रप्रभ (धातु १ फु० २ इ०) लेख क्र० २१७
 ३३३ चौबीसी (धातु ५ इ०) लेख क्र० २४१
 ३३४ रत्नत्रयमूर्ति (धातु ५ इ०) लेख क्र० २४१
 ३३५ पार्श्वनाथ (धातु ३ इ०) लेख क्र० १५५
 ३३६ पार्श्वनाथ (धातु २ इ०) लेख क्र० ८४
 ३३७ पार्श्वनाथ (धातु ४ इ०) लेख क्र० २४१
 ३३८ पार्श्वनाथ (धातु ३ इ०) लेख क्र० १४५
 ३३९ आदिनाथ (धातु ४ इ०) लेख क्र० २६१
 ३४० पार्श्वनाथ (सफेद पा० ११ इ०) लेख क्र० २५७
 ३४१ चन्द्रप्रभ (काला पा० ८ इ०) लेख क्र० २५०

- ३४० पार्श्वनाथ (काला पा० १ कु०) गंग्य क्र० २२३ (तीन मूर्तियां)
 ३४३ नेमिनाथ (मफंद पा० ११ टं०) गंग्य क्र० १७
 ३४५ आदिनाथ (काला पा० ७ टं०) गंग्य क्र० २६०
 ३४५ पार्श्वनाथ (मफंद पा० १३ कु०) गंग्य क्र० २५३
 ३४६ अग्नाथ (काला पा० ३ टं०) गंग्य क्र० १६३
 ३४७ चन्द्रप्रभ (धानु ५ टं०) गंग्य क्र० २२१
 ३४८ आदिनाथ (धानु ३३ टं०) गंग्य क्र० २३०
 ३४९ र्नातलनाथ (धानु ६ टं०) गंग्य क्र० २४१
 ३५० आदिनाथ (धानु ६ टं०) गंग्य क्र० २४१
 ३५१ पादार्चनाथ (धानु ५ टं०) गंग्य क्र० २४१
 ३५२ चौर्यामी (धानु ५ टं०) गंग्य क्र० २४१
 ३५३ पादार्चनाथ (धानु २१ टं०) गंग्य क्र० ३०३
 ३५४ पादार्चनाथ (धानु ५ टं०) गंग्य क्र० २५१
 ३५५ चन्द्रप्रभ (धानु ७ टं०) गंग्य क्र० २६३
 ३५६ अजितनाथ (धानु ७ टं०) गंग्य क्र० २६३
 ३५७ आदिनाथ (धानु ७३ टं०) गंग्य क्र० २५१
 ३५८ आदिनाथ (धानु ४३ टं०) गंग्य क्र० ३०४
 ३५९ नन्द्रीश्वर (धानु ३३ टं०) गंग्य क्र० १११
 ३६० मुपादार्चनाथ (धानु ५ टं०) गंग्य क्र० २४१
 ३६१ पादार्चनाथ (धानु २१ टं०) गंग्य क्र० १२८
 ३६२ महावीर (धानु ५ टं०) गंग्य क्र० २४१
 ३६३ आदिनाथ (धानु ८ टं०) गंग्य क्र० २६७
 ३६४ आदिनाथ (धानु ८ टं०) गंग्य क्र० २४१
 ३६५ महावीर (धानु ७३ टं०) गंग्य क्र० २५१
 ३६६ आदिनाथ (धानु १ कु०) गंग्य क्र० २५०
 ३६७ पृष्यदन्त (मफंद पा० १ कु०) गंग्य क्र० १८

- ३६८ अरनाथ (सफेद पा० ७ इ०) लेख क्र० १८
 ३६९ चन्द्रनाथ (सफेद पा० ८ इ०) लेख क्र० १८
 लेखरहित मूर्तियाँ - वासुपूज्य (काला पा० ५ इ०),
 पार्श्वनाथ (सफेद पा० १ फु० २ इ०), पार्श्वनाथ (काला
 पा० १० इ०), शान्तिनाथ (धातु ४ इ०), १५ मूर्तियाँ
 लेख तथा चिह्नके बिना छोटी-छोटी हैं ।

[९] दिगम्बर जैन मन्दिर, सदर बाजार, नागपुर

- ३७० पार्श्वनाथ (काला पा० १^३/_४ फु०) लेख क्र० १६४
 ३७१ चन्द्रप्रभ (सफेद पा० १ फु०) लेख क्र० २६४
 ३७२ पार्श्वनाथ (काला पा० १ फु०) लेख क्र० १९४
 ३७३ शान्तिनाथ (धातु ४ इ०) लेख क्र० २६०
 ३७४ यक्षिणी (धातु ५ इ०) लेख क्र० २६५
 ३७५ पार्श्वनाथ (धातु ० इ०) लेख क्र० ११५
 ३७६ चौबीसी (धातु ११ इ०) लेख क्र० २७६
 ३७७ दशलक्षण यत्र (धातु ६ इ०) लेख क्र० १०७
 लेखरहित - पद्मप्रभ (सफेद पा० १ फु०)

[१०] गृहचैत्यालय-श्री० मुन्दरसा हिरासा जोहरानुरकर,
 इतवारी, नागपुर

- ३७८ पार्श्वनाथ (धातु ४ इ०) लेख क्र० १३३
 ३७९ पार्श्वनाथ (धातु ४ इ०) लेख क्र० ३०५
 ३८० रत्नत्रय (धातु ३^३/_४ इ०) लेख क्र० १५
 ३८१ पार्श्वनाथ (धातु २ इ०) लेख क्र० ३०६
 ३८२ पार्श्वनाथ (धातु २ इ०) लेख क्र० ७४
 ३८३ पार्श्वनाथ (धातु ३ इ०) लेख क्र० २४

३८४ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० १२९
लेखरहित - छोटी-छोटी धातुकी १० प्रतिमाएँ

[११] गृहचैत्यालय-श्री० अवादास गुलाबसा गहाणकरी, इतवारी

३८५ चौबीसी (धातु ४ इं०) लेख क्र० २३१

३८६ आदिनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० २८८

३८७ पार्श्वनाथ (धातु ३ इं०) लेख क्र० २८८

३८८ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० १००

[१२] गृहचैत्यालय-श्री० माणिकसा चिन्तामणसा दर्यापुरकर,
इतवारी

३८९ चौबीसी (धातु ४ इं०) लेख क्र० ८०

३९० पार्श्वनाथ (धातु ४ इं०) लेख क्र० ३०७

३९१ यक्षिणी (धातु ४ इं०) लेख क्र० ४५

३९२ नवग्रह यंत्र (धातु ४ इं०) लेख क्र० २०१

[१३] गृहचैत्यालय-श्री० रतनसा गणपतसा देवलसी, इतवारी

३९३ पार्श्वनाथ (सफेद पा० ४ इं०) लेख क्र० २८८

३९४ आदिनाथ (काला पा० ४ इं०) लेख क्र० २८८

३९५ चन्द्रग्रम (काला पा० ४ इं०) लेख क्र० २२४

३९६ चौबीसी (धातु ४ इं०) लेख क्र० २१२

३७७ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० २६४

३९८ पार्श्वनाथ (धातु २ इं०) लेख क्र० ३०८

लेखरहित-पार्श्वनाथ (धातु २ इं०), आदिनाथ (धातु
२ इं०)

- [१४] गृहचैत्यालय-श्री० कन्ह्यालाल सुन्दरसा गरिवे, इतवारी
 ३६९ पाद्वर्नाथ (धातु ४ इ०) लेख क्र० ३४
 यक्षिणी (धातु ६ इ०)-लेखरहित
- [१५] गृहचैत्यालय-श्री०मवाईसगई मोतीलाल गुलावसा, इतवारी
 ४०० पाद्वर्नाथ (धातु ७ इ०) लेख क्र० ३०९
 ४०१ यक्षिणी (धातु ५ ०) लेख क्र० १४५
 लेखरहित-पाद्वर्नाथ (धातु ४ इ०), चन्द्रप्रभ (स्फटिक, ३ इ०)
- [१६] गृहचैत्यालय-श्री०हिरामा पदासा खोरणे, इतवारी
 ४०२ भाद्रिनाथ (धातु ४ इ०) लेख क्र० २७५
 ४०३ पाद्वर्नाथ (धातु ३ इ०) लेख क्र० ३०८
 ४०४ पाद्वर्नाथ (धातु २ इ०) लेख क्र० ३१०
 ४०५ यक्षिणी (धातु ६ इ०) लेख क्र० १५१
- [१७] गृहचैत्यालय-श्री० दादा गुलावसा मिश्रीकोटकर, इतवारी
 ४०६ चाँचीमी (धातु ३ इ०) लेख क्र० ९४
- [१८] गृहचैत्यालय-श्री० तिगसा खेमासा जोहरापुरकर, इतवारी
 ४०७ पाद्वर्नाथ (धातु ७ इ०) लेख क्र० ३११
- [१९] गृहचैत्यालय-श्री जयकुमार प्रभुसा किल्लेदार, इतवारी
 ४०८ पाद्वर्नाथ (धातु ४ इ०) लेख क्र० ४०
- [२०] गृहचैत्यालय-श्री तिलोकचद येमूसा खेडकर, इतवारी
 ४०९ चाँचीमी (धातु ३ इ०) लेख क्र० ९४
 ४१० पाद्वर्नाथ (धातु २ इ० इ०) लेख क्र० २८६
 ४११ आदिनाथ (धातु २ इ०) लेख क्र० १३४

४१२ चरणपादुका (धातु २ इ०) लेख क्र० १४२
लेखरहित - शान्तिनाथ (धातु २ इ०), पार्श्वनाथ
(धातु २ इ०)

[२१] गृहचैत्यालय-श्री विष्णुकुमार हिरासा जोगी, इतवारी

४१३ यक्षिणी (धातु ६ इ०) लेख क्र० १४

४१४ यक्षिणी (धातु ५३ इ०) लेख क्र० ५५

लेखरहित - (चौबीसी धातु ३ इ०), महावीर (धातु २३ इ०)

[२२] गृहचैत्यालय-श्री नागोराव गुजावा श्रावणे, इतवारी

४१५ सिद्ध (धातु ४ इ०) लेख क्र० २८८

४१६ आदिनाथ (चाँदी ३ इ०) लेख क्र० २८८ (दो मूर्तियाँ)

४१७ आदिनाथ (धातु ३ इ०) लेख क्र० २८८ (दो मूर्तियाँ)

४१८ पार्श्वनाथ (सोना २ इ०) लेख क्र० २७७

४१९ चौबीसी (धातु ५ इ०) लेख क्र० २३७

४२० चरणपादुका (चाँदी १ इ०) लेख क्र० ३१२

लेखरहित - पार्श्वनाथ (धातु ३ इ०) (दो मूर्तियाँ),

बाहुवली (धातु ३ इ०), सरस्वती (धातु २ इ०)

[२३] गृहचैत्यालय-श्री गुलावसा व्यकुसा मिश्रीकोटकर, इतवारी

४२१ चन्द्रप्रभ (धातु ३३ इ०) लेख क्र० ४४

४२२ पार्श्वनाथ (धातु ५ इ०) लेख क्र० २९०

४२३ यक्षिणी (धातु ३३ इ०) लेख क्र० १७५

लेखरहित-पार्श्वनाथ (लाल पा० ३ इ०)

[२४] गृहचैत्यालय-श्री० हिरासा जिनदास चवड़े, इतवारी

४२४ सिद्ध (धातु ४ इ०) लेख क्र० २८८

४२५ पार्श्वनाथ (धातु ३ इ०) लेख क्र० १८६

- [२५] गृहचैत्यालय-श्री०नेमासा पामुसा जोहरापुरकर, इतवारी
 ४२६ पंचपरमेष्ठी (धातु ५ इ०) लेख क्र० ३०
 ४२७ पाश्चर्नाथ (धातु २३ इ०) लेख क्र० २५१
 ४२८ कलिक्ण्ड यन्त्र (धातु ८ इ०) लेख क्र० २०२
 ४२९ घोढगकारण यन्त्र (धातु ८ इ०) लेख क्र० २०३
- [२६] गृहचैत्यालय-श्री०माणिकचद वालाजी आगरकर, इनवारी
 ४३० पाश्चर्नाथ (धातु ३ इ०) लेख क्र० ४८
 ४३१ पाश्चर्नाथ (धातु २३ इ०) लेख क्र० १६२
 ४३२ यक्षिणी (धातु ४ इ०) लेख क्र० १३१
- [२७] गृहचैत्यालय-श्री०सुंदरसा गगासा खेडकर, इतवारी
 ४३३ पाश्चर्नाथ (धातु ५ इ०) लेख क्र० १६
 ४३४ यक्षिणी (धातु ७ इ०) लेख क्र० ३८
 लेखरहित-पाश्चर्नाथ (धातु २ इ०) चौबीसी (धातु ५ इ०)
- [२८] गृहचैत्यालय-श्री०लक्ष्मणराव सेवाराम पिंजरकार, इतवारी
 ४३५ भादिनाथ (धातु ६ इ०) लेख क्र० १४६
 ४३६ पाश्चर्नाथ (धातु ३३ इ०) लेख क्र० ४३
 लेखरहित-यक्षिणी (धातु ६ इ०)
- [२९] गृहचैत्यालय-श्री०पुरणलाल वापुसा खेडकर, इतवारी
 ४३७ चौबीसी (धातु ३३ इ०) लेख क्र० २८१
 ४३८ पाश्चर्नाथ (धातु ३ इ०) लेख क्र० ६०
- [३०] गृहचैत्यालय-श्री०महादेवराव तानवा पिंजरकर, इतवारी
 ४३९ चौबीसी (धातु ४ इ०) लेख क्र० ५८
 ४४० पाश्चर्नाथ (धातु ३ इ०) लेख क्र० १८०

- ४४१ पाश्र्वनाथ (धातु २ ३/४ इ०) लेख क्र० ६४
 ४४२ पाश्र्वनाथ (धातु २ ३/४ इ०) लेख क्र० ३१४
 ४४३ यक्षिणी (धातु ६ इ०) लेख क्र० १५६
- [३१] गृहचैत्यालय-श्री०वर्धासा सकुसा महाजन, इतवारी
 ४४४ चौबीसी (धातु ३ ३/४ इ०) लेख क्र० १५६
 ४४५ पाश्र्वनाथ (धातु ३ इ०) लेख क्र० ६६
 ४४६ षोडशकारण यंत्र (धातु ३ इ०) लेख क्र० १२२
 ४४७ यक्षिणी (धातु ५ इ०) लेख क्र० ६०
 ४४८ यक्षिणी (धातु ५ इ०) लेख क्र० ६१
 ४४९ यक्षिणी (धातु ५ इ०) लेख क्र० १२५
 ४५० यक्षिणी (धातु ५ इ०) लेख क्र० ४६
 लेखरहित-पाश्र्वनाथ (धातु ५ इ०)
- [३२] गृहचैत्यालय-श्री०नत्थुसा पैकाजी चवरे, इतवारी
 ४५१ सुपाश्र्वनाथ (सफेद पा० ५ इ०) लेख क्र० २६६
 ४५२ चन्द्रप्रभ (धातु २ इ०) लेख क्र० ११६
 ४५३ पाश्र्वनाथ (धातु २ ३/४ इ०) लेख क्र० २७
 ४५४ पाश्र्वनाथ (धातु २ ३/४ इ०) लेख क्र० २१३ (दो मूर्तियों)
 ४५५ पाश्र्वनाथ (धातु २ इ०) लेख क्र० ३१५
 ४५६ पाश्र्वनाथ (धातु ३ इ०) लेख क्र० ३०८ (दो मूर्तियों)
 ४५७ यक्षिणी (धातु ५ इ०) लेख क्र० १०६
 लेखरहित - पाश्र्वनाथ (धातु २ इ०)
- [३३] गृहचैत्यालय-श्री रुखवसा पिंजरकर, इतवारी
 ४५८ पाश्र्वनाथ (धातु २ ३/४ इ०) लेख क्र० २१३
- [३४] गृहचैत्यालय-श्री लक्ष्मणराव देवमनसा बोबडे, इतवारी
 ४५९ पाश्र्वनाथ (धातु ३ इ०) लेख क्र० १६६

- ४६० पार्श्वनाथ (धातु २ ईं०) लेख क्र० ३५
 ४६१ पार्श्वनाथ (धातु २ ईं०) लेख क्र० ३६
 ४६२ चौबीसी (धातु ३ ईं०) लेख क्र० ११७
 ४६३ चिह्नरहित मूर्ति (धातु २ ईं०) लेख क्र० १४६
 ४६४ पार्श्वनाथ (काला पा० ३ ईं०) लेख क्र० ३१६

[३५] गृहचैत्यालय-श्री वापुजी विश्रामजी गिल्लरकर, मस्कासाथ

- ४६५ आदिनाथ (धातु ३ ईं०) लेख क्र० १७०
 ४६६ आदिनाथ (धातु २ ईं०) लेख क्र० ३१७
 ४६७ पार्श्वनाथ (धातु ४ ईं०) लेख क्र० १६७
 ४६८ यक्षिणी (धातु ७ ईं०) लेख क्र० १८६
 लेखरहित - पार्श्वनाथ (धातु १ ईं०)

[३६] गृहचैत्यालय-श्री गोविंदराव शिवराम नाकाडे, इतवारी

- ४६९ चौबीसी (धातु ५ ईं०) लेख क्र० १३६
 ४७० चिह्नरहित मूर्ति (धातु ३ ईं०) लेख क्र० १६३
 ४७१ पार्श्वनाथ (धातु ६ ईं०) लेख क्र० २०३
 ४७२ पार्श्वनाथ (धातु २ ईं०) लेख क्र० ३१८
 ४७३ यक्षिणी (धातु ३ ईं०) लेख क्र० १७१
 ४७४ यक्षिणी (धातु ४ ईं०) लेख क्र० ११८
 ४७५ दशलक्षणयंत्र (धातु ४ ईं०) लेख क्र० ५०

[३७] गृहचैत्यालय-श्रीमती तानाबाई वापुजी गाधी, इतवारी

- ४७६ पार्श्वनाथ (धातु ४ ईं०) लेख क्र० ८५
 ४७७ पार्श्वनाथ (धातु ३ ईं०) लेख क्र० १७२
 ४७८ पार्श्वनाथ (धातु २ ईं०) लेख क्र० १२४
 ४७९ चन्द्रप्रभ (धातु १ ईं०) लेख क्र० १७३
 लेखरहित - पार्श्वनाथ (धातु ३ ईं०) यक्षिणी (धातु ६ ईं०)

- [३८] गृहचैत्यालय-श्री राजावापू लच्छावापू ठवली, इतवारो
 ४८० चौबीसी (धातु ३ इ०) लेख क्र० १७४
 ४८१ यक्षिणी (धातु ३ इ०) लेख क्र० १९६,
 ४८२ यक्षिणी (धातु ४ इ०) लेख क्र० २५
- [३९] गृहचैत्यालय-श्री जयकृष्णपत सावलकर, इतवारो
 ४८३ पार्श्वनाथ (धातु ३ इ०) लेख क्र० ५३
 ४८४ यक्षिणी (धातु ७ इ०) लेख क्र० ३१
- [४०] गृहचैत्यालय-श्री कृष्णाजी भागवतकर, इतवारो
 ४८५ सिद्ध (धातु ३ इ०) लेख क्र० २८८
 ४८६ पार्श्वनाथ (धातु २ इ०) लेख क्र० ३०८
 लेखरहित - यक्षिणी (धातु ३ इ०)
- [४१] गृहचैत्यालय-श्री राजाराम डुव्रीसाव काटोलकर, इतवारो
 ४८७ चौबीसो (धातु ३ इ०) लेख क्र० २४३
 ४८८ पार्श्वनाथ (धातु २ इ०) लेख क्र० ३१९
 लेखरहित - चन्द्रप्रम (सफेद पा० ४ इ०)
- [४२] गृहचैत्यालय-श्री हिरासा नत्थुसा मुठमारे, इतवारो
 ४८९ पार्श्वनाथ (धातु ४ इ०) लेख क्र० ५६
 ४९० आदिनाथ (धातु २ इ०) लेख क्र० ३३
 ४९१ चौबीसी (धातु ३ इ०) लेख क्र० ११३
 ४९२ पार्श्वनाथ (धातु २ इ०) लेख क्र० १८७
 ४९३ पार्श्वन थ (धातु २ इ०) लेख क्र० ३०७
 लेखरहित - यक्षिणी (धातु ३ इ०)
- [४३] गृहचैत्यालय-श्री स्ववसा विनायकसा, इतवारो
 ४९४ पार्श्वनाथ (धातु ३ इ०) लेख क्र० ३२२

- [४४] गृहचैत्यालय-श्री पाडुरग वापूजी उदापूरकर, इतवारी
४९२ पाडूरनाथ (धानु २३ इं०) लेख क्र० ३२३
- [४५] गृहचैत्यालय-श्री गणपतराव पलनापुरे, इतवारी
४९६ पाडूरनाथ (धानु = इं०) लेख क्र० १८७
- [४६] गृहचैत्यालय-श्री मुरेन्द्र गगामा जोहरापूरकर, इतवारी
४९७ चन्द्रप्रस (धानु = इं०) लेख क्र० १९०
लेखकहित - पाडूरनाथ (धानु = इं०)

नामसूची

उल्लिखित अंक पृष्ठों के हैं ।

अकबर ३२८

अकलंक ५८, ६०, १७५, २००,

२१४, २१६, ३३५, ३३८,

३३९, ३७७, ३७९

अकालवर्ष ३१, ४४, ५३

अकोटा ३८५

अककम्म ३१४

अककलकोट ११३

अककमालकामोज १६६

अककादेवी ८४, ८५

अककूर ३७४

अकरवाल ३९५, ४०२

अकस्तियप्प ३४७

अकिल ४

अककेमोगे ४०

अकगलदेव ९१, ९३, १०२

अकगलमेट्टि ३७४

अकगोति २७

अकच्युतदेव ३१७

अकलण ३५५

अकजयमेरु १९१

अकजितकोति ३६०, ४०७, ४१३-

४१५

अकजितचंद्र २२१, २२३

अकजितसेन ९२, ९३, १७५, २१४,

२१६, २२७, ३६१

अकजन ३०४-५

अकज्जणदि २१, २२, ४२

अकज्जरय्य ५६

अकणहिल्लपुर २२१-२

अकण्णन् २५५

अकण्णमट्ट १६४

अकण्णगेरे २५ ८५, १०४, १०७,

१०९, १११, २५९

अकत्तिमब्बे १४९

अकत्तियब्बे ७३

अकथनी २३२

अकदरगुचि २६६

अकनत्तवन् २२

अकनमकोड १४१, १४३, १४५

अकनुपमकवि ६१-२

अकनत्तकसेट्टिति २९७

अनंतकीर्ति २५०, २९६	अम्मरस ३८
अनंतवीर्य १७५, १७७, ३५५-६, ३६०, ३६५, ३७९	अम्मराज ६४, ६५, ६८, ६९
अपराजित ३५-६	अम्मिनभावि २२९
अप्पण २३८-९, २४४	अट्टवल्लि १३४
अप्पाण्डार २७९, ३५७, ३७६	अट्टप्प २६
अबडनगर ३९५, ४१०	अट्टवोले १६४
अवेयमाचर २९२	अट्टवतोक्कल्लु २६३
अव्यक्कदेवी ३२७	अट्टवसामि ७१
अमयच्चद्र ९६, ३५९, ३६२	अरताल १४८
अभयर्नदि १०५, ११०-१, २५८, २७१	अरत्तुलान् देवन् ८३
अभिनदन २२	अरमडमेगल्लु ४०
अमरकीर्ति २७८, २८८, ३११	अरयन् उड्डैयान् ९९
अमरमुदलगुरु ४२	अरसप्पोडेय ३४७, ३५६
अमरसिंह ३४०	अरसरवसदि ११२
अमरापुरम् २६०, ३८०	अरसय्य १२०-१
अमिदसागर ३९१	अरसीवीडि ८३, १२१, १७३, १८३
अमृतपाल १६०	अरिक्कुठार ३१४
अमृतव्वे ५५-६	अरिक्केमरी १३९
अमूर्त्तव २६०	अरिन्दमगल्लम् ५६
अमोघधर्ष ३३-४, ३६-७	अरिमंडल २२
अम्य ३०४-५	अरिवन् कोयिल् ३९
अम्बले ३६९	अरिर्विगोज ६२
अम्बावती ३४३	अरिष्टनेमि १६, ५२
अम्बाराय ३०३-५	अरुगद् देवद् ९९
	अरुमोलिदेव १६०

अरुमोलिदेवपुरम् १६७, १७६	आकलपे २५९
अरुन्नन्द आण्डाल् २८९	आकाशिका ९६
अश्वहाहि १	आकियमगिसेट्टि ३०८
अरुहणदि ११२, २५८	आगुप्तायिक १५-१६
अरुगलान्वय १२८, २१४, २१६, २३३, २६७, २६९	आचगौड १८६
अरेयञ्चे ८८, ८९	आचण १८६
अरैयगाविदि २२	आचन चामुण्डर ६९
अर्णोराज १८९	आचलदेवी १७१
अर्हणंदि ७३, १३४, २५२-३, २७१	आच्चन् २२
अलगरमल्लै ४२	आदकोण्डान् १६७
अलनावर ११४	आणदेव २२८
अलवर ३८७-८	आण्डारमडम् ५६
अलियमरम ३८	आदगे १३८
अवनिपशोखर ३६	आदवनी ३१२, ३२६
अवनिमहेन्द्र १८, २०	आदित्यवर्मा ३७५
अविनीत १२, १७, २०	आदिनाथ १२०-१
अष्टोपनामी २२, ७७, ९३, २५८, २७१	आद्रिराज ३०३
अशवठवरसि १२२	आदिसेट्टि २९७, ३१६
अमृण्डि ४४	आदिसेन ३५२
अहिच्छत्र १८९	आनदमंगलम् २५१
अक १५३	आनेसेज्जवसदि ११३
अकनाथपुर ७०-१, १३४	आपिनहल्लि ३४५
अकुलगौ १३८, १४०	आधू ३८५
अकेगेड्डु ८९	आमरण ३८६
	आम्बट १९१, १९६
	आयतवर्मा ५६, ७७

आयुचगावुण्ड ७६
 आयुचप्पय्य ११२
 आयुचिमय्य ९८
 आय्वोज-८८-९
 आरम्भनदि १५८
 आरान्दमगलम् ७५
 आरियदेव २२७
 आदलगपेरुमान् ४१
 आर्यणदि १५, १६, ४३
 आर्यपंडित ११२
 आर्यसघ ५७
 आलपदेवी ३८०
 आलप्पिरन्दान् मोगन् १६६, २७४
 आलाक १३२
 आलुप १५४
 आणिका १९०
 आशिरियन् ३९
 आहड १९६
 आहवमरल ७३, ७८, ८१, ८२
 आतरी ३८७
 इक्केरि ३३९
 इट्टो १०४, १०९
 इडियारन् १६७
 इडियालम् ३७६
 इदम्पट्टव १२
 इन्दप १२०-१

इन्दरपिट्टम्म ४०
 इन्दौर १९७, २६१, २८४
 इन्द्रकीर्ति ९४, १५८
 इन्द्रणंद १५-१६
 इन्द्रनदि ७३, १२६, २३४
 इन्द्रराज ३१, ३४, ३६, ५५, ६१-
 ६३
 इन्द्रभूपाल ३३५
 इन्द्रभूपण ४०६, ४०९-११
 इम्मडि १७६
 इम्मडि अरसप्पोदेय ३४७
 इम्मडिदेवराय ३१५-६
 इम्मडिवुक्क २८८
 इम्मडिभैरवरस ३१५
 इरुग २८८
 इरुगोण २६०
 इरुवुन्दूर ३०४-५
 इरुगोठ ३८०
 इलपेरुमानडिगल् ७५
 इलगीतमन् ३९
 इंगणेइवर-इगलेइवर २१७, २२४,
 २३२, २६६-७, २७२, २७४,
 ३७४, ३७६, ३८०, ३८३-४
 इंगरस ३०८
 इगोली ३९५, ४१९
 ईचवाडि ५८

ईश्वर १२०-१	उरिगपमिडि २०
उक्काल ७४	ऊन १२७
उक्किसेट्टि २७३	ऊक्ककाडु १७८
उगरगोल १४९	ऋपिदाम ६
उगुव २६३	ऋपिश्रुगी १४९
उग्रवाडि १४४-५	एकळे २७३
उच्छगि २०४, २६६	एकसंधि १७५
उज्जत ३२५	एकमवि १८५
उज्जेनीपल्लीवाल ३९५, ४०८-९,	एकसम्भुगे १८६
४११	एककोटिजिनालय २१९-२०
उज्जल १९२, १९७	एचलदेवी २०२-३, २१२
उडिपि ३०५	एचिकळे १२०-१
उडैयार १२७	एचिसेट्टि २०५
उदय २३८, २४४	एटा २६१
उदयगिरेन्द्र ४०३	एडेनाडु २८
उदयचन्द्र १०७, ११०, २५८,	एणक्कुगल्लनायकर् २५५
२७१	एरक ७६
उदयपुर ७५, ३८६-८८	एरणदि १६७
उदयादित्य १२७, १५४, २०२,	एरेकप ११७, १२०
२११, २१७, २२४	एरेग ११६-७, १२०, १२४
उदुरि २९३	एरेय ४३-४४
उद्योतकैसरी ५६-७	एरेयप ५८, ६०
उमरावती ३९५, ४१६	एरेयमय्य ११६, १२०
उम्पटाच्चण वसदि ३७२	एरेयग ५८, ६०, १२२-५, १५४,
उम्बरवाणि २४६, २४९	१७६, २०२, २११, २७०
उम्मत्तूर ७०, ३५८	एलवाचार्य २८, ३०

एलाचार्य ४४, ५४, २८८	१५०, १५२, २७५, ३८४
ऐन्द्रुवपेरुम्पल्लि ३६६	कण्णम्मन् १८-२०
ऐवर अंबण ३५३	कण्णमेट्टि २१४
ऐवरमल्लै ३७	कण्णूर १३४
ऐहोले १४५	कत्तम १८५
ओखरिक ५, ६	कदम्ब १३, १५, २६, ३८, ७१,
ओणण ३५५	८२, ११४, १२३, १२४-५,
ओडेयमसेट्टि ३७९	१३६, १४८, १५७, १७१-२,
ओट्टिपाणि ४०	२०८-९, २५०-१, ३१३,
ओवेयमसेट्टि ३६५	३७८
ओरकलवायगर् १९, २०	कदलालयवसदि १४३, १४५
ओगेरु ३८१	कनककीर्ति ३६३
कम्भकरगोड १०५, ११०	कनकगिरि ३४६
कच्चिनायकर् २७४	कनकचन्द्र १४८, २५८, २७१
कच्चिनायनार् १६६	कनकचिन्नगिरि २७३
कच्चियरागर् २७४	कनकनन्दि २२, ७७, ९५, १०२
कच्छवेगंडे २३०-१	कनकरायनगुडु ३६१
कछवाह ३४३	कनकवोर २२, ५६, १६७
कडकोल २६१	कनकशक्ति ९५
कडलेहल्लि २१५-६	कनकसेन ३९, ९२-३, १७५
कडितले २६८	कन्नडिगे १८२
कणवियसेट्टि १०८	कन्नडिवसदि ३०९
कणितमाणिकसेट्टि ८३	कन्नप १२०-१, १६४
कण्डन् पोर्पट्टन् २२	कन्नर (कन्वर, कन्हर) देव ४५,
कण्डन् माधवन् ३९१	१५१, २५६-७, २६३
कण्डूर, कण्डूर गण ११६, १२०,	कन्निसेट्टि ३७३

कञ्जुपनिनाडु ३५८
 कमलदेव १०८, २९१
 कमलमद्र ७०, २९४-५
 कमलश्री १९३, १९७
 कमलसेन २५०, २५४
 कमलाचुरम् ७३, ३९१
 कम्बहल्लि १५६, १६९
 कम्भराज २८-३०
 कम्भनहल्लि ३५९
 कम्भरचोट्टु ३८०
 कम्बिन्नायप्पुलवर् ३३९
 कम्बुदरि १७२
 करडकल १७९
 करन्दे ९९, १४०, १७८, २८९,
 ३१३, ३३६, ३३९, ३४७
 करसिदेव २५६
 करिकालचोलजिनमंदिर ३५४
 करिमानी ३६
 कग्गिदिडि ७६, ८५
 कर्कगज ३१, ३४-६
 कगादिवी १६६
 कर्म ३
 कञ्जुत्ता ४०, २३४, ३४०
 कञ्जुरि २५४, २५६, २६३, ३७९
 कनचुम्बुह ६८
 कलत्रुरि १५९, १७८

कञ्जुर् १७९, १८०, १८६-७,
 १९८, २०१
 कलमानगर २०५
 कलनापुर २०१
 कलिगञ्जे ६९
 कलिगावुण्ड २२६
 कलिदेव ८१, १०९-१०, १२०-१,
 १४९, १८६
 कलिमानम् ७८
 कलियत्तिगंड ६८
 कलिग्रम्म २५, ३८९-९०
 कलिवाण्णुवर्धन ६४
 कलिमेट्टि १०८, १७२
 कलिग २
 कल्लेन्दवर ८६
 कल्लेन्देव ४३-४, ५४
 कल्याण ८५, ८६, २१४
 कल्याणनीति ७४, ३८२
 कल्याणवमंत २४
 कल्लप ३५५
 कल्लह्वे ५४
 कल्लरम ३०४-५
 कल्लहल्लि ३६०
 कल्लापुल्लि २७
 कल्लविका ११७
 कवडेगोल्ल १६३-५

कवडेमय्य २०४-५	कामनृगाल २९७
कमपगावुण्ड २४२	कामगज ३५५-६
कंचरम ९१-३	कामेय ३१४
कंचलदेवी ३७८	काम्बोदि ३४९
कचिन्ने ७६	काम्ब्य १९५
कति २३४	काम्ब्यद्वि ३६६
कंदगल २५१	काग्वल ३१९-२०, ३२९, ३८१
काकर्तीव्रत १४२, १४५	कारंजा ३९५, ४०५-६, ४०९,
काकन (काम्बो) ३४८	४१२-३, ४१६-७, ४२५
काकुत्स्य १३	कारिजे ३२०
कागिनेल्लि ७३, ३७५	कारेयगण १५३
काटले १०६, ११०	कार्तवीर्य १२८, १८५-६, २३५-९
काटिमय्य ११२	२४२-६, २४८-९
काहूरगण २६६	कालडिय ७८, ८१
काणूर (काणूर) गण ५८-६०,	कालण १८६
१४८, १५५-८, १५३, २२४,	कालहल्लि ३१९
२३३-४, २५-१, २६८,	कालिदास १३४, १७८
२९६, ३२१, ३२३, ३२६,	कालिमय्य ९९
३६४, ३७०, ३७५, ३७८-८०	कालियूर ९९
काण्वायन ९, १७	कालिसेद्वि ३७६
कादलूर ५४	कावण २६७
कान्तराजपुर २१७	कावदेवरस २०८-९
काप ३२१-३, ३२६	कावनहल्लि १३३-४
कामठी ३९५, ४१२	कावय्य २५७
कामण्य २८२, २८६	कावला गात्र ४०५
कामदेव ७७	काथिक ७-९

कामिदल ७३
 काटामन ३९६, २००, ६०२-६,
 ४०९-११, ६१६-६, ६२८
 कामिमदन १९८
 काचन ९८
 काञ्चनदेवी २१७
 कान्तिगन्धाल ३३५
 कान्तिगण्डि १५३
 कान्तिवलि २३०-१
 कान्तिबाल २५
 काण्ठाकम् ४२
 कान्तिवृत्त ३१७
 कान्ति १५१-२
 कान्तिवर्त्मन् २५
 कान्तिनागर ३६१
 कान्तिवृत्ति २२, ७२, २२७, ३६५
 कान्तिवृत्तमन १६७
 कान्तिगि २०७, ३२८
 कान्तिवृत्त २६, ५४
 कान्तिगितवन्तु ३२०
 कान्तिहोमलि १७१
 कान्तिवृत्तान्वय ११४, १५५-६
 २३३-४, ३६०, ३६४
 कान्तिवृत्त ३०७, ३६५
 कान्तिवृत्त ४०
 कान्तिवृत्त ३०८

कुक्षययो २
 कुम्भलताडु ३०४-५
 कुम्भकुम्भान्वय, कुम्भकुम्भावायान्वय
 १२३, २७८, ३१७, ३९७,
 ४०१-४, ४०७, ४०९-१२,
 ४१५-२७
 कुम्भकुम्भ २२१-२, २२५
 कुम्भनन्तु २८८
 कुम्भरगे ८५
 कुम्भानि १३९-६०
 कुम्भण ३८
 कुम्भदूर २२४
 कुम्भ विष्णुवर्त्मन ६३, ६८
 कुम्भ २०८, २७८, ३७८
 कुम्भरन् देवन् ४१
 कुम्भरय्य १४७
 कुम्भरकीति १८६
 कुम्भरान्वि २८-३०
 कुम्भरपर्वत ५७
 कुम्भरवीडु १४६, २२३
 कुम्भरसेन १७५, २९४-५
 कुम्भिलिगण ४२
 कुम्भरवृत्त २५८-९, २७१-२, ४०७
 कुम्भदिगण ८२, ३७७
 कुम्भनूर १४५
 कुम्भजन १३७

कुण्डमाल १६	कृष्णसेट्टि ३८१
कुरण्ड २२, ६३	केनगावुड १०७, २२७
कुशगोडु ३१९	केतुप्य ३६३
कुस्त्रटिमिदि ३१८	केतिसेट्टि १०८, १८२, २०५
कुलगाण १७	केतोज ८८-९
कुलचन्द्र ५७-८, १५७-८, २५७	केम्पम्मणि ३५१
कुलत्तूर ३९१	केरवसे २९९
कुन्द्योत्तर १५४	केरेसन्त १७९
कुलोत्तुग १२१, १२५, १४०, १४५-६, १६६, २५१, २७३ ३९१-२	केलगरे २७०
कुलोत्तुगधोत्रकाडवरायन् १६६	केलहिवोरमद्र ३४१
कुमुम ४	केलहिवेकटप्य ३३९
कुमुमजिनालय ३७६	केलेयच्चरमि ९५, २०२
कृकूमदवा २५	केल्लिपुसूर १८-२०
कुगियवमिसेट्टि ३६८	केघणदि २६६
कृण्ड ७९, ८१, १२८, १३७, १५३, १६४, २३५, २४१, २४३, २४६, २८९	केगव १९५, १९७, २६५ ३०२- ५, ३६९
कूष्माण्डीविषय १५	केगवदेवी २८३
कृष्णदेव २७६	केशवप्य १४६
कृष्णदेवराय ३१३-४	केशवरम ६
कृष्णपगज ३४४-५	केशवसूग् ५१-५२
कृष्णराज ३१, ४४, ५३, १०९, १५२, २३६, ३५१	केशवादित्य ८०, १५१
कृष्णवर्मा १७	केशिराज ९१
	केमरिसेट्टि २०७
	केमिसेट्टि २२६
	केतडुप्पूर १४१
	कोकलिपुर ९४

- कोक्किवाड ५४
 कोक्कल १३६
 कोक्किलि ६४
 कोगलि २६५, ३६५, ३७९
 कोछल गात्र ४२१-३
 कोट्टुगेरे १७४
 कोट्टुशीवरम् ३८०
 कोट्टिय गण ६
 कोट्टिट्टिल्लि ७?
 कोड्डुगूर १८, १९
 कोणैगिन्मैकोण्डाम् २७, २५५
 कोण्टकुन्दान्वय ५३, ९४, १२५,
 १३०, १३३-४, १५७-८,
 १६६, १७०, २०४, २०७,
 २४६, २४९, २५२-३, २५९,
 २६६, २७२, २८८, २९५-६
 ३६३
 कोण्डकुन्देग अन्वय २८, ३०
 कोण्डकुन्देय तीर्थ ११४
 कोण्डयसेट्टि ३६१
 कोण्डैमलै ३३७
 कोनमोण्डल २०, ७२, ११४,
 २२६, २९३
 कोनाट्टुन् ८३
 कोन्तकुलि १४८
 कोन्तिमहादेविवसदि ३७२
 कोन्न ३१७, ३८२
 कोप्पण (कोप्पल) ३८, ४५, ७४,
 १३०, २५०, ३२५-६, ३७१
 कोमरगोप ३८३
 कोम्मणार्थ १४९
 कोम्मसेट्टि ३८०
 कोरग २९९
 कोरमग १२, १४, १५
 कोरवल्लि २४६, २४९
 कोन्किन्द ११
 कोलारम ३४०
 कोलूर २८९-९०
 कोल्लापुर (कोल्लापूर) १३५,
 १६२, १६४-६, ३४४-५
 कोल्लुगे ८५
 कोवल ६२
 कोविलगुलम् १४५
 कोशिक २६
 कोह नगोरी ३१५
 कोहल्लि ८५
 कोकण ८२, १३७, ३२७
 कोगज १३६
 कोगणिवर्मा ९, १७, २०, ५४
 कोगणिवृद्धराज १७, २०
 कोगण्यधिराज ११, १२
 कोगरपुलियगुलम् २१

कौशिक ३३
 कौशिक ५३
 कौशिक १०५, २०३, २६३, २८०
 कौशिक २८
 कौशिक ३३
 कौशिक ३०३, ३३५
 कौशिक २०३, २२३
 कौशिक १११
 कौशिक १०५, ५०२
 कौशिक १०५, ५६-३
 कौशिक १३३, ३००, ३१५
 कौशिक ३१३, ३१६, ६०८,
 ६०९, ६१५
 कौशिक १६५
 कौशिक ०
 कौशिक १०५, ६०८, ६१०
 कौशिक ३८३
 कौशिक ०
 कौशिक ६०३
 कौशिक ५४
 कौशिक, कौशिक ३०३
 कौशिक ५२६
 कौशिक ४०१
 कौशिक ३२३, ३२५, ३३३
 कौशिक १६६
 कौशिक २४

कौशिक ३०, १३३-२, १६२,
 १६५-६, १८५-६, २३९
 कौशिक १०५, ११०-१२, १४९
 १६०, २०८, २३१
 कौशिक १०८
 कौशिक १५९
 कौशिक ३०३
 कौशिक १०, २०, २६, ४०, ४४,
 ५३-६, ५८-६०, ६९, ९४,
 १०२, १०४, १२९, १५१-२
 कौशिक १४६-३, १६३
 कौशिक १०४, १०५, १०९, १३५
 कौशिक १४८
 कौशिक २५०
 कौशिक १५६
 कौशिक ३१५, ३१७
 कौशिक सुन्दरकोश १२२
 कौशिक २३२
 कौशिक ३४१
 कौशिक २८५
 कौशिक २०३
 कौशिक १८-२०
 कौशिक १०२, १०४, १०५,
 १०७, १११
 कौशिक ३४१
 कौशिक २२२, ३२६

गुजरपल्लोवाल ३९५, ३९८
 गुडुगुहि ३७२
 गुडुगोरे २५
 गुणकीर्ति ५६, ७६, १०४, १०९,
 ११०-१, ४००
 गुणगविजयादित्य ६४
 गुणचन्द्र ५३, ७३, १०५, ११०,
 १९७, २३४, २५८
 गुणद्वेष्टि ८४-५, १८७
 गुणनन्दि ५८, ६०
 गुणनेरिमंगलम् ७५
 गुणन्दागि १६
 गुणपाल १६१
 गुणमन्त्र ७२, १९५, १९७, २९४-५
 ३३०-२, ३३४, ३३७, ४०२,
 ४२०
 गुणमति २२
 गुणवर्मा ६२
 गुणवीर ३७-८, ६३, २७४
 गुणयागर ३६१, ३९१
 गुणसेन २२, १७७, २६४, ३६५,
 ३६६, ४०२
 गुप्त १८२
 गुप्तत्रयि २८६
 गुन्दुगज १८९
 गुम्फदेव ३०९

गुम्फसेट्टि ३१२
 गुम्फसेट्टि २२६, ३०८
 गुम्फगोल १०४, १०९
 गुम्फयमेट्टि ३३७
 गुह्ययनकेरे ३०९, ३१४
 गुर्जर १९७
 गुलियनुर २६२
 गुह्नन्दि ७-९
 गुटी २८८,
 गुत्रक १८९
 गुत्रल १३६
 गुह्रवाल गोत्र ४०८
 गेरमोप्ये २७९, २८२, २८४,
 २८६-७, २९७-८, ३०१,
 ३१५, ३२७, ३३०-४, ३५४-
 ५, ३६८, ३९२
 गोमालमिटा ९
 गोकवे २३३-४
 गोकर्ण ३३५-६, ३९१
 गोक्राक १५, ८४-५
 गोमि १८३-५
 गोमिगयवमदि १५८
 गोमिजका ९१-३, १०२
 गोदृगहि १९८
 गोणद्वेष्टि १२१
 गोणिवीह ३५९

गोपनन्दि २०४, २०७	ग्रहकुल ५७
गोपरम २६६	ग्राम २२४
गोपाचल ४१२	घटयककार ७६
गोपेन्द्र १८९	घण्टोडेय ३२०
गोप्यण्ण २७९	घनविनीत १८
गोयिन्दम्म ४०	घनशोकवली ३५४-५
गोगविसेष्टि १०८, १६४	चच्चिचग १८९
गोहर २२६, २२९	चञ्चुल १९१, १९६
गोर्भ १५१-२	चटवेगन्ति २९२
गोललतक २६१	चट्टजिनालय ११४
गोलसिधाग ३९५, ४०४	चट्टप्रदेव ८२
गोल्लल्लि १५३	चट्टरमि ८८-९
गोल्पाचार्य २३४	चण्डब्वे १०७
गोल्पापूर्व १५९, ३९६, ४०३, ४२७,	चण्डिगोठि २६१
गोल्लणदेव १५९	चण्डिहयण ३९
गोव १८०	चण्डिसेष्टि १०८
गोवर्धन २२७, २५०	चतुर्यजाति १७२
गोवलदेव ११४	चतुर्थमूनोखर ३२६
गोवा २८७	चतुर्मुख देव २०४, २०७
गोवात्रगोत्र ४०३, ४०६, ४०९-१०	चतुर्मुखवसति ४१
गोपाटपुजक ७-९	चनुदबोलु ३८१
गोहिल्लगोत्र ४०३, ४१५, ४२५	चन्तलदेवी १३३-४
गोकथ्य २७	चन्दन १८९
गोकल १३६	चन्द्रलदेवी २३७, २४४, ३१९-२०
गोहयथ ५३	चन्दब्वे ३८०
	चन्दियब्वे ४५

चन्द्रिमेष्टि १०८
 चन्द्र १३६, १८९
 चन्द्रकराचारिन्नाय १५९
 चन्द्रक्याट अग्रय ९२-३
 चन्द्रतीर्ति २०८, ३६७, ३८३,
 ४०२, ४०३, ४०५
 चन्द्रगिरि ३१३
 चन्द्रनन्दि ४०, १०२, २२४
 चन्द्रनाय ३५६-८
 चन्द्रपुर २८२
 चन्द्रप्रम ४४, ७२, २१७, ३१५-६
 चन्द्रभूति ३७८
 चन्द्रमेन १८-२०, ६७-८
 चन्द्राक ३८१
 चन्द्रिकावाट वन ९८
 चन्द्रिकादेवी २३७
 चन्द्रेन्द्र ३७८
 चल्कपिल्ले २६१
 चवुडिमेष्टि १०८
 चवुण्ड २६३
 चवगिया ३९९-४००, ४०७,
 चवरे ४१६, ४१९, ४२५
 चगात्रगय ३९२
 चंगात्त १२९
 चारण्डरस १७३
 चान्दकवटे ९८

चान्द्रायणदेव १८०, २७१
 चामरन्ने ७०, ३८३
 चामगज १४७, ३४९
 चामगजनग २९६, ३१४
 चामुण्डराज १८९
 चागीति १२२, २२१, २२३,
 २९७-८, ३१२, ३२७, ३३३,
 ३३५, ३४१, ३४३, ३४७,
 ३६८, ३८१
 चारुचन्द्रभूषण ४१२
 चालुष्य २४-५, २७, ५३, ६३,
 ६६, ६८, ७३-८२, ८४-६,
 ८९, ९०, ९३-४, ९८-९,
 १०२-३, ११०, ११२-५,
 १२०-१, १२६, १३४, १३७,
 १३९, १४१-५ १४८-५०,
 १५२-३, १५७-८, १७०-३,
 १७८, २०८, ३८९-९०
 चालुक्यभोम ६४, ६७-८
 चाप्य ३७१
 चावुण्ड ८२
 चावुण्डरम १८७
 चावुण्डराय ८८-९, २७७
 चाहमान १५९-६०, १६९, १७१,
 १८९, १९६
 चिकण ३७

चिकमगलूर १२९, १३१	चेदिकुलमाणिक्यपुरम्बल्लि १२२
चिककन्नन्यनहल्लि २७१-२	चेन्न भैरादेवी ३२७
चिककण्ठ्य ३३३	चेन्नगय ३३०-३
चिककमल्लण्ण १७९-८०	चेन्नवीरप्प ३३०-४
चिककमालिगोनाडु ३२०	चैपल्लि ३२९
चिककराय ३४१	चोक्किसेट्टि ३११
चिककवीरप्प ३३०-२, ३३४	चोल ५२, ५६, ६२, ७४-५, ७८,
चिककन्नमोगी ४३, १२९, ३३३	८३, ९९, १०५-६, ११०,
चिककहन्निगोल २०१	१२१, १२७, १४०-१,
चिकिकसेट्टि १०८	१४५-६, १५८, १६६-७,
चिण्ण १२३-५	१७८-९, २०८, २५१, २६०,
चित्तरल १६	२७३, ३५४, ३९१
चित्तलट्टुम ३०८-९	चोलपेरुम्पल्लि २७
चित्तोड ३८६	चोलवाण्डिपुरम् ६२
चित्तामूर ३२८, ३५२	चौटकुन ३२७, ३४१
चित्तारि ८८-९	चौलुक्य ९८, २२२
चित्रकूट २२१-२	छत्तरपुर १७४
चित्रकूटगच्छ १७२, ३७८	छत्रसेन ४११
चित्रकूटान्वय १०२, ११२, १७२,	छपागा ४९५, ४२५
२६९	छन्नि ९५
चिन्नमंडारदेव ३३९	छोतग १९५
चिप्पगिरि २६६, २९३, ३२६	जकवेडेट्टि २९२
चिचली २३५	जकव्वे २३२, २५०
चूलकम्म ३	जवकव्वरसि ३०२-३
चेकवा २५७	जवकय २५८
चेदि ६२	जवकलदेवी ३०४-५

- जबकलि १३५
जबिकयक्क १५५
जबिकयब्बे ४३, २७२
जबिक्सेट्टि २०५
जगतकोत्ति ४०२
जगतापिगुत्ति ३२९
जगदेकमत्तन ७५-७, ८०-१, ९३,
१७०-२
जगमणचारि १३२
जटामिह्लदि ३७१
जट्टिगौड ३२९
जनिग १३५-६
जननाथपुरम् १२२
जननाथमगलम् १६६
जत्रलपुर ३१०
जम्बूखण्डगण १५-१६
जयकोत्ति ९५, १२९, ३८३
जयकेणि ११२, १५३, १७२, २५१
जयदेव १८९, ३६०
जयन्त्राचार्य ६८
जयराज १८९
जयवोरपेन्लिर्मयान् ३६६
जयमिह् ७४, ६३, ७६, ११५,
१२०, १५१-२, ३४३, ३९०
जयसेन ६७, ६९, ३८१
जयगोड्थोलमडलम् १७८
३१
जमनन्दि ५७
जाकवे २६६
जाकिमब्बे ९८
जातियक्क १४६
जावालिपुर १९०
जालोर ३८६
जावूर ३८३
जासट १९१, १९६
जाल्लवेक्कुल ९, १७
जिद्धुल्लिगे २७७
जिनकांछि ३४४-५
जिनगिरिपल्लि २५१
जिनगिरिमल्लै २५५
जिनचन्द्र १९५, १९७, २०४, २०७
२५८, २७५, २८७, ३१०,
३६९, ३९६, ३९८, ४०३,
४२७
जिनदत्त २२५
जिनदाम ३९७
जिनदेव १५३, ३७६, ३९७
जिनभूषण ३६६
जिनवल्लम ४०-१
जिनसेन २९४-५, ४०७-८, ४१२
जिनेन्द्र मगलम् ३१८
जिन्नण १८६
जीमूतवाहनान्वय १३७-८, १६२,

३८९-९०	तम्मदहल्लि ३८१, ३८४
जीयगौड ३६०	तम्मम्य ३३२-३
जीवराल ३९६, ३९८	तम्मरस ३०४-५
जुगियागोन ४१४	तलकाड १४६, १५५, २०३
जेवुलगेरि २५	२१४, २९१
जेमपायं १४६	तलककूडि ४१
जेमिसेट्टि ३७५	तलप्रहारि १८३, १८५
जोगीबडि ५६	तलदूर ३६९
जोग्गगिरि ८२	तलवननगर २८-३०
जोयिमव्यरस ११४	तलबलि २१४
ज्ञानभूषण ३९७-८	तवनन्दो २६९, २९१
टोबा रायसिंह ३४३	तवनिधि २९०-१
टोक १३२, ३००	तंगले ३६०
टवला गोत्र ४००	तंगलेदेवी ३०३-५
ठवर्ना, शान्तिशुमारजी ३९३	ताडकोड २६३
डम्बल ९४, २६३	ताडपत्री २१७
दिल्लिका १९०	तापूर २६२
दगदूर २६२, २९६	तालराल ६४
दगपुत्र १३८, १६२	तिक्कगदेव २६५
दगरे २६	तिवक ११७
दजेगाव ३९५, ४०८	तिन्निपीगच्छ १५५-६, २२४, २५०,
दाट्टिकेरे ५९-६०	३२१, ३२६, ३६४, ३७९
दहामपत्तन १९१, १९६	निप्यगौड ९६
दण्डपुरम १६७	निप्यय २६६
दमित्तप्यलवरैरन् २५५	तिप्पिसेट्टि ११४
दम्मण ३७८	तिम्मगौड ३२९

तिम्य ३२०
 तिरक्कोल १६७
 तिरुक्काट्टाम्बल्लि १४०
 तिरुक्कामकोट्टपुरम् ९९
 तिरुगोक्कणम् २७
 तिरुच्छापत्तुमलै १६
 तिरुच्छोरत्तुरै २८९
 तिरुनिडंकोण्डै ४१, ७८, १२७,
 १६०, १६६, २७३-४, २७९,
 ३३७, ३५४, ३७५
 तिरुसरम्बूर १४०, १७३
 तिरुप्परंकुण्डम् ३७३
 तिरुप्परुत्तिकुण्डम् १४०-१, १८५
 तिरुप्पान्मलै ५२
 तिरुप्पजैरि ७८
 तिरुप्पय्यम् ३६६
 तिरुमलरस ३१९, ३२२-३, ३२५
 तिरुवगिरै ३७-८
 तिरुवेण्णायिल् ३६६
 तिलकरम २६०, ३०१
 तिल्लिवल्लि ३४८
 तिगकूर ८३
 तीर्यंबसदि १२९
 तुंगलिकिलान् ९९
 तुम्बदेवनहल्लि १२२
 तुम्बिगि ३८४

तुलु (तुलुव) २८०, ३१४, ३२१-
 २, ३२७
 तुलुञ्जडि २६
 तुंगपल्लवरीयन् ३७४
 तेण्णिमलै ३६७
 तेरकणांवि २९५
 तेवारम् ६३
 तैकविणाडु २७
 तैल ७३, १७१-२
 तैलप १४८-९, १८५
 तैलंगेरे २६१
 तोगरकुंट १४८
 तोयिमरस ३७२
 तोरनगल्लु ३७७
 तोरवगे १६४
 तोल्लु ९५-६, १२६-७, ३६२
 तोलहरवलि २९७
 तोल्लग्राम २६
 तोडमंडल ७४, २८०
 तोडूर ७५
 तोलव ३१५
 त्रिकूटवसदि १४१
 त्रिणयनकुल ६६, ६८
 त्रिभुवनकीर्ति २६०, ३८०
 त्रिभुवनचन्द्र १०६-७, ११०-१२
 त्रिभुवनमल्ल ११४-५, १२०, १२२,

१२६-७, १३३, १४१, १४३,	दामण्य ३८९
१४५, १४८-५०, १५२-३,	दामत्रोत्र १८७
२००, २०८	धादि १६१
त्रिभुवनवीर ३७८	दिनकर ११९, १२१
त्रैकीर्ति २७५	दिनकरजिनालय १६७
त्रैलोक्यमल्ल ८२, ८४-६, ८९,	दिल्ली ३४४-५
९०, ९३-६, ९८-९, १००,	दिवाकर २५०
१०५, ११०, ११५, १२०,	दुग्गमार ३९, ४०
१७३, १७८, ३८९-९०	दुहमल्ल १३३-४
दहग १५४	दुद्यक १९१, १९७
दक्षिणकंठे १५५-६	दुर्गमट्ट ३६
दक्षिणसेट्टि ७०	दुर्लभ (दुर्लभराज) ४६, ५०
दण्डब्रह्म १३७	१८९, १९२, १९७
दण्डिपाल्लि ४४	दुर्विनीत १७, २०, ९४
दत्ता ५, ६	दुहम ११९-१२१
दत्तकमूत्रवृत्ति १०	दुमल १८९
दन्तिदुर्ग ३१	देकवे २०५
दमित्र ५, ६	देज्जमहागज १५-१६
दयापाल २१४, २१६	देमलदेवी १७३
दयामुयण ४०८	देमायप २३४
दयावसन्त २४	देल्हण १९६-७
दानप्य ३२८	देवकीर्ति ७६, ३२३, ३२६, ३६३,
दानवुलपाहु ५५, ६०, ३६३	३८४
दानिवाम ३३१-४	देवगण ३८२
दारिमेट्टि १०८	देवगैरी ३८९
दावणदि १०२, ३८०	देवचन्द्र २२५, २५८, २७१, ३२३,

३२६, ३५४-५, ३८१-२
 ३८४
 देवणय्य ११२
 देवण्ण २६०, ३१६-७, ३४१, ३४८
 देवत्तूर ३७४
 देवदाम ३२८
 देवधर १९२, १९७
 देवनन्दि २७०, ३६१
 देवपाल १६१
 देवप्प ३०८
 देवमाम्बे २९४
 देवरदामय्य ७०
 देवरस १४९
 देवराज १९०, ३५१
 देवराय ३००, ३०५-६, ३१४,
 ३९१
 देवस्पर्ध १९१, १९७
 देवाद्रि १९२
 देवागना १११
 देवियब्बे ७०
 देविनेट्टि १०८, २०५, २०७, ३१२,
 ३१६
 देवीरम्मणि ३४९
 देवूर ३७६
 देवेन्द्र ६९, २०४, २०७
 देवेन्द्रकीर्ति ३१४, ४०२, ४११,

४१६-२५, ४२८
 देवेन्द्रसैन २९४-५
 देशवत्तलभञ्जिनालय ४२
 देशीय (देशी, देशि, देशिग) गण
 ४३, ५३, ७७, ९३-४, ११४,
 १२५-६, १२९, १३३-४,
 १४०, १४८, १५६, १५९,
 १६४-५, १६७, १७०, १७३,
 १७९, १८२, १९७, २०४,
 २०७, २२५, २३२, २४६,
 २४९, २५२-३, २५६, २६०,
 २६५-८, २७२, २७४, २७८,
 २९५, ३१५-६, ३३५, ३३८-
 ९, ३४२, ३५४-५, ३५९,
 ३६०, ३६३, ३७६, ३७९-८३
 देमल १९१, १९६-७
 दोडणसेट्टि ३१२
 दोण ११७-८, १२०-१
 दोणि १२२
 दोरसमुद्ध २५३, २५६, २७०-१
 दोहद ५
 द्रमिल सघ २१४
 द्रविल सघ १७९-८०, २३३, २६७
 २६९, २९१
 द्राविडसघ १२८
 द्राविडान्वय २६४

द्रोहघरट्टाचारि १५६	नन्दवर ४५
द्वीपितटाक २९४	नन्दवाडिगे ८५
घन्यवसन्त २४	नन्दसेठि १
घरवृद्धि ६	नन्दापुर ८५
घर्मकीर्ति ४०३-४	नन्दिआम्नाय ४२२
घर्मचन्द्र ३१७, ३४०, ४००, ४०४- ५, ४०७-१०, ४१२-३, ४१६, ४२८	नन्दिगण (सघ) १०४, १०९, १२८ २१४, २२१-२, २३३, २५८ २६७, २६९, २९१, ४०२
घर्मपुर ३०३	नन्दिबेवूर ९३
घर्मपुरी ३८-९	नन्दिभट्टारक २५८-९, २९६, ३७५
घर्मभूषण २८८, ३११, ३९७, ३९९-४०१, ४०५-८, ४१०	नन्दिमुनि २३४
घर्मबोलल ९४, २६३	नन्दियड सघ ७२
घर्मसेन २६९	नन्दियडिगल ३६१-२
घवल ४६, ४९, ५२	नन्दीतटगच्छ ३९६, ४०२-३, ४०५-६, ४०९, ४११, ४१४, ४१६, ४२७
घारवाड ५३	नन्नियगंग ५९, ६०
घारावर्ष ३८, ३०	नमयर ५३
घुरामोरो गोत्र ४२२	नम्बिसेट्टि २८२-३
धृति २७	नयकीर्ति १७३, २०७, २१९-२० २३१-२, २५६, २५८-९, २७१-३
धोरजिनालय ४४, ९५, १८७	नयसेन ९१-३, ११८, १२१
ध्रुव ३०, ३२	नरतोग १६७
नकुलरस ८८-९	नरवर १९१, १९७
नगिरि २९७-८, ३०३, ३२७	नरवाहन ६६-८
नदिहरलहल्लि १८७, १९८	
नदूलडागिका १६०, १६८-९, १७०-१, १९०	

नरसप्य ३३२ ३
 नरसिगय्य ११४
 नरसिंह १६९, १७६-७, १७६,
 १८०, २०३, २११-२, २५६,
 २५८-६०, २६२, २७०-२,
 ३१३
 नरसिंहवग ३०९
 नरसिंहराजपुर २६, ३१२, ३४९
 नरसीगेरे ३९, ४०
 नरसीमट्ट ३९२
 नरेगल ५३
 नरेन्द्रकीर्ति ४०४, ४१०
 नरेन्द्रसेन ९२-३, ११८-२१, ३७५
 नल १२९
 नलजनमगाड्ड २३
 नल्लूर २७३
 नविलगुन्द ३८३
 नवल्लूर १२६-७, २२६
 नविले ८५
 नगलि १५५
 नजेदेवरगुड्ड २१६
 नाकण १४७, २६७
 नाकिग ९५
 नाकिमय्य ११२
 नाकिया ४
 नाकिराज १६६

नागकुमार ४३
 नागगावुण्ड १९८, २६२
 नागगौड ३७२
 नागचन्द्र ९५, १२९, १७२, १८६,
 २७८
 नागण्ण ३००
 नागदेव ७३, १९२, १९७
 नागनन्दि ३७, २९६
 नागपुर २०९, ३९३-५, ४१२,
 ४१५, ४१८-२३, ४२५-२७
 नागप्य ३४९
 नागभूप ३४३
 नागय्या ४४, २०९, ३५०, ३५७,
 ३६६
 नागरस्वण्ड ४४, २५०, २७७,
 २८९
 नागरस ३०१
 नागरहाल १७६-७
 नागराज २९४
 नागलदेवी २६६
 नागलपुर ३३०-१
 नागवर्मा २६, ८८-९
 नागवै १८१, २३३-४, २८६,
 ३७२
 नागश्री १९२, १९७
 नागसारिका ३५-६

नागमिचिख्वे २५१	नाहर ३८५
नागमेष्टि २८९-९०	नाहटा ३८५
नागमेन ७२, ८४-५	निगमान्वय २७६
नागह्वद १९४	निगुम्बवंग १३९
नागिसेष्टि १७१, २८६	निजिकख्वे २३०-१
नागुलपोलमख्वे ३७	निद्रूर २२५, ३६८
नागुन्वमदि ३७	निडुगल (निडुगल्लु) २६०, ३८२
नागोचिसेष्टि २६३	नित्त्वकल्याणदेव १६०
नागोच ३६०	नित्यवर्ष ४४-५, ५५
नागौर ४२२-३	नित्त्वगोहाली ७-९
नाडलाई १५९, १६७, १६९, १७०	निवियण्ण ३९
नाडलि १००-१	निम्बदेव १६३, १६५-६, २३९
नाडोल ३८६	निरुपम ३०
नायसर्मा ७-९	निर्घडेवृक्षसंघ ३४९
नायमेन ६७-८	निलिम्पपुर २९८
नादीवे ३५७	नीडूर ३९१
नानिग १९६	नीरलगि १७१
नाम्भिसेष्टि २७३	नीलगारि ३४६-७
नामि १३५, १३९-४०	नीलत्तनहल्ल ३१८
नाराणक १९१, १९६	नीलिकख्वे १७२
नाराण ३६, ४०	नूत्तिसेष्टि १०८
नारियप्पाडि ४१	नून्वन्दिसेष्टि ३५७
नालिसेष्टि १०८	नूलवागिसेष्टि ३५७
नालपुर ३३४	नेगलूर २५७
नान्कुवागिल्लु ३२८	नेचटिनतायि १२९
नाविकख्वे ११४	नेमण ८१-२, २८६-७, ३६२

नेमनेन ४२०

नेमिचन्द्र ४२-३, १२६-७, १५३,
१७३, २१९-२०, २२६,
२३२, २४५, २४९, २५८,
२६५, २७१, ३७०, ३८२,

४२८

नेमिदेव २२७, ३७६

नेमिदेहि १०८, ३१२

नेरिलगे १७१

नेल्लिकर ३१७, ३८२

नेवाजाति ४१३

नैगम १९५

नोम्पियवसदि २०८

नोलम्ब ३८-९, ७६, ९३, ११६,
१३९-४०

नोलम्बवाडि (नोणम्बवाडि) ७६,
१५५, २१४, ३९०

न्यायपरिपालपेक्ष्वल्लि २५५

पटना ३१७

पट्टिपोम्बुर्च ८६, ८९, १८३, १८५

पडियरकाटि ८८-९

पडेवल ७३

पडेओदुट्टु ३१३

पण्डितठय ३३३

पदमूलिक ४

पदार्थमार २५६

पट्टुमणसेट्टि ३१८

पट्टुमलदेवी ३२७

पट्टुमन्ने ३७६

पद्मकोटि ४०१, ४०७-९, ४११,
४१४

पद्मकुल ३४६

पद्मट १९१, १९६

पद्मण्णरस ३०४-५

पद्मनन्दि ४५, ५५-६, १४९, २१७,
२५०, २५८, २७७, ३००,
३१०, ३९७, ४१६७

पद्मप्रभ २००, २०८, २६९, ३८०

पद्मन्वरसि ५३

पद्मलदेवी १७९, २४४

पद्मसेन २५४, २६१

पद्मावती २३६, ३६२

पद्मावतीपल्लीवाल ३९५, ४०८

पद्मैय ३५०, ३५३

पनसोगे ४३, २०७, २२५

पण्डिण १४८

परकेसरिवर्मन् ५२, ७५, १४१,
१५८, १६०, १६७, २५१

परमजिनदेवजीयर् ३५७

परमार ८६

परम्बुर ९९

परवार ३९६, ४०४, ४१५,
४२३-६

पगन्तक ५२	पायषण ३४३
पगिसय २६६	पायिमम ७८, ८१
पनेपुरनाहु १७९	पायिसेष्टि २५४
पर्वतमुनि २२४	पारिसदेव १७९
पलसिगे ८२	पारिससेष्टि २१९-२०
पल्लव ११-२, ३८, ९३, ३५४	पार्श्व १२०-१
पल्लवपेमनिडि ११५, १२०	पार्श्वदेव ३८४
पल्लवरयन् १६७	पार्श्वदेवी ३३६
पल्लवादित्य २३	पालियठ ९६
पल्लवेलरस १८, २०	पालैयूर ३५४
पल्लिका १९०	पाल्यकीर्ति २२७
पल्लिचन्द्रल् ३१७	पाल्हण १९६
पल्लीवाल ३९५, ४०१	पामकीर्ति ४०४
पसिडिग २६	पिट्टनुप १५१-२
पहाडपुर ६	पितल्यागोत्र ४२७
पञ्चत्पनिकाय ७-९	पिरियमोसगि ७६-७
पोटणी मोत्र ४२५	पुगलोकरनाथनल्लूर २५५
पाटशीवरम् २०८	पृष्टैय ३५३
पाण्ड्य २७, ३८-९, ७४, १०५, २५३, २५५, २६१, २६४, २९९	पुणिस १४७
पाण्ड्यप्परस ३१९-२०	पुण्ड्रवर्धन ७, ९
पाण्ड्यरस १८३, १८५	पुत्तङ्गिः ६३
पानुगल १४८, २१४	पुत्तिगे ३२७, ३४१
पान्थिपुर १८६	पुट्टुप्पट्ट १४१
पापडोवाल ३९६, ३९८, ४११	पुन्नागवृत्रमूलगण ८०, ८१, १८६
	पुन्नाद १७, १८, २८, ५४
	पुरगूर ८५

नैनामिालिखित-संग्रह

पोषक ७६	१२८, १४८, १५५, १७७,
प्रतापनीति ८००, ४०२-३, ४०५-	१०८, २०४, २१४, २७६,
६ ४०९-१०, ४१६	२८१, २८९ ९०, ३९०
प्रयत्नमेवमन्दि ३८९	वन्दलितं ४४
प्रमात्ररव २५४	वप्यगज १८९
प्रमात्रसेन २९४-५	वप्य ६९, २३२
प्रमात्र ५८, ५८, ६०, ७०,	वन्दई २०९, ३२३, ३८६-७
१३३-८, १६०, १५८, १५७-	वन्नागवृद्ध २६४
८, ३००, ३६१, ३८०	वन्मध्य २८३
प्रमलदेवी ३५८	वन्मन्त्रं ३६९
प्रमिसेहि ३८१	वन्नाचारि २१०
प्रवरकीर्ति २२२-३	वन्मिसेहि १०८, १५२, १६४,
प्रवाट १९१, १९३	१७०, २०७, २२६
प्रोठ १४२-३, १६५	वयिविसेहि ३७७
वषेरनाल ३०६, ३९८-४०३, ४०५-	वन्देवरस १२१
७, ४०९-१०, ४१२, ४१४,	वनेनन्द ३६८
४१६, ४१९	वलगारगण १०४, १०९
वृक्षे १०८, ११०, १४८	वलगारवर्ष २९४-५
वदोदा ३८५	वलगोरि १७८
वल्कुवाल ३११	वलदेव ७१, ९१, ९३, १०२,
वडनगुप्प २८, ३०	१९९, २३९, २४५, ३९०
वदमोर ३०७	वलनद्र ५०-२
वहेग ५३	वलात्कारगण १०७, ११२, १५३,
वधनोरा ४२०	२२९, २५८, २७०, २७२,
वमदाम्बिके ३४३	२७८, २८८, २९९, ३०६,
वमवाप्ति ८५, ११४, ११६, १२०,	३१०-१, ३१५, ३९६-७,

४००-५, ४०७-१२, ४१४-२३, ४२५-८	वाढंगट्टि ३७१
बलिकुल ६१-२	बान्धवनगर २५०
बलेयवट्टण १६४	बावानगर १८२
बल्मट्ट १९९, २००	बामिसेट्टि ३२९
बल्लाल १३१, १३७, १५४, १९८, १९९, २००, २०२-४, २०७, २०९-१८, २२०, २४९-५०, २७०, २७३, २७६-७, ३३५	बाग्कूट २९९, ३२२, ३२६, ३४१
बल्लिग्रामे (गाँवे) २७६-७, ३८९	बारलो १
बसकर ३०६	बालचन्द्र ५८, ६०, ७०, ८०-१, १३४, १४८, २०४-५, २०७, २१९-२०, २२७, २४२-३, २४८, २६०, २६३, ३६३, ३८०, ३८३
बसववेव २८१-२	बालप्रसाद ४७, ५२
बसवपट्टण २६६	बालूर २४९, २५७, ३४८
बसविमेट्टि १०८	बालेङ्गल्लि १७०, २७९, ३७२
बस्तिङ्गल्लि १६७, २५६	बासवे ७१
बहादरपुर ३९५, ४०३	बाम्बूर १२५, ३८९
बकापुर ४४, ३७२	बासिसेट्टि १८१
बकैयरम ४४	बाहुबलि १२६, १६९, १५०, १५२, २१९-२०, २५२-३
बागियूर ५४	बाहुबलिकूट १५५-६
बाचण्ण ३०९	बिजापुर ४५ २५५, २७६
बाचम्य ९४	बिजोलिया १८८
बाचवे २३१	बिज्जण १३६, १८२, १८६-७
बाचिगावुण्ह १४९	बिउन्नल १५१-२, १७८-९
बाचिमेट्टि २७५	बिटिसेट्टि ३११
बाचैय २६०	बिट्टम्य ४४
बादम्य ३७८	

विद्वरस १८७	वृचब्धे १२९
विद्विदेव १५४, २११, २७०	वून १२३, १२५
विद्वियण ३६२	वूनय्य ५३
विद्वक्क ७१	वूतुग ५८, ६०, १०४, १०९
विण्हगनबले ५५	वूपोज ३६०
विदिहर २६८, ३०९-१०	वूवनहत्ति ७०
विदुरे ३२०, ३३६-७, ३३९-४०	वंगूर ४२
विग्णंतर ३२६	वेचारकवोमलापुर ७४
विल्लगौणह १२६-७	वेट्टकेरि ३४०
विलपाणसेट्टि १६४	वेट्टियेट्टि ३८१
विलिमि ३२०, ३३५	वेन १४२-५
विलिगिरि रगनवेट्ट २०९	वेन्नेवुर ९८
विलिचाप्राम २५३	वेरिसेट्टि ३८०
विल्लमनायक ३८२	वेलगामि २१७, २७६, ३७०, ३८९
वीचगवुड ७४-५	वेलगांव ४२, २३६, २४३, २४९
वीचण (वीचिगज) २३८-९, २४३-६, २४८-९, २५४	वेलगुल २२७, २६७, ३२५ ए
वीचिद्विट ३८३	वेल्लतंगडि ३१४
वीरण १३९-४०	वेल्लप्य २७९
वीग्ग्य ९४	वेल्लूर १३०, १४७, १७५, २०७, ४४, ३४६
वीग्गस १८३, १८५	वेल्लुगलि ८५
वुक्कराज २७८-९, २९०, २९५	वेल्लुदेव ९१, ९३, १०२
वुवगुप्प ९	वेल्लुद्विट ५६
वुलिमेट्टि ३०१	वेल्लुम्भट्टे ३८२
वुल्लय ३५९	वेल्लत्ति १५२
वुस्सेट्टि ३२९	

बैल्वल ७९, १०४-६, १०९-१०, ११२, १७८, २१४	बोम्मन्वे २२९, २६६
बैल्वोल ९०, ९३, १०३, १२०, १७२	बोम्मिसेट्टि २६०, २६६, २७७, २९९, ३१२, ३२८, ३७१, ३८०
बैहार २२८	बोयुगट्ट २७
बैहूर ३७	बोरखडघागोत्र ४०१, ४०३, ४०६, ४०९, ४१६
बैचण २९७-९	बोलगडि ७८, ८१
बैचय २७८, २८८	बोलयनाग २९३
बैचिसेदित २८५-६, २९९	बोमिसेट्टि १०८
बैन्दुष ३०८	ब्रमदेव २२६
बैराट ३८८	ब्रह्मदेवण ३६४
बैरामक्षेत्र ४१६	ब्रह्म २५०, २९०-१
बैहुरु ९३	ब्रह्मकुल ११६
बोगगावुण्ड ३८४	ब्रह्मजिनालय १५२, १५७
बोगाडि १९८	ब्रह्माधिगज ९३
बोचुवनायक ३८४	ब्रिटिश म्यूजियम २७, ३८७
बोप्पगाड ३७५	भटकल ३००, ३३५
बोप्पदेव १५६, २५०	भट्टाकलक ३१६, ३३५, ३३८-९, ३४२
बोप्पय २९६	भट्टिदाम ६
बोप्पिसेट्टि १०८, १६४	भद्रवाहु ९६, १७५, २१४, २१६
बोप्पेयन्वे १८३	भद्ररायि १५७ ८
बोप्पेयवाड १३८, १४०	भद्रेशर ३८६, ३८८
बोम्मक्क ३५६	भरत ७३, १५५-६, २७२
बोम्मण ३६८	भरतपुर १७४, ३८५
बोम्मरस ३३७	
बोम्मरसेट्टि ३१६	

भरतिमय्य १७०	भूलोकमल्ल १५३, १५७-८, ३९०
भरतिसेठि २१४	भैरव ३१३
भवर गोत्र ४०४	भैरवदेव २६५
भागिण्ये ७९, ८१	भैरवपुर ३१५
भागियन्त्रे ४०-१, ९५	भैरादेवी ३००
भानुकीर्ति १२९, २५०, २७२, ३७९	भोगदेव २०८
भानुचन्द्र ३९८	भोगराज २७८
भानुमनीष्वर ३२१, ३२६	भोगवदि १९९-२००
भालिपाचन्द्र ३३०-१	भोगवे ११४
भाबचन्द्र १९७	भोगादित्य ९८
भावनगन्धवारण ८५	भोज ८६, १३६-७
भावमेन ३८०	भोमले ३९४
भासगवुण्ड ३६२	भोसे ३७०
भास्करमन्दि ११३	भगर कारगरम १५७
भिल्लम १३७, २१३	भणलकूल ११२
भोम ६७	भणलिमनेआडेयोन् २६
भोमदेव ९७ ८, २२१-२	भणलिर १७२
भोसां ३९५, ४११	भणिचन्द्र ४२
भुजवलमल्ल १८६	भण्टू २२९
भुग गोत्र ४००	भण्डक १९२, १९७
भुवनकीर्ति ३९७-८, ४२८	भण्डालगरे ८५
भुवनैकमल्ल १०२-३, ११०, ११२- ३, ३८९	भण्डलोई ३३८
भुव त्रिकुनाथनल्लूर २६१	भण्णे ६९
भुतवलि १७५, २१४, २१६	भतिवीर ३४०
	भतिसेन ९९

मत्तिसागर ३५४
 मत्तावार ९९, २९२, ३५३
 मत्तिकट्टि ९९
 मथुरा ५, ६, ७२, ३८६
 मदनमेन २९४-५
 मदनूर ६८
 मदनणसेट्टि ३१८
 मदविलगम् १३०
 मदिरे ३९
 मदिरेकोण्ड ५२, २५१
 मदिमागर २५५
 मद्रुवण १८६
 मद्रुवरस ३०१
 मद्दुहेगडे ३२१-३, ३२५-१
 मद्राम ३६४
 मधुकण्ण २५६
 मधुर ३९१
 मन्गुन्दि २५१
 मनोली २२७
 मनोविनोत १८
 मन्तरवर्मण १२१,
 मन्तगि १८६, ३७२-३
 मन्त्रचूडामणि ९५, --
 मन्त्रेमसलवाड २६५,
 मम्मट ४६, ५०-२
 मयिलिसेट्टि १०८

३२

मयूरवर्मा १५७
 मरकत ३२७
 मरगोड ३७७
 मरचोलल ७६
 मरमे २३३
 मरिनाग ३५०-३
 मरियाने १३१, १५५-६, १६९
 मरुत्तुन्नकुटि १२१
 मरुत्तजिन २९२
 मरुलयरस २८०
 मगोल ७५
 मलघारिदेव १३०, १७०, १८२,
 २२८, २४५, २४९
 मलयकुल ६३
 मलयन ३३४
 मलवसेट्टि २२६
 मलय २२५
 मलियालपाण्ड्य २५८
 मलयन् कोविल ३६६
 मलयन् मल्लन् १६०
 मल्ल २५४
 मल्लगावुण्ड १७१-२
 मल्लप ६४, २८७
 मल्लट्य १०७, ११०
 मल्लवल्लि २६
 मल्लवादि ३५-६

मन्त्रार्थ ३०८	महाभोग १५९
मन्त्र ३६८	महाभद्र ४
मन्त्रिकानाम २१३, २३६-८	महाभोगवाहन २
मन्त्रिकार्थ २३६, २३७, २४३-४, २४६, ३०८	महाभोगी २९९
मन्त्रिकार्य ३०३	महावीर ४२
मन्त्रिकार्य ३६०	महोत्तर ४०८
मन्त्रिके ३८३, ३९०	महोत्तर १६२, १६३
मन्त्रिकुल ४-३	महोत्तरवृद्धि ८६
मन्त्रिकुल १६०	महोत्तर ३८-९, ४६, ५२-३
मन्त्रिकुल २२६	महोत्तरार्थ ७१
मन्त्रिकुल १०८, २१३, २८६-८	महोत्तर ३२८
मन्त्रिकुल ३००	मन्त्रिकुल ३०२-५, ३५५-६
मन्त्रिकुल ८२, १०८, १५३, २६०, २८० ३१६	मन्त्रिकुल २२८
मन्त्रिकुल (मन्त्रिकुल) ९९, १२७, १८५, २१४, २१६, ३७०, ३८३	मन्त्रिकुल १८२
मन्त्रिकुल ६३	मन्त्रिकुल ३२०, ३२६, ३४१
मन्त्रिकुल ८३	मन्त्रिकुलवाच ६३
मन्त्रिकुल २८४	मन्त्रिकुल २१४-५
मन्त्रिकुल २५८-९	मन्त्रिकुल ३७५
मन्त्रिकुल ८६	मन्त्रिकुल ८४
मन्त्रिकुल २२६	मन्त्रिकुल २५०
मन्त्रिकुल ३२९	मन्त्रिकुल २२, ५८, ६०, ९८, १५०, १५२, १६६, २०४, २०८, २२९, २५८, २८१-२, २८४, २७८, ३०५
	मन्त्र १७६
	मन्त्रिकुल १२५

माचियण १७६-७	मानलदेवी १६०
माचिराज १८३, १९८, २००	मानमेन २९९
माचेर्ल २४	मावलरसि ३०३, ३०५
माणिकदेवी ३०५	माबाम्बा ३५५
माणिकसेट्टि १००-१, २८५-७	मामटा १९२, १९७
माणिकसेन २०९, ३९७-८, ४०२, ४२०	मायण २९४-५
माणिक्यतीर्थ १५२	मायदेव २६३, ३७०
माणिक्यनन्दि १०४, ११०	मायमेट्टि २९९
माणिक्यमट्टारक १८२	मार २९२
माण्हू ३०६	मारगौड १८५-६
मायुग संघ १९५, १९७	मारदेवी २८३
मादरम ३७४	मारब्बेकन्ति ६९
मादलदेवी २६६	मारमय्य ७०
मादलंगडिकेरि ३४०	मारय ३८०
मादवे २५८, २६३	मारवर्मन् २५५, २६४
मादय २६३	मारमिह ५३, ५४, ५९, ८९, १०९, १३६
माधव २८७	मारिसेट्टि १८१-२, २१४
माधवचन्द्र १५४, २३३-४, २४२-३, २६६, २६८, ३७२	मारुगोट्टेर् १९, २०
माधवनन्दि १५९	माळु ३३६
माधवमहाचिराज १०, १२, १७, २०	मारैय २१९-२०
माधववर्मा १०, १४४-५	मार्तण्डय्य ८२
माधवसेट्टि १०८	मालकोण्ड १
माध्यमिका १	मालवे २२५
	मालवेगडे २७७
	मालियन्वरसि ३५५-६

२२९, २३३-४, २४६, २४९-५३, २५६, २५८-६१, २६५-७०, २७२, २७६, २७८, २८८, २९५-६, ३००, ३०६, ३१०-१, ३१५, ३१७, ३२१, ३२६, ३३५-६, ३४०, ३५९-६०, ३६३-४, ३७०, ३७३, ३७५-६, ३७८-८२, ३९६-४२९	मैललदेवी ८५, १५१-३ मैलाप अन्वय १५३ मैलुगि १७८, १८२ मंसुनाढ २१५-६, २८३ मैसूर ३४९-५३ मोटैवेन्नूर ४०, ९८, २७५ मोदलियहल्लि १७० मोनभट्टारक ४२ मोरक कुळ ७६ मोरब ९५ मोराक्षरी १९०, १९६ मोसल १९१, १९७ मोसलेयकुक्कु ३१६ मोसलेवाड २६५ मोहनदास ३४१, ३४३ मौगामा ३८७ मौनपाचार्य ३५७ मौनिदेव १५०, १५२ यलवट्टिट ३६३ यश कीर्ति २२१, २२३, ४०२-३ यशोनन्दि ५७ यशोराज १८९ यशोवर्मन् ८६ याकमन्वे १४२-३, १४६ यादव २५१, २५४, २५६-९,
मूलिगतिप्यय २६६ मृगेश १३-१५ मेषचन्द्र ५८, ६०, ९६, १३३-४, १४०, १५५-६, २४९ मेषनन्दि २५० मेढता ३८७, ४०३ मेषडाम्बा ६६, ६८ मेलपराज ६६, ६८ मेलपाडि ५३ मेलरस १४४-५ मेलब्बे २६० मैलाम्बा ६४ मैलुमान्तलिगे १८३, १८५ मैषपाषाणगच्छ १५७-८, ३७५ मैणदान्वय २६८ मैलम १४३, १४५	

२६३, २६५, ३८९-९०	रत्नकीर्ति २६१, ३१०, ४०३-४,
यापनीय सव ४२, ८०, ८१, ९५,	४१५
१२२, १५०, १५२, १५३,	रत्नगिरि २१, ३४४-५
१८६, २२७, २६६, २७५,	रत्नचन्द्र १९७
३७६, ३७७-८	रत्ननन्दि २०४, २०७
याप्यसगलवकारिणै ३९१	रत्नपोडेय ३१४
यावनिक ११-२	रत्नभूषण ३७७
यिवल्लिग्राम ३२९	रत्नापुरि २६७
योचलद्वाल ३३२-३	रवि १३-१५
येविसेट्टि १०८	रविचन्द्र ५४, १२५, २५८, २७१
येडेहलिल ३३०-१, ३३३	रविनन्दि ५४
येरगजिनालय ३६४	रविसिद्धुक्कुट्ट २०, ७२, २२६,
येलवर्गि ३७३	२९३
योजणसेट्टि २८२, २८४, २८६-७	रगनवेट्ट २१०
रवकसगग ५९	रंगप्पराज ३४४-४५
रघु १३	रगरस २५६
रघुवर, रघुली ३९४, ४१५	राइकवाल ३९५, ३९७
रट्टगुडि २४	राचमल्ल ५८, ६०, १०९
रट्टजिनालय २४०, २४३, २४६,	राचय ७१
२४९	राजकीर्ति ४०५-६
रट्टवध १२८, १३२, १५३, १८५,	राजके रिवर्मन् ५६, ९९, १४०
२३५, २३७, २४३, २४५,	राजग वुण्ड १००-१
२४९	राजदेव १६८-७१
रणकि १२३, १२५	राजदेवी १८९
रणपाकरस २६	राजपाल ४००
रणावलोक २८, ३०	राजमीम ६४-५, ६८

राजमार्तण्ड ६४	रामसेट्टि २८५
राजराज ७४, १७८-९, २८०, ३५४	रामसेनान्वय ४०५-६, ४११, ४२७-८
राजलक्ष्मी २५४	रामी ७-९
राजश्वे १७६, ३७५	रामोज ३७४
राजाधिराज ११०	रायगौड ३६०
राजि १२०-१	रायद्रुग २७८, ३७८
राजिमथ्य ११९	रायपाल १५९-६०, १६८-७१
राजेन्द्र ७५, ७८	रायवाग ७७, २३५, ३३६
राजेन्द्रशोलचेदिराजन् १२७	रायरसेट्टि ३८०
राणिवेण्णूर ३७	रावदेवी १११
रामकीर्ति ३९९, ४१६	रावसेट्टि १६४
रामक २८२, २८४-७	राष्ट्रकूट १५-६, २८, ३०-२, ३६-७, ४२, ४४, ५०-१, ५३-५, ६४, १०९, १५९, १७२, २४३, ३९४
रामचन्द्र ८१-२, २६३, २६५, ३१५, ३८९, ४२५	रासलदेवी १८९
रामटेक ३९५, ४०४, ४०७, ४२२	राहक १९१, १९७
रामण १८६, २८२, २८६	रुद्रपाल १६०
रामतीर्थ ३८१	रुगि २३५
रामदेव २६५, ३३९	रूपनारायणवसदि १६४-५
रामनाथ २६५	रेचय्य ७१, २५०
रामनाथक ३१०	रेचरस ३८४
रामपुरम् ३८१	रेचिदेव १०८, ११०
रामप्प ३१३	रेक्कूच ९३
रामराज ३१९, ३२२, ३२६	
रामश्वे २८६	

रेवकनिर्मह १०४, १०९, १५१-१	ललितकीर्ति २२२-३, २२५, २९५-
रेवकव्वरसि ७६	६, ३१९, ३५४-५, ३७९, ३८२, ४०३
रेवणम्य ११२	ललिता १९३, १९७, ३६८
रेवणाग्राम १९०, १९६	लाघक ६
लक्षकवरपुकोट २८७	लाटीय मण्डल ३४
लक्षकुण्डि ७३, २०८, ३७५, ३८२	लाहवागहगच्छ ४००, ४०२-६, ४०९-१०, ४१४, ४१६
लक्षमट १९१, १९६-७	लाडोल ३८५-६
लक्षमण १९२, १९४, १९७	लातूर ४२६
लक्षमप्परस ३१३	लालाक २
लक्ष्मरस ९८, १०३, १०५-६, ११०-३, २३६-७, २४४	लिगण ३३०-१
लक्ष्मादेवी १७८, २११	लोकटेयरस ४४
लक्ष्मी १९३, १९७	लोकाचार्य २९१
लक्ष्मीदेव १३२, २३६-७, २४४	लोकाम्बा ६५
लक्ष्मीधर ३९१	लोकिकेरे ३७७
लक्ष्मीमार्णिकदेवी ३०३	लोकिकगुण्डि ७३
लक्ष्मीसेन २९४-५, २९९, ३४४-५, ४०१, ४०५-६, ४१४, ४२०, ४२७-८	लोढा गोत्र ४०३
लक्ष्मेश्वर ५४, ११२-३, ११५, १५८, २६५, ३००, ३१५, ३१८	लोलाक १९२-५, १९७
लक्ष्मण १७४, १८०, ३८६, ३८८,	लोहाचार्यान्वय ४०४-६, ४१०
लक्ष्मणदेवो } ७९-८२, १८६	लक्ष्मण १७५, २१४, २१६, २८८
लक्ष्मणदेवो } ७९-८२, १८६	लक्ष्मण ९५
लक्ष्मणदेवो } ७९-८२, १८६	लक्ष्मणदेव २५१
लक्ष्मणदेवो } ७९-८२, १८६	लक्ष्मणन्दि १७५, २१४-६
लक्ष्मणदेवो } ७९-८२, १८६	लक्ष्मणसिग ७५
लक्ष्मणदेवो } ७९-८२, १८६	लक्ष्मणसिग ७, ९

वटेश्वर ९८

वटुम्ब ३

वणमठ्य ३८९

वयिरिमलैपन् ७५

वरगुण १६, ३७-८

वग्लाङ्का तीर्थ १९३, १९७

वराण ३०६, ३१४-५

वरुण ६९, २६९

वर्षमान २८, ३०, १०४, ११०,

१२८, १३४, २०८, २५१,

२५८, २७०-१, २८८, ३०६,

३३७, ३६५

वलभो १९०

वल्लयवाड १३८, १६२

वल्लुवामोळि ७५

वमन्तकीनि २९९

वमुधाकर ३७४

वन्नुपाल १९०

वसिकातट ३५

वाक्वतिराज १८९

वाग्देवी २३८, २४५

वाच २५४

वाचट्य ३८०

वाग्नेन २०९

वाञ्जिङ्गल ७३, ३९१

वाणकोवरैयर् ४१

वादिघषलभट्ट ५४

वादिराज ५९, १२८, १७५-७,

२१४, २१६, ४०५

वाडिराजुल २३

वादीमनिह १७६

वामनन्दि ३७०

वायट ९७

वालनागम ३३९

वावणग्म ७६, १७२

वामल गौन ४२६

वामियण्ण ३८३

वामुदेव ४६, ४८, ५२, २२४

वामुपूज्य १५३, १७२, १७६ ७,

२१५-६, २५८, २६३, २७१

वाहिल ७५

विक्रमचाल ८३, १५८, १६०

विक्रमवापट्य २६४

विक्रमपु ८८-५, १२१

विक्रमराय ३९२

विक्रमादित्य १६, ६४, ७४, ११३,

११५, १२०, १२२, १२६,

१२७, १२९, १३४, १३६-७,

१३९, १४५, १८८, १८९,

२१२, ३९०

विप्रहराज १८९-९०
 विजयकोटि १८६, २९३, ३१६,
 ३३५, ३९८-९
 विजयवक्त्रा ३६१
 विजयगण्डगोपाल २८९
 विजयगण ६९, २५६
 विजयदेव ४०४
 विजयनगर २७८-९, २८७-८, ३००,
 ३०५, ३०८, ३१३-४, ३१७,
 ३१९, ३२६, ३३९, ३४७
 विजयनायकर् ३१७
 विजयवाटिका ६७, ६९
 विजयशक्ति २६
 विजयादित्य २५, ६४-६, ६८,
 १५३, १८५-६
 विजयानन्द १५-६
 विजयालयमल्ल ७८
 विजो ५७-८
 विद्वरस २६
 विद्वम्पनायक ३२७
 विठ्ठगौड ३७३
 विडालपर २६४
 विम्वामधूर २५१
 विष्णुकोवरैयन् ७५
 विहरवराज ४६, ४९-५२

विद्यागण ४०६
 विद्यानन्द १०४, ११०, २५८,
 २९३
 विद्याभूषण ४००-१, ४०५, ४०९,
 ४११, ४१४, ४२२-३
 विनयचन्द्र २६५
 विनयसेन ३९
 विनयादित्य ९५-६, १००-१,
 १५४, २०२, २११, २७०
 विन्ध्यराज १८९
 विन्ध्यवल्मी १९२, १९७
 विजगवरमैय ३४९
 विरिसेठि १
 विरूपय ३८०
 विलम्पकम् ५२
 विलघार १५८
 विल्लवडरैयन् २७९
 विशालश्रीति २७८, ३११, ३२६,
 ४०७, ४०९, ४१०, ४२४,
 ४२६
 विदीयनल्ललान् ४१
 विश्वसेन ४०५
 विष्णुकलम्बुरु ३६७
 विष्णुगोप १०, १७, २०
 विष्णुवर्धन २७, ६३-४, १३३-४,

- १४७, १५६, १७६, २००,
२०२-३, २११
- वीगडि १९१, १९७,
वीन १९७
- वीरकोगात्व १३३-४, १४०
- वीरगंग ९५, १३३, १४६, १५४,
२००, २०४-५, २१४
- वीरलन्दि ५३, ९३, २०८, २५२-३
२५८, २७१
- वीरनोलम्ब ११५-६, १२०
- वीरपेर्माडि १५३
- वीरप्पोडेय ३२०
- वीरवलंज १६३, १६५, २४०
- वीरभैरव २९९
- वीरम ११४, ३२०
- वीरराजेन्द्र ९९
- वीरसघ ३३८
- वीरसान्तर ८७-९
- वीरसेन २०९, २३५, २९३, २९५,
३३०-४, ३४४-५, ४२५
- वीराम्बुधि ३९२
- वीरेश्वर ३६५
- वीरेय ३१४
- वीर्यराम १८९
- वीसल १८९
- वृक्षमूलगण १२२, ३७६
- वृषभ २१
- वृषभनन्दि २०४, २०७
- वृषभसेनगणधरान्वय ४०१-२
- वेडल ५६
- वेणगि १२८
- वेणुग्राम (वेणुपुर) १३२, १३७,
२३९-४१, २४६
- वेणुगेवाव ३४७
- वेणुनाडु २२
- वेमुलवाड ५३
- वेम्बुवलनाडु १४५
- वेरावल २२०
- वेलनाण्डु ६६, ६९
- वेलि ६३
- वेलूर ३८१
- वेलूरवोम्भनायक ३१७
- वेल्लप्रभाटिका १५९
- वेंगी ६३, ६५, ६८, ९०
- वेस्तर ७२
- वैज १४२, १४५, २३९, २४५
- वैजयन्ती १३
- वैयप्प ३१७
- वैश्वण १९१, १९६

बोजपसेटिट २८६-७

व्याघ्रैक १९१-६

शक १२९

शङ्क्यापारं २७

शण्वं ३१७

शमणर् सिङ्गल् ३६६

शम्भुदेव २२९

शम्भुवराज ३६७

शर्कर ३४६

शशकपुर २०१

शकरगण २९

शङ्करदेवी ३१७, ३२६

शंकरसेटिट ३२६

शस्त्रजिनालय ५५, २०१, ३००,

३१५-६

शस्त्रणाचार्य ३१८

शंभुदेव ३८२

शाकम्भरा १८९

शान्तदेव २१४, २१६

शान्तर १३६, १८३

शान्ति १२०-१, १६१

शान्तिग्राम २२४

शान्तिदास ४०५

शान्तिदेव १७५, २१४, २१६,

३७५

शान्तिनन्दि ९८

शान्तिनाथ ३७४

शान्तिमद्र ४८, ४९, ५२

शान्तिमुनि १२८

शान्तियवक १५३

शान्तिवर्मा १३, ९१, ९३

शान्तिबोर ३७-८, ३७७

शान्तिसेटिट १६४, १८१, ३७४

शान्तिसेन ४१३

शावल ३६३

शावड २२८

शास्त्रसारसमुच्चय २५९

शाहजहां ३४०, ३४३

शिंगांव २५

शिरनेव ३५३

शिरूर ३७६

शिलाथी १६१

शिलाहार १३५, १३८-९, १६२,

१६५-६, १८५

शिवकृमार १८, २०

शिवडूगर ३१०

शिवनहसेटिट २२५

शिवपुरी ३४१-२

शिवमार २६

शिवराम ३१९

शिवरामदय ३००
 शिवमिह ३९६
 शिवणार ४१
 शिविकुलम् २५५
 शीतलप्रमादजी ३९३
 शुभकीर्ति ७२
 शुभचन्द्र ५७-८, १३१, १५०,
 १५२, १६७, २४०, २४३,
 २४६, २४९, २५८, २६८,
 २७१, ३१०, ३६१, ३९९
 शुभनुंग ३१
 शुभंकर १९१, १९६
 शृंगेरी १७३, १८१, ३१६
 शोडवाक १७४
 शेरमठ १६१, २३५
 शैवादि १४५
 शैवादि २७९
 शैविन् शैवीशिलाहणान् १६७
 शैवियम्मण कोयिल् ३१७
 श्रवणन अरे २१०
 श्रवणनहत्तिल १३३
 श्रवणवेलगोल ३३५
 श्रावकाचारमार २५९
 श्रीकीर्ति १९७, २२१-३
 श्रीचन्द्र १५४
 श्रीधर ४३, २५८, २७९

श्रीनन्दि ११३
 श्रीपादरस ७६
 श्रीपाल २२, १६१, १७५-७,
 २१४, २१६, २६९
 श्रीपुरुष २६
 श्रीभूषण ४००, ४०३, ४०५
 श्रीमाल १९०, ३९६, ४०१
 श्रीयम्म २६
 श्रीगदेवी १८०
 श्रीरगपट्टम् ३४३
 श्रीवल्लभदण ३६७
 श्रीवल्लभ १८, २०, ३९, १८५
 श्रीविक्रम १७, २०
 श्रीविजय २९, ३०, ६१-३, १७५,
 २१४, २१६, २५४
 श्रतकीर्ति ५९, ६०, १६४-५-
 १७५, २५८, २६७, २७१,
 ३३५,
 श्रनवीर ४२०
 श्वेतपद ८६
 सकलकीर्ति ३९७-८, ४०५, ४१४
 सकलचन्द्र १०२, १०७, ११०-१,
 १११-४, २५१-३, २५७, २६८,
 २७३-३, ३६३
 सकलमन्त्र ३६४
 सकललोकाश्रय २७५

भक्करेपट्टण २९३, २९९, ३५७	सर्व ३३
सृण्णमल्लीपुर २६२	सर्वदेव २५६
मत्तिग ७६	मर्वधर १५९
मत्त्यण ३७४	सर्वलोकाश्रय २७
मत्त्यवाक्य ५४, १४०	मलनृप २०१
सत्यवैगडे २३०-३	सल्लक्षण ३
सत्यसेन ६	मवणू १५२, २२८
सत्याश्रय २५, ६३, ७३, ७६	सवाईजयनगर ३९५, ४१५
मदाशिवनायक ३२२, ३२६	सवाईराम ४२३
सदागिधराय ३१९, ३२२, ३२६, ३४७	सवाईमिगई नेमलालजी ३९३
सपारस २६३	सहस्रकीर्ति ३७३, ३७९
सच्चि ९५, १४२, १४५	महेष्टमहेष्ट २५५
ममणरमलै ७२	संकण ३३४
ममन्तभद्र २६३, ३३०-२, ३३४, ३३६, ३३९, ३४१, ३४४- ६, ४०१	सकिनेट्टि १०८
सम्यक्स्वरत्नाकर ८२	मंखेस्वग गीत्र ३९९
सयविमारय ३८०	संगनृप ३०३-५
मरट्ट १०२, २६०	संगप २८६
पण्णनेट्टि २८६	संगमदेव २८७
सगस्वतीगच्छ २७८, २८८, ३०६, ३१०, ३९७, ४००-४, ४०७, ४०९, ४१०-२, ४१४-२३, ४२५, ४२७	मगिराय ३००, ३०८
	सगौर १ुर ३३५, ३३८-९
	संगूर २५९, २८७
	सग्राम ३४१
	संघय्यसेट्टि ३३७
	सजालपुर ३९५, ४०४
	सविसेट्टि ३८०

मंसारजीत २४	सिद्धवडवन् ६२
सागरकट्टे १२८	सिद्धान्तयोगीन्द्र २६४
नागरसेन २३५	सिद्धान्तसार २५९
मातव्य ११४	सिन्दुकुल ९३, १८७
सानानिकोट २४	सिन्दुनाडु २६
सातिपेह २०८	सिन्दुनृप ९१
सातोळ ३७४	सिन्दय ७०
सान्तर ८७, २९९	सिन्दरस ७६, १२१
सान्तरदेवी ३५५-६	सिन्दिगे ९८
सान्तरिगे ८७, ११६, १२०, १५७, १८३, ३९०	सिरसग्राम ३९५, ४१६
सान्तेजीवे ३५८	सिरसंगि १४९
सामन्तभवसदि २३२	सिरिणीदि १०२
साम्भ १९६	सिग्विण्ण २१७, २७७
साजिगवुडि ३७२	सिरियम्मगौड २६१
सालिग्राम २२६	सिरियब्बे १८१-२
सालुव (साल्व) २६३, ३२७, ३६४	सिरियादेवी १५१-२, २२७
सालूर (सालिदूर) १५७, ३५६	सिरोही ३८५, ३८७
सावन्तपण्डित २६५	सिर्मलगेरूत गण २८, ३०
सावरगाँव ३९५, ४२७	सिन्ननी ३९५, ४२५
सावन्ना गाँव ४१३	सिगनन्दि २०
सावित्रेरि २७९	सिगिसेट्टि ३७६
सिगलि २५४	सिगेय ३७६
सित्तन्नवासल ३९	सिक्ट १८०
सिद्धवसयदेव ३२०	सिच्चल १८६
	सिहूण (सिधण) २५१, ३५४, ३९०

मिह्रनन्दि ७४, १७५, २१४,	सेट्टिगौड ३२९
२१६, २८८	सेण्णिकोत्तलि १७४
मिह्रराज १८९	सेण्णित्सेट्टि २८९, ९०
मिह्रविष्णु ११-२	सेतु ३२९, ३३७
मिह्रवूरगण ३७	सेन अन्वय ३९, ९२-३
मोम्पाल्नायगर् १९, २०	सेन गण ८४-५, १०७, ११८,
सीयक १९१-२, १९४, १९७	१२०, २९३, २९५, २९९,
सुजानराय ३२८	३३६, ३३९, ३४१, ३८०,
सुन्दरपाण्ड्य २७, २५५	३९६-९, ४०१-२, ४०४,
सुमद्र १५९	४०८, ४१२, ४२०, ४२८
सुभूति ४	सेननसिग १२८
सुमति ३५-६, १७५, २१४, २१६	सेननप (सेनविमु) २३६, २४३-४
सुरभिक्रमूदचन्द्र २३२	सेनमघ ३५-६
सुरेन्द्रकीर्ति ४०८-११, ४१४-६,	सेन्द्रक १५-६
४२८	सेम्बूर २५७
सुलोचना २७	सेवुण २१३-४, २१८
सुवर्णवर्ष ३५-६	सेगोट्ट ५८, ६०
सूरत ३०	सेनवाल ३९६, ४०७, ४२५-६
सूरसेन २९४-५	सेट्टान्तिदेव २८३
सूरस्य गण ५४, ७३, ९८, -१०२,	सोणि २००
११२-३, १७२, २२४, २६९,	मोडक ७५
३७२-३, ३७४, ३७८	मोत्तियूर ७०
सूर्याचार्य ४९, ५२	सोदे ३१५, ३४७
सूर्याश्रम १६१	सोन्द ३१६, ३३८, ३४२
सूलाक्रोमरन् २०	सोनोपाडिन ४०७
सेट्टिमहादेवी २७५	सोमदेव ५३, २५९, ३७४

सोमय २६५, २७७	हनगल १८६
सोमलदेवी ७६, १८९	हनगुन्द ११२, १२६
सोमवे २८५-६	हनुमन्तगुडि ३१८
सोमसेन ३३६, ४०२, ४०४, ४१२	हृदिगुल २८६
सोमापुर ११३, २११, २१६	हनुरेमरस ३८४
सोमिदेव २१७	हम्पी २३४, २८८, ३९१
सोमेय २५९-६०	हम्मिक्खे ७९, ८१, १२०-१
सोमेस्वर ८१-२, ८५, ९०, ९३-४, १०२, ११०, ११२, १८२, १९०, १९६, २०८, २८२, ३८९, ३९०	हरति ३४४-५
सोगदूर १०२	हरमिग १९५
सोरव २९०-१	हरिकान्त ३७२
सोल्लण १८९	हरिकेमरी ३७२
सोव २५९	हरिचन्द्र २७४
सोवण १४६-७	हृदिदत्त १४-५
सोवरम ८२, १७२	हृदिद्वार १८०
सोविदेव १९८, २०१	हरिमन्दि १७२
स्थिरत्रिनात १८	हरियनन्दन २९१
स्योमिष ३९८	हरियनन्दि २५८, २७१
स्वरटोर ३०१	हृद्विर्मा १०, ४६, ५०-१
स्वर्णपुर ३४६	हरिसेट्टि २८६
हट्टण १३१	हग्निन २९४-५
हृज्जण २८३	हरिहर २७८, २८७-८, ३५५-६, ३९१
हत्तिमत्तूर २५८	हृषीकोनि ४२२
हदिनाटु १३३	हल्लमिगि १८७
	हल्लमिगे २१४
	हल्लमिगि ४५

हलिगावुण्ड ३७९
 हलुमिडि ३१६
 हलयाड १५६, २३२, २५२,
 २५८, २७३
 हल्लेमोगव २९०
 हल्लेद्वत्रलि २७५, ३५२
 हल्लमक्का २१०
 हल्लिक्कुण्डा ४६-७, ५०, ५२
 हल्लिस्साहम २
 हल्लम ४००
 हाहुवलि ३०८, ३३५
 हादरिवागिल्लु १४६-७
 हानुगल्ल १५५, १७२, १८६, २०४
 हालियमट्टि १६४
 हालुगुड्डे १८३, १८५
 हालोवे २६६
 हावरे ३७४
 हात्ति अनवोव २०१
 हाण्यजोगा ३५-६
 हाण्यमादण्ण २८३
 हारियमट्टेगोड १२६-७
 हारेचोडि २८९
 हारेमनू १८७
 हारेमिगनगुत्ति १४८
 हाण्णुपे २५६
 हुकेगी २८५

हुमच २६४, ३११, ३३७
 हुल्लगूर १७२
 हुल्लदेनल्लि ३६१
 हुल्लिकल (हुलेकल) २९२, ३४६
 हुल्लिकेरे (हुल्लिगेरे) २१४, २५९
 २८५-६, ३१६
 हुल्लियन्न १०२
 हुल्लियार १८०
 हुल्लूर ३८४
 हुल्ल ३९६, ४००, ४०४-५
 हुल्लि ७८, १४९, २२६
 हुल्लिनमिगलि २५४
 हुल्लिनहिण्णि ३८४
 हुल्लुव १२३, १२५
 हुण्णेगडल्लु १४०
 हुण्णेगटग १३४
 हुण्णल्ल ३९
 हुण्णल्लु ८६
 हुण्णकोत्ति ४०१-२, ४१०-२, ४१४,
 ४२२-३, ४२८
 हुण्णणाचार्य ३१८
 हुण्णदेव १५८, ३००
 हुण्णनूरि २२१
 हुण्णसेन २१४, २१६, ३०१
 हुण्णरमि ३२७
 हुण्णमाडिमेडि १८१-२

हेरगु २७४	१५५-६, १६९, १७६-७,
हेग्गिवासेवेगडे २३०-१	१७९-८०, २००-१, २०४-७
हेर्माडियरस ३९०	२०९-१०, २१६-८, २२०,
हेलाचार्य ३४६-७	२२३-४, २४९-५०, २५६,
हेदराबाद ७६, १११, ३७०	२५८-६०, २६२, २६५,
हेवण ३०३-५, ३५५-६	२७१-२, २७७, २९५
हेवेनुप (झूगल) २८०-२, २८४,	होरिम १३९-४०
२९८, ३००, ३०२, ३२७	होलरम १८७
होगरिगळ ८४-५	होलेनरमीपुर ७१, १८०
होनण २६७	होल्गज २९४
होन्नुन्द २६०	होल्लिगोड १८६
होल्डरमि ३०२, ३०५	होसफोटे ९
होन्नभूग (होन्नरम) २९७-८, ३०३,	होमनगर ७१०
३५५-६	होमपट्टण २९५
होन्नमेट्टि २२४	होमाल २७८
होयमल ९६, १००-१, १२८,	होमूर ७६, १३२, ३५७
१३१, १३३-४, १४६-७,	होगनूर २६८

MĀṆIKACHANDRA D. J. GRANTHAMĀLĀ

* The Serial Numbers marked with asterisk are out of print

*1. *Laghiyastraya-ādi-samgrahah*: This vol. contains four small works 1) *Laghiyastrayam* of Akalaṅkadeva (c 7th century A D), a small Prakaraṇa dealing with *pramāna*, *naya* and *pravacana* Akalaṅka is an eminent logician who deserves to be remembered along with Dharmakīrti and others His works are very important for a student of Indian logic Here the text is presented with the Sk commentary of Abhayacandrasūri 2) *Svarūpasam'odhana* attributed to Akalaṅka, a short yet brilliant exposition of *ātman* in 25 verses 3-4) *Laghu-Sarvajña-siddhiḥ* and *Bṛhat-Sarvajña-siddhiḥ* of Anantakīrti. These two texts discuss the Jaina doctrine of Sarvajñatā Edited with some introductory notes in Sk on Akalaṅka, Abhayacandra and Anantakīrti by Pt KALLAPPA BHARAMAPPA NITAVE, Bombay Saṁvata 1972, Crown pp 8-204, Price As 6/-

*2 *Sāgara-dharmāmṛtam* of Āśādhara Āśādhara is a voluminous writer of the 13th century A D, with many Sanskrit works on different subjects to his credit This is the first part of his *Dharmāmṛta* with his own commentary in Sk. dealing with the duties of a layman Pt NATHURAM PREMI adds an introductory note on

Āśādhara and his works. Ed. by Pt **MANOHARLAL**, Bombay Saṁvat 1972, Crown pp 8-246, Price As 8/-

*3 **Vikrāntakauravam** or **Sulocanānāṭakam** of Hastimalla (A.D 13th century) : A Sanskrit drama in six acts Ed. with an introductory note on Hastimalla and his works by Pt **MANOHARLAL**, Bombay Saṁvat 1972, Crown pp 4-164, Price As. 6/-.

*4. **Pārsvanātha-caritam** of Vādirājasūri . Vādirāja was an eminent poet and logician of the 10th century A D This is a biography of the 23rd Tirthankara in Sanskrit extending over 12 cantos. Edited with an introductory note on Vādirāja and his works by Pt. **MANOHARLAL**, Bombay Saṁvat 1973, Crown pp 18-198, Price As 8/-.

*5. **Maithilikalyāṇam** or **Sitānāṭakam** of Hastimalla : A Sk drama in 5 acts, see No 3 above Ed. with an introductory note on Hastimalla and his works by Pt. **MANOHARLAL**, Bombay Saṁvat 1973, Crown pp 4-96, Price As 4/-.

*6 **Ārādhanaśāra** of Devasena : A Prākṛit work dealing with religio-didactic topics. Prākṛit text with the Sk. commentary of Ratnakīrtideva, edited by Pt. **MANOHARLAL**, Bombay Saṁvat 1973, Crown pp 128, Price As. 4/6.

*7. **Jinadattacaritam** of Guṇabhadra : A Sk poem in 9 cantos dealing with the life of Jinadatta, edited by Pt. **MANOHARLAL**, Bāmbay saṁvat 1973, Crown pp 96, Price As 5/-.

8. **Pradyumnacarita** of Mahāsenācārya : A Sk. poem in 14 cantos dealing with the life of Pradyumna. It is composed in a dignified style Edited by Pts. MANOHARLAL and RAMAPRASAD, Bombay Saṁvat 1973, Crown pp 230, Price As 8/-

9 **Cāritrasāra** of Cāmuṇḍarāja It deals with the rules of conduct for a house-holder and a monk Edited by Pt INDRALAL and UDAYALAL, Bombay Saṁvat 1974, Crown pp 103, Price As 6/-

*10 **Pramāṇanirṇaya** of Vādirāja · A manual of logic discussing specially the nature of Pramānas Edited by Pts INDRALAL and KHUBCHAND, Bombay Saṁvat 1974, Crown pp 80, Price As 5/-

➤ 11. **Ācārasāra** of Vīranandi : A Sk text dealing with Darśana, Jñāna etc Edited by Pts INDRALAL and MANOHARLAL, Bombay Saṁvat 1974, Crown pp 2-98, Price As 6/-

➤ 12 **Trilokasāra** of Nemiçandra : An important Prākṛit text on Jaina cosmography published here with the Sk. commentary of Mādhavacandra Pt PREMI has written a critical note on Nemiçandra and Mādhavacandra in the Introduction Edited with an index of Gāthās by Pt. MANOHARLAL, Bombay Saṁvat 1975, Crown pp. 10-405-20, Price Rs 1/12/-

* 13. **Tattvānuśāsana-ādi-saṁgrahaḥ** : This vol. contains the following works 1) *Tattvānuśāsana* of Nāgasena. 2) *Iṣṭopadeśa* of Pūjyapāda with the Sk.

commentary of Āśādhara 3) *Nītisāra* of Indranandi. 4) *Mokṣapañcāśikā*. 5) *Śrutāvatāra* of Indranandi. 6) *Adhyātmatarāṅgī* of Somadeva. 7) *Brhat-pñcena-*
namaskāra or *Pātrakesarī stotra* of Pātrakesarī with a Sk.
commentary 8) *Adhyātmāṣṭaka* of Vādirāja 9) *Dvā-*
trīśīkā of Amitagatī 10) *Vairāgyamanimālā* of
Śrīcandra 11) *Tattvasāra* (in Prākṛit) of Devasena.
12) *Śrutaskandha* (in Prākṛit) of Brahma Hemacandra.
13) *Dhāraṅ-gāthā* in Prākṛit with Sk chāyā. 14) *Jñā-*
nasāra of Padmasūmha, Prākṛit text and Sk chāyā
Pt PREMI has added short critical notes on these
authors and their works Edited by Pt MANOHARLAL,
Bombay Samvat 1975, Crown pp 4-176, Price As 14/-

* 14 *Anaḡāra-dharmāmṛta* of Āśādhara Second
part of the *Dharmāmṛta* dealing with the rules about
the life of a monk Text and author's own commen-
tary. Edited with verse and quotation Indices by
Pts BANSIDHAR and MANOHARLAL, Bombay Samvat
1976, Crown pp 692-35, Price Rs 3/8/-

*15 *Yuktyanusāsana* of Samantabhadra : A logi-
cal Stotra which has wielded great influence on later
authors like Siddhasena, Hemacandra etc Text pub-
lished with an equally important commentary of
Vidyānanda There is an introductory note on Vidyā-
nanda by Pt PREMI. Ed. by Pts INDRALAL and
SHELAL, Bombay Samvat 1977, Crown pp 6-182,
Price As. 13/-

*16. **Nayacakra-ādi-saṅgraha** This vol contains the following texts 1) *Laghu-Nayacakra* of Devasena, Prākṛit text with Sk chāyā 2) *Nayacakra* of Devasena, Prākṛit text and Sk chāyā. 3) *Ālāpapaddhati* of Devasena There is an introductory note in Hindī on Devasena and his *Nayacakra* by Pt PREMI Edited by Pt BANSIDHARA with Indices, Bombay Saṁvat 1977, Crown pp 42-148. Price As 15/-

*17 **Ṣaṭprābhṛtādi-saṅgraha** : This vol contains the following Prākṛit works of Kundakunda of venerable authority and antiquity 1) *Darśana-prābhṛta*, 2) *Cāritra-prābhṛta*, 3) *Sūtra-prābhṛta*, 4) *Bodha-prābhṛta*, 5) *Bhāva-prābhṛta*, 6) *Mokṣa-prābhṛta*, 7) *Laṅga-prābhṛta*, 8) *Sīla-prābhṛta*, 9) *Rāyanasāra* and 10) *Dvādaśānu-prekṣā* The first six are published with the Sk commentary of Śrutasāgara and the last four with the Sk chāyā only. There is an introduction in Hindī by Pt PREMI who adds some critical information about Kundakunda, Śrutasāgara and their works Edited with an Index of verses etc by Pt PANNALAL SONI, Bombay Saṁvat 1977, Crown pp 12-442-32 Price Rs 3/-.

*18 **Prāyaścittādi-saṅgraha** : The following texts are included in this volume 1) *Chedapinda* of Indra-nandi Yogīndra, Prākṛit text and Sk chāyā 2) *Chedaśāstra* or *Chedanavati*, Prākṛit text and Sk chāyā and notes 3) *Prāyaścitta-cūlikā* of Gurudāsa, Sk text with the commentary of Nandīguru. 4) *Prāyaścittagrantha* in Sk verses by Bhaṭṭākalaṅka There is a critical

introductory note in Hindi by Pt. PREMI. Edited by Pt. PANNALAL SONI, Bombay Saivvat 1978, Crown pp 16-172-12, Price Rs. 1/2/-.

*19. *Mūlācāra* of Vattakera, part I : An ancient Prākṛit text in Jama Śaurasenī, Published with Sk. chāyā and Vasunandi's Sk. commentary. A highly valuable text for students of Prākṛit and ancient Indian monastic life Edited by Pts. PANNALAL, GAJADHARALAL and SHRILAL, Bombay Saivvat 1977, Crown pp. 516, Price Rs- 2/4/-

20 *Bhāvasaṅgraha-ādih* : This vol. contains the following works 1) *Bhāvasaṅgraha* of Devasena, Prākṛit text and Sk. chāyā. 2) *Bhāvasaṅgraha* in Sk. verse of Vāmadeva Paṇḍita. 3) *Bhāva-trīḥaṅgī* or *Bhārasaṅgraha* of Śrutamuni, Prākṛit text and Sk. chāyā. 4) *Āra-atrīḥaṅgī* of Śrutamuni, Prākṛit text and Sk. chāyā. There is a Hindi Introduction with critical remarks on these texts by Pt. PREMI Edited with an Index of verses by Pt. PANNALAL SONI, Bombay Saivvat 1978, Crown pp 8-284-28, Price Rs 2/4/-

21. *Siddhāntasāra-ādi-Saṅgraha* : This vol contains some twentyfive texts 1) *Siddhāntasāra* of Jīnacandra, Prākṛit text, Sk. chāyā and the commentary of Jñānabhūṣana 2) *Yogaeśara* of Yogicandra, Apabhramśa text with Sk. chāyā. 3) *Kallāṅḍalayanā* of Ajitabrahma, Prākṛit text with Sk. chāyā, 4) *Amṛtāñṇī* of Yogīndradeva, a didactic work in Sanskrit 5) *Ratna-*

mālā of Śivakoti. 6) *Śāstrasārasamuccaya* of Māghanandī, a Sūtra work divided in four lessons 7) *Arhatpravacanam* of Prabhācandra, a Sūtra work in five lessons 8) *Āptavarūpam*, a discourse on the nature of divinity 9) *Jñānalocanastotra* of Vādirāja (Pomarājasuta) 10) *Samavasāranastotra* of Visnusena 11) *Sarvajñastavana* of Jayānandasūri 12) *Pārśvanāthasamasyā-stotra* 13) *Citrabandhastotra* of Gunabhadra 14) *Maharṣi-stotra* (of Āśādhara) 15) *Pārśvanāthastotra* or *Lakṣmīstotra* with Sk commentary 16) *Nemināthastotra* in which are used only two letters viz *n* & *m* 17) *Śaṅkhadevāṣṭaka* of Bhānukīrti 18) *Nvijāt-māstaka* of Yogīndradeva in Prākṛit 19) *Tattvabhāvana* or *Sāmāyika-pāṭha* of Amitagatī 20) *Dharmasāyaya* of Padmanandī, Prākṛit text and Sk. chāyā 21) *Sārasamuccaya* of Kulabhadra 22) *Amgapanatti* of Śubhacandra, Prākṛit text and Sk chāyā 23) *Śrutāvatāra* of Vibudha Śrīdhara 24) *Śalākānikṣepana-nṣkāsaṇa-vivaranam* 25) *Kalyānamālā* of Āśādhara. Pt PREMI has added critical notes in the Introduction on some of these authors Edited by Pt. PANNALAL SONI, Bombay Saṁvat 1979 Crown pp 32-324, Price Rs 1/8/-

*22 **Nītivākyaṁrtam** of Somadeva . An important text on Indian Polity, next only to *Kauṭilya-Arthaśāstra*. The Sūtras are published here along with a Sanskrit commentary There is a critical Introduction by PREMI comparing this work with *Arthaśāstra* Edited by

28 **Jaina-Śilālekha-saṅgraha**: It is a handy volume giving the Devanāgarī version of *Epigraphia Carnatica* II (Revised ed.) with Introduction, Indices etc. by Prof. HIRALAL JAIN, Bombay 1928, Crown pp. 16-164-428-40, Price Rs 2/8/-

29-30-31. **Padmacarita of Raviṣeṇa**. This is the Jaina recension of Rāma's story and as such indispensable to the students of Indian epic literature. It was finished in A. D. 676, and it has close similarities with *Pañcaru* of Vimala (beginning of the Christian era). Edited by Pt. DARBARILAL, Bombay Saṁvat 1985, vol i, pp 8-512; vol ii, pp 8-436; vol. iii, pp 8-446. Thus pp. about 1400 in all. Price Rs 4/8/-.

32-33. **Harivaṁśa-purāṇa of Jinasena I.** This is the Jaina recension of the Kṛṣṇa legend. These two volumes are very useful to those interested in Indian epics. It was composed in A D 783 by Jinasena of the Punnāṭa-saṅgha. There is a Hindī Introduction by Pt. PREMIJI Edited by Pt. DARBARILAL, Bombay 1930, vol. 1 and ii pp 48-12-806, Price Rs 3/8/-

34 **Nitivākyaṁṛtam**, a supplement to No 22 above: This gives the missing portion of the Sanskrit commentary, Bombay Saṁvat 1989, Crown pp 4-76, Price As. 4/-

35 **Jambūsvāmi-caritam and Adhyātma-kamala-mārtanḍa** of Rājamalla. See No 26 above Edited with an Introduction in Hindī by Pt. JAGADISH-

CHANDRA, M A , Bombay Saṁvat 1993, Crown pp 18-264-4, Price Rs 1/8/-

36. **Triṣaṣṭi-smṛti-śāstra** of Āśadhara : Sanskrit text and Marāthī rendering Edited by Pt. MOTILAL HIRACHANDA, Bombay 1937, Crown pp 2-8-166, Price As 8/-

37. **Mahāpurāna** of Puspadanta, Vol I Ādipurāna (Saṁdhus 1-37) A Jaina Epic in Apabhraṁśa of the 10th century A D Apabhraṁśa Text, Variants, explanatory Notes of Prabhācandra A model edition of an Apabhraṁśa text Critically edited with an Introduction and Notes in English by Dr. P L. VAIDYA, M A , D.Litt , Bombay 1937, Royal 8vo pp. 42-672, Price Rs 10/-.

37(a) Rāmāyana portion separately issued Price Rs. 2 50

38. **Nyāyakumudacandra** of Prabhācandra Vol. I This is an important Nyāya work, being an exhaustive commentary on Akalaṅka's *Laghyastrayam* with Vivṛti (see No 1 above). The text of the commentary is very ably edited with critical and comparative foot-notes by Pt. MAHENDRAKUMARA There is a learned Hindi Introduction exhaustively dealing with Akalaṅka, Prabhācandra, their dates and works etc written by Pt. KAILASCHANDRA. A model edition of a Nyāya text. Bombay 1938, Royal 8 vo, pp 20-126-38-402-6, Price Rs. 8/-

39. Nyāyakumudacandra of Prabhācandra, Vol II
See No 38 above Edited by Pt MAHENDRAKUMAR
SHASTRI who has added an Introduction in Hindī deal-
ing with the contents/ of the work and giving some
details about the author. There is a Table of contents
and twelve Appendices giving useful Indices Bombay
1941. Royal 8vo pp 20 + 94 + 403-930. Price Rs. 8/8/-.

40 Varāṅgacaritam of Jatā-Suahanandi A rare
Sanskrit Kāvya brought to light and edited with an
exhaustive critical Introduction and Notes in English by
Prof. A. N. Upadhye, M A, Bombay 1938, Crown
pp 16+56+392, Price Rs 3/-

41 Mahāpurāna of Puṣpadanta, Vol II (Samdhis
38-80) : See No 37 above The Apabhramśa Text
critically edited to the variant Readings and Glosses,
along with an Introduction and five Appendices by
Dr P L VAIDYA, M A, D Litt, Bombay 1940 Royal
8vo pp 24+570 Price Rs 10/-

42 Mahāpurāna of Puṣpadanta, Vol III (Sam-
dhis 81-102) See No 37 and 40 above The Apa-
bhramśas Text critically edited with variant Readings
and Glosses by Dr P L VAIDYA, M. A, D Litt
The Introduction covers a biography of Puṣpadanta,
discussing all about his date, works, patrons and
metropolis (Mānyakheta). Pt. PREMI's essay 'Mahākavi
Puṣpadanta' in Hindī is included here Bombay 1941.
Royal 8vo pp. 32+28+314. Price Rs. 6/-

42(a). Harivaṁśa portion is separately issued.
Price Rs. 2 50.

43. Ajanāpavanamjaya-nāṭakam and Subhadrā-nāṭikā of Hastimalla. Two Sanskrit Dramas of Hastimalla (see also No 3 above). Critically edited by Prof M V PATWARDHAN. The Introduction in English is a well documented essay on Hastimalla and his four plays which are fully studied. There is an Index of stanzas from all the four plays. Bombay 1950. Crown pp 8+68+120+128 Price Rs 3/-.

44. Syādvādasiddhi of Vāḍibhāsiwa. Edited by Pt DARBAPILAL with Introductions etc in Hindi shedding good deal of light on the author and contents of the work. Bombay, 1950. Crown pp 26+32+34+80. Price Rs 1-50.

45. Jaina Śilālekha-saṁgraha, Part II (see No. 28 above). The texts of 302 Inscriptions (following A. Guérinot's order) are given in Devanāgarī with summary in Hindi. There is an Index of Proper Names at the end. Compiled by Pt VIJAYAMURTI, M. A. Bombay 1952. Crown pp 4+520. Price Rs 8/-.

46. Jaina Śilālekha-saṁgraha, Part III (see Nos 23 & 45 above): The texts of 303-846 inscriptions (following Guérinot's list) is given in Devanāgarī with summary in Hindi compiled by Pt. VIJAYAMURTI, M.A. There is an Index of Proper Names at the end. The Introduction by Shri G. C. CHAUDHARI is an exhaustive

study of inscriptions Bombay 1957. Crown pp 8+178
+592+12. Price Rs 10/-.

17. *Pramānaprameyakalikhā* of Narendrasena (A.D. 18th century) A Nyāya text dealing with Pramāna and Prameya. The Sanskrit text critically edited by Pt. DADHARILAL. The Hindi Introduction deals with the author and a number of topics connected with the contents of this work. *Bhāratīya Jñānapīṭha* Kashi, Varanasi, 1961 Price Rs 1 50



For orders write to—

BHĀRATĪYA JÑĀNAPĪTHA

Durg Road, R. d.,

Varanasi—5 (India)

Or

BHĀRATĪYA JÑĀNAPĪTHA

3620/21 Netaji Subhash Marg,

Delhi—6 (India)

